विद्यापति की कविता
का
भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की डी० फिल्० उपाधि के लिए प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

प्रस्तुतकर्ता
कुलबास नारायन श्रीवास्तव
शोध-छात्र, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद

निर्देशक
डॉ० भवानी दत्त, उप्रेती, डी० फिल्०, डी० लिट्०, डिप० लिंग्विस्टिक्स
हिन्दी विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
इलाहाबाद

१९९२

प्राक्कथन

मैथिल कोकिल, महाकवि विद्यापति हिन्दी भाषा के प्रथमोन्मेष कालीन उत्तर भारतीय वाङ्मय के सर्वाधिक प्रकाशनवान नक्षत्र हैं । इनकी कविता में श्रृंगार के साथ भक्ति ,भावनात्मक अभिव्यक्ति के साथ कला, कल्पना के साथ सामाजिक चेतना तथा संस्कृत तत्सम शब्दों के साथ तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्दों का यथास्थान मणि-कांचन प्रयोग हुआ है । विद्यापति ने अपनी रचनाओं में कहीं भी अपनी जन्म तिथि एवं अन्य महत्वपूर्ण तिथियों की ओर कोई संकेत नहीं किया है, किन्तु शोध- परिशोध से प्राप्त विवरणों के अनुसार विद्यापति एक सम्मानित ब्राहमण कुल में उत्पन्न हुए थे जिसकी परम्परागत उपाधि ठक्कुर या ठाकुर थी- इनके पिता गणपति ठाकुर मिथिला के ओइनवार राजा राय गणेश्वर के सभा पंडित थे ।

विद्यापति का जन्म बिहार प्रान्त के दरभंगा जिले के कमतौल स्टेशन से 4 मील दूर विसफी नामक ग्राम में हुआ था । इनकी जन्म तिथि सन् 1350 से 1380 के मध्य तथा मृत्यु तिथि सन 1448 से 1460 के मध्य मानी जाती है ।[1]

1- अ- ए हिस्ट्री आव मैथिली लिटरेचर भाग-1 डा० जयकान्त मिश्र, पृष्ठ सं० 138- 146 ।

ब-मैथिल कोकिल विद्यापति-श्री ब्रजनन्दन सहाय बल्लभ, द्वितीय संस्करण भूमिका- पृष्ठ संख्या 24-26 ।

स- विद्यापति पदावली सम्पादित - श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, भूमिका पृष्ठ सं० 9-10

द- विद्यापति पदावली भाग-1 सम्पादित बिहार राष्ट्र भाषापरिषद भूमिका पृ० 14-16 ।

य- विद्यापति पदावली- विमान विहारी मजूमदार भूमिका पृ० 25-28

इस समय दिल्ली में फिरोजशाह तुगलक एवं उसके वंशजों का शासन था । यह काल साहित्यिक दृष्टि से आदि काल और मध्य काल । {भक्ति काल} के मध्य पड़ता है । विद्यापति को अनेक उपाधियाँ उनके आश्रयदाता राजाओं से प्राप्त थीं जिनके प्रमाण हमें उनके गीतों की भणिताओं में प्राप्त होते हैं ये उपाधियाँ- कवि कंठहार, अभिनव जयदेव, सरस कवि तथा कविशेखर हैं । विद्यापति एक दरबारी कवि थे और वे लगभग एक दर्जन राजाओं और राज महिषियों के आश्रय में रहे थे । अतः उनकी प्रतिभा पर इन राजाओं तथा आश्रयदाताओं की रुचि का प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी था । इसीलिए इनके गीतों, जो कि हिन्दी मैथिली में हैं, को छोड़कर शेष संस्कृत तथा अपभ्रंश (अवहट्ठ) में रची रचनाएँ इनके आश्रयदाताओं के निर्देश से लिखी गयीं । इन्होंने संस्कृत भाषा में भू- परिक्रमा, गोरक्षा- विजय, पुरुष -परीक्षा, लिखनावली शैव- सर्वस्व- सार प्रमाण भूत, पुराण संग्रह, गंगावाक्यावली, विभाग सार, दान- वाक्यावली, दुर्गाभक्ति तरिंगिणी, गयापत्तलक वर्षकृत्य मणि मञ्जरी आदि 13 ग्रन्थों तथा अपभ्रंश भाषा में, कीर्तिलता तथा कीर्तिपताका दो ग्रन्थों का निर्माण किया ।

उपरोक्त रचनाओं में कवि का धर्मज्ञ, कर्मकाण्डी तथा भूगोल विज्ञ ब्राह्मण विद्वान का रूप दृष्टिगोचर होता है परन्तु कवि के जन प्रिय व्यक्तित्व का आधार तथा उनकी कीर्तिका अक्षय- स्तम्भ " सब जन मिठ्ठा देसिल बयना" में रचित गीतों का संग्रह विद्यापति-पदावली ही है ।

"गीत-विद्यापति" का रचना काल सन् 1402 से मृत्युपर्यन्त 1448-1460 तक माना जाता है । इस संग्रह में 891 पदों का विस्तार है तथा इस संग्रह में विरह संयोग ,रूप- अपरूप, अभिसार, मिलनोल्लास उपेक्षित उपेक्षिता , मिलन- गोपन, हर गौरी गीत, वन्दना-गीत, ऋतु- गीत तथा सामान्य- गीत आदि विषयों से सम्बद्ध पद हैं ।

कृति के अद्यतन अध्ययन की दिशा :

"गीत- विद्यापति" एक श्रेष्ठ साहित्यिक कृति है । अत: साहित्यिक दृष्टि से इसके अनेक अध्ययन हुए हैं जिनमें मुख्य इस प्रकार हैं

अनन्त कुमार - जयदेव और विद्यापति : गीत गोविन्द और पदावली के आधार पर एक तुलनात्मक अध्ययन , गढ़वाल 1980 ई०

विजय भूषण राय- मध्यकालीन हिन्दी गीति काव्य और विद्यापति- मिथिला ,सन् 1980ई०

निर्मला कुमारी - विद्यापति : एक सांस्कृतिक अनुशीलन ,मगध 1973 ई०

वेद नाथ झा-विद्यापति और पूर्वी क्षेत्र का पदावली साहित्य,पटना 1977ई

लालमणि त्रिपाठी- विद्यापति का अप्रस्तुत विधान,काशी-1982 ई०

मिथिलेश कुमारी मिश्र-विद्यापति का काव्य-शिल्प,लखनऊ 1977 ई०

राम सजन पाण्डेय- विद्यापति का सौन्दर्य-बोध ,अवध, 1982 ई०

देवेन्द्र झा - विद्यापति की कामोद्दीपक कविताओं का काव्यात्मक अध्ययन,पटना ,1972 ई०

शकुन्तला शर्मा- विद्यापति की नाचारियाँ ,बिहार, 1984 ई०

अमरनाथ चौधरी- विद्यापति की भक्ति-भावना,पटना 1971 ई०

उमा ठाकुर- विद्यापति के काव्य में बिम्ब-योजना पदावली के आधार पर पटना, 1979 ई०

इन्द्रकान्त झा- विद्यापति के ग्रन्थों का भाषा सर्वेक्षण ,मगध , 1982 ई०

मोती लाल राठौर- विद्यापति के काव्य का संगीत शास्त्रीय अध्ययन,
कानपुर, 1983 ई०

विद्या नारायण ठाकुर-विद्यापति साहित्य में धर्म- समन्वय के स्रोत और
प्रतिफल मिथिला ,1984 ई०

मीरा जायसवाल- विद्यापति(भाषा) काव्य का सांस्कृतिक अनुशीलन,
इलाहाबाद 1969 ई०

इस प्रकार "गीत विद्यापति" का भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से कोई अध्ययन नही हुआ है । तथा प्रस्तुत अध्ययन इस क्षेत्र में मौलिक तथा सर्वप्रथम है ।

प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध में दस अध्यायों में "गीत- विद्यापति"[1] का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन विश्लेषण प्रस्तुत है ।

इसके प्रथम अध्याय में ध्वनि तात्त्विक विवेचन है । ध्वनिग्रामों की प्रायोगिक स्थिति ,ध्वनि-गुण, स्वर व्यंजन तथा संयुक्त प्रयोग पर विस्तार में प्रकाश डाला गया है । आवश्यकतानुसार सारिणियों का भी सहारा लिया गया है ।

1- गीत- विद्यापति" - सम्पादक डा० महेन्द्र नाथ दुबे - प्रथम संस्करण
सन 1978 शक्ति प्रकाशन ,अस्सी वाराणसी ।

दूसरे अध्याय में शब्दावली एवं शब्द - रचना पर विचार किया गया है । "गीत- विद्यापति" में शब्दावली की दृष्टि से तद्भव तथा तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक है । कुछ विदेशी शब्दों (अरबी, फारसी एवं तुर्की शब्दों का भी प्रयोग हुआ है । इनके प्रयोग को उदाहरण द्वारा दिखाया गया है । कुछ प्रत्ययों तथा पर- प्रत्ययों के योग से व्युत्पन्न शब्द पृथक- पृथक विश्लेष्य रहे हैं । व्युत्पादक प्रत्ययों को लेकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया ,क्रियाविशेषण व्युत्पादक प्रातिपदिक विचारणीय रहे हैं ।

तीसरे अध्याय में लिंग- विधान पर विचार है । लिंग- विधान में स्त्रीलिंग प्रत्ययों का महत्वपूर्ण योग रहता है । स्त्रीलिंग प्रत्ययों को लेकर दो प्रकार से विचार किया जा सकता है । एक तो यह है कि स्त्रीलिंग प्रत्ययों के योग व्युत्पन्न रचना प्रातिपदिक रचना के अन्तर्गत आती है और दूसरी इसे एक व्याकरणिक कोटि माना जाता है । यहाँ लिंग विचार व्याकरणिक कोटि के रूप में विश्लेषण का विषय बनाया गया है ।

चौथे अध्याय में वचन पर विचार किया गया है । अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भाँति मैथिली में भी दो वचन हैं । गीत- विद्यापति में भी मैथिली भाषा के अनुकूल दो वचन मिलते हैं तथा संज्ञा सर्वनाम एवं क्रियापदों में वचन के कारण रूपान्तरण मिलता है जिसका इस प्रकरण में विचार किया गया है ।

पाँचवा अध्याय कारक- रचना से सम्बन्धित है । प्रस्तुत प्रसंग में

आलोच्य-कृति में उपलब्ध कारक- रचना का विवेचना, विभ
परसर्गों पृथक- पृथक एवं संयुक्त प्रयोग की विभिन्न स्थितियों
परीक्षण तथा सिद्धान्त- निरूपण अभीष्ट है ।

छठे अध्याय में " पुरुष" व्याकरणिक कोटि क
"गीत-विद्यापति" पर विचार किया गया है । "पुरुष" प्रयो
सर्वनाम तथा क्रिया पदों में अलग अलग होते हुए भी अन्विति
से सर्वनाम एवं क्रिया पदान्तर्गत पुरुष निकटत: संबंधित हैं । इ
सर्वनाम तथा क्रियापदों में उपलब्ध पुरुष-विधान का पृथक- पृ
विश्लेषण किया गया है ।

सातवें अध्याय में, क्रिया की प्रमुख व्याकरणिक
" काल- रचना" का विवरण है । वर्तमान, भूत, भविष्य प्र
के लिये लिंग, वचन , पुरुष मूलक स्थितियों में रूप वैविध्य मि
काल- स्थिति निष्पन्न होने में सहायक क्रिया तथा संयुक्त क्रि
का विधान वर्णित है । अन्य व्याकरणिक कोटियों की भाँ
बोधक प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है । प्रस्तुत प्रकरण में प्रत्येक
अन्तर्गत आने वाली लिंग, वचन तथा पुरुष सम्बन्धी स्थितियों
में योजक प्रत्ययों तथा सम्बद्ध तत्त्वों का विवेचन अभीष्ट रहा

आठवाँ अध्याय पद- विभाग एवं रूप- रचना
है । इसमें व्याकरणिक प्रत्ययों के प्रयोग का विवेचन है । प्र
कोटियों में संज्ञा, सर्वनाम , विशेषण, क्रिया तथा क्रिया
में "गीत- विद्यापति" के पदों का विभाजन करके उनके स्वरूप
को दर्शाया गया है और अलग- अलग व्याकरणिक स्थिति
में रूप- रचना अथवा पद रूपावली दी गई है ।

नवें अध्याय में "गीत-विद्यापति" का वाक्य- वैज्ञानिक अध्ययन अभीष्ट है । वाक्य रचना के विभिन्न पक्षों पर विचार करते हुए वाक्य के प्रकार ,वाक्यगत पदों का बाह्य सम्बन्ध ,उपवाक्य तथा वाक्यांश आदि पर विचार किया गया है । कविता की वाक्य-रचना गद्य की वाक्य रचना से बहुत कुछ भिन्न होती है तदनुसार कविता की वाक्य रचना का वैज्ञानिक विवेचन कदाचित अधिक सूक्ष्म एवं पैनी दृष्टि की अपेक्षा रखता है । इसलिये अनेक स्थलों पर स्थितियों को स्पष्ट करने के लिये अपेक्षित विस्तार ग्राह्य रहा है ।

दसवें तथा अन्तिम अध्याय में उपसंहार है । भाषा - ध्वनि, शब्द समूह ,शब्द-रचना , पद एवं रूप-रचना, वाक्य-गठन आदि विशिष्ट स्थितियों की ओर उपसंहार में संकेत हैं ।

प्रस्तुत अध्ययन भाषा- विज्ञान की वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है ।

प्रस्तुत शोध- प्रबन्ध डा० भवानी दत्त उप्रेती जी के निर्देशन में लिखा गया है तथा प्रबन्ध का निर्माण उन्हीं के सतत प्रोत्साहन परिश्रम का परिणाम है अत: उनके प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ ।

शोध प्रबन्ध के विषय -निर्धारण , सामग्री संग्रह तथा रचनात्मक - गठन आदि के सम्बन्ध में मुझको विविध स्रोतों , अनेक पुस्तकालयों ,इलाहाबाद विश्वविद्यालय का पुस्तकालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन का संग्रहालय तथा राजकीय पुस्तकालय आदि विभिन्न

विद्वानों तथा भाषा- वैज्ञानिकों, डा० उदय नारायण तिवारी , डा० सरयू प्रसाद अग्रवाल , डा० महावीर शरण जैन, डा० भोला नाथ तिवारी , डा० हरदेव बाहरी, डा० माता बदल जायसवाल डा० वीरेन्द्र कुमार बड़सूवाल, डा० शिव प्रसाद सिंह तथा डा० नामवर सिंह आदि की कृतियों से सहारा एवं प्रेरणा मिली है । अत: मैं इन सबके प्रति कृतज्ञ हूँ ।

अपने पूज्य माता- पिता, स्नेहशीला बहनों कु० चन्द्रा श्रीवास्तव , कु० सुषमा श्रीवास्तव एवं आदरणीय अग्रजों श्री रमेश नारायण श्रीवास्तव , श्री सुरेश नारायण श्रीवास्तव जिनसे मुझको अनेक प्रकार से सहायता ,सहयोग एवं प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है, के प्रति मैं सहज कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

अनुक्रम पृष्ठ

विद्यापति ने अपने काव्य में जिन ध्वनियों - स्वर तथा व्यंजनों का प्रयोग किया है, उनका विवेचन प्रस्तुत प्रकरण में अभीष्ट है । खण्डीय ध्वनियों[1] के अतिरिक्त जो खण्डेतर ध्वनियाँ प्रयुक्त हुई हैं, उनमें अनुनासिकता, विवृत्ति तथा व्यंजन-दीर्घता के प्रयोग प्राप्त होते हैं । इनके अतिरिक्त व्यंजन ध्वनियों के साथ संयुक्त रूप में अस्तित्ववान स्वर-मात्राओं को भी इस प्रकरण में प्रस्तुत किया गया है ।

खण्डीय ध्वनिग्राम

स्वर -

मूल स्वर

हृस्व - अ, इ, उ
दीर्घ - आ, ई, ऊ, ए, ओ

संयुक्त स्वर

ये स्वर मूल तथा संयुक्त दोनों रूपों में निम्नवत प्रयुक्त हुए हैं ।

ऐ , औ

अइ , अउ

1- " ध्वनि " शब्द से आशय यहाँ ध्वनिग्राम अथवा वर्णग्राम से है ।

व्यंजन[1]

क ख ग घ

च छ ज झ

ट ठ ड ड़ ढ (ढ़)

त थ द ध न

प फ ब भ म

श ष स ह

र ल

अर्द्ध स्वर

य, व

खण्डेतर ध्वनिग्राम

अनुनासिकता / ँ /

व्यंजन दीर्घता या व्यंजन द्वित्त्वता

विवृत्ति

स्वर- मात्रा

1- "व्यंजन" से आशय "हलन्त व्यंजन" से है।

स्वरों का विवरण :

स्वर व्यतिरेकी अल्पतम युग्म

स्वरों की ध्वनिग्रामिक स्थिति निम्नलिखित अल्पतम युग्मों में द्रष्टव्य है ।

/अ/	सत[1] "सौ की संख्या"	मन[3] "इन्द्रिय विशेष"	सुत[5] " पुत्र "
/आ/	सात[2] " साथ "	मान[4] "विरह-दशा विशेष	सुता[6] " पुत्री "
/इ/	पानि[7] " हाथ "	दिन[9] " दिवस "	
/ई/	पानी[8] " जल "	दीन[10] " गरीब "	
/उ/	पुर[11] " नगर	सुत[13] " पुत्र "	
/ऊ/	पूर[12] " पूरा करना "	सूत [14] " धागा "	
/ए/	बेरि[15] " क्रम "	बेद[17] "शास्त्र"	देब[19] " ढ़ोंगी "
/ऐ/	बैरि[16] " शत्रु "	बैद[18] "चिकित्सक"	दैब[20] " ईश्वर "
/ओ/	गोरी[21] " सुन्दरी "	बोर[23] " बोल, बातें "	
/औ/	गौरी[22] " पार्वती "	बौर [24] " आम्र मंजरी "	

"गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद सं.

1- 836/869	9- 367/374	17- 533/541
2- 778/805	10-761/784	18- 297/314
3- 290/307	11-742/764	19- 296/313
4- 504/600	12-483/491	20- 691/711
5- 283/300	13-283/300	21- 756/778
6- 285/303	14-844/878	22- 748/771
7- 29/32	15- 1/1	23- 614/626
8- 778/804	16- 1/1	24- 614/626

उपरोक्त व्यतिरेकी विवेचन के आधार पर " गीत- विद्यापति" में स्वर-ध्वनिग्रामों की संख्या 10 है ।

<u>स्वरों का मुक्त परिवर्तनगत प्रयोग :</u>

इ, ई	निर[1]	नीर [2]	"जल"
	हित[3] ,	हीत [4]	"भलाई"
	बैरि[5] ,	बैरी [6]	" शत्रु "
उ , ऊ	सुनह[7] ,	सूनह [8]	" सुनो "
	उपर[9] ,	ऊपर [10]	" ऊँची स्थिति "

उक्त उदाहरणों में ई, ई, उ , ऊ भिन्न स्वर इकाइयाँ होते हुए भी अर्थगत वैविध्य कारण नहीं बनती हैं । अत: ये मुक्त परिवर्तन में प्रयुक्त हुई हैं ।

"गीत - विद्यापति"
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 421/432
2- 414/425
3- 476/484
4- 476/483
5- 1/1
6- 405/419
7- 803/834
8- 306/320
9- 341/347
10- 341/347

स्वर - संयोग :

विद्यापति की भाषा में स्वर- संयोग के तीन प्रकार है । द्विस्वर-संयोग, त्रिस्वर-संयोग तथा चतु: स्वर-संयोग ।

दो स्वरों का संयोग :

दो स्वरों का संयोग शब्दों के आदि, मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में प्राप्त होता है । यह स्वर-संयोग ह्रस्व- ह्रस्व, ह्रस्व-दीर्घ ,दीर्घ-दीर्घ , दीर्घ- ह्रस्व ,मूल-संयुक्त तथा संयुक्त-मूल स्वरों के रूप में हुआ है । प्रयोग संख्या की दृष्टि से यह स्वर-संयोग सर्वाधिक है ।

ह्रस्व- ह्रस्व :

अ अ	उदअ[1], छुदअ[2]
अ इ	अइसन[3], लखइ[4] , भनइ [5]
अउ	जउवति[6], तउ[7] , मउ [8]
इ अ	किअ[9] , पिअरी[10], निअर[11]
इ उ	जिउ [12], पिउ[13]
उ अ	गरुअ[14], तुअ [15] तरुअर [16]
उ इ	उइल[17], दुइ[18] , सुइलाहु[19]

गीत-विद्यापति-
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 839/873
2- 825/857
3- 837/871
4- 42/47
5- 842/876
6- 23/24
7- 28/31
8- 37/41
9- 45/51
10- 46/53
11- 83/94
12- 12/12
13- 117/126
14- 840/874
15- 1/1
16- 95/106
17- 321/330
18- 841/875
19- 224/231

ह्रस्व - दीर्घ

अ आ	बलआ[1],	सआनी[2]	
अ ई	करई[3],	बरई[4],	धरई[5]
अ ए	बएस[6],	कतए[7],	करए[8]
अ ओ	अओत[9],	सेहओ[10],	मनओ[11]
इ आ	पिआसल,[12]	पिआसे[13],	चेलिआ[14]
इ ए	सुमरिए[15],	तोरिए[16]	
इ ओ	पुछिओ[17]		
उ आ	जुआर[18],	सुआ[19],	तुआ[20]

दीर्घ - दीर्घ

आई	जाई[21],	लाई[22],	मधाई[23]
आऊ	पठाऊ[24],	मेलाऊलि[25]	
आए	आएल[26],	सुखाएल,[27]	जाए[28]
आओ	आ ओर,[29]	धाओल[30],	ताओ[31]

गीत- विद्यापति - पृष्ठ संख्या/पद सं0

1- 21/21
2- 48/55
3- 231/238
4- 231/238
5- 324/332
6- 840/874
7- 840/874
8- 47/54
9- 83/94
10-840/874
11- 836/869
12- 825/857
13-51/59
14= 86/97
15- 84/95
16- 300/316
17- 22/23
18-102/113
19-196/202
20-319/329
21-15/16
22- 15/16
23- 126/135
24- 843/877
25- 198/204
26- 822/855
27- 840/874
28- 839/873
29- 83/94
30- 842/876
31- 135/142

दीर्घ - दीर्घ

ई ए	तोरीए [1]
ए आ	बेआधि[2], नेआ[3], गेआन [4]
ए ओ	केओ[5], देओ[6], कठेओ[7]
ओ ई	सोई [8]
ओ ए	होएबह[9], गोए [10], सोए[11]

दीर्घ- ह्रस्व

आ इ	आइति [12], जाइत[13], जुड़ाइत [14]
आ उ	पाउस [15], गमाउलि[16], पठाउ[17]
ई अ	बुझीअ[18], दीअह[19]
ई उ	पीउख [20], जीउब [21] जीउल [22]
ऊ अ	ऊअल[23]
ए अ	पेअसी [24]
ए इ	महादेइ[25], तेइ [26], देइ [27]
ए उ	नेउछि [28] चेउकि[29], देउब [30]
ओ अ	होअ[31], भोअणा [32]
ओ इ	सोइ[33], कोइल [34]
ओ उ	कोउ [35]

गीत-विद्यापति - पृष्ठ संख्या/पद सं०

1-346/353
2- 8/8
3-90/101
4- 271/285
5- 827/859
6- 827/859
7- 4/4
8- 383/392
9- 837/871
10- 74/84
11- 74/84
12- 828/860
13- 42/47
14- 832/865
15- 82/93
16- 14/14
17- 843/877
18- 103/114
19- 254/262
20- 66/78
21- 101/112
22- 199/205
23- 321/330
24- 36/40
26- 329/337
27- 387/397
28- 25/26
29- 273/288
30- 353/360
31- 826/858
32- 158/163
33- 829/862
34- 840/874
35- 81/92

मूल - संयुक्त

आऐ	चिन्ताऐ [1]
इऔ	करिऔन [2]

संयुक्त - मूल

ऐअ	अँधेअ [3]	
ऐआ	धैआ [4]	
ऐए	दैए[5],	भैए [6]
ऐओ	तैओ [7]	
औआ	लौआ [8]	
औओ	तौओ[9]	

गीता- विद्यापति -
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 8/8
2- 261/270
3- 34/37
4- 840/874
5- 122/132
6- 578/585
7- 293/309
8- 134/141
9- 293/309

दो स्वर- संयोग तालिका

	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
अ	×	×	×	×	×		×		×	
आ			×	×	×	×	×	×	×	
इ	×	×			×		×		×	×
ई	×				×		×			
उ	×	×	×						×	
ऊ	×									
ए	×		×		×				×	
ऐ	×	×					×		×	
ओ	×		×	×	×		×			
औ		×							×	

तीन स्वर - संयोग

" गीत-विद्यापति" में त्रिस्वर- संयोग भी प्रचुर संख्या में उपलब्ध हैं ये स्वर- संयोग शब्दों के आदि , मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में मिलते हैं ।

अअउ	भअउ [1]		
अइआ	दइआ [2]		
अइए	भइए[3],	कइए[4] ,	दइए[5]
अइओ	जइओ[6],	तइओ [7]	
आइअ	निन्नाइअ[8],	जाइअ[9],	पाइअ[10]
आओइ	आओइ [11],	साओइ [12],	भाओइ[13]
इअए	करिअए[14],	पिअए [15]	
इआइ	पतिआइ[16],	उजिआइ[17]	
इआए	पतिआएत [18],	जिआए [19]	
इआउ	जिआउलि[20]		
इअओ	डिठिअओलए[21]		
ईअए	दीअए [22]		
उआइ	चुआइ [23]		

गीता-विद्यापति-
पृष्ठ संख्या/पद सं0

1- 113/123
2- 101/112
3- 125/134
4- 126/135
5- 375/383
6- 256/265
7- 261/270
8- 48/55
9- 313/325
10- 216/221
11- 148/155
12- 148/155
13- 148/155
14- 104/115
15- 428/438
16- 119/129
17- 121/131
18- 530/537
19- 132/140
20- 234/241
21- 348/325
22- 317/355
23- 132/140

उअए	छुअए[1]		
उअओ	तुअओ[2]		
एअइ	लेअइ[3],	देअइ[4]	
एअए	देअए[5]		
एआओ	देआओब[6]		
एअओ	तैअओ[7],	जैअओ[8]	
ओइअ	होइअ[9]		
ओइआ	होइआ[10],	धोइआ[11]	
ओअइ	फोअइते[12]		
ओआउ	सोआउबि[13]		
ओअए	रोअए[14],	होअए[15],	सोअए[16]
ओअउ	खोअउबिसि[17]		

चतुः स्वर- संयोग

विवेच्य-ग्रन्थ में चतुः स्वर संयोग भी प्राप्त हुए हैं । यद्यपि इनकी संख्या अत्यल्प है ।

अइ अए	पइअए[18]
अइ अओ	तइअओ[19]
ओआइअ	सोआइअ[20]

गीता-विद्यापति- पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 7/7
2- 358/365
3- 231/238
4- 231/238
5- 86/97
6- 238/244
7- 17/17
8- 87/99
9- 548/555
10- 29/32
11-519/526
12-194/200
13-238/244
14-107/118
15-353/360
16-509/515
17- 315/326
18- 470/477
19- 696/717
20- 297/314

त्रि स्वर- संयोग तालिका

	अइ	अउ	अए	अओ	आइ	आउ	आए	आओ	इअ	इआ	इए	इओ	ओइ
अ		×								×	×	×	
आ									×				×
इ			×	×	×	×	×						
ई			×										
उ			×	×	×								
ऊ													
ए	×		×					×			×		
ऐ				×									
ओ	×	×	×				×		×	×			
औ													

विश्लेष्य-ग्रन्थ में ऋ का उच्चारण मूल स्वर रूप में न होकर व्यंजन - रूप "रि" ही उच्चरित होता है, क्योंकि मूल स्वर के रूप में इसका उच्चारण विद्यापति से पूर्व प्राकृत एवं अपभ्रंश काल में ही समाप्त हो गया था । "गीत-विद्यापति " में "ऋ" सर्वत्र " रि" तथा " इरि" रूप में ही प्रयुक्त हुआ है ।

"रि" रूप में ,

रितुराइ[1] , रितु[2] रितुपति[3]

" इरि" रूप में

मिरिगि [4], बिरिदाबन[5]

तत्सम शब्दों में " ऋ " की मात्रा संस्कृत की भांति प्रयुक्त हुई है :

ऋतुपति[6], मृदङ्ग [7]

ऋतु [8] , गृम[9] , मृग [10]

अर्द्ध स्वर :

अर्द्ध स्वर के रूप में य और व तत्सम शब्दों में अपने अविकृत रूप में प्रयुक्त हुए है, जबकि तद्भव शब्दों में इनका विकृत रूप निम्नवत है ।

य	अ	मलयज	मलअज[11]
	उ	प्रिय	पिअ[12]
			पिउ [13]
	ज	युवती	जुवती [14]
व्य	बेआ	यौवन	जौवन [15]
		व्याधि	बेआधि [16]
		व्यापल	बेआपल [17]

गीत-विद्यापति पृष्ठ सं/पद सं0

1- 817/849
2- 821/853
3- 823/855
4- 635/650
5- 804/835
6- 600/608
7- 193/199
8- 601/609
9- 639/655
10-259/267
11-66/ 78
12-67/79
13-160/164
14-107/118
15-100/111
16-66/78
17-95/10

" व " के विकृत रूपों का विवरण निम्नवत है ।

व	अ	तरुवर	तरुअर[1]
	उ	तव	तुअ[2]
	ओ	बावला	बाउर[3]
	ब	जीव	जीउ[4]
	ब	श्रावण	साओन[5]
		वर्ण	बरन[6]
		वर	बर[7]
		वाहन	बाहन[8]

संयुक्त- स्वर

अपने स्वरूप ऐ, औ के साथ - साथ अइ , अउ रूप भी प्रयुक्त हुए है ।

ऐ	ऐछन[9] ,	तैअओ ;[10]	सहै[11]
औ	औषध[12],	चौसठि[13]	
अइ	अइसनि[14],	बइरि ;[15]	भनइ[16]
अउ	कउसले[17];	गउरि[18]	

गीत विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 95/106
2- 106/117
3- 133/141
4- 160/164
5- 12/12
6- 93/104
7- 112/122
8- 122/132
9- 41/45
10- 722/745
11- 250/259
12- 8/8
13- 8/8
14- 722/745
15- 740/763
16- 850/884
17- 643/661
18- 713/735

व्यंजन - विवरण

व्यंजन व्यतिरेकी अल्पतम युग्म

व्यंजनों की अल्पतम युग्मों में व्यतिरेकी स्थिति इस प्रकार है ।

/क/	कर [1]	" हाथ "	कीन[5]	" खरीदना "
/ख/	खर [2]	"तीव्र "	खीन[6]	" दुर्बल "
/ग/	गर [3]	" गरना"	गन [7]	" बहुवचन सूचक"
/घ/	घर [4]	"निवास-स्थान"	घन [8]	" बादल, घना "
/च/	चल [illegible]	" चलना "	चीर [11]	" वस्त्र "
/छ/	छल[10]	"कपट "	छीर[12]	" दूध "
/ज/	जर[13]	" जलना "	जोर[15]	" जोड़ना"
/झ/	झर[14]	" झरना "	झोर[16]	" हिलाना "
/ट/	पट[17]	" वस्त्र "		
/ठ/	पठ[18]	" पढ़ना "		
/ड/	डर [19]	" भय "		
/ढ/	ढर [20]	" ढरकना"		

गीता-विद्यापति- पृष्ठ सं0/पद सं0		
	1- 378/387	11- 739/762
	2- 649/666	12- 676/695
	3- 422/433	13- 8/8
	4- 749/772	14- 218/223
	5- 6/6	15- 662/679
	6- 229/236	16- 654/671
	7- 649/666	17- 756/778
	8- 11/11	18- 450/458
	9- 38/42	19- 507/514
	10- 413/425	20- 229/236

/त/	तिर[1]	" तट "	तन[3]	" शारीर"
/थ/	थिर[2]	"स्थिर "	थन[4]	" स्तन "
/द/	दस[5]	"संख्या"	दरब[7]	"धन "
/ध/	धस[6]	" धसंना"	धरब[8]	" धलंगी "
/प/	पल[9]	" समय "	पार[13]	" सहायक क्रिया"
/फ/	फल[10]	" परिणाम,खाद्यपदार्थ	फार[14]	" हल का फाल"
/ब/	बल[11]	" शाक्ति "	बार[15]	,"बाल,केश"
/भ/	भल[12]	" अच्छा"	भार[16]	" वजन "
/र/	राज[17]	" राज्य "		
/ल/	लाज[18]	" शर्म "		

गीत- विधापति -

पृष्ठ संख्या/पद सं०

1-	208/213	12-	9/9
2-	104/115	13-	475/483
3-	754/767	14-	747/769
4-	840/874	15-	554/561
5-	395/406	16-	514/521
6-	274/289	17-	651/668
7-	99/110	18-	650/667
8-	834/867		
9-	853/889		
10-	835/868		
11-	330/338		

व्यंजनों का मुक्त परिवर्तनगत प्रयोग :

स, श, ष	केश[1],	केस[2],	" बाल "
	महेश[3],	महेस[4],	" शंकर "
	दिश[5],	दिस[6],	" दिशा "
	विस[7],	विष[8],	"जहर "
	दोस[9],	दोष[10]	" अवगुण "
	रोस[11],	रोष[12]	" क्रोध "
व, ब	वसन[13],	बसन[14],	" वस्त्र "
	विसवास[15],	बिसवास[16]	" भरोसा "

उक्त उदाहरणों में स, श तथा स, ष और व, ब भिन्न -भिन्न व्यंजन इकाइयाँ है, किन्तु प्रत्येक युग्म का अर्थ एक ही है । अत: इन्हें मुक्त परिवर्तन के अन्तर्गत रखा गया है ।

ड तथा ड़ और ढ़ तथा ढ़ के मध्य अव्यतिरेकी स्थिति प्राप्त होती है ।

ड, ड़	छाडल[17],	छाड़ल[18]	" छोड़ दिया "
	बड[19],	बड़[20]	" बड़ा "
ढ, ढ़	बाढ़[21],	बाढ[22]	" नदी की बाढ़ "
	बेढल[23],	बेढ़ल[24]	" ढ़का हुआ "

गीत-विद्यापति-
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 656/673
2- 810/842
3- 805/836
4- 776/801
5- 822/854
6- 221/227
7-789/821
8- 49/57
9- 63/75
10- 49/56
11- 47/54
12- 49/56
13- 24/25
14- 509/515
15- 520/527
16- 705/726
17- 769/795
18- 389/400
19- 824/856
20- 606/616
21- 315/326
22- 641/657
23- 11/11
24 - 648/665

(ड और ड़), (ढ और ढ़) इन ध्वनि ग्रामों के मध्य परिपूरक वितरण की स्थिति नहीं मिलती है ।

व्यंजनों की प्रायोगिक स्थिति :

"गीत-विद्यापति" की भाषा में ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ड, ध, फ तथा भ व्यंजनों का प्रयोग शब्द आदि तथा मध्य में हुआ है । इन ध्वनियों का प्रयोग शब्द के अन्त में भी लिखित रूप से किया गया है, किन्तु महाप्राण व्यंजन का स्वर रहित प्रयोग संभव नहीं है, अतः यहाँ पर ध्वनियों के शब्दान्त स्थिति वाले उदाहरण नहीं दिये गये हैं :

मूल व्यंजन	आदि	मध्य	अन्त
क	कण्ठ[1]	जकर[4]	एक[7]
	करे[2]	एकहिं[5]	काक[8]
	कत[3]	निकट[6]	पिक[9]
ख	खटपट[10]	देखलि[13]	×
	खुंर[11]	तखनइ[14]	×
	खस[12]	माखल[15]	×
ग	गरजहुँ[16]	दिगन्तर[19]	जाग[22]
	राखा[17]	सगर[20]	अनुराग[23]
	गएबा[18]	नगर[21]	पराग[24]
घ	घट[25]	अघट[27]	×
	घन	दीघरि[28]	×

गीत/विद्यापति- पृष्ठ सं०/पद संख्या

1- 227/234
2- 231/238
3- 23?/24?
4- 235/242
5- 242/249
6- 245/251
7- 226/233
8- 239/245
9- 256/264
10-260/260
11- 273/288
12- 274/289
13- 258/267
14- 259/267
15- 264/276
16-272/287
17- 275/290
18- 276/292
19- 273/288
20- 277/293
21-277/293
22-277/293
23-290/307
24-290/307
25-317/327
26-648/665
27-317/327
28- 273/288

मूल व्यंजन	आदि	मध्य	अन्त
च	चरनहि[1]	वचने[3]	कुच[5]
	चढ़लि[2]	आँचर[4]	कच[6]
छ	छटा[7]	पुछसि[10]	×
	छथि[8]	अछल[11]	×
	छत्र[9]	उछल[12]	×
ज	जलधर[13]	भुजङ्गिनि[15]	उरज[17]
	जगत[14]	निरजन[16]	पकँज[18]
झ	झटित[19]	झांझर[21]	×
	झरथ[20]	बुझल[22]	×
ट	टक[23]	कंटक[25]	बाट[27]
	टका[24]	पाटलि[26]	उचाट[28]
ठ	ठकना[29]	ठलि[31]	×
	ठमा[30]	बैठलि[32]	×

गीता - विद्यापति- पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 715/737
2- 720/743
3- 716/738
4- 719/742
5- 459/467
6- 416/428
7- 419/430
8- 401/414
9- 396/407
10- 417/429
11- 399/410
12- 394/404
13- 420/431
14-416/427
15-420/431
16-421/432
17-421/432
18-420/431
19-403/417
20-366/373
21-400/415
22-401/415
23-243/250
24-847/881
25-294/312
26-290/307
27-277/293
28-273/288
29-782×810
30-772/797
31-286/303
32-260/269

मूल व्यंजन	आदि	मध्य	अन्त
ड	डसु[1]	पण्डित[4]	×
	डमरू[2]	कुडमल[5]	×
	डर[3]	कुण्डल[6]	×
ड़	×	गाड़ल[7]	×
	×	घोड़बो[8]	×
	×	लड़ए[9]	×
त	ततहि[10]	जतने[12]	कता[14]
	तनु[11]	जतए[13]	करत[15]
थ	थन[16]	पाथर[18]	×
द	थम्भ[17]	माथर[19]	×
द	वह[20]	निरदय[22]	नाद[24]
	दरसे[21]	वेदन[23]	सबद[25]
ध	धनि[26]	माधव[28]	×
	धवल[27]	बन्धव[29]	×

गीत-विद्यापति-
पृष्ठ सं0/पद सं0

1-232/239
2-795/827
3-787/817
4-294/311
5-290/307
6-242/248
7-739/762
8-745/768
9-760/783
10-298/315
11-297/314
12-298/315
13-298/315
14-300/316
15-298/315
16-273/288
17-559/566
18-264/276
19-829/862
20-289/306
21-285/302
22-289/306
23-289/306
24-289/306
25-286/303
26-286/303
27-819/851
28-287/304
29-286/303

मूल व्यंजन	आदि	मध्य	अन्त
प	परसन[1]	झापल[3]	दीप[5]
	पहु[2]	चापल[4]	पाप[6]
फ	फल[7]	सफल[9]	×
	फसितहुँ[8]	सिरिफल[10]	×

शब्दान्त में "फ" की स्थिति नहीं प्राप्त होती है ।

ब	बसन[11]	अबला[13]	सब[15]
	बघछला[12]	आसहु[14]	करब[16]
भ	भन[17]	अभय[19]	×
	भ्रम[18]	अभरन[20]	×
य	युवति[21]	दुनयान[23]	ताकय[25]
	यामिनि[22]	पयोधर[24]	करय[26]
र	रथ[27]	नारद[29]	सरीर[31]
	रउरि[28]	सिरम[30]	इसर[32]

गीत-वियापति-
पृष्ठ सं०/पद सं०

1-549/556
2-549/556
3-547/554
4-547/554
5-549/556
6-534/542
7-514/520
8-835/869
9-534/541
10-846/879
11-795/827
12-795/827
13-791/824
14-790/822
15-793/826
16-790/823
17-780/807
18-776/802
19-781/808
20-755/777
21-16/17
22-329/337
23-12/12
24-23/24
25-24/25
26-24/25
27-763/787
28-781/809
29-758/781
30-758/781
31-793/826
32-785/813

मूल व्यंजन	आदि	मध्य	अन्त
ल	लय [1]	गुनलन्हि [3]	आएल [5]
	लवा [2]	जपलन्हि [4]	हटल [6]
व	वदन [7]	पवन [9]	वैभव [11]
	वध [8]	अवगाह [10]	नव [12]
श	शरणा [13]	दशान [15]	पाशा [17]
	शाङ्.ख [14]	कुशाले [16]	महेशा [18]
ष	षठी [19]	अष्टमि [21]	वर्ष [23]
	षन [20]	भूषणा [22]	विष [24]
स	सम [25]	जैसन [27]	घास [29]
	समाज [26]	अबसओ [28]	रस [30]
ह	हरिन [31]	मुक्ताहारे [33]	दह [35]
	हिम [32]	कण्ठहार [34]	अथाह [36]

गीत- वियापति पद संख्या/पद सं०			
	1- 765/789	14-805/836	27-705/726
	2- 764/788	15-805/836	28-705/726
	3- 782/810	16-71/82	29-706/727
	4- 782/810	17-805/836	30-706/727
	5- 783/812	18-805/836	31-432/443
	6- 783/812	19-767/792	32-147/154
	7- 8/8	20-797/829	33-435/445
	8- 5/5	21-767/792	34-360/367
	9- 7/7	22-191/197	35-47/54
	10- 9/9	23-720/744	36-113/123
	11- 9/9	24-49/57	
	12- 7/7	25-705/726	
	13- 356/363	26-705/726	

" गीत-विद्यापति" में "स" की चार प्रयोग स्थितियाँ प्राप्त होती हैं ।

§क§ प्रथम स्थिति में " स" अपने मूल रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

विष्हु[1] , पुरुष[2] , कोष[3]

§ख§ द्वितीय स्थिति में " ष" के स्थान पर "स" प्राप्त हुआ है ।

सुपुरुस[4] , विसधर[5] , दोसे[6]

§ग§ तृतीय स्थिति में " ष " के स्थान पर " ख " का प्रयोग हुआ है ।

बरख[7], बिखम[8] , अमरखें[9]

§घ§ चतुर्थ स्थिति " ख " के स्थान पर " ष" आया है परन्तु उसका उच्चारण " ख " ही होता है ।

भूषल[10], भिषारि[11], देषल[12]

गीत-विद्यापति -
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 701/722
2- 97/108
3- 733/757
4- 89/100
5- 287/304
6- 64/76
7- 219/224
8- 249/258
9- 699/720
10- 37/41
11- 302/318
12- 34/37

व्यंजन - संयोग

"गीत-विद्यापति" में व्यंजन -संयोग की प्रवृत्ति सर्वत्र पाई जाती है प्राप्त व्यंजन- संयोग को दो प्रकार से दर्शाया जा सकता है :

1- समान व्यंजन - संयोग

2- असमान व्यंजन -संयोग

द्विव्यंजन- संयोग उपरोक्त दोनों प्रकार के व्यंजन - संयोग के अन्तर्गत प्राप्त होता है । विश्लेष्य - भाषा की सामान्य प्रवृत्ति द्विव्यंजन -संयोग की पाई जाती है ।

समान व्यंजन- संयोग

समान व्यंजन- संयोग या व्यंजन द्वित्व शब्द के आदि तथा अन्त में नहीं प्राप्त होता है । अन्तिम स्थिति में संयुक्त व्यंजन संभव नहीं है ,अत: समान व्यंजन- संयोग शब्द के मध्यस्थिति में ही उपलब्ध होते हैं ।

समान व्यंजन - संयोग	शब्द के मध्य में
क् + क = क्क	चक्क[1]
ख् + ख = ख्ख	विख्ख[2] , रख्खिअ[3]
ग् + ग = ग्ग	दुग्गम[4]
ज् + ज = ज्ज	पिज्जर[5], उज्जल[6] , भुज्जिअ[7]

गीत-विद्यापति - पृष्ठ संख्या/पद सं0
1- 817/849
2- 48/56
3- 855/890
4- 854/890
5- 14/14
6- 23/24
7- 713/735

समान व्यंजन- संयोग	शब्द के मध्य में
ञ् + ञ = ञ्ञ	मञ्ञरि कुल[1]
ट + ट = ट्ट	बट्टा[2]
ठ + ठ = ठ्ठ	अन्तेठ्ठि[3] बइठ्ठो[4]
ड + ड = ड्ड	छड्डिअ[5]
त + त = त्त	उत्तुङ्ग[6] मत्त[7]
न + न = न्न	उन्नत[8], विभिन्न[9], खिन्न[10]
द + द = द्द	समुद्द[11]
फ + फ = फ्फ	फफ्फरिस[12]
म + म = म्म	स्वधम्म[13], धम्मिल[14]
ल + ल = ल्ल	मल्ली[15], वल्लभ[16] पल्लव[17]
स + स = स्स	दस्सन[18]

उक्त व्यंजन - द्वित्त्व शब्द के मध्य में ही उपलब्ध हैं । आरम्भ तथा अन्त में द्वित्त्वीकरण की स्थिति प्राप्त नहीं होती है ।

गीत- विद्यापति - पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 28/31
2- 764/788
3- 856/891
4- 856/891
5- 856/891
6- 23/24
7- 273/288
8- 273/288
9- 354/361
10- 824/856
11- 855/891
12- 854/890
13- 855/890
14- 540/548
15- 35/39
16- 144/151
17- 345/351
18- 117/126

द्वित्व- व्यंजन तालिका

	क	ख	ग	ज		ट	ठ	ड	त	द	न	फ	म	ल	स
क	×														
ख		×													
ग			×												
ज				×											
					×										
ट						×									
ठ							×								
ड								×							
त									×						
द										×					
न											×				
फ												×			
म													×		
ल														×	
स															×

असमान व्यंजन - संयोग

"गीत- विद्यापति " में असमान व्यंजन- संयोग , समान व्यंजन - संयोग (द्वित्व- व्यंजन) की अपेक्षा अधिक संख्या में उपलब्ध है । असमान व्यंजन -संयोग शब्द के आदि तथा मध्य दोनों स्थितियों में प्राप्त होता है । शब्द के आदि में व्यंजनों के संयुक्त होने की प्रवृत्ति मध्य की अपेक्षाकृत कम है । असमान व्यंजन - संयोगों में संयोजन की प्रवृत्ति समवर्गीय एवं विषमवर्गीय दो प्रकार की रही है । अर्द्ध स्वरों " य , व " तथा " र" के साथ संयोजन की प्रवृत्ति अन्य व्यंजनों की अपेक्षा अधिक रही है । इनमें भी " र " के साथ अन्य व्यंजनों का संयोग , " य " तथा " व " के साथ संयोग से अपेक्षाकृत अधिक हुआ है । असमान व्यंजन संयोग दो प्रकार के प्राप्त हुए हैं ।

1- द्विव्यंजन - संयोग

2- त्रिव्यंजन - संयोग

द्विव्यंजन - संयोग को पुन: दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है ।

1- समवर्गीय व्यंजन - संयोग

2- विषमवर्गीय व्यंजन - संयोग

समवर्गीय व्यंजन - संयोग

ये व्यंजन - संयोग शब्द के मध्य में ही उपलब्ध होते हैं ।

व्यंजन - संयोग | शब्द के मध्य में

नासिक्य + स्पर्श :

ङ	+	क	= ङ्क	वाङ्क[1], सङ्कुर[2], सङ्कट[3]
ङ	+	ख	= ङ्ख	सङ्ख[4]
ङ	+	ग	= ङ्ग	अनङ्ग[5], रङ्ग[6], सिङ्गार[7]
ङ	+	घ	= ङ्घ	सङ्घ[8], सङ्घाति[9]
ञ	+	च	= ञ्च	पञ्चबान[10], चञ्चल[11], मुञ्चय[12]
ञ	+	ज	= ञ्ज	कुञ्जरगमनी[13], खञ्जने[14], जलाञ्जलि[15]
ण	+	ट	= ण्ट	कण्टक[16]
ण	+	ठ	= ण्ठ	कण्ठहार[17], कण्ठ[18]
ण	+	ड	= ण्ड	मण्डल[19], चण्डाल[20], दण्ड[21]
न	+	त	= न्त	कान्ती[22], चिन्ताएं[23], कन्त[24]
न	+	द	= न्द	सुन्दर[25], मन्द[26], धन्द[27], सन्देह[28]
न	+	ध	= न्ध	बन्ध[29], अन्धकार[30]
म	+	प	= म्प	चम्पक[31], कम्पित[32]
म	+	ब	= म्ब	लम्बित[33], नितम्बिनि[34]
म	+	भ	= म्भ	परिरम्भन[35], कुम्भ[36], जम्भसि[37]

गीत- विद्यावति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 8/8
2- 54/62
3- 560/566
4- 182/186
5- 5/5
6- 7/7
7- 27/29
8- 154/160
9- 366/373
10- 15/16
11- 32/35
12- 54/62
13- 53/61
14- 94/105
15- 218/225
16- 62/74
17- 61/72
18- 92/103
19- 11/11
20- 26/28
21- 30/32
22- 1/1
23- 8/8
24- 26/28
25- 10/10
26- 7/7
27- 14/15
28- 31/34
29-4/4
30-38/41
31-5/5
32-21/21
33-11/11
34-18/18
35-50/57
36-387/397
37-735/758

अल्प प्राण + महाप्राण :				शब्द के मध्य में
च + छ	= च्छ			विच्छेद[1], अच्छर[2], उच्छवे[3]
द + ध	= द्ध			सिद्धि[4], क्रुद्ध[5]

विषम वर्गीय व्यंजन-संयोग :

		शब्द के आदि में	शब्द के मध्य में
नासिक्य + काकल्य			
न + ह	= न्ह	-	कान्ह[6], चिन्हअ[7]
म + ह	= म्ह	-	कुम्हिलाएल[8], कुम्हार[9]
नासिक्य + मूर्द्धन्य			
न + ट	= न्ट	-	धान्टू[10]
नासिक्य + नासिक्य			
न + म	= न्म	-	जन्म[11]
स्पर्श्य + स्पर्श्य			
क + त	= क्त	-	भक्ति[12], भक्त[13]
संघर्षी + स्पर्श्य			
स + त	= स्त	स्तुति[14], स्तम्भ[15]	बिस्तरा[16]
स + थ	= स्थ	स्थलि[17]	-
संघर्षी + नासिक्य			
स + म	= स्म	स्मित[18]	भस्म[19]

गीत-विद्यापति-
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 147/154
2- 247/255
3- 856/891
4- 194/200
5- 4/4
6- 126/135
7- 259/267
8- 348/355
9- 805/836
10- 46/53
11- 805/836
12- 805/836
13- 805/836
14- 805/836
15- 592/598
16- 732/756
17- 174/179
18- 394/404
19- 764/788

अर्द्ध स्वर "य" और "व" के साथ व्यंजन-संयोग

स्पर्श्य + अर्द्धस्वर "य"				शब्द के आदि में	शब्द के मध्य में
ख	+	य	= ख्य	ख्यात[1]	-
ग	+	य	= ग्य	ग्यासदीन[2]	--
च	+	य	= च्य	-	परिच्युति [3]
त	+	य	= त्य	त्याग[4]	दैत्य[5]
द	+	य	= द्य	-	विद्यापति[6]
ध	+	य	= ध्य	ध्यान[7]	—
ऊष्म + अर्द्धस्वर "य"					
स	+	य	= स्य	स्याम[8]	--
स्पर्श्य + अर्द्धस्वर "व"					
ज	+	व	= ज्व	ज्वाला[9]	-
द	+	व	= द्व	द्वादस[10], द्विजराज[11]	-
ध	+	व	= ध्व	ध्वज[12]	-
ऊष्म + अर्द्धस्वर "व"					
श	+	व	= श्व	श्वास[13]	-
स	+	व	= स्व	स्वामिनाथ[14] स्वर[15]	-
नासिक्य + अर्द्धस्वर "व"					
म	+	व	= म्व	-	सम्वादइ[16]
अर्द्ध स्वर + अर्द्धस्वर					
व	+	य	= व्य	व्याध[17]	-

गीत-विद्यापति - पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 720/743
2- 738/760
3- 805/836
4- 219/224
5- 806/837
6- 149/156
7- 264/275
8- 392/402
9- 318/328
10-4/4
11-26/28
12- 7/7
13-175/180
14-260/268
15-331/339
16-147/154
17-45/51

" र " के साथ प्राय: सभी वर्ग के व्यंजन संयुक्त होते है, परन्तु यहसंयोग शब्द के मध्य स्थिति में ही प्राप्त होता है ।

र + व्यंजन :				शब्द के मध्य में
र	+	ग	= र्ग	दुर्ग [1]
र	+	द	= र्द	विमर्द [2]
र	+	ध	= र्ध	निर्धन [3]
र	+	भ	= र्भ	गर्भ [4]
र	+	प	= र्प	कर्पूर [5], समर्पिलुँ [6]
र	+	ण	= र्ण	वर्णन [7]
र	+	न	= र्न	पूर्नचन्द्र [8]
र	+	य	= र्य	कार्य [9]
र	+	ष	= र्ष	वर्षा [10]

इसी प्रकार प्राय: प्रत्येक वर्ग के व्यंजन के साथ " र" का संयोग होता है, तथा यह संयोग शब्द के आदि और मध्य दोनों स्थितियों में उपलब्ध होता है ।

व्यंजन + र				शब्द के आदि में	शब्द के मध्य में
क	+	र	= क्र	क्रुद्ध [11]	सुवक्र [12] चक्र [13]
ग	+	र	= ग्र	–	परतिग्रह [14]
त	+	र	= त्र	त्रिवली [15] त्रिपुर [16]	छत्र [17]
द	+	र	= द्र	–	स्द्रक [18]
प	+	र	= प्र	प्रेम [19] प्रतिवादी [20] प्रलय [21]	–
भ	+	र	= भ्र	भ्रमि [22] भ्रमरा [23]	–
ब	+	र	= ब्र	ब्रह्मनाद [24] ब्रज [25] ब्रह्मा [26]	–
स	+	र	= स्र	स्रवन [27]	सहस्र [28]
श	+	र	= श्र	–	श्मश्रु [29]

गीत-विद्यापति पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 805/836
2- 805/836
3- 795/827
4- 805/836
5- 793/826
6- 798/830
7- 601/609
8- 291/307
9- 805/836
10- 33/36
11- 805/836
12- 291/307
13- 574/581
14-377/385
15- 90/101
16- 201/207
17-396/407
18-763/787
19-29/32
20-822/854
21-360/367
22-160/164
23-176/181
24-283/300
25-157/162
26-810/842
28-805/836
29-774/800

प्रत्येक वर्ग के व्यंजन के साथ " ऋ " अपनी मात्रा " ृ " के साथ संयुक्त हुआ है । यह संयोग एक स्थल को छोड़कर सर्वत्र शब्द के आदि में ही प्राप्त हुआ है

व्यंजन + ऋ				शब्द के आदि में	शब्द के मध्य में
क	+	ऋ	= कृ	कृत[1] कृपिन[2]	–
ग	+	ऋ	= गृ	गृम[3]	–
घ	+	ऋ	= घृ	घृत[4]	–
च	+	ऋ	= चृ	चृम्बने[5]	–
ध	+	ऋ	= धृ	धृट	–
भ	+	ऋ	= भृ	–	निभृत[7]
न	+	ऋ	= नृ	नृप[8] नृत्य[9]	–
म	+	ऋ	= मृ	मृगङ्का[10] मृगमद[11]	–
स	+	ऋ	= सृ	सृङ्खल[12]	–
ह	+	ऋ	= हृ	हृदय[13]	

कुछ अन्य प्रकार के व्यंजन-संयोग :

ब	+	ज	= ब्ज	–	अब्ज[14]
श	+	म	= श्म	श्मश्रु[15]	–
प	+	त	= प्त	–	सप्तमी[16]
ष	+	ठ	= ष्ठ	–	षष्ठी[17]
द	+	घ	= द्घ	–	उद्घट[18]
ष	+	प	= ष्प	–	पुष्पते[19]
ष	+	ट	= ष्ट	–	अष्ट[20] अष्टमि[21]
ल	+	ह	= ल्ह	–	लेल्हनि[22]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 805/836
2- 715/736
3- 639/655
4- 808/840
5- 552/559
6- 793/826
7- 379/387
8- 184/188
9- 805/836
10- 148/152
11- 162/167
12- 333/341
13- 2/2
14- 124/133
15- 774/800
16- 767/792
17- 767/792
18- 744/766
19- 290/307
20- 805/836
21- 767/792
22- 261/270

त्रि व्यंजन - संयोग

"गीत-विद्यापति" में त्रि व्यंजन संयोग भी प्राप्त होता है । ये शब्द के मध्य में पाये जाते हैं । इन संयोगो की संख्या अत्यल्प है ।

- र्ज्ज — दुर्ज्जन[1] , दुर्ज्जय[2]
- र्द्द — द्विर्द्दुर[3]
- न्द्र — चन्द्र[4] , इन्द्र[5] , नरेन्द्र[6]
- र्म्म — निर्म्मल[7]
- म्भ्र — सम्भ्रम[8]
- न्ध्र — रन्ध्र[9]
- म्ब्य — चुम्ब्यमान[10]
- र्द्ध — वार्द्धित[11]
- न्त्र — मन्त्र[12] , जन्त्र[13]

गीत- विद्यापति - पृष्ठ सं०/पद सं०

1-640/656
2-41/46
3-48/56
4-245/251
5-323/331
6-855/890
7-291/307
8-343/349
9-855/891
10- 805/836
11- 805/836
12- 659/676
13- 540/548

नासिक्य-व्यंजन :

'विवेच्य-ग्रन्थ' में " ङ. ञ्, ण्, न, म पाँच नासिक्य-व्यंजनों का प्रयोग हुआ है, इनमें से ङ. ञ् तथा ण ध्वनियाँ दो रूपों में प्रयुक्त हुई हैं- प्रथम में ये अपने मूल रूप में तथा दूसरे में अनुस्वार "ं" के रूप में। इनके प्रथम रूप, द्वितीय की अपेक्षाकृत अधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं, शेष न् और म् अपने मूल रूप में ही व्यवहृत हैं। इन ध्वनियों की प्रयोग स्थिति निम्नवत है।

व्यंजन	शब्द के आदि में	शब्द के मध्य में	शब्द के अन्त में
ङ.	-	अनङ्ग[1]	-
	-	रङ्ग[2]	-
ञ्	ञमित्र[3]	पञ्चम[4]	
	ञनुभव[5]	काञ्चन[6]	-
ण	-	शोणित[7]	-
	-	चण्डाल[8]	-
न	नहि[9]	गनपत[10]	चानन[11]
	ननद[12]	अनका[13]	जन[14]
म	मन[15]	गमन[16]	ठाम[17]
	महेसर[18]	उमत[19]	हम[20]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 5/5
2- 7/7
3- 51/59
4- 817/849
5- 65/77
6- 814/846
7- 805/836
8- 26/28
9- 754/777
10- 753/776
11- 746/768
12- 749/772
13- 755/777
14- 247/255
15- 746/769
16- 748/770
17- 748/770
18- 747/769
19- 757/779
20- 748/771

"ङ, ञ, ण" के स्वतन्त्र एवं अनुस्वार रूप :

ङ बाङ्क[1], सारङ्ग[2], अनङ्ग[3] तरङ्ग[4]

शंकर[5], संकट[6], रंगा[7], गंग[8]

ञ चञ्चल[9], वञ्चित[10], आञ्चर[11]

वंचिते[12], संचिते[13], मंजरी[14]

ण चण्डाल[15], खण्डसि[16], खमण्डल[17]

कंटके[18], झारिखंड[19], मंडप[20]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 8/8	11- 194/200
2- 1/1	12- 823/855
3- 5/5	13- 823/855
4-13/13	14- 65/77
5-790/823	15- 26/28
6-790/822	16- 50/57
7-810/842	17- 37/41
8-777/803	18- 842/876
9-32/35	19- 779/806
10-44/50	20- 752/775

खण्डेतर ध्वनिग्राम :

खण्डेतर ध्वनिग्राम के अन्तर्गत, अनुनासिकता, व्यंजन द्वित्त्वता, विवृत्ति तथा स्वर मात्रा का प्रयोग किया गया है ।

/ अनुनासिकता / : / ँ /

विश्लेष्य-भाषा में सभी स्वर-ध्वनिग्रामों का अनुनासिक रूप प्राप्त हुआ है । सामान्य रूप से अनुनासिकता अर्थ-भेदक नहीं रहती है , परन्तु विवेच्य-ग्रन्थ में एकाध स्थल पर इसका अर्थ-भेदक रूप उपलब्ध हुआ है ।

अल्पतम युग्म " अर्थ - भेदक "

भाग[1] "भाग्य " आक[3] " वृक्ष विशेष "
भाँग[2] " नशीलापदार्थ" आँक[4] " गोद "

अर्थ - अभेदक युग्म :

भान[5] " कहना " मास[7] " माह " आन[9] " दूसरा "
भाँन[6] " कहना " माँस " माह " आँन[10] " दूसरा "

अनुनासिक - स्वर :

स्वरों को अनुनासिकता चन्द्र बिन्दु (ँ) द्वारा दर्शायी गई है । अनुनासिकता शब्द के आदि, मध्य तथा अन्तिम तीनों स्थितियों पाई जाती है ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 759/782
2- 765/790
3- 762/785
4- 627/639
5- 690/710
6- 816/848
7- 156/162
8- 817/849
9- 8/8
10-673/692

स्वर	प्रयोग		
/ँ /	शब्द आदि	शब्द मध्य	शब्द अन्त
अँ	अँधेअ [1]	भँघोटना [3]	देअँ [5]
	अँगना [2]	सँतावे [4]	निअँ [6]
आँ	आँखी [7]	गेआँने [9]	कन्हैआँ [11]
	आँचर [8]	बाँसि [10]	बनिआँ [12]
इँ	–	कुगइँआ [13]	तेइँ [14]
ईँ	–	साँचीअ [15]	देलीँ [16]
उँ	उँच [17]	मुँह [18]	उहउँ [19]
ऊँ	ऊँच [20]	जँओल [23]	कहऊँ [21]
एँ	एँ [22]	जँओल [23]	सोएँ [24]
ऐँ	ऐँलिहु [25]	–	तैँ [26]
ओँ	–	खेओँल [27]	कहिबओँ [28]
औँ	–	भेलोहँ [29]	तौँ [30]

गीत–विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1– 34/37
2– 792/825
3– 792/825
4– 787/816
5– 849/883
6– 550/557
7– 10/10
8– 10/10
9– 616/628
10– 13/13
11– 636/651
12– 808/839
13– 368/376
14– 380/388
15– 669/688
16–782/810
17– 550/557
18– 18/180
19– 781/809
20– 831/864
21– 26/28
22– 19/19
23– 628/640
24– 276/292
25– 538/545
26– 638/653
27– 317/327
28– 715/737
29– 847/881
30– 23/24

'विवेच्य-ग्रन्थ' की भाषा में अनुनासिकता का प्रयोग कारकीय सम्बन्ध को प्रकट करने के लिये भी किया गया है ।

ऋतुँ बसन्तँ हे अमृत रसेँ सानि[1] " ऋतु बसन्त को " " कर्मकारक "

कमलँ झरए मकरन्दा[2] " कमल से " " अपादान कारक

रहितहुँ पसुक समाजैँ [3] " समाज में " " अधिकरण कारक

<u>द्वित्त्वता :</u>

व्यंजन - द्वित्त्वता के कारण शब्दों में अर्थ- विभेद की स्थिति प्राप्त होती है :

खिन [4] "दुर्बल " मत[6] " विचार "
खिन्न [5] "उदास" मत्त[7] " मतवाला "
समान [8] " समतासूचक"
सम्मान [9] " आदर "

विवृत्ति :

" गीत- विद्यापति" में कुछ शब्द इस प्रकार के प्राप्त हुए हैं जिनका उच्चारण दो प्रकार से हो सकता है । ऐसा व्यतिरेक विवृत्ति के कारण होत है । प्रथम प्रकार के उच्चारण में बिना रुके पूरा पद उच्चरित होता है, किन्तु दूसरे उच्चारण में पद के मध्य कहीं पर क्षण मात्र रुक कर उच्चारण पूर्ण होता है । इस क्षणिक प्रक्रिया अथवा आन्तरिक विवृत्ति के कारण अर्थ- वैभिन्न मिलता है । विवृत्ति से उच्चारों में व्यतिरेकी स्थिति प्राप्त होती है और इसे { +- } रूप में दर्शाया गया है :

{+- } /मअन /[10] " कामदेव" / रसना /[12] " करधनी "
/मअ+- न}[11] "मै नही" / रस+-ना/[13] " रस नही "
/मनमथ /[14] " कामदेव "
/ मन+-मथ /[15] " मन को मथ रहा है

गीत- विद्यापति 1- 193/199 8- 38/42
2- 191/197 9- 560/567 15- 222/228
पृष्ठ सं0/पद सं0 3- 742/764 10- 197/202
4- 75/86 11- 197/202
5- 640/656 12- 473/481
6- 60/78 13- 422/433
7- 430/441 14- 222/228

स्वर - मात्रा :

"अ" को छोड़कर शेष स्वरों की मात्राएं इस प्रकार मिलती हैं ।

अा - ा
इ - ि
ई - ी
उ - ु
ऊ - ू
ए - े
ऐ - ै
ओ - ो
औ - ौ
ऋ - ृ

इन स्वरों की मात्राओं को छोड़कर ध्वनिग्रामों के अन्तर्गत रखा गया है, क्योंकि इन मात्राओं का अलग से प्रयोग संभव नहीं है । ये व्यंजनों के साथ ही प्रयुक्त होकर आती हैं । इन मात्राओं का पुनः कोई विभाजन नही हो सकता है फिर खण्डेतर वही ध्वनियाँ कहलाती हैं जिसका पुनः कोई खण्ड न हो सके ।

स्वर- मात्राओं की प्रायोगिक स्थिति :

स्वर	आदि	मध्य	अन्त
अ	अपजस[1]	धवल[2]	मेघ [3]
आ	आज [4]	अधाहि[5]	अइसना[6]
इ	इह [7]	मलआनिल[8]	इथि [9]
ई	ईस[10]	पीत[11]	नीवी[12]
उ	उपवन[13]	नूपुर[14]	कानु [15]
ऊ	ऊपर[16]	दूर [17]	कानू[18]
ए	एकसर [19]	बेवहारे[20]	बैदे [21]
ऐ	ऐसन [22]	तैसनि [23]	सहै[24]
ओ	ओत [25]	तोहर [26]	मो[27]
औ	औघट [28]	कौसले[29]	–

गीत-विधापति
पृष्ठ संख्या/
पद संख्या

1- 271/285
2- 819/851
3- 273/288
4- 240/246
5- 522/529
6- 501/508
7- 366/373
8-240/246
9-352/359
10-752/775
11-473/481
12-473/480
13-339/346
14-507/513
15-45/51
16- 341/347
17-507/513
18-41/45
19-2/2
20-121/131
21-297/314
22-591/596
23-545/552
24-250/259
25-109/120
26-15/15
27-80/91
28-636/651
29-679/698

औकारान्त स्वर मात्रा शब्द के अन्त में " गीत-विद्यापति" में प्राप्त नहीं होते हैं ।

ध्वनि- परिवर्तन

ध्वनि- आगम :

विवेच्य ग्रन्थ में उपलब्ध ध्वनि परिवर्तन, ध्वनि-आगम के रूप में देखा जा सकता है । उच्चारण-सुविधा की दृष्टि से स्वर "अ" का आगम शब्द के मध्य में हुआ है एवं इ, ई स्वर का आगम शब्द के अन्त में हुआ है ।

स्वरागम :

"अ" उ" स्वर का आगम

प्रकट	परकट [1]
दुर्जन	दरजन [2]
वर्ष	वरस [3]
पुरुष	पउरूस [4]

"इ तथा ई" स्वर का आगम

तीन	तीनि [5]
चार	चारि [6]
गमार	गमारी [7]

व्यंजनागम :

शब्द के आदि तथा अन्त में "ह" व्यंजन के आगम के कतिपय उदाहरण प्राप्त होते हैं ।

उल्लास	हुलास [8]
भौं	भौंह [9]

अक्षरागम :

अक्षरागम कामात्र एक उदाहरण प्राप्त हुआ है ।

भ्रमर	भमहर [10]

गीत-विद्यापति- पृष्ठ संख्या/पद संख्या
1- 731/755
2- 221/227
3- 86/97
4- 48/65
5- 241/247
6- 250/259
7- 637/652
8- 256/264
9- 412/424
10- 836/870

ध्वनि- लोप :

शब्दों के मध्य किसी ध्वनि के लुप्त होने से हुए परिवर्तन को ध्वनि-लोप कहते है । "गीत-विद्यापति" में स्वर-लोप, व्यंजन लोप तथा अक्षर लोप तीनों स्थितियां प्राप्त हुई हैं , यद्यपि इनकी संख्या अत्यल्प है ।

स्वर - लोप :

अभ्यन्तर	भीतरहु[1]
भूषण	भूसन[2]
प्रतीति	परतीत[3]

उपरोक्त उदाहरणों में आदि स्वर आ, मध्य स्वर ऊ तथा अन्त्य स्वर इ का लोप द्रष्टव्य है ।

व्यंजन - लोप :

आकास्मिक	अकामिक[4]
स्फटिक	फटिक[5]
नरपति	नरवइ[6]
दुग्ध	दूध[7]
श्याम	साम[8]
श्यामल	सामर[9]
अश्वमेघ	असमेध[10]
सुप्रभु	सुपहु[11]
सहस्त्र	सहस[12]

उपरोक्त उदाहरणों में शब्दों के मध्य तथा अन्त्य स्थिति से क्रमशः "स", त, ग, य, व तथा र" व्यंजनों का लोप हुआ है ।

अक्षर- लोप

"विश्लेष्य-भाषा" में अक्षर लोप के उदाहरण शब्द के आदि तथा मध्य स्थितियों में ही मिलते हैं ।

मृणाल	नाल[13]
व्याकुल	आकुल[14]
भाण्डागार	भंडार[15]

गीत-विद्यापति- पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 392/402
2- 284/310
3- 15/15
4- 19/19
5- 57/67
6- 855/890
7- 434/444
8- 21/21
9- 10/10
10- 856/891
11- 85/96
12- 69/80
13- 846/879
14- 642/658
15- 45/52

उपरोक्त में शब्दों के आदि अक्षर " हृ ,ध और मध्य अक्षर "णा" का लोप हुआ है ।

<u>समीकरण</u> :

समीकरण के अन्तर्गत शब्द के मध्य दो ध्वनियाँ समीप आने पर एक दूसरे को प्रभावित करती हैं तथा परिणामस्वरूप भिन्न ध्वनियाँ समरूप हो जाती हैं समीकरण की प्रक्रिया शब्दों की आन्तरिक योजना तथा प्रासंगिक योजनाओं को प्रभावित करती हैं । "गीत-विद्यापति" में स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों के प्रभाव-स्वरूप यह समीकरण दो प्रकार से परिलक्षित हुआ है । प्रथमत: अग्रगामी ,दूसरे पश्चगामी समीकरण ।

स्वर - समीकरण

अपूर्व	अपुरुब[1]
गुप्त	गुपुत[2]
मुक्ति	मुकुति[3]

यहाँ पर " उ" स्वर का अगगामी समीकरण हुआ है ।

दृष्टि	दिठि[4]
जगमोहनि	जगमोहिनि[5]

इन उदाहरणों में "इ" स्वर का पश्चगामी समीकरण हुआ है ।

व्यंजन- समीकरण :

नक्षत्र	नखखत[6]
चक्र	चक्क[7]
धर्म	धम्म[8]

यहाँ "ख" व्यंजन का अग्रगामी तथा "क" एवं "म" व्यंजनों का पश्चगामी समीकरण हुआ है ।

अन्य-ध्वनि परिवर्तन:

'विवेच्य-ग्रन्थ' में शब्दों के मध्य ध्वनि परिवर्तन कुछ निश्चित नियमों के अन्तर्गत प्राप्त हैं । ये परिवर्तन इस प्रकार हैं

क- संयुक्त व्यंजनों में से एक का लोप हो जाता है तथा उसके पूर्व का स्वर दीर्घ हो जाता है ।

दुग्ध	दूध[9]	वक्र	बाँक[10]	पञ्जर	पाँजर[11]
हस्त	हाथ[12]	अर्क	आक[13]	दर्प	दाप[14]

गीत-विद्यापति- पृष्ठ सं0/पद सं0
1- 330/338
2- 735/758
3- 551/558
4- 642/658
5- 643/660
6- 735/758
7- 817/849
8- 200/206
9- 434/444
10- 357/364
11- 149/156
12- 492/500
13- 787/817
14- 856/891

(ख) नासिक्य व्यंजन संयुक्त शब्दों में नासिक्य व्यंजन अपने पूर्ववर्ती स्वर को दीर्घ एवं अनुनासिक बनाकर लुप्त हो जाता है ।

अञ्चल	आँचर[1]
कम्प	काँपु[2]
अङ्ग	आँग[3]
कण्टक	काँट[4]
झम्प	झाँपे[5]
चन्द्र	चाँद[6]

(ग) शब्दों के मध्य अघोष व्यंजन ध्वनियाँ प्रायः सघोष हो गई हैं ।

अद्भुत	अदबुद[7]	त > द
विकसु	बिगसु[8]	क > ग
अशोक	अशोका[9]	क > ग
माथुर	माधुर	थ > ध

तत्सम शब्दों की स्थिति अपवाद है :

विकास[11] शोणित[12] भगीरथ[13]

(घ) शब्दों में से अल्पप्राण व्यंजन ध्वनियाँ प्रायः लुप्त हो गई हैं और संबंधित स्वर ही शेष रह गये हैं ।

निकट	निअर[14]
सकल	सअल[15]
सागर	साएर[16]
निसिचर	निसिअर[17]
भुजङ्गम	भुअङ्गम[18]
निज	निअ[19]
मदन	मअन[20]

गीत-विद्यापति- पृष्ठ सं0/पद सं0

1-850/884
2-787/816
3-765/790
4-738/761
5-729/754
6-705/726
7-125/134
8-199/205
9-819/851
10-390/401
11-805/836
12-805/836
13-808/839
14-296/313
15-517/524
16-308/321
17-528/535
18-501/508
19-484/492
20-239/245

(ङ.) शब्दों के महाप्राण तथा ऊष्म " ख, घ,ध, थ, भ. श और ष व्यंजन ध्वनियों के स्थान पर " ह" हो गया है ।

स्तम्भ	थम्ह[1]
प्रसाधन	पसाहनि[2]
आभीर	अहीर[3]
नाथ	नाह[4]
रुधिर	रुहिर[5]
रेखा	रेहा[6]
अष्टादश	अठारह[7]
पाषाण	पाहन[8]
लघु	लहु[9]

(च) "गीत-विधापति" में कुछ स्थलों पर शब्दों के मध्य ध्वनियों के स्थान परिवर्तन के भी उदाहरण प्राप्त हुए हैं :यद्यपि इनकी संख्या अत्यल्प है ।

दीर्घ	दीघर [10]
ग्रह	गहर [11]
आर्त	आतर[12]

अक्षर-क्रम :

"विश्लेष्य-ग्रन्थ"की भाषा में एक अक्षरीय शब्दों से लेकर षड अक्षरीय शब्द तक प्राप्त हुए हैं । इन शब्दों में एक अक्षरीय तथा द्विअक्षरीय शब्द लगभग समान तथा सर्वाधिक संख्या में हैं, जबकि त्रिअक्षरीय ,चतु:अक्षरीय एवं पंच अक्षरीय एवं षड अक्षरीय शब्दों की प्रयोग संख्या क्रमशः कम होती गई है एक अक्षरीय तथा द्विअक्षरीय शब्द प्राय: मूल हैं,किन्तु शेष व्युत्पन्न हैं ।

<u>एक अक्षर से बने शब्द</u> :

स*	ओ[13] ऊ[14]
स. व×	आज[15] आब[16]
व.स	की[17], ना[18]
व.स.व	कर,[19] जत[20]
व.व.स	श्री[21]
व.व.स.व.	स्याम,[22] ध्वज[23]

गीत-विधापति पृष्ठ सं०/पद सं०

संकेत ; × स - कोई स्वर है।

×व- कोई व्यंजन

1- 19/19
2- 21/21
3- 2[illegible]/23
4- 41/46
5- 854/890
6- 728/753
7-247/255
8- 379/388
9-379/388
10- [illegible]70/81[illegible]
11-450/459
12-65/77
13-180/184
14-749/772
15-717/739
16-821/853
17-117/127
18- 4[illegible]/45
19-720/744
20-484/492
21-294/311
22-294/311
23- 7/7

दो अक्षारों से बने शब्द :

स.स	ओउ[1]
स.व.स.	आधी[2]
व.स.स.	केओ[3] ,पिआ[4]
व.स.व.स.	त्सि[5] ,हानी[6]
स.व.व.स.व.	अन्तर[7] ,अङ.कुर[8]
स.व.व.स.	अङ्के[9]
व.स.व.व.स	भान्ति[10]

तीन अक्षारों से बने शब्द :

स.स.स.	आओइ[11]
स.वस.वस.व.	उपचार[12]
वस.वस.वस.	कहिनी[13]
वस.वस.वस.व.	निकास्न[14]
स.वस.वस.व.	आनमिख[15]
स.ववस. वस.	अङ्कुरि[16]
स.स.वस.	आओलोँ[17]
वस.वस.स.	माधाई[18]
वस.वस.ववस.व.	पटाम्बर[19]
वस.वस.वव.	सुछन्द[20]

चार अक्षारो से बने शब्द :

स.वस.वस.वस.व.	अभिलषित[21]
वस.ववस.वस.वस.	विद्यापति[22]
वस.वस.वस.स.	पतिआइ[23]
वस.वस.वस.वस.	ठेकायलुँ[24]
स.वस.स.वस.	अनाइति[25]
वस.वस.स.वस.स.	जगओलह[26]

गीत–विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद स.

1- 77/88
2- 8/8
3- 100/114
4- 197/202
5- 7/7
6- 52/60
7- 43/49
8- 76/87
9- 279/295
10-582/587
11-148/155
12-145/152
13-525/532
14-695/715
15-148/155
16-155/161
17-155/161
18-156/162
19-162/167
20-162/167
21-177/182
22-176/181
23-381/389
24-183/187
25-568/575
26-194/20[illegible]

वस.वस.स.वस.	मेलाऊलि[1]
वस.स.स.स.	तइअओ[2]
वस.वस.दवस.वस	जलम्जलि[3]

पाँच अक्षरों से बने शब्द

वस.वस.वस.वस.स.	परिहरइ[4] उपभोगए[5]
वस.वस.वस.वस.वस.	सहिलोलिनि[6]
वस.वस.वस.स.वस.	विघटाउलि[7]
वस.स.वस.स.वस.	बाइसाउलि[8]
वस.स.वस.वस.वस.	सउदामिनि[9]

छ: अक्षरों से बने शब्द

वस.वस.स.स.वस.स.	हिलिअओलए[10]
वस.वस.वस.वस.वस.वस.	परिहरितहुं[11]

विश्लेषण के आधार पर " गीत- विधापति" में ध्वनि-तत्व की दृष्टि से कतिपय विशिष्ट दिशाओं पर प्रकाश पड़ता है :

"ऋ" का प्रयोग तत्सम शब्दों में ही उसके स्वतन्त्र रूप में हुआ है : अन्यत्र यह " रि" तथा 'इरि' के रूप में प्रयुक्त हुआ है । ध्वनि- परिवर्तन की स्थिति में इसके स्थान पर अ,इ,उ, एवं ए का प्रयोग किया गया है ।

अर्द्ध स्वर "य", "व" के स्थान पर सामान्यतया ज तथा ब प्रयुक्त हुए हैं अपवाद स्वरूप तत्सम शब्दों में इनका स्थान सुरक्षित है ।

नासिक्य व्यंजन " ङ.,ञ् तथा ण का प्रयोग दो प्रकार से किया गया है:

प्रथम इनके स्वतन्त्र रूप में द्वितीय अनुस्वार /ं/ रूप में " गीत - विधापति"में इनके प्रथम रूप का प्रयोग अधिकता से किया गया है ।

गीत- विधापति-
पृष्ठ सं0/पद सं0

1-198/204
2-20/21
3-218/223
4-199/205
5-205/210
6-202/208
7-215/219
8-237/243
9-235/242
10-348/355
11-836/869

{ ड.ड़ } तथा ढ,ढ़ } परिपूरक वितरण में प्रयुक्त नहीं हुई हैं { ड.ढ } ध्वनियों की प्रयोग स्थिति शब्दों के आदि तथा मध्य में प्राप्त होती है जबकि {ड़, ढ़ } की शब्द के मध्य और अन्त में प्राप्त हैं ।

{श,ष } के स्थान पर तत्सम शब्दों के अतिरिक्त सर्वत्र " स" का प्रयोग हुआ है ।

ड एवं ल के स्थान पर "र" का प्रयोग अनेक स्थलों पर किया गया है

क्रोड कोर[1] काला कार[2]

संयुक्त व्यंजनों क्ष, त्र एवं ज्ञ के स्थान पर क्रमश: ख , क्ख , तर तथा गेय प्रयुक्त हुए हैं , लेकिन तत्सम शब्दों में इनका स्वतन्त्र रूप विद्यमान है ।

पक्षि पाखि[3] लक्षण लक्खन[4]

नक्षत्र नखतर[5] अज्ञान अगेयानि[6]

कारक- विभक्ति के अवशेष के रूप में अनुनासिकता प्रयुक्त है ।

कमलँ झरए मकरन्दा[7] कमल से अपादान कारक

ऋतुँ बसन्तँ हे अमृत रसँ सानि[8] ऋतु वसन्त को" कर्मकारक

ड. तथा ग के संयुक्त होने पर कहीं कहीं अनुनासिकता के पूर्व वर्ण में आ जाने से सक्रान्ति हो जाती है और { ड.} स्वतन्त्र हो जाता है एवं ग का लोप हो जाता है :

भाङ्ग भाड.[9]
सिङ्गार सिड.ार[10]

स्वरूप की दृष्टि से गीत- विद्यापति" में ध्वनि प्रयोग की स्थिति मैथिली भाषा के साधारण स्वरूप के अनुसरण पर दृष्टिगत होती है । मैथिली भाषा की सामान्य प्रवृत्ति के अनुकूल ध्वनियों के ह्रस्व होने की प्रवृत्ति पाई जाती है ।

गीत-विद्यापति 1-812/844 7-191/197
2-215/219 8-193/199
पृष्ठ सं०/पद सं० 3-830/863 9-788/818
4-855/891 10-421/432
5-56/65
6-167/171

अध्याय -2

शब्दावली एवं शब्द - रचना

" गीत विद्यापति " की भाषा में सामान्यत: प्राचीन मैथिली में प्रचलित शब्दावली का प्रयोग किया गया है जिसमें संस्कृत की तत्सम-शब्दावली तत्भव - शब्दावली अपभ्रंश अनेक देशज शब्दों तथा विदेशी ,फारसी , अरबी तथा तुर्की शब्दों को ग्रहण किया गया है । शब्दावली का अध्ययन, ऐतिहासिक या स्त्रोत, मूल या व्युत्पत्ति तथा प्रयोग की दृष्टि से हुआ है । ऐतिहासिक या स्त्रोत की दृष्टि से शब्दों को पाँच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, तत्सम, तत्भव अपभ्रंश देशज तथा विदेशी । रचना की दृष्टि से मूल ,व्युत्पन्न तथा सामासिक शब्दों का भी प्रयोग हुआ है । प्रयोग की दृष्टि से संज्ञा, सर्वनाम ,विशेषण ,क्रिया तथा अव्यय रूपों में शब्दों को विभाजित किया जाता है किन्तु वाक्य में प्रयोग किये जाने पर शब्द पद का नाम ग्रहण कर लेता है और इसका सही आकलन व्याकरणिक प्रसंगों में ही किया जा सकता है, फिर भी कुछ शब्द पद की स्थिति ग्रहण करने पर भी अपने मूल पद विभाग - संज्ञा ,सर्वनाम, विशेषण आदि ही बने रहते हैं तथा इनका निर्देशन शब्दावली के अन्तर्गत ही किया जा सकता है । प्रस्तुत शीर्षक में " गीत - विद्यापति" में प्रयुक्त शब्दावली का विवेचन उपर्युक्त दिशाओं को दृष्टिगत रखते हुए किया गया है ।

संस्कृत - तत्सम :-

गीत विद्यापति" का विषय विरह - वर्णन , संयोग -वर्णन

सामाजिक रीति- रिवाज एवं परम्परा से संबंधित गीत तथा देवी-देवताओं की स्तुति-गान आदि रहा है । अतः कवि ने विरह- वर्णन, संयोग -वर्णन में जहाँ तदभव ,देशज शब्दों का प्रयोग किया है वहाँ सामाजिक रीति -रिवाज में देशज तथा देवी- देवताओं के स्तुति-गान में तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग किया है । कहीं-कहीं तो पूरे का पूरा छन्द ही तत्सम- शब्दावली युक्त है । तत्समशब्द दो वर्गों में वर्गीकृत हैं ।

1- मूल तत्सम शब्द

2- व्युत्पन्न तत्सम शब्द

<u>मूल संस्कृत तत्सम :</u>

"मूल शब्द का प्रयोग रूढ़ शब्द के लिये भी होता है । मूल या रूढ़ शब्द वे हैं जिनके सार्थक टुकड़े न हो सके । दूसरे शब्दों में मूल शब्द वे हैं जो स्वंय निर्मित हैं किसी अन्य शब्द के योग से इनका निर्माण नहीं हुआ है । नीचे दिये हुए शब्दों के उदाहरणों के साथ कोष्ठकों में उनके सामान्य अर्थ निर्दिष्ट हैं । प्रयोग संख्या की दृष्टि से संज्ञा शब्द सर्वाधिक हैं ।

अंग [1]	'भाग'	जग [9]	'संसार'
उर [2]	'हृदय'	तम [10]	'अन्धकार'
कमल [3]	'पुष्प-विशेष'	देह [11]	'शरीर'
कपोल [4]	'अंग विशेष'	नुपूर [12]	'पायल'
कटि [5]	'कमर'	रोष [13]	'क्रोध'
कनक [6]	'स्वर्ण'	हेम [14]	'स्वर्ण'
गगन [7]	'आकाश'	लता [15]	'पौधा-विशेष'
चकोर [8]	'पक्षी-विशेष'	तरु [16]	'वृक्ष'

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 568/574
2- 223/229
3- 24/25
4- 167/172
5- 447/457
6- 23/24
7- 23/24
8- 20/21
9- 50/58
10-478/486
11- 2/2
12-509/515
13- 49/56
14- 363/369
15- 436/446
16- 20/20

संज्ञा शब्दों के पश्चात विशेषण शब्दों का स्थान आता है। विशेषण शब्द संज्ञा की अपेक्षा कम प्रयुक्त हुए हैं।

चञ्चल[1]	'अस्थिर'	पीन[7]	'हृष्ट - पुष्ट'
चपल[2]	'चंचल'	सेत[8]	'सफेद'
नव [3]	'नवीन'	वर[9]	'श्रेष्ठ'
नूतन [4]	'नवीन'	लघु[10]	'छोटा'
मन्द [5]	'धीमा'	चारु[11]	'सुन्दर'
पीत[6]	'पीला'		

व्युत्पन्न संस्कृत तत्सम शब्द :

व्युत्पन्न शब्द का प्रयोग यौगिक शब्द के लिये भी होता है " विश्लेष्य ग्रन्थ में व्युत्पन्न तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है।

अपमान[12]	'अनादर'	कुवचन[21]	'बुरे शब्द'
अनुमान[13]	'संभावना'	परिश्रम[22]	'मेहनत'
अनुमति[14]	'आज्ञा'	प्रबन्ध [23]	'व्यवस्था'
अनुचर[15]	'सेवक'	प्रतिबन्ध [24]	'रोक'
अनङ्ग [16]	'कामदेव'	सम्मान[25]	'आदर'
अभिमत [17]	'विचार'	बाला[26]	'स्त्री'
अपवाद[18]	'आरोप'	पथिक[27]	'राही'
उपहास[19]	'हंसी'	नीरद[28]	'बादल'
उपदेश[20]	'निर्देश'	जलज[29]	'कमल'

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 32/35
2- 342/349
3- 45/52
4- 345/352
5- 549/556
6- 27/29
7- 90/101
8- 546/553
9- 44/51
10- 58/68
11- 406/420
12- 294/311
13- 17/17
14- 564/570
15- 529/536
16-561/568
17- 523/531
18- 65/77
19-543/551
20-103/114
21-25/27
22-102/113
23-601/609
24-690/709
25-560/567
26- 318/328
27- 277/293
28-430/441
29-238/244

व्युत्पन्न तत्सम विशेषण शब्द :

इन विशेषण शब्दों का प्रयोग व्युत्पन्न तत्सम संज्ञा शब्दों से कम संख्या में हुआ है ।

अनुचित[1]	'अनुपयुक्त'	प्रबल[9]	'शक्तिवान'
अथाह[2]	'अगम'	सरस[10]	'रसयुक्त'
अभिनव[3]	'नया'	सुललित[11]	'सुन्दर'
अभिराम[4]	'सुन्दर'	सुदृढ़[12]	'मजबूत'
उन्नत[5]	'झुका हुआ'	कपटी[13]	'छली'
अपार[6]	'अनंत'	भारी[14]	'वजनी'
[illegible][7]	'ऊँचा'	कुसुमित[15]	'फूला हुआ'
कुगत[8]	'बुरे रास्ते पर चला हुआ ।'		

तद्भव शब्द :

तत्सम शब्दों के प्रयोग से जहाँ भाषा में गम्भीरता आ जाती है वहीं तद्भव शब्दों द्वारा भाषा में सरलता तथा सहजता आ जाती है और भावों के सम्प्रेषण में समर्थ हो जाती है । संज्ञा ,सर्वनाम , विशेषण, अव्यय तथा क्रिया आदि सभी रूपों में तद्भव शब्द उपलब्ध हैं । मूल तदभव की अपेक्षा व्युत्पन्न तद्भव शब्द अधिक प्रयुक्त हुए हैं ।

मूल तद्भव शब्द सर्वनाम, विशेषण ,अव्यय तथा क्रिया रूपों की अपेक्षा मूल तद्भव संज्ञा शब्द ही अधिक उपलब्ध हैं ।

संज्ञा-शब्द : मूल तद्भव संज्ञा शब्दों के उदाहरण निम्न हैं तथा इनके साथ कोष्ठकों में उनके शुद्ध रूप उल्लिखित हैं ।

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 715/736
2- 113/123
3- 635/650
4- 294/311
5- 273/288
6- 370/378
7- 23/24
8- 73/84
9- 360/367
10- 36/40
11- 221/227
12- 81/ 92
13- 250/259
14- 252/260
15- 248/256

ईस[1]	'ईश'	मसान[8]	'श्मशान'
चरन[2]	'चरण'	पहु[9]	'प्रभु'
बसन[3]	'वसन'	बहू[10]	'वधू'
पिअ[4]	'प्रिय'	करम[11]	'कर्म'
पसु[5]	'पशु'	जमुना[12]	'यमुना'
गरब[6]	'गर्व'		
भासा[7]	'भाषा'		

सर्वनाम शब्द :

सभी सर्वनाम शब्द तद्भव ही हैं ।

आप[13]	तञे[19] तोञे[20] तु[21]	मञे[27] मोञे[28] से[34];
के[14] कवन[15] कओन[16]	ओ[22] उ[23] ऊ[24]	इ[29] ई[30] इह[31] यह[32] सब
कछु[17] किछु[18]	हम[25] हमे[26]	एहु[33]

विशेषण शब्द

मूल तद्भव विशेषण शब्दों का प्रयोग विश्लेष्य-ग्रन्थ में अपेक्षाकृत कम हुआ है ।

गोरा[37]	'गौर'	पउरुस[40]	'परुष'
बंक[38]	'वक्र'	थिर[41]	'स्थिर'
सेत[39]	'श्वेत'	तीति[42]	'तिक्त'

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 752/775
2- 806/827
3- 509/515
4- 798/830
5- 742/764
6- 42/47
7- 703/724
8- 743/772
9- 710/732
10-788/819
11-760/783
12- 1/1
13- 783/811
14- 72/83
15- 780/807
16- 764/789
17- 42/47
18- 12/12
19- 429/440
20- 703/724
21- 28/31
22- 771/796
23- 332/340
24- 749/772
25- 42/47
26- 55/63
27- 46/53
28- 59/70
29- 28/31
30- 16/17
31- 43/49
32- 748/770
33- 850/884
34- 15/15
35- 167/172
36- 705/726
37- 434/444
38- 206/211
39- 546/553
40- 62/73
41- 37/40
42- 56/66

क्रिया - शब्द :

मूल तद्भव क्रिया शब्दों का प्रयोग कम संख्या में किया गया है ।

अछ[1] थिक[3] थाक[5]

छिअ[2] हो[4]

अव्यय :

मूल तद्भव अव्यय शब्दों का प्रयोग भी कम हुआ है ।

आज[6] बिनु[8] जौ[10]

कालि[7] जइओ[9]

व्युत्पन्न तद्भव शब्द :

व्युत्पन्न तद्भव शब्दों में संज्ञा, सर्वनाम, तथा क्रिया शब्दों के प्रयोग अधिक हैं । विशेषण तथा क्रिया विशेषण व्युत्पन्न तद्भव शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत कम है ।

संज्ञा - शब्द :

अगेयान[11] दुजन[15]

अभाग[12] चतुराई[16]

अपजस[13] जेठौनी[17]

परमान[14]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 847/881
2- 259/267
3- 777/803
4- 823/855
5- 696/717
6- 145/152
7- 202/208
8- 18/18
9- 266/278
10- 494/502
11- 64/76
12- 246/254
13- 217/225
14- 253/261
15- 542/550
16- 594/600
17- 749/772

सर्वनाम शब्द :

मोहि[1] मोर[6]
तोहि[2] तोर[7]
ओहि[3] हमार[8]
हिनका[4] जसु[9]
जन्हिका[5] जकर[10]
तकर[11]

विशेषण-शब्द :

दुबर[12]
उमत[13]
नीलज[14]

क्रिया-शब्द :

कर[15] चलह[16] भनई[17] गाबए[18]
चललि[19] देखल[20] करब[21]

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 50/58
2- 30/33
3- 548/555
4- 523/530
5- 740/763
6- 52/60
7- 38/41
8- 74/85
9- 484/492
10- 44/51
11- 63/74
12- 31/34
13- 840/874
14- 517/523
15- 813/845
16- 177/182
17- 811/823
18- [illegible]/564
19- 450/459
20- 27/29
21- 605/614

अपभ्रंश-शब्द :

"विवेच्य- ग्रन्थ में कुछ शब्द अपभ्रंश भाषा के भी प्राप्त हुए हैं ।

विज्जावइ[1] समुद्द[6]
छड्डिअ[2] अद्धासन[7]
दुज्जन[3]
नद्दहि[4]
सद्दहि[5]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 856/891
2- 855/891
3- 640/656
4- 854/890
5- 854/890
6- 855/891
7- 855/891

देशज-शब्द :

जन-भाषा के अनेक शब्द काव्य- भाषा में ग्रहण नहीं किये जाते हैं, किन्तु लोक परम्परा में वे बराबर चलते रहते हैं । ऐसे ही लोक-परम्परा प्राप्त शब्द हिन्दी में देशज शब्द कहलाते हैं । ये शब्द केवल क्षेत्र-विशेष में ही व्यवहृत होते हैं तथा इनकी व्युत्पत्ति का कोई पता नहीं चलता है । "गीत-विधापति" में देशज शब्दों का प्रयोग पर्याप्त संख्या में हुआ है ।

भिनुसरवा[1]
महतारी[2]
बटोहिआ[3]
नोनुआ[4]
अगोरि[5]
विहान[6]

उपर्युक्त शब्दों के अतिरिक्त कुछ ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग भी कवि ने अपनी कृति में किया है ।

चाटे-चाट[7]	घन घन[11]
हन हन[8]	कट कट[12]
तार बाट[9]	किनि किनि[13]
चेओ चेओ[10]	कन कन[14]

गीत विधापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 275/290
2- 777/803
3- 847/880
4- 613/624
5- 549/556
6- 627/639
7- 612/623
8- 806/837
9- 612/623
10- 193/199
11- 806/837
12- 806/837
13- 648/665
14- 648/665

विदेशी-शब्द :

विश्लेष्य-भाषा में कवि ने विदेशी शब्दावली के अन्तर्गत आने वाले अरबी, फारसी तथा तुर्की शब्दों का प्रयोग किया है । इनमें से फारसी शब्दों का प्रयोग सर्वाधिक किया गया है । अरबी शब्दों का प्रयोग अपेक्षा कृत कम हुआ है तथा तुर्की शब्द का मात्र एक उदाहरण प्राप्त हुआ है । इन विदेशी शब्दों के तद्भव रूप प्रयुक्त हुए हैं ।

परदा[1]	(पर्दा-फारसी)	सबे परदा राख
दाग[2]	(दाग़-फारसी)	जनि दिढ़ कहु आलव दाग
पातिसाह[3]	(बादशाह-फारसी)	पातिसाह ससीम सीमा दरसेओरे
बजार[4]	(बाज़ार-फारसी)	पिआ गोद लेलके चललि बजार
सुरतान[5]	(सुलतान-फारसी)	दुहु सुरतान नीन्दे अब सोअउ
बकसिथि[6]	(बख़्श-फारसी)	अगे माई, छन मँ हेरथि कोटि धन बकसिथि
अरजी[7]	(अरज़ी-अरबी)	सुजन अरजी कत मन्द रे
हजूर[8]	(हुजूर-अरबी)	रहती ठाढि हजूर
जहाज[9]	(जहाज-अरबी)	लै जहाज करु पार रे
जबाब[10]	(जवाब-अरबी)	जम के द्वार जबाब कवन देब
चकमक[11]	(तुर्की)	झूठा बोल चकमक आम

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद संख्या

1- 34/37
2- 35/38
3- 854/890
4- 855/891
5- 755/777
6- 836/870
7- 751/774
8-855/891
9- 293/310
10-780/807
11- 35/38

शब्द-रचना :

शब्द रचना प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रातिपदिक रचना एवं सामासिक रचना का महत्वपूर्ण स्थान है । प्रातिपदिक रचना में धातु अथवा प्रतिपद और प्रत्यय रचनामूलक अवयवों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं । प्रत्यय,प्रकृति या मूल शब्द के साथ जुड़कर उसका अर्थ परिवर्तित कर देता है । प्रातिपदिक-रचना में प्रत्यय की स्थिति के अनुसार शब्दों के पूर्व जुड़ने पर पूर्व-प्रत्यय ,मध्य में जुड़ने पर मध्य-प्रत्यय तथा शब्दान्त में जुड़ने पर पर-प्रत्यय कहा जाता है

पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग):

किसी शब्द के पूर्व जुड़कर उसका अर्थ परिवर्तित कर देने वाले प्रत्यय पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग कहे जाते हैं । दूसरे शब्दों में पूर्व प्रत्यय उस भाषिक इकाई को कहते है जो स्वतन्त्र या एकाकी रूप में नहीं होता है अपितु आदि में अंग रूप में विद्यमान रहता है । "गीत- विद्यापति" में पूर्व प्रत्यय विभिन्न कोटि के रूपों में जुड़कर संज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा क्रिया-विशेषण कोटि के प्रातिपदिकों को व्युत्पन्न करते हैं ।

संज्ञा-व्युत्पादक पूर्व-प्रत्यय या उपसर्ग :

विश्लेष्य-भाषा में अ-,आ-,अनु-,अव,अन-,अभि-,अप-,उप-, कु-,परि-,प्र- ,प्रति-, दु- ,दुर- स-,सन -, सम-, सौ-, सद-, सह-, सु-, वि-, बि-, नि-,तथा निर -आदि पूर्व-प्रत्यय संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया-प्रातिपदिकों में जुड़कर व्युत्पन्न संज्ञा - प्रातिपदिकों की संरचना करते हैं ।

अ	गेआन	अगेआन	कैसेतें जानहुँ बौलब अगेआन [1]
अ	भाग	अभाग	कठिन अभाग हमर भेल [2]
अ	जस	अजस	अजस सुजस कए गुनितहुँ [3]
आ	रति	आरति	आरति जानल अधिक अनुराग [4]
आ	तपे	आतपे	आतपे तापित सीतल जानि [5]
अनु	मान	अनुमान	हैन मोर अनुमान [6]
अनु	चर	अनुचर	भ्रुहक अनुचर मनमथ चापे [7]
अनु	मति	अनुमति	खन अनुमति खन भङ्ग [8]
अव	साद	अवसाद	कोइ न मानइ जय-अवसाद [9]
अव	गुन	अवगुन	गुन-अवगुन सिव एकोनहि बुझलन्हि [10]
अन	अङ्ग	अनङ्ग	प्रथम समागम भुखल अनङ्ग [11]
अन	आदर	अनादर	ततहु अनादर आबे [12]
अभि	मत	अभिमत	जत अभिमत अभिसारक रीति [13]
अप	वाद	अपवाद	अपद हो अपवाद [14]
अप	कार	अपकार	
अप	जस	अपजस	हुन्हि अरजल अपजस अपकार [15]

गीत- विद्यापति -

पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 51/59
2- 269/283
3- 836/869
4- 532/539
5- 208/213
6- 17/17
7- 529/536
8- 564/570
9- 782/810
10- 427/437
11- 561/568
12- 536/543
13- 511/517
14- 65/77
15- 217/223

अप	मान	अपमान	पहुक न करि अपमान [1]
उप	हास	उपहास	अपन पराभव पर उपहास[2]
उप	देस	उपदेस	जे कह उपदेस [3]
उप	बन	उपबन	जमुनाक तीरँ उपवन उदबेगल[4]
कु	वचन	कुवचन	बम कुवचन बिसमार[5]
कु	दिन	कुदिन	सुजन क कुदिन दिवस दुइ चारि[6]
कु	पुरुष	कुपुरुष	सपनहुँ जनु हो कुपुरुष सङ्ग [7]
परि	जन	परिजन	सासु नही घर पर परिजन [8]
परि	हास	परिहास	गोपक सङ्गम कर परिहास [9]
परि	वाद	परिवाद	हसइते केहु जनि करे परिवाद[10]
परि	श्रम	परिश्रम	सुरत परिश्रम सरोवर तीर[11]
प्र	बन्ध	प्रबन्ध	कर करताल प्रबन्धक ध्वनियाँ[12]
प्र	बोध	प्रबोध	प्रबोध न माने जनु बाल भुजङ्ग [13]
प्र	कृति	प्रकृति	प्रकृति औषध केहु जाने[14]
पर	देश	परदेश	बारिस परदेश बसएगमार [15]
पर	वास	परवास	केतकि धूलि बिथुरलहुपरवास [16]
पर	मान	परमान	के पतिआओब एहु परमान[17]
प्रति	कार	प्रतिकार	अबहु करिअ प्रतिकार [18]
प्रति	बन्ध	प्रतिबन्ध	सामि समिहित कर प्रतिबन्ध [19]
प्रति	वादी	प्रतिवादी	वादी तह प्रतिवादी भीत[20]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 294/311
2- 9/9
3- 103/114
4- 339/346
5- 25/27
6- 142/149
7- 669/688
8- 79/90
9- 686/706
10- 590/595
11- 102/113
12- 601/609
13- 604/613
14- 773/798
15- 225/231
16- 820/851
17- 693/713
18- 790/822
19- 690/709
20- 822/854

दु	जन	दुजन	घर गुरुजन दुजन शङ्का [1]
दुर	नय	दुरनय	सखिहे दुरजन दुरनय धाए [2]
दुर	जन	दुरजन	महि दुरजन नाम [3]
स	भाव	सभाव	नारि सभाव कएल हमें मान [4]
सन	ताप	सन्ताप	खने सन्ताप सीत जल जाड [5]
सन	देस	सन्देस	सुमरि जल जलि दिहुथि सन्देस [6]
सन	देह	सन्देह	तोराहि जीव सन्देह [7]
सम	मान	सम्मान	कपटे धरिमा सम्मान लेही [8]
सम	भोग	सम्भोग	सुख सम्भोग सरस कवि गाबए [9]
सम	आगम	समागम	सुमरि समागम सुपहुक पास [10]
सौ	भागे	सौभागे	सौभागे आगरि लखिमा देइरमाने [11]
सद्	भावे	सदभावे	बुझल तुअ सदभावे [12]
सद	गुन	सदगुन	तकरो पुनि सदगुन [13]
सद	गति	सदगति	माय बाप जौं सदगति पाव [14]
सह	वास	सहवास	तन्हिके सङ्गे कओना सहवास [15]
वि	देस	विदेस	हमे युवती पति गेलाह विदेस [16]
वि	गति	विगति	करम विगति गति माइ हे [17]
वि	योग	वियोग	भेल बियोग करम दोस मोरा [18]
वि	भूषन	विभूषन	अम्बर सकल बिभूषन सुन्दर [19]
नि	कुञ्ज	निकुञ्ज	निकुञ्ज मन्दिरे गुञ्जरे भ्रमर [20]
नि	श्वास	निश्वास	भुजगि निश्वास पियासा [21]
निर	आसा	निरासाा	माधव हम परिनाम निरासा [22]
निर	धन	निरधन	निरधन,बापुल पुछ नहि कोए [23]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 542/550
2- 95/106
3- 79/90
4- 131/139
5- 114/124
6- 218/223
7- 31/34
8- 560/567
9- 557/564
10- 213/218
11- 529/536
12-401/415
13-410/415
14-854/889
15-672/691
16-91/102
17-103/114
18-128/136
19-510/516
20-178/183
21-423/434
22-801/823
23-100/111

विशेषण - पूर्व - प्रत्यय :

गीत-विद्यापति में अ-आ -, औ -, अभि -, अन -, अद -, उ -, उत -, उद -, कु -, दु -, दुर -, नि -, निर -, नी -, प्र -, वि -, विप -, स -, त्रि -, सवा - दो -, ते -, तथा - सु -, आदि, पूर्व प्रत्ययों के योग से विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न हुए हैं । नीचे दिये गये उदाहरणों में क्रमश: पूर्व-प्रत्यय, मूल-प्रातिपदिक व्युत्पन्न प्रातिपदिक तथा प्रयोग उल्लिखित हैं ।

अ -	थाह	अथाह	नदिआ जोरा भअउ अथाह[1]
अ -	कथ	अकथ	पाछिलि कथा अकथ कथा[2]
अ	बुध	अबुध	ना करह आरति ए अबुध नाह[3]
आ	कुल	आकुल	आकुल भ्रमरे कराह मधुपान[4]
औ	घाट	औघट	जाएब औघट घाटे[5]
अभि	नव	अभिनव	अभिनव कोमल सुन्दर पात[6]
अभि	राम	अभिराम	देखैते मुख अभिराम[7]
अन	हद	अनहद	अनहद रूप कहलो नहि जाई[8]
अन	उचित	अनुचित	ई धिक अनुचित काजे[9]
अद	भूत	अदभूत	टुटइत नहि टुटै पेम अदभूत[10]
उन	नत	उन्नत	मास असाढ़ उन्नत नवमेघ[11]
उ	मत	उमत	पछेहेलि लुलएउमत अनङ्ग[12]
उत	तुङ्ग	उत्तुङ्ग	उत्तुङ्ग पीन पयोधर उपरे[13]
उद	भट	उद्भट	उद्भट प्रेम करसि अनुताप[14]
कु	गत	कुगत	काहि निपेदओ कुगत पहू[15]
कु	जाति	कुजाति	तखने उगल चाँदा परम कुजाति[16]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 113/123
2- 300/316
3- 725/750
4- 364/370
5- 636/651
6- 635/650
7- 294/312
8- 777/803
9- 715/736
10- 844/878
11- 273/288
12- 840/874
13- 23/24
14- 43/48
15- 73/84
16- 475/482

दु	सह	दुसह	दुसह सकल जगजान[1]
दू	बर	दूबर	कान्ह सरीर दिने दिने दूबर[2]
दुर	बल	दुरबल	काँपए दुरबल देह[3]
नि	रस	निरस	निरस कमल मुख करे अवलम्बइ[4]
नि	चल	निचल	निचल नयन चकोरा[5]
निर	दय	निरदय	भनइ विद्यापति निरदय कन्त[6]
निर	मल	निरमल	जहाँ चन्दा निरमल भमरकार[7]
नी	लज	नीलज	गरुअ नीलज मानस तोरा[8]
प्र	बल	प्रबल	जनि प्रलय कालक प्रबल पावक[9]
वि	सम	विसम	भनइ विद्यापति विसम ए नेह[10]
वि	मल	विमल	विमल कमल मुखि न करिय माने[11]
वि	विध	विविध	केतकि कुसुम अनि विरचि विविध बानि
वि	लोल	विलोल	लम्बित सोभए हार विलोल[13]
विप	रीत	विपरीत	जमुना जलँ विपरीत तरङ्ग[14]
स	रस	सरस	जावे सरस पिआ बोलए हसी[15]
स	घन	सघन	समुखे नाजाय सघन निसोसाय[16]
स	दय	सदय	सदय सुदृढ़ नेह[17]
त्रि	विध	त्रिविध	बहधु निरन्तर त्रिविध समीर[18]
सवा	लाख	सवालाख	एक लाख पूत सवा लाख नाती[19]
दो	पत	दोपत	दोपत तेपत भेला[20]
ते	पत	तेपत	
सु	ललित	सुललित	पिआ के कहब पिक सुललित बानी[21]
सु	दृढ़	सुदृढ़	सदय सुदृढ़ नेह[22]
सु	कवि	सुकवि	सुकवि विद्यापति गाब[23]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 26/27
2- 31/34
3- 325/33
4= 177/182
5- 73/83
6- 218/223
7- 588/593
8- 517/523
9- 360/367
10- 14/14
11- 58/68
12- 481/489
13- 646/663
14- 506/512
15- 36/40
16- 725/750
17- 81/92
18- 400/413
19- 782/810
20- 119/129
21- 221/227
22- 81/92
23- 500/507

क्रिया-पूर्व-प्रत्यय :

"विश्लेष्य -कृति" में उ-, अ-, अनु-, अव-, उप-, वि-, नि-, परि-, सम्-पूर्व प्रत्ययों के योग से क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की संरचना हुई है।

उ	भरल	उभरल	उभरल चिकुर मालकर रङ्ग [1]
अ	विलोकिअ	अविलोकिअ	गए अपनहि से अविलोकिअ [2]
अनु	रञ्जब	अनुरञ्जब	दिन दुइ चारि आने अनुरञ्जब [3]
अनु	सरई	अनुसरई	खने खने नयन कोन अनुसरई [4]
अव	गाहए	अवगाहए	मन अवगाहए मनमथ रोस [5]
उप	चरब	उपचरब	की उप चरब सन्देह न छाड़ [6]
वि	चलए	विचलए	सुपुरुष वचन कबहु नहि विचलए [7]
वि	घटल	विघटल	अनुपम रूप घटइते सबे विघटल [8]
वि	हँसलि	विहँसलि	अलखित हमे हेरि विहँसलि खोरि [9]
नि	हरबा	निहरबा	सुतिए दुरहि निहर-बारे [10]
नि	कसब	निकसब	जिउ निकसब यब राखब कोय [11]
नि	रोपलि	निरोपलि	एक अधार के नीवि निरोपलि [12]
नि	मजलिहुँ	निमजलिहुँ	नयन अछइते निमजलिहुँ कूपे [13]
परि	पाललि	परिपाललि	सैसवदसा कोने परिपाललि [14]
परि	हरलि	परिहरलि	तोहे परिहरलि कोने अपराधे [15]
परि	तेजब	परितेजब	अजिहुँ कालि परान परितेजब [16]
परि	पूरल	परिपूरल	मनोरथ केतहि हृदय परिपूरल [17]
सम्	चर	सञ्चर	रतनहु लागिन सञ्चर चोर [18]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1-644/662
2-479/487
3-712/733
4-419/430
5-501/508
6-114/124
7-711/733
8-429/439
9-343/350
10-276/292
11-658/675
12-666/684
13-704/725
14-851/886
15-529/536
16-145/152
17-603/611
18-537/545

क्रिया- विशेषण - पूर्व प्रत्यय :

अ-, अनु-, तथा अहि - पूर्व प्रत्यय विशेषण तथा संज्ञा प्रातिपदिकों के साथ जुड़कर क्रिया- विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न करते हैं । " गीत- विद्यापति" इस प्रकार के व्युत्पन्न क्रिया-विशेषण प्रातिपदिक कम प्रयुक्त हैं ।

अ-	विरल	अविरल	अविरल विसरस वरिस ससी [1]
अ	विरत	अविरत	अविरत नयने वारि झरु निझर [2]
अनु	खन	अनुखन	अनुखन जपए तोहरि पए नाम [3]
अनु	दिने	अनुदिने	अनुदिने जैसन - चाँद करेहा [4]
अहि	निशि	अहिनिशि	अहिनिशि खेपाय जागि [5]

पर- प्रत्यय :

पर-प्रत्यय प्रकृति या मूल शब्द के अन्त में लगता है । हिन्दी में स्रोत की दृष्टि से दो प्रकार के प्रत्यय मिलते हैं - स्वदेशी तथा विदेशी प्रत्यय । स्वदेशी के अन्तर्गत तत्सम, तद्भव तथा देशज प्रत्यय आते हैं तथा विदेशी प्रत्ययों के अन्तर्गत अरबी,फारसी आदि प्रत्यय आते हैं । "गीतविद्यापति " में विदेशी प्रत्यय नहीं प्राप्त हुए हैं । कार्य की दृष्टि से ये पर प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं ।

गीत-विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 197/203
2- 167/172
3- 86/98
4- 83/94
5- 180/185

1- रचनात्मक या व्युत्पादक प्रत्यय

2- विभक्ति प्रत्यय

रचनात्मक प्रत्यय धातु अथवा प्रातिपदिकों के अन्त में जुड़कर अन्य प्रातिपदिकों की रचना करते हैं । रचनात्मक प्रत्ययों का सम्बन्ध शब्दों की रचना से रहता है । इसके विपरीत विभक्ति- प्रत्यय व्याकरणिक रूपों की रचना के लिये प्रयुक्त होते हैं जो वचन, कारक, काल आदि प्रकट करने के लिये व्यवहृत होते हैं । रचनात्मक प्रत्यय तथा विभक्ति में यह अन्तर है कि रचनात्मक प्रत्यय युक्त शब्दों या पदों में पुन: प्रत्यय जुड़ सकते हैं किन्तु विभक्ति प्रत्यय के पश्चात कोई प्रत्यय नहीं जुड़ सकता है । विभक्ति प्रत्यय को रूप- साधक प्रत्यय भी कहते हैं क्योंकि इनके वचन, कारक और काल की दृष्टि से विभिन्न रूप बनते हैं ।

प्रत्यय कहने से तात्पर्य प्राय: रचनात्मक प्रत्ययों से रहता है । प्रयोगार्थ की दृष्टि से हिन्दी प्रत्ययों को संज्ञा -व्युत्पादक प्रत्यय, विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय, क्रिया-व्युत्पादक प्रत्यय क्रिया- विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय तथा स्त्री आदि प्रत्यय प्रमुख प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है । इनमें संज्ञा तथा विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय ही अधिक उपलब्ध होते हैं ।

निम्नलिखित पर प्रत्ययों के योग से संज्ञा शब्द बने हैं ।

संज्ञा व्युत्पादक प्रत्यय :

निम्नलिखित पर प्रत्ययों के योग से संज्ञा शब्द बने हैं ।

सेवक	अक	सेवक	अपने भिखारी सेवक दीअ राज हे [1]
लेख	अक	लेखक	द्विज पिक लेखक मसि मकरन्दा [2]
बन्धु	अव	बान्धव	तासु तनअ सुत ता सुत बान्धव [3]
पट	ओरॉं	पटोरॉं	घेङुल बान्धि पटोरॉं धरलह [4]
पथ	आरी	पथारी	खेती न पथारी करे भाग अपना [5]
पजि	आर	पजिआर	धिक धिक से पजिआर [6]
भीख	आरी	भिखारी	अपनइ भिखारी सेवक दीअराजे हे [7]
पूछ	आरि	पुछारि	जानसि तब काहे करसि पुछारि [8]
अबल	आ	अबला	हम अबला निरजनि रे [9]
चपल	आ	चपला	कन्त कोर पइसि चपला बिलसथि [10]
कमल	आ	कमला	राए अरजुन कमला देविकन्त [11]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 789/821
2- 631/644
3- 286/303
4- 523/530
5- 792/825
6- 744/767
7- 789/821
8- 725/749
9- 293/310
10- 281/298
11- 477/485

पल	आन	पलान	बसह केसरि मझूर मुसा चारुहु पलु पलान[1]
कह	इनी	कहिनी	तखनुक कहिनी कहइते लाज[2]
पथ	इक	पथिक	पथिक गमन पथ संसय भेल [3]
धन	इक	धनिक	अपनेओ धन हे धनिक धरगोए [4]
महा	इमा	महिमा	महिमा छाड़ि पलाएल लाज[5]
मद	इरा	मदिरा	तम मदिरा पिबि मन्दा [6]
आ	इति	आइति	आइति पडलाँ बुझिअ विवेक[7]
मम	इता	ममिता	हर जनि बिसरब मोर ममिता [8]
जीव	न	जीवन	मो पति जीवन मन्दा [9]
तर	नि	तरनि	तरनि तनअ सुत तासुत बन्धव [10]
युवा	ती	युवती	जकरा भरे घर युवती रे [11]
माला	ति	मालति	मालति मधुमधुकर दए भल [12]
पट	एवा	पटेवा	पटेवा आउस वास परम हरि पालहिआ[13]
लग	ऐनी	लगैनी	कमल कोष जनि कारि लगैनी [14]
बस	ऐरा	बसेरा	कहाँ लेल बसेरा [15]
बर	इआत	बरिआत	बरद हाँकि बरिआत बेलाइब [16]
नीर	द	नीरद	निविल नीरद रुचिर दरसए [17]
भवन	ज	भवनज	भवनज वाहन गमनी[18]
जल	ज	जलज	जलज दल कत न देह देआओब[19]
गिरि	जा	गिरिजा	गिरिजा मनहि अनन्दित[20]
भुज	ग	भुजग	हृदय हार भेल भुजग समान [21]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं० / पद सं०

1- 487/592
2- 76/87
3- 277/293
4- 731/755
5- 2/2
6- 478/486
7- 622/634
8- 780/807
9- 88/99
10-286/303
11-82/93
12-89/100
13-849/883
14-24/25
15- 762/786
16-748/771
17-430/441
18-1/1
19- 238/244
20- 762/785
21- 291/307

उर	ग	उरग	उजर उरग संसअ गेल[1]
चपल	ता	चपलता	चरन चपलता लोचन लेल[2]
लघु	ता	लघुता	सेओ लघुता जाथी[3]
कातर	ता	कातरता	केतवकए कातरतादस्सब[4]
ठक	ना	ठकना	जो हम जनितहुँ भोला भेला ठकना[5]
तुल	ना	तुलना	अपुजित लए तुलना तुअ देल[6]
मधु	प	मधुप	कमल मिलल दल मधुप चलल घर[7]
कुटी	र	कुटीर	कैसे नेहारब कुञ्ज कुटीर[8]
जुआ	र	जुआर	जनि जुआर परूसे खेल पाद[9]
निशि	थ	निशिथ	निशिथ निशाचर सञ्चर साथ[10]
मध	्ये	मध्ये	मनमथ मध्ये करब परिछेद[11]
चतुर	पन	चतुरपन	चेतन आगु चतुरपन कइसन[12]
नागर	पन	नागरपन	नागरपन किछु रहबा चाहिअ[13]
छैल	पन	छैलपन	तोहर छैलपन निन्दत आन[14]
तप	सी	तपसी	वर भेल तपसी भिखारी[15]
खेत	ई	खेती	खेती नपथारी करे भाग अपना[16]
वाद	ई	वादी	वादी तह प्रतिवादी भीत[17]
बैर	ई	बैरी	अदिति तनय बैरी गुरुचारिम[18]
अपराध	ई	अपराधी	रह अपराधी बलिया सङ्गे[19]
अधिकार	ई	अधिकारी	जाबे मदन अधिकारी[20]
चतुर	आई	चतुराई	किए तुहु समुझबि से चतुराई[21]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/ पद सं0

1-739/762
2-437/447
3-611/622
4-556/564
5-782/810
6-60/71
7-277/294
8-141/148
9-102/113
10-520/528
11-36/39
12-510/516
13-556/564
14-48/55
15-765/790
16-792/825
17-822/854
18-448/457
19-787/817
20-837/871
21-594/600

बड़	आई	बड़ाई	चौदिसि तोहर बड़ाई[1]
कस	औटी	कसौटी	कसि कसौटी अएलाहु जानी[2]

संख्यावाचक विशेषण के साथ -ई, -इ प्रत्यय जुड़कर संज्ञा प्रातिपदिक की रचना करते हैं ।

सप्तम	ई	सप्तमी	नवपत्री सङ्‌ सप्तमी प्रात में भक्त घर हमआएब[3]
अष्टम	ई	अष्टमी	अष्टमी दिन मँह पूजा निसि बलिलय लय भक्त जगाएब[4]
नवम	ई	नवमी	नवमी में तिरसूलक पूजा, बहुविधि बलि चढ़ावाए
दसम	ई	दसमी	दसमी कलस घट उठवाएब[6]
त्रयोदस	इ	त्रयोदसि	कातिक धवलत्रयोदसि जान[7]

'गीत-विद्यापति' में -आ, -वा, -रा तथा -इआ प्रत्ययों का प्रयोग छन्दानुरोध तथा शब्द की लघ्वार्थता की दृष्टि से शब्दों के साथ किया गया है ।

चकोरा	आ	चकोरा	पिउत अमिअ हसि चाँद चकोरा[8]
भमर	आ	भमरा	काँच कमल भमरा झिकझोर[9]
देह	आ	देहा	हेरइते कोई न धरुनिज देहा[10]
घर	वा	घरवा	सुतलि छलहुँ हम घरवा रे हरवा[11]
हार	वा	हरवा	उर टार[11]
भिनसार	वा	भिनसरवा	रातिजखनि भिनसखारे[12]
हिअ	रा	हिअरा	से देखि हिअरा झूरे[13]
भीख	इआ	भिखिआ	भिखिआ न लेइ बढ़ाबए रिसी[14]

गीत विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 802/833
2- 670/689
3- 767/792
4- 767/792
5- 767/792
6- 867/892
7- 854/889
8- 453/462
9- 654/671
10- 168/173
11- 275/290
12- 275/290
13- 280/298
14- 772/797

विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय :

-अ, -ई, -आरा, -इक, -इत-, इम-, इल-, ल-, वत-, मत-, मंत -, -मय, -मअ -, इन - र, ईन , र , ईन - तर - रव तथा -त आदि पर प्रत्ययों के योग से व्युत्पन्न विशेषणों की रचना हुई है ।

गरू	अ	गरूअ	मान गरूअ किअ धरलि [1]
कपट	ई	कपटी	कपटी कन्हैया केलि नहि जानलि [2]
भार	ई	भारी	भूखन भेल भारी [3]
कनि	आरा	कनिआरा	कुटिल कटाख बान कनिआरा [4]
रस	इक	रसिक	विरल रसिक जन ई रसजान [5]
भूख	इत	भूखित	भूखित जन किये दुइ करे खान [6]
हरख	इत	हरखित	से हरखित मुँह हेरि न होए [7]
मधुर	इम	मधुरिम	हसि न बोलह मधुरिम दुइ बानि [8]
पुरूब	इल	पुरुबिल	तेजलन्हि माधव पुरुबिल प्रीत [9]
भूख	ल	भूखल	भूखल तुअ जजमान [10]
पियास	ल	पियासल	नयन पियासल हलल नमान [11]
गुन	वंत	गुनवंत	सकल पुरुख नारि नहि गुनवंत [12]
रस	वंत	रसवंत	तुहु रस नागरि नागर रसवंत [13]
बल	मत	बलमत	हमे अबला तोहे, बलमत नाह [14]
पुन	मंत	पुनमंत	माइ हे आज दिवस पुनमंत [15]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 44/50
2- 250/259
3- 252/2600
4- 432/442
5- 265/277
6- 727/752
7- 250/259
8- 37/40
9- 247/254
10-377/385
11-834/867
12-845/878
13-468/475
14-663/680
15-820/851

मनि	मय	मनिमय	मन्मिय हार धार कह सुरसरि [1]
चान्द	मअ	चान्दमअ	सगरिउ रअनि चान्दमअ हेरि[2]
मल	इन	मलिन	नयन नलिन मलिन समे[3]
मुंद	ल	मुंदल	धरनिसयन मुँदल नयन[4]
रगड़	ल	रगड़ल	रगड़ल चानन मृगमद कुंकुम[5]
नव	ईन	नवीन	नवीन रमनि धनि रस नहि जान[6]
घन	तर	घनतर	घनतर तिमिर सामरी[7]
खर	तर	खरतर	खरतर वेग समीरन सञ्चरू[8]
मार	ख	मारख	बड़ मारख ओ देषितहि मार[9]
मांग	त	मंगत	मंगत जना सबे कोटि कोटिपावे[10]
भय	आउनि	भयाउनि	अति भयाउनि आतर जउनि[11]

क्रिया-व्युत्पादक प्रत्यय:

शून्य ,-उ,-आय-, -वाए-, -आव-, -आओ-, -आउ- आदि अन्त्य तथा मध्य-प्रत्ययों के योग से क्रिया धातु, आज्ञार्थक, पूर्वकालिक सकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रिया प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं । कुछ स्थानों पर मूल धातु स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों में भी परिवर्तन हुआ है ।

बंध	बांधलनि	चौदिसि बांधलनि सीलकअरि[12]
उतर	उतारि	घाट पटम्बर धरु उतारि

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 446/455
2- 489/497
3- 237/243
4- 469/486
5- 237/243
6- 259/267
7-608/ 619
8- 510/516
9- 649/666
10- 682/702
11- 788/819
12- 479/481
13- 834/868

जुड़		जोड़ल	ते धसि मजुरे जोड़ल झाँप[1]
घुल		घोरल	बट्टा भरि घोरल कसाय[2]
मिट		मेटह	अपन सेवक कर मेटह कलेस[3]
मिल		मेलि	दुइ मन मेलि सिनेह अङ्कुर दोपत तेपत भेला[4]
तज		तेजबि	अबहुँ छोड़बि तेजबि नेहा[5]
छूट		छोड़ल	छोड़ल अभरन मुरली विलास[6]
टूट		तोड़ि	अञ्जलि भरि फुल तोड़ि लेल आनी[7]
फूट		फोड़ब	फोड़ब बोकामे[8]
चल		चल	भालभु समन्दि चल ससिमुखि[9]
सुन	उ	सुनु	मनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि[10]
सीख	आय	शिखायब	आपहिं गुरु हइ शिखायब काम[11]
बज	आय	बजायब	तोहे सिवधरि नट वेष कि डमरु बजायब हे[12]
बूझ	आय	बुझायबि	कतए बुझायबि ताइ[13]
उठ	वाए	उठवाएब	दसमी कलस घट उठवाएब[14]
चढ़	वाए	चढ़वाएब	बहुविधि बलि चढ़वाएब[15]
बूझ	आव	बुझाव	अपन मनोरथ जुगुति बुझाव[16]
सुन	आव	सुनाव	सबहि सुनाव तोर उपदेस[17]
मिल	आय	मिलायब	प्रेम मिलायब याइ[18]
सो	आउ	सोआउलि	पतिगृह सखिन्हि सोआउलि बोधि[19]
जी	आउ	जिआउलि	आज धरि मोजे आसे जिआउलि[20]
बढ़	आओ	बढ़ाओल	रतन फलब बोलि बढ़ाओल[21]
दे	आओ	देआओब	जलज दल कत न देह देआओब[22]
बइस	आओ	बइसाओल	रातोपल जनि कमल बइसाओल[23]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1-739/762
2-764/788
3-791/824
4-119/129
5-422/433
6-366/373
7-786/816
8-783/812
9-544/551
10-852/887
11-558/565
12-753/776
13-367/374
14-767/792
15-767/792
16-277/293
17-346/353
18-380/388
19-661/679
20-238/244
21-234/241
22-161/166
23-415/426

क्रिया-विशेषण व्युत्पादक पर -प्रत्यय:

सार्वनामिक अंगों के साथ पर प्रत्यय जुड़कर कालवाचक, स्थान वाचक, रीतिवाचक तथा परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं।

कालवाचक क्रिया- विशेषण :

सार्वनामिक अंगों के साथ -ब तथा -खन जुड़कर कालसूचक क्रिया-विशेषण पदों की रचना करते हैं।

ज	ब	जब	जब तुअ रूप नयन भरि पबिइ[1]
त	ब	तब	तब जिउ भार धरब कोन सुख[2]
क	ब	कब	हँसइत कब तुहुं दसन देखाएलि[3]
ज	खन	जखन	जखन बुझत निज गुनकर बतिया[4]
त	खन	तखन	तखन के होत धरहेरिया[5]
क	खन	कखन	कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ

इन क्रिया विशेषणों के साथ - ए प्रत्यय के संयुक्त होने पर निम्न रूप व्युत्पन्न हुए हैं।

जबे[7], तबे[8], कबे[9], जखने[10], तखने[11], कखने[12]

-ब प्रत्ययान्त क्रिया विशेषणों के साथ -ए, -हुं तथा -हूँ आदि अवधारणा सूचक प्रत्यय लगते हैं।

अब	ए	अबे	अबे तेहि सुन्दरि मने नहि लाज[13]
अब	हुँ	अबहुँ	अबहुँ न सुमिरह मधुरिपु[14]
कब	हुँ	कबहुँ	कबहुँ न जानिअ विरह वेदना[15]
तब	हूँ	तबहूँ	तबहूँ व्याधक गीत सुनइत करू साध[16]

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 142/150
2- 382/390
3- 320/329
4-780/807
5-780/807
6-780/807
7-480/488
8-615/627
9-173/178
10- 82/93
11-475/482
12- 58/60
13- 32/35
14- 18/18
15-140/147
16- 45/51

स्थान वाचक :

स्थान सूचक क्रिया-विशेषण भी सार्वनामिक अंगों के साथ हाँ, आहाँ, थि - थी आदि प्रत्ययों के योग से व्युत्पन्न हुए हैं ।

ज	हाँ	जहाँ	जहाँ बसे दारुण चन्दा [1]
त	हाँ	तहाँ	हरि तहाँ हरि पर आगी [2]
क	हाँ	कहाँ	कहाँ लए जाइति अलपमूले [3]
क	था	कथा	कथा ताहेरि वासा [4]
ए	था	एथा	पथिक एथा लेहे बिसराम [5]
ज	आहाँ	जाहाँ	जाहाँ हरि पाइअ रे [6]
त	आहाँ	ताहाँ	याहाँ गुन ताहाँ दोष [7]
इ	थी	इथी	
उ	थि	उथि	उथि अछ सुधा इथी अछ हास [8]

उपरोक्त जहाँ, वहाँ, कहाँ तथा यहाँ के अर्थ में जतए, ततए, कतए, ओतए तथा एतए रूप भी उपलब्ध हुए हैं, ये क्रमशः जत, तत, कत, ओत तथा एत सार्वनामिक क्रिया-विशेषण में -ए प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न हैं ।

जत	ए	जतए	चल उठि जतए मुरारि [9]
तत	ए	ततए	काँ लागि ततए पठओलए मोहि [10]
कत	ए	कतए	कतए अरुन उदयाचल ऊगल [11]
ओत	ए	ओतए	ओतए छलि धनि निअपिअपास [12]
एत	ए	एतए	एतए आइलि धनि तुअ विसवास [13]

गीत-विद्यापति

1-72/83
2-282/299
3-526/533
4-10/10
5-79/90
6-216/221
7-180/184
8-430/440
9-475/483
10-373/381
11-731/756
12-531/538
13-531/538

रीतिवाचक क्रिया-विशेषण :

- अइसन क्रिया विशेषण पद का योग सार्वनामिक अंगों के साथ होने से अन्य रीतिवाचक क्रिया विशेषण व्युत्पन्न हुए हैं ।

ज	अइसन	जइसन	जइसन बाद़ए मृणालक सूत[1]
त	अइसन	तइसन	आबे दिने दिने तइसन कएलह[2]
क	अइसन	कइसन	कइसन कए की बुझत तुअ आन[3]

परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण :

सार्वनामिक अंगों के पश्चात -त प्रत्यय लगकर परिमाण वाचक क्रिया विशेषण व्युत्पन्न हुए हैं । तथा कुछ स्थान पर - त प्रत्यय के पश्चात -बा और -बो प्रत्यय भी संयुक्त हुए हैं ।

ज	त	जत	जत देखल तत पुरतोह मदने[4]
त	त	तत	
क	त	कत	कत कहबो कत सुमिरबे[5]
जत	बा	जतबा	जतबा जकर लेले अछ सुन्दरि[6]
एत	बा	एतबा	एतबा अएलाहु जानी[7]
कत	बो	कतबो	समय पाए तरू-वर फर रे कतबो सिचुनीर[8]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 844/878
2- 34/37
3- 518/525
4- 206/211
5- 267/280
6- 235/242
7- 235/242
8- 275/290

समास- प्रक्रिया :

उपसर्ग तथा पर प्रत्यय के योग के अतिरिक्त स्वतन्त्र पदों के परस्पर योग के द्वारा भी शब्द रचना हुई है । " गीत- विद्यापति" में स्वतन्त्र पदों के योग से संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया-विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न हुए हैं

संज्ञा प्रातिपदिक :

समासिक प्रक्रिया के अन्तर्गत दो स्वतन्त्र पदों , संज्ञा-संज्ञा, संज्ञा-विशेषण ,विशेषण-संज्ञा , संज्ञा-क्रिया, विशेषण-विशेषण ,अव्यय-संज्ञा के योग द्वारा संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न हुए हैं ।

दिन	मणि	दिनमणि	दिनमणि तेजि कमल जनिजाब[1]
कुसुम	सर	कुसुमसर	कसि कसि रङ्ग कुसुमसर लेइ[2]
सुर	पति	सुरपति	सुरपति पाए लोचन मागञो[3]
कनक	गिरि	कनकगिरि	कनकगिरि पबाल उपजल[4]
नर	पति	नरपति	लखिमा देविपति सिवसिंह नरपति[5]
गज	वर	गजवर	गजवर जिनि गति मन्दा[6]
खग	वर	खगवर	जनि सृङ्खल में खगवर बाँधल[7]
पाँच	बान	पाँचबान	पाँचबान अब लाख बान होउ[8]
अध	बोली	अधबोली	सीञ्चि सुधाए अधबोली बाज[9]
नील	कण्ठ	नीलकण्ठ	नीलकण्ठ हर देवा[10]
धरा	धर	धराधर	उयल चारु धराधर राज[11]
जल	धर	जलधर	जलधर उलट पडल महीमाझ[12]
मन	मथ	मनमथ	मनमथ भेल अधिकारी[13]
सामर	सुन्दर	सामरसुन्दर	सामरसुन्दर ओ बाटे आएल[14]
सदा	सिव	सदासिव	पूजब सदासिव गौरि के सात[15]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1 - 2/2
2 - 7/7
3 - 10/10
4 - 23/27
5 - 57/66
6 - 321/330
7 - 333/341
8 - 395/406
9 - 408/421
10-774/800
11-651/668
12-651/668
13-188/192
14-778/805
15-10/10

विशेषण - प्रातिपदिक :

सामासिक विशेषण प्रातिपदिक दो स्वतन्त्र पदों , संज्ञा-संज्ञा, संज्ञा - विशेषण , संज्ञा-कर्तृवाचक कृदन्त , संज्ञा-क्रिया तथा विशेषण एवं संज्ञा के साथ भूतकालिक कृदन्त के योग से व्युत्पन्न हैं ।

कमल	वदनी	कमलवदनी	कमलवदनी राही[1]
सुधा	मुखि	सुधामुखि	सुधामुखि कोविहि निरमिल बाला[2]
गुन	निकेतन	गुन निकेतन	गुन निकेतन पहु तोहसन[3]
इन्दु	वदनी	इन्दुवदनी	इन्दुवदनी धनि नयन विशाला[4]
कवि	वर	कविवर	विद्यापति कविवर एहो गाओल[5]
ओठ	पातरि	ओठापातरि	तञे ओठपातरि कि बोलिबों तोहि[6]
मति	हीना	मतिहीना	माधव अबला पेखलु मतिहीना[7]
मति	वामा	मतिवामा	हम अबला मतिवामा[8]
भाग	विहीन	भागविहीन	भागविहीन जन आदर नहिलह[9]
गुन	गाहक	गुनगाहक	गुनगाहक पहु बुझथि विचारि[10]
सुख	दायक	सुखदायक	अगेमाई,जोगिया मोर जगत सुखदायक[11]
बोल	छड़	बोलछड़	तोहे बड़ बोलछड़ कान्ह[12]
पुरुब	कृत	पुरुबकृत	पुरुबकृत फल पाओल[13]
हृदय	गत	हृदयगत	नागर लखत हृदयगतपेम[14]
कण्ठ	आगत	कण्ठागत	सेदेखिमधिक कंठागतजीव[15]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 416/427
2- 423/434
3- 535/542
4- 431/442
5- 810/842
6- 683/702
7- 158/163
8- 160/165
9- 208/213
10- 412/424
11- 754/777
12- 692/712
13- 44/50
14- 705/726
15- 220/226

क्रिया-विशेषण प्रातिपदिक :

भरि, भरे, धरि, दिगे, कुले, परि, भाँति, विधि तथा बानि आदि पद संज्ञा सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया विशेषण प्रातिपदिकों के साथ क्रिया विशेषण प्रातिपदिक पद बन्ध व्युत्पन्न करते हैं जो काल वाचक, परिमाणवाचक दिशावाचक तथा रीतिवाचक हैं ।

नयन	भरि	नयनभरि	जब तुअ रूप नयनभरि पीबइ[1]
मन	भरि	मन भरि	उठ बधाव कह मन भरि सजनी [2]
दिठि	भरि	दिठिभरि	दिठि भरि हेरब सो चान्दबयान[3]
स्त्रवन	भरि	स्त्रवन भरि	हे हरि हे हरि सुनए स्त्रवन भरि [4]
एं	भरि	एंभरि	एंभरि कुलक गारि [5]
ओ	भरि	ओ भरे	ओ भरे लागल नव सिनेहा[6]
ए	दिगे	एदिगे	एदिगे झपइते तनु उदिगे उदास[7]
उ	दिगे	उदिगे	
ऐ	कुले	कुले	ऐकुले कुल कलङ्क हराइअ ओ कुले आरतितोर[8]
ओ	कुले	ओकुले	
तब	धरि	तबधरि	तब धरि दगधे अनङ्ग [9]
ताओ	धरि	ताओधरि	ताओधरि जानि पञ्चम गाबह [10]
ओल	धरि	ओलधरि	प्रथम प्रेम ओल धरि राखए [11]
ते	परि	तेंपरि	तें परि तकर करओ परिहार[12]
कओने	परि	कओनेपरि	कओने परि ततय रतल अछ बालम निभय निगुण समाजे[13]
बहुत	भाँति	बहुतभाँति	बाजथि बहुत भाँति सो सजनीगे [14]
बहु	भाँति	बहु-भाँति	बोह रचलि बहु भाँति [15]
कति	भाँति	कतिभाँति	समय खेपसि कत भाँति [16]
तेहि	भाँति	तेहि भाँति	तेहि भाँति कर अधर पान [17]
कवन	विधि	कवनविधि	सिव हो उतरब पार कवनविधि[18]
विविध	बानि	विविधबानि	केतकि कुसुम आनि विरचि विविधबानि[19]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1-142/150	1-32/34
2-389/399	2-136/143
3-388/398	3-292/308
4-846/880	4-450/459
5-509/515	5-463/471
6-509/515	6-813/845
7-594/601	7-778/805
8-543/551	8-481/489
9-327/335	9-33/36
10--135/142	

स्त्री-प्रत्यय :

जिन पर प्रत्ययों का प्रयोग पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिये किया जाता है उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं । गीत-विद्यापति में स्त्री-प्रत्यय-आ -इ - ई, इन-, इनि-, आनी तथा औनी का प्रयोग स्त्रीलिंग संज्ञा प्रातिपदिक तथा -इ प्रत्यय का प्रयोग विशेषण तथा क्रियापदों को स्त्रीलिंग बनाने में हुआ है ।

संज्ञा स्त्रीलिंग प्रातिपदिक:

तनय	आ	तनया	खगपति तनय तासि रिपुतनया[1]
बाल	आ	बाला	सेये अलप वयसि बाला[2]
नागर	इ	नागरि	नव जुवराज नवल नव नागरि[3]
दादुर	इ	दादुरि	मत्त दादुरि डाके डाहुकि[4]
चकोर	ई	चकोरी	चान्द किरन जइसे लुबुधि चकोरी[5]
दूत	ई	दूती	दूती कएलए जनि सिआरि[6]
भूत	इन	भूतिन	योगिन भूतिन सिव के संघतिया[7]
योग	इन	योगिन	
कुमुद	इनि	कुमुदिनि	कुमुदिनि चान्द मिलल सहवास[8]
कमल	इनि	कमलिनि	कमलिनि भमरा धएल लुकाए[9]
चकोर	इनी	चकोरिनी	के जाने चाँद चकोरिनी बञ्चब[10]
भव	आनी	भवानी	पाहुन आएल भवानी[11]
ब्रह्मा	आनी	ब्रह्मानी	ब्रह्मा घर ब्रह्मानी कहिअए[12]
जेठ	औनी	जेठौनी	सासु ससुर नहि ननद जेठौनी[13]

विशेषणस्त्रीलिंग प्रातिपदिक :

बड़	इ	बड़ि	हरि बड़ चेतन तोरि बड़िकला[14]
कार	इ	कारि	कनय पर सुतलि जनि कारिसापिनी[15]
लुबुधल	इ	लुबुधलि	माधव तुअगने लुबुधलि रमणी[16]
मातल	इ	मातलि	विरहक मातलि घुपरहे नारि[17]
गुनवत	इ	गुनवति	भनहि विद्यापति गुनवति नारि[18]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 451/459
2- 318/328
3- 599/607
4- 171/176
5- 477/485
6- 471/478
8-2/2
9-132/140
10-138/145
11-771/796
12-810/842
13-749/772
14-477/485
15- 11/11
16- 15/16
17- 260/269
18- 249/258

क्रिया स्त्रीलिंग प्रातिपदिक :

चलल	इ	चललि	पिआ गोद लेल कै चललि बजार[1]
देखल	इ	देखलि	देखलि हम जाइत वर जुवती[2]
करबि	इ	करबि	मान करबि आदर जानि[3]
खाइत	इ	खाइति	कि हर बान वेद गुन खाइति[4]

उपसर्ग तथा पर-प्रत्यय युक्त शब्द :

"गीत-विद्यापति" में शब्द-रचनान्तर्गत उपसर्ग एवं पर-प्रत्यय दोनों के योग से भी रचनात्मक व्युत्पत्ति गठित है ।

अधि	कार	ई	अधिकारी	जावे मदन अधिकारी [5]
प्रति	वाद	ई	प्रतिवादी	वादी तह प्रतिवादी भीत[6]
वि	गल	इत	विगलित	ताहि खन विगलित तनुमन लाज[7]
वि	योग	इनि	वियोगिनि	माधव देखलि वियोगिनि बाले[8]
अ	भाग	इनि	अभागिनि	हम जे अभागिनि पापिनि नारि[9]
वि	नास	इत	विनासित	विधान विनासित सोके [10]
अनु	रञ्ज	इत	अनुरञ्जित	साभर बरन नयन अनुरञ्जित [11]
उत	कण्ठ	इत	उतकण्ठित	मत उतकण्ठित कतएन धाव[12]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 847/881
2- 342/349
3- 607/617
4- 122/132
5- 837/871
6- 822/854
7-13/13
8- 258/267
9- 273/288
10-788/840
11-806/817
12-520/527

आन्तरिक परिवर्तन ‡ सन्धि ‡

जब दो शब्द आपस में संयुक्त होते हैं तो उनमें आन्तरिक परिवर्तन होता है । विश्लेष्य-कृति में आन्तरिक परिवर्तन के विभिन्न उदाहरण प्राप्त हुए हैं ।

दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं । अ + अ = आ

मुर + अरि = मुरारि[1]

विद्यापति + इत्यादि = विद्यापतीत्यादि[2]

देस + अन्तर = देसान्तर[3]

निम्न उदाहरणों में "अ" मात्रा रूप में आया है । अ + आ = आ

सरन + आगम = सरनागत[4]

कमल + आसन = कमलासन[5]

निम्नलिखित उदाहरणों "अ" के बाद इ या ई आने पर इ या ई के स्थान पर "ए" के रूप में आन्तरिक परिवर्तन हुआ है ।

नर + इन्द्र = नरेन्द्र[6]

सिंह + ईश्वर = सिंहेश्वर[7]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 659/676
2- 392/402
3- 79/90
4- 808/840
5- 791/823
6- 855/890
7- 785/814

कुछ आन्तरिक परिवर्तन अघोष के स्थान पर सघोष हो जाने के कारण भी हुए हैं ।

दिक + अम्बर = दिगम्बर[1]

प्रविलसत + अमरपुरी = प्रविलसदमरपुरी[2]

दिक + अन्तर = दिगन्तर[3]

विसर्ग के स्थान पर "ओ" के रूप में आन्तरिक परिवर्तन प्राप्त हुआ है ।

पय : + निधि = पयोनिधि[4]

पय : + धर = पयोधर[5]

अध : + मुख = अधोमुख[6]

मन: + भव = मनोभव[7]

"इ" के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर "इ" के स्थान पर "य" हो जाता है ,यह परिवर्तन भी विश्लेष्य भाषा में मिला है ।

बि + आकुल = व्याकुल[8]

ओ तथा औ के पश्चात "अ" आने पर उसके स्थान पर अब एवं आव हो जाता है ।

पो + अन = पवन[9]

पौ + अक = पावक[10]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 855/890
2- 785/814
3- 779/806
4- 799/831
5- 837/871
6- 644/662
7- 524/531
8- 360/367
9- 196/200
10- 196/201

विश्लेष्य भाषा में विभिन्न पूर्व प्रत्ययों तथा पर- प्रत्ययों के योग से शब्द रचना हुई है । कुछ मध्य-प्रत्ययों का भी प्रयोग क्रिया रूप रचना में किया गया है । स्त्रीलिंग पर प्रत्यय आ, इ, ई इनि तथा इनी आदि का योग भी पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने में किया गया है ।

अध्याय -3 " लिंग- विधान "

लिंग विधान में स्त्रीलिंग प्रत्ययों का महत्वपूर्ण योग रहता है । स्त्रीलिंग प्रत्ययों को लेकर दो प्रकार से विचार किया जाता है, प्रथम प्रतिपादिक-रचना के अन्तर्गत सम्बद्ध करके तथा दूसरे इसे एक व्याकरणिक कोटि के रूप में । प्रस्तुत प्रकरण में लिंग- विचार व्याकरणिक कोटि के रूप में विश्लेषण का विषय बनाया गया है ।

" गीत- विधापति " में कुछ पद प्राकृतिक लिंग के आधार पर प्रयुक्त हुए हैं।

पुंलिग	स्त्रीलिंग
नर[1]	नारी[2]
बलद [3]	गाए[4]
तरु [5]	लता [6]

संज्ञा पुल्लिग - विचार :

"विवेच्य-ग्रन्थ में पुल्लिंग पदों के अन्त में - अ;आ,-इ, -ई तथा-उ का ही मुख्य रूप से प्रयोग हुआ है । - ए अन्त वाले पद मूल नहीं हैं ,वरन् छन्दानुरोध अथवा कारक-विभक्ति (-ए) के योग से अकारान्त संज्ञा पुल्लिग पद एकारान्त हो गये हैं । मात्र दो पद " भैरो , देओ संज्ञा पुल्लिग ओकारान्त के मिले हैं । इसी प्रकार ऐकारान्त संज्ञा पुल्लिग पद के एकाध उदाहरण प्राप्त होते हैं । औकारान्त संज्ञा पदों का सर्वथा अभाव है । इन संज्ञा पदों के उदाहरण निम्नवत हैं ।

"गीत- विधापति 1- 57/66 4- 763/787
पृष्ठ सं0/पद सं0 2- 516/526 5- 79/90
3- 742/764 6- 816/848

अकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ :

विश्लेष्य-भाषा में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों की संख्या अन्य अन्त्य ध्वन्यात्मक पदों की अपेक्षा अधिक है ।

कनक	कि दिअ अजर कनक उपम [1]
नारद	नारद तुम्बुर मङ्गल गाबथि [2]
दैत्य	कतओक दैत्यमारि मुँह मेलल [3]
हृदय	न पुर हृदअ साध [4]
कान्ह	एकसर सब दिसि देखिअ कान्ह [5]
भमर	कमल भमर जग अछए अनेक [6]
दीप	पवन न सहए दीप के जोति [7]
नृप	नृप आसन नव पीठलपात [8]
काम	स्याम भुअङ्गम देखि क किओ काम परहार [9]
चकोर	जनि से चाँद चकोर [10]
कमल	अरुन कमल के कान्ति चोरओलह [11]
कुमुद	आँतर चाँदहु कुमुद कत दूर [12]

गीत- विद्यापति - पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 266/278
2- 758/780
3- 806/837
4- 522/529
5- 2/2
6- 60/71
7- 351/358
8- 814/848
9- 431/442
10- 20/21
11- 54/62
12- 700/721

आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ

अकारान्त के बाद प्रयोग संख्या की दृष्टि से आकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों का बाहुल्य है ।

राजा	सिवसिंह राजा रूप नाराअेन [1]
हीरा	हीरा सओ हे हरदि भेल पेम [2]
सोना	सोना गाथलि मोती [3]
पिता	समन पिता सुत रिपु धरनी सख सुत तन वेदन होइ[4]
सखा	हरि पति बैरि सखा सम तामसि रहसि गमावसि रोइ[5]

इकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ

"विवेच्य-ग्रन्थ"में इकरान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों का प्रयोग भी पर्याप्त संख्या में हुआ है ।

कवि	विधापति कवि गाव[6]
पति	रानि लखिमाक पति[7]
ससि	दिनेदिने ससि कला[8]
मुनि	सुर मुनि मनुज रचित[9]

गीत- विधापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 524/531
2- 96/107
3- 119/129
4- 283/300
5- 283/300
6- 564/570
7- 561/567
8- 563/569
9- 809/840

ईकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ :

ईकारान्त पुल्लिग संज्ञा पदों की संख्या अत्यल्प है :

हाथी	मातल्ने बान्धलि हाथी[1]
जोगी	जोगी बेस धरि अओल आज[2]

उकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ :

"गीत -विद्यापति " में उकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों के उदाहरण भी पर्याप्त संख्या में प्राप्त होते हैं ।

रिपु	क्रुद्ध सुर रिपु बल नियातिनि [3]
गुरु	तथिहु गुरुजन रोस[4]
साधु	साधु जन का परहित लागि न धन परान[5]
राहु	राहु पियासल चान्देगरासए[6]
सिसु	कि सिसु बालभ तोरा [7]
पसु	रहितहुँ पसु क समाजे [8]

ऊकारान्त तथा ओकारान्त पुल्लिग संज्ञा पद के क्रमशः एक और दो उदाहरण

कानू	कानू से सुजन हाम दुरजन[9]
भैरों	भैरों बजावे मृदंगिया[10]
देओ	भनइ विद्यापति देवकिदेओ[11]

गीत-विद्यापति :
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 611/622
2- 593/600
3- 805/836
4- 702/723
5- 723/747
6- 723/747
7- 728/755
8- 742/764
9- 41/45
10- 783/811
11- 760/783

ऐकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पद का एक मात्र उदाहरण "उच्छवै" प्राप्त हुआ है, जबकि औकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पद का एक भी उदाहरण उपलब्ध नहीं है ।

स्त्री- प्रत्यय :

"विवेच्य-ग्रन्थ" में - आ, -इ, -ई, -इन, -इनि तथा -इनी स्त्री-प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ; इनमें - ई तथा -इनी प्रत्यय-प्रयोगों का बाहुल्य है ।

अकारान्त, इकारान्त तथा ईकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों के साथ - इन, - इनि तथा - इनी स्त्री प्रत्यय के योग से स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बनी हैं :

- इन :

भगत	भगतिन[1]
योगी	योगिन[2]

- इनि :

कुमुद	कुमुदिनि[3]
कमल	कमलिनि[4]

- इनी :

चकोर	चकोरिनी[5]
पति	पतिनी[6]
कमल	कमलिनी[7]

गीत- विद्यापति - पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 783/811
2- 783/811
3- 2/2
4- 132/140
5- 138/145
6- 448/457
7- 173/178

अकारान्त तथा आकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों के साथ - इ एवं - ई स्त्रीलिंग प्रत्ययों के योग से स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बनी हैं :

- इ :

दादुर	दादुरि [1]
डाहुक	डाहुकि [2]

- ई :

हरिन	हरिनी [3]
भुजग	भुजगी [4]
दूत	दूती [5]
चकोर	चकोरी [6]
सखा	सखी [7]

अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों के अन्त में - आ स्त्री प्रत्यय जुड़कर आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों की रचना हुई है :

- आ :

राम	रामा [8]
बाल	बाला [9]
कमल	कमला [10]

एक स्थान पर-आनी और-औनी स्त्रीलिंग प्रत्यय भी प्रयुक्त हुए हैं :

- आनी

ब्रह्मा	ब्रह्मानी [11]

- औनी : जेठ जेठौनी [12]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 171/176
2- 171/176
3- 45/51
4- 93/104
5- 470/478
6- 470/478
7- 181/185
8- 517/524
9- 416/428
10-477/485
11- 810/842
12- 749/772

स्त्रीलिंग संज्ञाओं का स्वरूप :

"गीत- विधापति" में अकारान्त , आकारान्त, इकारान्त तथा इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों का ही मुख्यरूप से प्रयोग हुआ है । इनके उपरान्त उकारान्त और एकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ आती हैं । ऐकारान्त तथा ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के दो-दो उदाहरण मिले है । ओकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद का एक मात्र उदाहरण प्राप्त हुआ है । 'विवेच्य-ग्रन्थ' में औकारान्त स्त्रीलिंग का कोई उदाहरण नही प्राप्त होता है :

अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद :

अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है :

रात	ता बिने रात दिवस नहि भाओइ[1]
बात	कैओ न कहए मझु बालभु बात[2]
ननद	सासु ससुर नहि ननद जेठौनी[3]
मीन	मनमथ मीन बनसिलय[4]
साँझ	साँझ क बेरि सेव कोइ मांगइ[5]
वयस	पहिल वयस नहि मझु रतिरङ्ग[6]

आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद :

आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञापदों की संख्या भी अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध है

शङ्का	कत न उपजाए विरह शङ्का[7]
करुणा	भमरि करुणा कर[8]
बाधा	किछु न मानए बाधा[9]
राधा	नव अनुरागिनि राधा[10]
सेवा	दुरहि रहओ मोरि सेवा[11]
आसा	आइति न करिअ आसा भङ्ग[12]

गीत- विधापति - पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 380/388
2- 132/140
3- 799/772
4- 663/684
5- 799/831
6- 724/749
7- 466/473
8- 101/112
9- 505/511
10-505/511
11-572/579
12-462/470

इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद :

इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद आकारान्त संज्ञा पदों के समान ही अधिक संख्या में प्राप्त होते हैं :

रुचि	नोनुअ वदन कमल रुचि तोर[1]
दीठि	दीठि नुकाएल मोरा[2]
गति	सकल जन सुजनगति रानि लखिमाकपति[3]
धनि	धनि रस राखि करब रतिरङ्ग[4]
भूमि	पलङ्गानइ सुतथि ओ भूमि सयाने हे[5]

ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद : इस प्रकार के संज्ञा पदों की संख्या अपेक्षाकृत कम है

बानी	भनहिं विधापति बानी[6]
रजनी	गुरुतर रजनी बासर छोटि[7]
गोपी	रसिक पए राख गोपी जनमान[8]

उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद :

'विवेच्य-ग्रन्थ' में उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों की संख्या पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है :

सासु	सासु करओलह रोस[9]
धेनु	काम धेनु कत कौतुके पूजलो[10]
रितु	एहन वयस रितु करैक नहि थिकई[11]

"गीत-विधापति
पृष्ठ सं०/पद संख्या

1- 579/586
2- 333/341
3- 561/567
4- 561/568
5- 789/821
6- 632/645
7- 673/692
8- 624/636
9- 732/757
10- 139/146
11- 666/685

ऊकारान्त तथा ऐकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के दो -दो उदाहरण मिलते हैं

बधू	तिथिहु बधू जन शङ्कन याथि [1]
बहू	की लए पोसब दहु परिजन पुतबहू [2]
नीन्दै	तब मझु नीन्दै भरल सब देह [3]
सारदै	न न न न कर सखि सारदै ससिमुखि [4]

एकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के भी अत्यल्प उदाहरण प्राप्त हुए हैं :

गाए	गोप क नन्दन गाए चरइतहुँ [5]
माए	बाप क्तय क्त माए [6]

ओकारान्त स्त्रीलिंग पद के मात्र दो उदाहरण मिले हैं :

सारो	सारो आनि सेचानके सोपलह [7]
नाओ	सबे लए चढ़लिहु तोरहि नाओ [8]

औकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद का कोई भी उदाहरण प्राप्त नहीं होता है ।

गीत-विद्यापति- पृष्ठ सं०/पद संख्या

1- 113/123
2- 788/819
3- 588/595
4- 735/758
5- 742/764
6- 744/767
7- 457/465
8- 622/634

सर्वनाम लिंग-विचार :

"गीत- विद्यापति" में तीनों पुरुषों के संबंध कारकीय रूपों में लिंग-भेद विद्यमान है तथा अन्य सर्वनाम पद लिंग -निरपेक्ष्य हैं ।

पुल्लिंग सर्वनाम :

'विश्लेष्य-ग्रन्थ' की भाषा में पुल्लिंग सर्वनाम पद अकारान्त, आकारान्त इकारान्त एकारान्त तथा ओकारान्त हैं : यह स्थिति तीनों पुरुषों में पाई जाती है :

मोर	जखने मोर मन परसन भेला[1]
तोर	ओ कुले आरति तोर [2]
हमर	हमर से दुख सुख[3]
हमार	ते जानल जिव रहत हमार [4]
तोहर	तोहर चरित नहि जानी [5]
तोहार	ताहि पुन सूनल नाम तोहार[6]
अपन	रभसे अपन जिउ परहथ देल [7]
तकर	तेपरि तकर करओ परिहाद[8]
ताकर	ताकर बचने याइ[9]
जकर	जकर नाह सुचेतन नही[10]
जाक	जाक दरस बिन झरय नयान[11]
केकर	केकर एहन जमाय[12]
हुनक	हमर अभाग हुनक कोन दोस[13]
हिनक	केओ नहि हिनक परिवार[14]

गीत-विद्यापति - पृष्ठ सं०/पदसं०

1- 64/76
2- 543/551
3- 101/112
4- 533/540
5- 39/43
6- 15/15
7- 12/12
8- 33/36
9- 41/45
10- 74/85
11- 366/373
12- 744/767
13- 246/354
14- 744/767

मोरा	कतहु न रोला मोरा सङ्गहु लागि[1]
तोरा	तोरा अधर अमिअ लेल वास[2]
हमरा	हमरा तैसन दोसर नहि गोह[3]
अपना	जाबे से धन रह अपना हाथ[4]
तकरा	तकरा बजइते कतए निरोध[5]
ओकरा	ओकरा हृदअ रहए नहि लागि[6]
जकरा	जकरा भरे घर युवती रे[7]
केकरा	बैठति धिआ केकरा ठहियाँ[8]
ताहेरि	कथा ताहेरि वासा[9]
जाहेरि	पदयावक रस जाहेरि हृदअ अछ[10]
हमारे	संसअ नतेजए हृदअ हमारे[11]
अपने	अपने रभसे हसि किछुओ उतरदेसि[12]
मोरो	मोरो मन हे खनहि खन भाग[13]
हमरो	तेजलन्हि हमरो सिनेह[14]
तिहरो	माधव कि कहब तिहरो गाने[15]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1-760/783
2-720/744
3-279/296
4-100/111
5-460/468
6-527/534
7-82/93
8-749/772
9-10/10
10- 688/708
11- 529/536
12- 52/60
13- 86/97
14- 254/263
15- 243/250

<u>स्त्रीलिंग सर्वनाम :</u>

"गीत- विद्यापति" में स्त्रीलिंग सर्वनाम पद इकारान्त तथा ईकारान्त हैं और सम्बन्धकारकीय सर्वनाम पदों के अन्तर्गत -इ तथा-ई स्त्रीलिंग प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं :

– इ :

मोरि	अबे अनाइति मोरि [1]
तोरि	हरि बड़ दारुन तोरि बड़ि कला[2]
हमारि	हमारि ओ विनति कहब सखिओए[3]
अपनि	उठि आलि ए अपनि छाआ[4]
तोहारि	धनि बाटिया हेरइ तोहारि[5]
जकरि	से से करति जकरि जे जाति[6]
तन्हिकरि	तन्हिकरि धसमसि विरह कसोस[7]
ई :	
मोरी	रङ्ग कुरङ्गिनि मोरी[8]
तोरी	होइहों दासी तोरी[9]

"मञे , मोञे , मों, " हम, हमें " तु, तूँ ,तों , तञे ,तोञे " " ओ, ऊ , उह , ओह , हुन्हि , जे , इह , से तथा सो सर्वनाम पदों का प्रयोग स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग दोनों में हुआ है तथा ये लिंग-भेद से अप्रभावित हैं ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद संख्या

1- 79/90
2- 477/485
3- 100/ 111
4- 383/391
5- 28/30
6- 585/590
7- 46/53
8- 215/219
9- 228/235

विशेषण लिंग-विचार :

'विवेच्य-ग्रन्थ' में दो प्रकार के विशेषण पदों का प्रयोग हुआ है, पहले वे जो लिंग से प्रभावित हैं और दूसरे जिन पर लिंग - भेद का कोई प्रभाव नही पड़ा है । पहले प्रकार के अन्तर्गत अकारान्त तथा आकारान्त विशेषण पद आते हैं दूसरे प्रकार के विशेषण पदों के बारे में अन्त्य ध्वनि को लेकर कोई निश्चित स्थिति नही है अर्थात इनमें सभी स्वरान्त्य वाले विशेषण पद प्राप्त होते हैं :

पुल्लिंग विशेषण पद :

दीघर	की मोर दीघर मान [1]
ऊजर	जेठ मास ऊजर नवरङ्ग [2]
मन्द	मन्द समीर विरह वध लागि [3]
काला	अकमि कानरा कि कहब काला [4]
काचा	काचा सिरिफल नखमुति लओलन्हि [5]
गोरा	एक तनु गोरा [6]

स्त्रीलिंग विशेषण पद :

"गीत-विद्यापति" में स्त्रीलिंग विशेषण पदों के अन्तर्गत- इ प्रत्यय का प्रयोग किया गया है :

दीघरि	पूस खीन दिन दीघरि राति [7]
नवि	नवि नागरि नव नागर विलसए [8]
मन्दि	मदन बान के मन्दि बेबथा [9]
तरुनि	तरुनि वयस मोर बीतल सजनी [10]
सामरि	कुच कलश लोटाइलि धन सामरिवेणी [11]
सगरि	जामिनि सगरि उजागरि भेलि [12]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 70/81
2- 274/288
3- 619/631
4- 7/7
5- 214/219
6- 327/335
7- 273/288
8- 45/52
9- 8/8
10- 262/273
11- 11/11
12- 132/140

उपरोक्त के अतिरिक्त कुछ क्रमवाचक, केवलात्मक, भूतकालिक कृदन्त तथा प्रणालीवाचक विशेषण पद भी स्त्रीलिंग - "इ" प्रत्यय के योग से परिवर्तित हुए हैं :

इ :

दोसर	दोसरि	आबए दोसरि बेला [1]
नवम	नउमि	नउमि दसा देखिओलाहे[2]
एकसर	एकसरि	हमें एकसरि पिआ देसान्तर[3]
एकल	एकलि	एकल नारि हमें कत अनुरञ्जब[4]
छेकल	छेकलि	जालक छेकलि हरिनी[5]
बैठल	बैठलि	निसि बैठलि सुवदनिझूर[6]
तइसन	तइसनि	तइसनि दसा मोरि भेली[7]
ऐसन	ऐसनि	मान ओकरति पहु ऐसनि ओहि[8]
जैसन	जैसनि	तोह बिनु जैसनि रमनी[9]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद सं0
1- 545/552
2- 217/223
3- 79/90
4- 578/585
5- 512/518
6- 27/30
7- 88/99
8- 77/88
9- 107/118

15

लिंग- निरपेक्ष्य विशेषण पद :

इन्हें अविकारी विशेषण पद नाम भी दिया उदाहरण इस प्रकार हैं :

परिमाण-वाचक विशेषण पद :

अधिक	अवधि अधिक दिन लेखी[1]
बहुत	एकल भमर बहुत कुसुम[2]
अथाह	नदिआ जोरा भअउ अथाह[3]
सकल	भन विद्यापति सुन रमापति[4]
सभ	सखि सभ जाय खेलाओल रङ्ग करि[5]

संख्यावाचक विशेषण पद :

एक	एकपुर कान्ह बस मोपति[6]
दुइ	दुइ पथ चढ़लि नितम्बिनि[7]
तीनि	तीनि इन्दु तुअ पासे[8]
पाँच	प्रथम एगारह फेरि दिअ पाँच[9]
एगारह	
बारह	बारह बरस अवधि कए गेल[10]
अठारह	पचीस अठारह बीस तनु जार[11]
पचीस	
उनैस	लिखब उनैस सताइस सङ्ग[12]
सताइस	
अठाइस	प्रथम पचीस अठाइस भेल[13]

गीत- विद्यापति-1-92/103
पृष्ठ सं0/पद सं0 2-30/33
3-113/123
4-266/278
5-113/123
6-117/127
7- 18/18
8- 574/581
9- 263/274
10- 86/97
11-247/255
12- 254/262
13. 247/255

गुणवाचक विशेषण पद :

चपल	लोचन चपल वदन सानन्द[1]
सीतल	सीतल रअनि बरिस घन आगि[2]
ललित	ललित लता जनि तरु मिलती[3]
अनूप	मानुस जनम अनूप[4]
चञ्चल	पुरुसक चञ्चल सहज सभाव[5]
नूतन	नूतन मनसिज गुरूतर लाज[6]
घन	कुच कलश लोटाइलि घन सामरि वेणी[7]
चकित	चकित चकोर जोरे विधि बान्धल[8]

समूहवाचक विशेषण पद :

दुहु	दुहु दिस एक सञो होइक विरोध[9]
दुअओ	दुअओ नयन तोर विषम मदनसर[10]
दहो	मानस दहो दिस धाब सजनिया[11]
नवो	नवो निधि सेवक कै दयक दसमी कलश घट उठवाएब[12]

"गीत-विद्यापति" : पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 342/349
2- 224/231
3- 227/234
4- 255/263
5- 32/35
6- 345/352
7- 11/11
8- 321/330
9- 460/468
10- 340/347
11- 203/209
12- 767/792

क्रम-सूचक विशेषण पद :

प्रथम	प्रथम पहर राति रभसे वहला[1]
पहिल	पहिल समागम रस नहि जान[2]
चारिम	तीन दोस अपने तोहे कएलह चारिम भेल उपाइ[3]
पञ्चम	कोइली पञ्चम रागे रमन गुन सुमराओ[4]
नवए	नवए मास पञ्चम हरूआइ[5]

गुणात्मकता-बोधक विशेषण पद :

एकगुने	एकगुने तिमिर लाखगुने भेल[6]
लाखगुने	
दोगुन	दुरहु क दुर गेले दोगुन पिरीती[7]
दुगुन	दुरहु दुगुन एहिमसे आबओ[8]
तेगुन	तीस क तेगुन थोड़े दिन साँच[9]
चउगुन	पावक सेख उदअ वर संपुट हेरि चउगुन होइ[10]
दसगुन	दसगुन दहइ मृगङ्क[11]

उपरोक्त उदाहरणों में प्रयुक्त विशेषण पद लिंग- निरपेक्ष्य हैं ।

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 474/482
2- 718/740
3- 124/133
4- 240/246
5- 817/849
6- 539/546
7- 213/218
8- 10/10
9- 263/274
10- 195/201
11- 145/152

क्रिया- लिंग विचार :

" विवेच्य-ग्रन्थ " की भाषा में क्रिया पदों के अन्तर्गत- अ,-इ,-ए,-उ, - ओ तथा ओं प्रत्ययान्त वाले क्रियापद पुल्लिग हैं, परन्तु इनका प्रयोग स्त्रीलिंग कर्ता के साथ भी हुआ है । सामान्यतया क्रिया पदों के साथ -इ स्त्रीलिंग प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल एवं भविष्यकाल में हुआ है ।

वर्तमान काल की क्रिया में लिंग- भेद के कारण कोई प्रभाव नही पड़ता है । इसमें अकारान्त, इकारान्त, एकारान्त, तथा ओकारान्त क्रिया पद हैं, ये क्रियापद पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त हुए हैं । इनका लिंग निर्धारण वाक्य स्तर पर अर्थ के आधार पर किया जाता है :

पुल्लिग :

चूकह	भल जन भए वाचा चूकह [1]
करह	करह रङ्ग पररमनी साथ [2]
संचर	पथ निशाचर सहसे संचर [3]
भनइ	भनइ विद्यापति तीनिक नेह नागर काँथिक नारिसिनेह [4]
करथि	भल जन करथि पर उपकार [5]
जानथि	रूप नारायनई रस जानथि [6]
बुझए	परक वेदन दुष न बुझए मुरुख [7]
आबओ	बेरि बेरि आबओ उतर न पाबओ [8]

गीत विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद सं0

1- 695/715
2- 190/196
3- 113/123
4- 241/247
5- 511/517
6- 436/446
7- 107/118
8- 536/543

स्त्रीलिंग :

कर	विपरित रति कामिनी कर केलि [1]
हेरइ	हेरइ सुधानिधि सूर[2]
धरथि	कि लय धरथि धनि गोई [3]
सहथि	असह सहथि कत कोमल कामिनी[4]
धरसि	सांचि धरसि मधु मने न लजासि[5]
करसि	नेपुर उभर करसि कसि थीर[6]
राखए	प्रथम पेम ओल धरिराखए सेहे कलामति नारी[7]
झाखओ	मओे अबला दह दिस भमि झाखओ [8]
खसओं	मुरछि खसओं कत बेली[9]

भूतकालिक क्रिया पद पुल्लिंग में अकारान्त तथा उकारान्त हैं और स्त्रीलिंग क्रिया पद इकारान्त ,अकारान्त तथा उकारान्त हैं :

पुल्लिंग :

कएल	भल न कएल तोहे [10]
बोललह	पहिलहि बोललह मधुरिम बानी[11]
कएलक	काटि संखारी खण्डे - खण्डे कएलक[12]
पेखलुँ	याइते पेखलुँ नाहलि गोरी[13]

गीत- विघापति
पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 644/662
2- 27/30
3- 666/684
4- 638/653
5- 294/312
6- 491/498
7- 32/34
8- 486/494
9- 289/306
10- 63/74
11- 838/872
12- 523/530
13- 422/433

स्त्रीलिंग

देखल	माधुर जाइते आज मए देखल[1]
पेखलि	ए सखि पेखलि एक अपरूप [2]
चललि	पिया गोद लेलकै चललि बजार [3]
धरलि	तुहूँ मान धरलि अविचारे [4]
अइलिहुँ	वारिस निसा मझे चलि अइलिहुँ [5]
भेलिहुँ	हमहुँ भेलिहुँ लहु [6]

भूतकालिक क्रियापद में काल सूचक प्रत्यय - ल - उ तथा ओ संयुक्त होते हैं - ल प्रत्यय वाले क्रियापद में - हुँ प्रत्यय उत्तम पुरुष बोधक है तथा इसमें -इ स्त्रीलिंग प्रत्यय-हुँ प्रत्यय के पूर्व संयुक्त हुआ है । -उ तथा - ओ प्रत्ययान्त वाले भूतकालिक क्रियापद में लिंग- भेद के कारण कोई परिवर्तन नही होता है - ल प्रत्यय वाले भूतकालिक क्रियापदों में कर्म के लिंग के अनुसार भी परिवर्तन हुआ है :

माधवे बोललि मधुर बानी[7]

आजु देखलि धनि जाइते रे [8]

हमें अबला सहि न पारल पंचसर परहार[9]

गीत-विधापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 16/17
2- 451/460
3- 847/881
4- 44/50
5- 535/542
6- 667/686
7- 21/21
8- 21/21
9- 534/542

विधापति ने भविष्यकालिक प्रत्ययों में - ब एवं -त का प्रयोग किया है, इन क्रिया पदों में कहीं- कहीं-ओं और-ओ उत्तम पुरूष बोधक प्रत्यय का भी योग हुआ है । उपरोक्त दोनों प्रकार के भविष्यकालिक क्रियापदों के साथ स्त्रीलिंग बोधक प्रत्यय -इ तथा - ई संयुक्त हुए हैं :

पुल्लिंग :

पाओब	तोहे होएब परसन पाओब अमोलधन [1]
होएब	
रहब	नहि बिआहब रहब कुमार [2]
करबह	हठे जओ करबह सिनेहक ओल[3]
आओब	आज कन्हाइ एँ बाटे आओब [4]
गमाओत	से पहु बरिसे विदेस गमाओत[5]
जिउत	कि पिब जिउत चकोरा[6]
उठाएत	जब जम किंकर कोपि उठाएत[7]

स्त्रीलिंग :

खसबि	ठेसि खसबि मोरि होति दुरगती[8]
बुझबि	अगिलाँ जनम बुझबि परिपाटि[9]
बोलिबों	मओं कि बोलिबों सखि तोरे दोस[10]
साधबि	माधव बधि की साधबि साधे [11]
जाइति	आजुक रअनि जदि विफले जाइति पुनु[12]
कुटती	नित उठि कुटती भाँग[13]

भविष्य कालिक क्रियापद "बोलिबों में- ओं प्रत्यय उत्तम पुरूष बोधक है तथा मध्य में -इ स्त्रीलिंग प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है ।

गीत-विधापति
पृष्ठ सं०/पद संख्या

1-790/823
2-761/784
3-57/67
4-19/19
5-75/86
6-54/62
7- 780/807
8- 776/801
9- 193/199
10- 348/355
11- 39:43
12- 56/65
13- 765/790

" गीत-विधापति " में वर्तमान आज्ञार्थक क्रियापदों में लिंग-भेद की स्थिति प्राप्त नहीं होती है :

कहइते न लय अब बुझह अवधान [1]

राहो हठे न तोलिअ नेहा [2]

भविष्य आज्ञार्थक क्रियापद एकाध स्थल पर स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ से युक्त मिलता है :

भनये विधापति सुनवर जुवति चिते नहि गुनबि आने [3]

प्रेरणार्थक क्रियापदों के अधिकांश प्रयोग लिंग-भेद रहित हैं, परन्तु एक -दो स्थलों पर लिंग- भेद भी प्राप्त होता है :

पतिगृह सखिन्हि सोआउलि बोधि [4]

दीस निगम दुइ आनि मिलाबिय [5]

वाच्य की दृष्टि से कर्तृवाच्य के अतिरिक्त कर्म वाच्य एवं भाव वाच्य का भी प्रयोग हुआ है । कर्मवाच्य का प्रयोग वर्तमान काल तथा भूतकाल में तथा भाव वाच्य का प्रयोग भूतकाल एवं भविष्यकाल में किया गया है । कर्म वाच्य में लिंग-भेद पाया जाता है, जबकि भाव वाच्य लिंग-भेद से रहित हैं :

आरति आँचर साजि न भेले [6]

पुनु बेरा एक कैसे होएत देखि [7]

आजक दिवस आएल न होएत [8]

कर्म वाच्य के लिंग-भेद युक्त उदाहरण पीछे भूतकालिक क्रियापदों के प्रसंग में दिये जा चुके हैं :

गीत-विधापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 14/14
2- 31/34
3- 42/47
4- 661/679
5- 449/458
6/ 10/10
7- 6/6
8- 509/515

विश्लेषण के आधार पर "गीत - विद्यापति" में उपलब्ध लिंग-संबंधी स्थिति की विशिष्टता यह रही है कि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया पद पुल्लिंग में अकारान्त अधिक है तथा अन्य स्वरान्त्य पद कम पाये जाते हैं। स्त्रीलिंग संज्ञा, सर्वनाम पद इकारान्त तथा ईकारान्त अधिक है तथा अन्य स्वरान्त्य पदों में अकारान्त पद भी अधिक हैं। शेष स्वरान्त्य पदों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। क्रियापदों के कुछ इकारान्त उदाहरण पुल्लिंग में भी पाये गये हैं। पुल्लिंग पदों की संख्या स्त्रीलिंग पदों से अधिक है। विशेषण पद अधिकांशत: लिंग- निरपेक्ष्य हैं। वर्तमान कालिक क्रिया पदों में लिंग भेद नहीं प्राप्त होता है। भूतकाल में पुल्लिंग क्रियापद - ल तथा स्त्रीलिंग पद - लि प्रत्ययान्त हैं। भूतकाल में ही - उ तथा - ओ प्रत्ययान्त क्रिया पद लिंग भेद रहित हैं। भविष्यकालिक क्रिया पद में पुल्लिंग पद - ब तथा- त प्रत्ययान्त हैं तथा स्त्रीलिंग -बि एवं -ति प्रत्ययान्त हैं। संज्ञा पदों में -इ, - ई, - इनि, -इनी एवं आ स्त्रीलिंग प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है। संबंध - कारकीय सर्वनाम तथा विशेषण पदों में सर्वत्र -इ- ई स्त्रीलिंग प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं।

विकारी शब्दों का वह रूप, जिससे उसकी संख्या का ज्ञान होता है, वचन कहलाता है । प्राचीन भारतीय आर्य भाषा में एक वचन, द्विवचन तथा बहुवचन , तीन वचनों का प्रचलन था : परन्तु विकास प्रक्रिया के क्रम में मध्य-कालीन भारतीय आर्य भाषा एवं आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में द्विवचन रूपों का लोप हो गया तथा शेष दो ही वचन बचे रह गये : यही दो वचनों की स्थिति हिन्दी तथा उसकी अन्य बोलियों में भी विद्यमान है : " गीत - विद्यापति " में मैथिली भाषा के अनुकूल दो वचन मिलते हैं तथा संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रियापदों में वचन के कारण रूपान्तर पाया जाता है ।

संज्ञा वचन- विचार :

"विवेच्य-ग्रन्थ"में दो वचन एक वचन तथा बहुवचन रूप उपलब्ध हैं , इनमें एक वचन संज्ञा के रूप बहुवचन संज्ञा रूपों की अपेक्षा अधिक हैं ।

एक वचन संज्ञा -पद :

पदान्त्य ध्वनि की दृष्टि से अधिकांश एक वचन संज्ञाएँ अकारान्त हैं इन्हें उच्चारण के विचार से व्यंजनान्त भी कहा जाता है, किन्तु लिखने में सर्वत्र अकारान्त ही लिखी गई हैं : कोई भी संज्ञा पद हलन्त या व्यंजनान्त नहीं मिलता है , आकारान्त, इकारान्त और ईकारान्त एक वचन संज्ञाओं का प्रयोग अपेक्षाकृत कम हुआ है : उकारान्त, ऊकारान्त तथा ऐकारान्त संज्ञा पदों की संख्या अत्यल्प है , एकारान्त संज्ञा पदों की संख्या अधिक है जिसका कारण छन्दानुरोध अथवा कारक विभक्ति -ए का योग होना है :ओकारान्त संज्ञा पदों की संख्या मात्र चार है औकारान्त संज्ञा पद नहीं प्राप्त होते हैं :

अकारान्त अथवा व्यंजनान्त एक वचन संज्ञा पद :

इस वर्ग की संज्ञाएँ अकारान्त लिखी गई हैं किन्तु उच्चारण की दृष्टि से इन्हें व्यंजनान्त कहा जा सकता है :अत: यहाँ अकारान्त अथवा व्यंजनान्त एक-वचन संज्ञा पद शीर्षक के अन्तर्गत इन संज्ञा पदों के उदाहरण दिये गये हैं :

बालक	बालक मोर वचन नहि बूझ[1]
काक	ताहि चढ़ि कुररए काक रे [2]
पिक	पिआ के कहब पिक सुललित बानी[3]
सुख	सपन निसि सुखरङ्ग [4]
दुख	दुरजनें हमर दुख न अनुमापब[5]
मुख	हरि न हेरल मुख सएन समीप[6]
जग	तपन हीन जग तिमिरे भरु[7]
जोग	कि करब जप तप जोग धेआने [8]
बाघ	एक दिस बाघ सिंघ करे हुलना[9]
माघ	माघ मास सिरिपञ्चमि गंजाइलि[10]
कच	कबहुँ बान्धये कच[11]
लालच	चान्द क भरमे अमिअ लालच[12]
कटाछ	कुटिल कटाछ छटा परिगेला[13]
गाछ	रोपि न काटिअ विषहुक गाछ[14]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 260/268
2- 239/245
3- 221/227
4- 203/209
5- 207/212
6- 715/737
7- 855/891
8- 807/838
9 792/825
10- 817/849
11- 416/428
12- 467/474
13- 343/350
14- 708/729

सेज	नव नव पल्लव सेज ओछाओल[1]
सुरूज	चान्द सुरूज बिसेख न जानए[2]
साँझ	साँझ क बेरि सेव कोइ माँगइ[3]
घट	घट परबेसे हुतासे [4]
पेट	थूल पेट भुमि लड़ाए न पार[5]
पाठ	आबे सबे मदने पढ़ाउलि पाठ[6]
पीठ	तुरअ त्यागि चढु बसहा पीठ [7]
गरूड	गरूड मागओ पाखी[8]
राड	जाइल राड धौकरी लाब [9]
गढ़	गाढ़ गढ़ गूढ़ीअ गञ्जेओ[10]
प्राण	आबे मोर प्राण रहओ कि जाओ[11]
गुण	तुअ गुण बान्धल अछए परान[12]
रात	ता बिने रात दिवस नहिं भाओइ[13]
दूत	अपनहि नागरि अपनहि दूत[14]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 817/849
2- 233/241
3- 799/831
4- 331/339
5- 760/783
6- 408/421
7- 772/802
8- 10/10
9- 824/856
10- 849/890
11- 683/703
12- 87/98
13- 380/388
14- 460/468

हाथ	कामिनि कोरे परसायब हाथ[1]
रथ	हय गज रथ तेजि बसहा पलानेहे [2]
वेद	कौआ मुह न भनिअए वेद[3]
चाँद	पाओल वदन तुअ चाँद समाने [4]
नारद	नारद तुम्बुर मङ्गल गावथि[5]
व्याध	व्याध मदन बध ई बड दोष[6]
औषध	एहि बेअधि औषधा तोहर[7]
पवन	मन्द पवन बह[8]
मन	हे मानिनि मन तोर गढ़ल पसाने [9]
कूप	पानि पिअए चल नाभी कूप[10]
नृप	रस बुझ शिवसिंह नृप महोदार[11]
गरब	हृदि से गरब दुरि गेला[12]
लाभ	लाभ के लोभे मूलहु भेल हानी[13]
बल्लभ	ऐसनि बल्लभ हेरि सुधामुखि[14]

गीत- विधापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 485/493	8-56/65
2- 789/821	9-52/60
3- 533/541	10-428/438
4- 58/68	11-435/445
5- 758/780	12-42/47
6- 356/363	13-64/76
7- 297/314	14-141/151

प्रेम	अपन पुरूस के प्रेम जमाबिअ[1]
जनम	अगिलाँ जनम बुझबि परिपाटि[2]
हेम	कसिअ कसौटी चीन्हिअ हेम[3]
जय	क्वने विचारब जय - अबसाद[4]
भय	भनये विद्यापति शोभ समन भय[5]
घर	सासु नही घर पर परिजन[6]
चोर	ना जानू किए करू मोहन चोर[7]
कमल	अरुन कमल के कान्ति चोरओलह[8]
कुल	तन्हिकाँहु कुल भैलिसि बनिजार[9]
माधव	माधव हम परिनाम निरासा[10]
दैव	काम कला रस दैव अधीन[11]
पुरूष	कके विसरलि हे पुरूष परिपाटी[12]
वरष	बारह वरष अवधि कए गेल[13]
पाउस	पाउस निअर आएला रे[14]
देह	थिर न जउवन थिर नहिं देह[15]
गेह	कउसति कए हरि आनल गेह[16]
नक्षत्र	रासि नक्षत्र कए लोला[17]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 401/415
2- 193/199
3- 679/698
4- 822/854
5- 801/832
6- 79/90
7- 13/12
8- 54/62
9- 46/53
10- 801/832
11- 6/6
12- 85/96
13- 86/97
14- 82/93
15- 61/72
16- 61/72
17- 817/349

आकारान्त एकवचन संज्ञा पद:

आकारान्त एकवचन संज्ञाएँ अधिकांश स्त्रीलिंग हैं । पुल्लिंग आकारान्त संज्ञा पदों की संख्या कम है :

चम्पा	हरि पावल फुल चम्पा[1]
छटा	कुटिल कटाछ छटा परिगेला[2]
जटा	सिवक माथ फुटल जटा[3]
आसा	तकरि आसा देखि देखि तबे[4]
उमा	उमा मोरि ननुमि हेरह जनू[5]
दया	दइनि दया नहि दारुन तोहि[6]
धिया	धिया लै मनाइन मंडप बैसलि[7]
बबा	कहिहुन बबा के किनए धेनु गाई[8]
लोटा	धोती लोटा पतरा पोथी[9]
हीरा	हीरा मनि मानिक एको नहि माँगब[10]
चक्वा	चक्वा मोर सोर क्य चुप भेल[11]

इकारान्त एक वचन संज्ञा पद :

इकारान्त एकवचन में पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों संज्ञा पद प्राप्त होते हैं । स्त्रीलिंग संज्ञा पदों की संख्या पुल्लिंग संज्ञा पदों से अधिक है ।

आधि	तइअओ न जा तसु आधि[12]
छिति	छिति सुत तेसर से जिव मार[13]
निसि	खेपहुँ निसि दिशि जागि[14]
रीति	जकरा जासओ रीति[15]
विपति	सबतहुँ सबपहुँ विपति आइलि सहु[16]
वासुकि	कण्ठे आइलि छइन्हि वासुकि राए[17]
कवि	कवि रवि तारा इन्दु[18]
रवि	जनु रवि शशि सङ्गहि उयल[19]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 746/769
2- 343/350
3- 764/788
4- 237/243
5- 784/812
6- 663/680
7- 752/775
8- 847/881
9- 748/771
10-244/251
11-846/880
12-92/103
13-247/255
14-145/152
15-213/218
16-197/202
17-756/779
18-431/442
19-425/435

ईकारान्त एकवचन संज्ञा-पद :

अधिकांश ईकारान्त एकवचन संज्ञाएँ स्त्रीलिंग कोटि की हैं किन्तु पुल्लिंग ईकारान्त एक वचन संज्ञा पद भी अत्यल्प संख्या में प्राप्त होते हैं ।

कली	काँच कमल फुल कली जनु तोड़िय[1]
चोरी	चोरी गेल चन्दा[2]
दूती	दूती बचने जाहि जे फावए[3]
नीवी	नीवी ससरि भूमि पड़ि गेलि[4]
पतनी	रावन अरि पतनी तातकताप[5]
मोती	सोना गान्थलि मोती[6]
माली	माली जाने कुसुम विकास[7]
हाथी	मालाजे बान्धलि हाथी[8]
बैरी	अदिति तनय बैरी गुरु चारिम[9]

उकारान्त एकवचन संज्ञा पद :

उकारान्त एकवचन संज्ञा पदों की संख्या कम है । विवेच्य-ग्रन्थ में पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग संज्ञा पदों की समान संख्या प्राप्त होती है ।

आयु	अब भेलहु हम आयु बिहीन[10]
धेनु	नगरक धेनु डगर क सञ्चर[11]
सासु	सासु नहि घर पर परिजन[12]
रितु	सकल समय नहि-नहि रितु बसन्त[13]
रिपु	जमुना जनक तनय रिपुधरिणी[14]
राहु	चान्द राहु डरे चढ़ल सुमेरु[15]
सिन्धु	सिन्धु बन्धु अरि वाहन गनसरि[16]

गीत-विद्यापति :
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 666/685
2- 267/280
3- 308/321
4- 2/2
5- 448/457
6- 119/129
7- 273/288
8- 611/622
9- 448/457
10- 853/888
11- 846/880
12- 79/90
13- 845/878
14- 1/1
15- 66/78
16- 123/133

ऊकारान्त एकवचन संज्ञा पद :

ऊकारान्त संज्ञा-पदों का प्रयोग स्त्रीलिंग तथा पुल्लिग दोनों में अत्यन्त सीमित रूप में हुआ है ।

कानू — कानू से सुजन हाम दुरजन[1]

बधू — तिथिहु बधूजन शाङ्का यापि[2]

एकारान्त एकवचन संज्ञा पद :

एकारान्त एकवचन संज्ञा पद स्त्रीलिंग तथा पुल्लिग दोनों में प्राप्त हुए हैं ये पद मूल रूप में अकारान्त हैं लेकिन छन्दानुरोध अथवा कारकीय संबंध प्रदर्शित करने के लिये एकारान्त बना लिये गये हैं : इनकी संख्या पर्याप्त है ।

गाए — गोपक नन्दन गाए चरइतहुँ[3]

माए — बाप कतय कत माए[4]

मदने — मदने मोति दए पूजल इन्दु[5]

ऐकारान्त एकवचन संज्ञा पद :

इस कोटि की संज्ञाएँ बहुत कम प्रयुक्त हुई हैं , ये पद भी मूल रूप में अकारान्त हैं :

नीन्दै — तब मझु नीन्दै भरल सब देह[6]

सारदै — न न न न कर सखि सारदै ससिमुखि[7]

उच्छवै — सिंहासन सिवसिंह बइठ्ठो उच्छवै वैरस विसरि गएओ[8]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 41/45
2- 113/123
3- 742/764
4- 744/767
5- 644/662
6- 588/595
7- 735/758
8- 856/891

ओकारान्त एकवचन संज्ञा पद :

ओकारान्त एकवचन संज्ञा पद के चार उदाहरण प्राप्त हुए हैं, जिनमें दो स्त्रीलिंग तथा दो पुल्लिग के हैं, साथ ही दो पद मूलत: अकारान्त हैं जो कवि की रचना-प्रवृत्ति के कारण ओकारान्त हो गये हैं :

सारो	सारो आनि सेचान के सोपलह[1]
नाओ	सबे लए चढ़लिहु तोर हरि नाओ[2]
भैरो	भैरो बजावे मृदगिंया[3]
देओ	भनइ विधापति देवकि देओ[4]

बहुवचन संज्ञा पद :

"विवेच्यग्रन्थ" की भाषा में पुल्लिग संज्ञा पदों के साथ कोई भी बहुवचन धोतक प्रयुक्त नही हुआ है । स्त्रीलिंग संज्ञा पदों में - "न्हि , -नि तथा -या प्रत्यय का प्रयोग इन पदों को बहुवचन बनाने के लिये किया गया है । अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पद के साथ - इनि तथा -इ-ईकारान्त पदों के साथ - न्हि -नि तथा -या प्रत्यय प्रयुक्त हैं: परन्तु ऐसे पदों की प्रयोग संख्या अत्यल्प है ।

एकवचन	बहुवचन	
सौत	सौतिनि	सहस सौतिनि बस माधुरपुर[5]
रात	रातिया	हरि बिने दिन रातिया[6]
सखि	सखिन्हि	पतिगृह सखिन्हि सोआउलि बोधि[7]
पखुरी	पखुरिया	हलुत्मल पखुरिया झुलाइ[8]

गीत- विधापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 457/465
2- 622/634
3- 783/811
4- 760/783
5- 390/401
6- 171/176
7- 661/679
8- 817/849

बहुवचन बोधक शब्दों का प्रयोग :

विवेच्य ग्रन्थ में संज्ञा रूपों के साथ बहुवचन बोधक प्रत्ययों का प्रयोग बहुत कम हुआ है । अधिकांश स्थलों पर स्वतन्त्र शब्दों के द्वारा बहुवचन की व्यंजना हुई है ।

एकवचन	बहुवचन बोधक शब्द	बहुवचन	
मानिनि	जन	मानिनि जन	भमि भमि लुनएमानिनि जन माने[1]
गुरु	जन	गुरुजन	गुरुजन गुरुतरे डरे सखि[2]
चञ्चरि	गन	चञ्चरिगन	चञ्चरिगन करुरोले[3]
मुकुता	पाँति	मुकुतापाँती	दसन मुकुतापाँति अधर मिलायल[4]
मेघ	माल	मेघमाल	मेघमाल सँय तड़ित लता जनि[5]
रोम	अवलि	रोमावलि	तनु रोमावलि देखिय न भेलि[6]
चन्दा	जूथे	--	जूथे जूथे उग चन्दा[7]
कोकिल	कुल	कोकिलकुल	कोकिल कुल कलरव विथार[8]
सुमन	जाल	सुमनसजाल	मुञ्च सुमनस जाल रे[9]
अलि	कूल	अलिकूल	मातल नव अलिकूल[10]
सखी	सकल	सकलसखी	बेढ़ल सकल सखी चौपासा[11]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं०/ पद सं०

1- 7/7
2- 25/27
3- 649/666
4- 326/335
5- 326/335
6- 343/349
7- 404/418
8- 169/174
9- 360/367
10- 599/607
11- 168/173

एक वचन संज्ञा पदों की आवृत्ति अथवा संख्या सूचक विशेषण पद के प्रयोग द्वारा भी बहुवचन का आशय प्रकट होता है ।

घरे घरे	घरे घरे पहरी गेल अछ जोहि [1]
लाखे तरूवर	लाखे तरूवर कोटिहिं लता [2]
कोटिहिं लता	
दिवस दुइ चारि	तासयँ पिरीत दिवस दुइचारि [3]
कत सहस भुजङ्ग	पगु लागल कत सहस भुजङ्ग [4]

सर्वनाम वचन-विचार :

"गीत- विधापति " में सर्वनाम पदों के एक वचन रूप बहुवचन की अधिक प्रयुक्त हुए हैं, इनमें तीनों पुरूषों में सम्बन्ध वाचक, प्रश्नवाचक, तथा नित्य सूचक आदि सभी में सर्वनाम पद आये हैं । कुछ सर्वनाम पद एक वचन तथा बहुवचन में पृथक- पृथक हैं तथा इनमें वचन सूचक प्रत्यय नहीं लगता है ।

एक वचन सर्वनाम पद :

तीनों पुरूषों में अधिकांश रूपान्तर शील एक वचन सर्वनाम अकारान्त आकारान्त, एकारान्त, उकारान्त तथा ओकारान्त हैं :

अकारान्त :

मोर	धीर मन नहिं मोर [5]
तोर	साजनि की कहब तोर गेआन [6]
एकर	एकर होएत चरिनामे [7]
ताकर	ताकर वचने याइ [8]
जाकर	जाकर मो मन शङ्का छली [9]
ककर	ककर उपमा दिअपिरीत समान [10]

गीत- विधापति" पृष्ठ सं0/पद सं0
1- 410/423
2- 297/316
3- 45/51
4- 520/528
5- 16/17
6- 29/32
7- 523/530
8- 41/45
9- 226/233
10- 836/866

आकारान्त :

मोरा	कि मोरा चतुरपने [1]
तोरा	तोरा मोरा एके पराने[2]
जकरा	जकरा मदन महीपति सङ्ग [3]
ककरा	गौरी औरी ककरा पर करत[4]
ओकरा	ओकरा हृदय रहए नहि लागि[5]

उकारान्त :

जसु	कुलजा रीति छोड़लि जसु लागि[6]
तसु	सारङ्ग तसु समधाने [7]
तासु	तासु भीमकत विरहे बेआकुल[8]

एकारान्त :

मोरे	मोरे पिआजे गाथल हार [9]
तोरे	तोर वदन सन तोरे वदन पए[10]

ओकारान्त :

मोरो	मोरो मन हे खनहि खन भाग[11]
ककरो	दुख ककरो नहि देल [12]

गीत- विद्यापति -
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 10/10
2- 354/361
3- 473/480
4- 765/790
5- 527/534
6- 164/169
7- 446/456
8- 454/463
9- 101/112
10- 354/361
11- 86/97
12- 754/777

स्त्रीलिंग एक वचन सर्वनाम पद – –इ, –ईकारान्त हैं, जो सम्बन्धकारकीय रूप में प्रयुक्त हुए हैं :

मोरि	बोलि दुइ चारि सुनाओल मोरि[1]
तोरि	हरि बड़ दारुन तोरि बड़ि कला[2]
जकरि	से से करति जकरि जे जाति[3]
मोरी	कओने परि ममन होएत सखि मोरी[4]
तोरी	होइहौं दासी तोरी [5]

विवेच्य ग्रन्थ में एक स्थल पर 'मञे' उत्तम पुरुष एकवचन के विकल्प में "हूँ" प्रयुक्त हुआ है । इसके अतिरिक्त निज वाचक सर्वनाम " रउरा " तथा स्त्रीलिंग बोधक –इ प्रत्यय युक्त " रउरि " का भी प्रयोग एकाध स्थल पर किया गया है

<u>एक वचन सर्वनाम :</u>

हूँ	हूँ वर नारी [6]
रउरा	रउरा जगत के नाथ क्वन सोच लागब है [7]
रउरि	कतेक दिन हेरब सिव रउरि बाट[8]

मैथिली भाषा में सामान्य रूप से प्रचलित मञे (मोञे , मए, मोय, मो आदि) तञे (तोञे , तों , तु, तूँ आदि) , (से, सो, ओ, उ) तथा (इ, ई, ए) आदि का प्रयोग विवेच्य ग्रन्थ में हुआ है ।

गीत–विद्यापति" पृष्ठ सं0/पद सं0
1– 188/193
2– 477/485
3– 585/590
4– 455/464
5– 228/235
6– 162/167
7– 753/776
8– 781/809

एकवचन सर्वनाम :.

मञे (मोञे, मए, मों, मोय)	मञे बिकाएब तञे वचनहु कीन[1] मोञे न अएबे माह दुरजन सङ्ग[2] माथुर जाइते आज मए देखल[3] बेरि बेरि अरे मों तोय बोलों[4] माधव देखलि मोय बा अनुरागी[5]
तञे (तोञे, तों, तु, तू)	तञे कामिनि किछु रए राखि[6] आनहु बोलब धनि तोञे अचेतनि[7] उठवह बनिआँ तों हाट बाजारे[8] तु वर कामिनि[9] रामा हे तू बड़ि कठिन देह[10]
ओ (उह, ऊ, से, सो)	ओहओ देअ तनु ओ कर पान[11] उह आनिते इह याइ[12] घर आँगन ऊ बनौलन्हि कहिया[13] से सब भाव हम कहहि न पार[14] माधव सो अब सुन्दरि बाला[15]
इह (इ, ई, यह, ए)	ऐहन नह इह प्रेमक रीत[16] ओउ भरल इ बोल सुनाए[17] ई बड़ लागल भोर[18] के यह पिजड़ा गढ़ाओल[19] अबहि एक करत पयान[20]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 6/6
2- 59/70
3- 16/17
4- 746/769
5- 287/304
6- 429/440
7- 732/756
8- 808/839
9- 28/31
10- 362/368
11- 105/116
12- 332/340
13- 749/772
14- 15/15
15- 167/172
16- 43/49
17- 77/88
18- 16/17
19- 762/786
20- 173/178

अनिश्चय वाचक , प्रश्नवाचक, आदरवाचक तथा निज वाचक एकवचन सर्वनाम पद अकारान्त ,इ-ईकारान्त, उकारान्त ,एकारान्त एवं ओकारान्त हैं

कोइ	कोइ न मानइ जय अवसाद[1]
कोई	कोई चढ़ावे बेलपतवा [2]
केउ	केउ नहि क्ह सखि कुशल सन्देशा[3]
के	के जान कि होइति आजे[4]
कोन	कोन पुरए निज आसा[5]
आप	आप अोढ़ेला मृगछलवा[6]
निज	कुल कामिनि भए निज पिअ बिलसए[7]
निअ	कोने परि जाइति निअ मन्दिर रामा[8]

इस प्रकार " गीत- विद्यापति" में एकवचन सर्वनाम पद अकारान्त, आकारान्त इकारान्त , ईकारान्त, उकारान्त , एकारान्त तथा ओकारान्त हैं ।

बहुवचन सर्वनाम पद :

एकवचन सर्वनाम	बहुवचन	
(इ, ई, इह, यह, एह)	हिनि	सब चाहि हिनि दिन दिने खिन[9]
(ओ, उह, ऊ, से, सो)	हुन्हि	हुन्हि अरजल अपजस अपकार[10]
	तन्हि	तन्हि पुनु कुशले आओब निज आलए[11]
(जे, जो)	जन्हि	जन्हि बिनु तिहुयन तीत[12]

गीत- विद्यापति - पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 427/457
2- 783/811
3- 188/198
4- 504/510
5- 537/544
6- 783/811
7- 205/210
8- 552/560
9- 829/801
10- 211/223
11- 71/82
12- 276/292

– न्हि बहुवचन बोधक प्रत्यय से युक्त सर्वनाम रूपों के अतिरिक्त उपरोक्त सर्वनामों के एकवचन रूप भी यत्र–तत्र प्रसंगानुसार आदरार्थक बहुवचन रूप में प्रयुक्त हुए हैं । उत्तम तथा मध्यम पुरुष सम्बन्धकारक सर्वनाम के बहुवचन रूप अकारान्त, आकारान्त तथा ओकारान्त हैं :

एकवचन	बहुवचन	
मोर	हमर	हमर से दुख सुख[1]
मोरा	हमार	तोहे गुण आगरनागरा रे सुन्दर सुपहु हमार[2]
	हमरा	हरि रिपु अनुज बास लो रातल दए सरीर हमरा[3]
तोर	हमरो	हमरो रङ्ग रभस लए जैबह[4]
तोरा	तोहर	तोहर पिरीति जे नव नव मानय[5]
	तोहार	तोहार नागर चोर[6]
	तोहरा	तोहरा हृदय वचन नहि थीर[7]
	तिहरो	माधव कि कहब तिहरो ज्ञाने[8]

उत्तम पुरुष सर्वनाम का बहुवचन रूप – हम हैं, और अनेक स्थलों पर यह एकारान्त " हमें " भी प्राप्त हुआ है मध्यम पुरुष सर्वनाम का बहुवचन रूप एकारान्त तथा ओकारान्त है तथा इसका – म प्रत्ययान्त रूप केवल एक स्थल पर मिलता है वह भी अवधारणा सूचक प्रत्यय– ई से संयुक्त है ।

एकवचन	बहुवचन	
मञे (मोञे, मए	हम	हम छल टूटत न जाएत नेहा[9]
मोये, मो, हूँ)	हमें	तनु झपइते हमें आकुलभेली[10]
तञे (तोञे, तो,	तोहे	सबक आसा तोहें पुराबह[11]
तु, तू)	तों	के तों थिकह[12]
	तुमी	तुमी जो बधलो पचबाने[13]

गीत– विद्यापति – पृष्ठ सं०/ पद सं०

1– 101/112
2– 82/93
3– 195/201
4– 244/251
5– 40/44
6– 183/187
7– 373/381
8– 243/250
9– 109/120
10– 64/76
11– 81/92
12– 260/268
13– 794/800

स्त्रीलिंग उत्तम तथा मध्यम पुरुष बहुवचन रूप इकारान्त में :

एक वचन	बहुवचन	
मोरि	हमरि	[illegible] गोसाउनि तोह न बोगवर[1]
	हमारि	हमारि ओ विनति कहब सखि गोर[2]
तोरि	तोहरि	तोहरि मुरली से दिग छोड़लि[3]
	तोहारि	धनि बाटिया हेरइ तोहारि[4]

सर्वनाम प्रयोग की दृष्टि से " गीत- विद्यापति" में अत्यन्त विविधता प्राप्त होती है । सर्वनाम पदों में अन्त्य प्रत्ययों - अ, -आ, इ,-ई ,-उ , -र तथा - ओ का प्रयोग हुआ है । उत्तम पुरुष में " मझे " का विकल्प "हूँ" एक ही स्थल पर प्रयुक्त है । सभी सर्वनाम पदों का प्रयोग प्रसंगानुसार दोनों वचनों में हुआ है । लेकिन - न्हि प्रत्यय युक्त पदों का प्रयोग केवल बहुवचन द्योतन में किया गया है ।

विशेषण वचन- विचार :

विद्यापति ने अपनी कृति में अकारान्त , आकारान्त, इकारान्त ,एकारान्त तथा उकारान्त विशेषण पदों का प्रयोग किया है जिसमें अकारान्त विशेषण पदों का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है । इन विशेषण पदों में वचन दृष्टि से कोई परिवर्तन नही हुआ है जबकि लिंग एवं कारक सम्बन्धों के अनुसार परिवर्तन हुआ है ।

गीत- विद्यापति - 1- 775/778
पृष्ठ सं0/ पद संख्या 2- 100/111
3- 154/160
4- 28/30

क्रिया वचन – विचार :

" गीत विद्यापति " में संज्ञा एवं सर्वनाम पदों की भांति रूपान्तरशील क्रियापद भी वचन के कारण परिवर्तित हुए हैं । यह परिवर्तन वर्तमान, भूत तथा भविष्य तीनों कालों में प्रयुक्त क्रियापदों में दृष्टिगत होता है और इनके अवलोकन से ज्ञात होता है कि वर्तमान काल एकवचन की क्रियाएँ अकारान्त, इकारान्त, एकारान्त एवं ओकारान्त हैं । इसमें लिंग- भेद नही प्राप्त होता है- भूतकाल में पुल्लिंग क्रियाएं अकारान्त उकारान्त एवं ओकारान्त हैं । भविष्य काल में पुल्लिग क्रियाएँ अकारान्त ओकारान्त हैं जबकि स्त्रीलिंग क्रियाएँ दोनों कालों में अकारान्त, इकारान्त तथा ईकारान्त हैं ।

वर्तमान एकवचन पुल्लिग एवं स्त्रीलिंग :

काम्प	हृदय आरति बहु भय तनु काम्प[1]
कह	जेकह उपदेस [2]
भनइ	भनइ विद्यापति तीनिक नेह [3]
हेरइ	धनि बाटिया हेरइ तोहारि[4]
राखए	प्रथम प्रेम ओल धरि राखए सेहे कलामति नारि[5]
बूझए	परक वेदन दुख न बूझए मुरुख[6]
आबओ	बेरि बेरि आबओ उतर न पाबओ [7]
करसि	काहे तुहुँ हृदय करसि अनुताप[8]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 717/740
2- 103/114
3- 241/247
4- 28/30
5- 32/34
6- 107/118
7- 536/543
8- 43/48

भूतकाल एकवचन पुल्लिंग :

पाओल	बड़ सुकुमार पाओल कुलतीरे[1]
वेधल	अनि मनमथ मन वेधल बाने[2]
तेजल	भलेहु तेजल आवे आषिक लाग[3]
गेल	पिया गेल निज घर मुंदरी बइ[4]
जागु	मुनिहु क मानस मनमथ जागु[5]
भांगु	मदन आंकुर भांगु[6]
लागु	ते कुच कण्टक लागु[7]
मिलओ	तिमिर मिलओ ससि तुलित तरङ्ग[8]

भूतकाल एकवचन स्त्रीलिंग :

पेखलि	ए सखि पेखलि एक अपरूप[9]
चललि	पिया गोद लेलकै चललि बजार[10]
बेढ़लि	अबला अरुन तरागन बेढ़लि चिकुर-चामर अनुपामा[11]
धरलि	तुहुँ मान धरलि अविचारे[12]

भविष्यकाल एकवचन पुल्लिंग :

पाओब	तोहें होएब परसन पाओब अमोलधन[12]
रहब	नहि बिआहब रहब कुमार[14]
जिउत	की पिबि जिउत चकोरा[15]
उठाएत	जंम जंम किंकर कोपि उठाएत[16]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 807/838
2- 25/26
3- 39/42
4- 107/118
5- 406/420
6- 567/574
7- 732/757
8- 453/462
9- 451/460
10- 847/881
11- 450/459
12- 44/50
13- 790/823
14- 761/784
15- 54/62
16- 780/807

भविष्यकाल एकवचन स्त्रीलिंग :

खसबि	ठेसि खसबि मोर होति दुरगती[1]
बुझबि	अगिलाँ जनम बुझबि परिपाटि[2]
साधबि	माधव बधि की साधबि साधे[3]
लेब	मरमहु कबहु लेब नहि नाम[4]
कुटती	नित उठि कुटती भांग[5]
बिकाएब	मञे बिकाएब तञे वचनहु कीन[6]

क्रियापदों में बहुवचन प्रत्यय निर्धारण :

बहुवचन क्रिया रूपों में परिवर्तन पुरूष के आधार पर हुआ है । वर्तमान काल बहुवचन उत्तम पुरूष , मध्यम पुरूष , तथा अन्य पुरूष में क्रमशः -ओ ,-ओं, -ह तथा - थि एवं कहीं कहीं पर-न्ति प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं । वर्तमान काल बहुवचन में स्त्रीलिंग अथवा पुल्लिंग में क्रिया रूपों में परिवर्तन नही हुआ है । भूतकाल बहुवचन में उत्तम मध्यम तथा अन्य पुरूष में क्रमशः - हुँ ,-उँ -ह तथा - न्हि, आह प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं । स्त्रीलिंग में उत्तम पुरूष बहुवचन में काल सूचक के प्रत्यय के बाद तथा पुरूष सूचक प्रत्यय के पूर्व - इ प्रत्यय क्रियापद में संयुक्त हुआ है । शेष दो पुरूषों मध्यम एवं अन्य पुरूष में लिंग-भेद नही मिलता है भविष्य बहुवचन में काल सूचक प्रत्यय -ब एवं -त के बाद -ओ - ओं, - ह तथा -आह प्रत्यय क्रमशः उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरूष के लिये प्रयुक्त होते हैं । कहीं -कहीं पर - त काल सूचक प्रत्यय के बाद - थि प्रत्यय लगता है । भविष्य काल बहुवचन में लिंग- भेद किसी भी पुरूष नही प्राप्त होता है ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 776/801
2- 193/199
3- 39/43
4- 3/3
5- 765/790
6- 6/6

वर्तमान काल बहुवचन पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग :

कहओ	पुनु पुनुकन्त कहओ कर जोरि [1]
झाँखओ	हमें अबला दह दिसि भमि झाँखओ [2]
चूकह	भल जन भए वाचा चूकह [3]
करह	करह रङ्ग पर रमनी साथ [4]
जानथि	वारि विलासिनि केलि न जानथि [5]
करथि	कैतव करथि कलामति नारि [6]
सञ्चर	निशिय निशाचर सञ्चर साथ [7]
गरजन्ति	झम्पि घन गरजन्ति सन्तत भुवन भरि बरिखन्तिया [8]

भूतकाल बहुवचन पुल्लिंग :

पेखलुँ	माधव पेखलुँ से धनि राइ [9]
बोललह	पहिलहि बोललह मधुरिम बानी [10]
करलह	कोप न करलह अक्खर जानी [11]
पढ़लन्हि	तनि नहि पढ़लन्हि मदन क रीति [12]
चललाह	भीम भुजङ्गम पथ चललाह [13]
मिलु	अधर काजर मिलु कमने परी [14]

भूतकाल बहुवचन स्त्रीलिंग :

भेलिहुँ	हमहु भेलिहुँ लहु [15]
अइलिहुँ	वारिस निसा हमे चलि अइलिहुँ [16]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद संख्या

1- 532/539
2- 486/494
3- 695/715
4- 190/196
5- 638/654
6- 412/424
7- 520/528
8- 171/176
9- 168/173
10- 838/872
11- 49/57
12- 521/528
13- 119/123
14- 735/75[illegible]
15- [illegible]/686
16- 534/542

भविष्य काल बहुवचन पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग :

बोलिबौं	ए कपटिनि सखि कि बोलिबों तोही[1]
कहिबओं	ए सखि सखि कि कहिबओं तोहि[2]
गमओबह	सगरि रअनि बदि कोपहि गमओबह[3]
करबह	हठे जओ करबहसिनेहक ओल[4]
आओब	आज कन्हाइ एं बाटे आओब[5]
गमाओत	से पहु बरिसे विदेस गमाओत[6]
अओताह	बालमु अओताह उछाह कह[7]
रहताह	सेज धय रहताह[8]
चलितथि	झुनुकि झुनुकि धीआ- चलितथि जमैआ
देखितथि	देखितथि[9]
रखितथि	पागक पेज उघारि हदअ बिच रखितथि[10]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 613/624
2- 715/737
3- 54/62
4- 57/67
5- 19/19
6- 75/86
7- 130/138
8- 643/660
9- 643/660
10- 643/660

अस्तित्व वाची क्रिया एकवचन तथा बहुवचन में अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, एकारान्त तथा ओकारान्त हैं । इनमें एकवचन क्रियापदों का प्रयोग आदरार्थक बहुवचन के लिये भी हुआ है ।

एकवचन :

अछ	पुरुब लिखल अछ बालभु हमार[1]
अछए	तहुँ मकरन्द अछए कुमुदि[2]
अछओ	मदन बाणे मुरुछलि अछओ [3]
थिकहुँ	थिकहुँपथुक जन राजकुमार[4]
रहथ	आन दिन निकही रहथ मोर पती[5]

बहुवचन :

छह	जतने जनाए करइ छह गोपे[6]
छइन्हि	कण्ठे आएल छइन्हि वासुकिराए[7]
छथि	तीनि लोक के एहो छथि ठाकुर[8]
थिकइन	हर के माय बाप नहि थिकइन[9]
रहओ	गेए मनाबह रहओ समाजे[10]
रहइ	हरि परदेस रहइ[11]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 847/881
2- 337/344
3- 10/10
4- 260/268
5- 775/801
6- 704/725
7- 756/779
8- 752/774
9- 751/774
10- 53/61
11- 187/192

अध्याय - 5

कारक - रचना :-

भाषा -विकास की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा से हिन्दी तक आते- आते कारक सम्बन्ध सूचक अधिकांश विभक्तियों का लोप हो गया है तथा कुछ ही विभक्तियाँ शेष रह गई हैं । मैथिली भाषा में भी हिन्दी की अन्य उप भाषाओं की भाँति विभक्तियों की स्थितियाँ तो विद्यमान हैं, किन्तु उनका रूप रचना में रूपान्तरण-परक योग कम हो गया है और इन विभक्तियों का स्थान परसर्गों ने ले लिया है । परसर्ग स्वतन्त्र शब्दों के अवशिष्ट रूप हैं ।

प्रस्तुत प्रकरण में " गीत- विद्यापति" में उपलब्ध कारक - रचना का विवेचन विभक्तियों एवं परसर्गों के पृथक्- पृथक् एवं संयुक्त प्रयोग की विभिन्न स्थितियों का परीक्षण अभीष्ट है ।

कारक- विभक्ति :-

अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भांति विद्यापति के काव्य में भी विभक्तियों की दृष्टि से दो कारक हैं ।

1 - सरल कारक

2 - तिर्यक या विकारी कारक

सरल -कारक :-

अविकारी या सरल कारक में शब्द का प्रातिपदिक रूप प्रयुक्त हुआ है तथा उसके साथ कोई कारक - प्रत्यय संयुक्त नहीं है किन्तु इस

कोटि के प्रातिपदिक वाक्य में मूल कारक स्थिति से युक्त हैं । इन स्थितियों की विद्यमानता को शून्य प्रत्यय द्वारा प्रकट किया जाता है । यह बात एक वचन तथा बहुवचन दोनों के लिये कही जा सकती है । दोनों में ही कारक-स्थिति प्रकट करने के लिये शून्य विभक्ति की अवधारणा मान्य है ।

पुल्लिंग अविकारी या मूल कारक एक वचन में प्रातिपदिक के साथ शून्य प्रत्यय प्रयुक्त रहता है । पुल्लिंग अविकारी बहुवचन पदों में बहुवचन प्रत्यय या बहुत्व द्योतक शब्दों के संयोग से रूपान्तरित रूप के साथ शून्य कारक विभक्ति प्रयुक्त हुई है ।

पुल्लिंग एकवचन	पुल्लिंग बहुवचन	बहुत्वद्योतक प्रत्ययया पद	कारक-विभक्ति
कमल फुटए जदि गिरवर-माथ[1]	पथिक पियासल आव अनेक[3]	अनेक	×
पुरुब भानु जदि पछिम उदीत[2]	दुइ जीव अछल एक भएगेल[4]	दुइ	×
	कि करत गुरुजन[5]	जन	×

इसी प्रकार स्त्रीलिंग अविकारी एक वचन एवं बहुवचन रूप शून्य विभक्ति प्रत्यय युक्त रहते हैं ।

स्त्रीलिंग एकवचन	स्त्रीलिंग बहुवचन	बहुवचनद्योतक प्रत्ययया पद	कारक-विभक्ति
नीवी ससरि भूमि पड़िगेल[6]	सखिन्हि कर बड़ उपहासे[8]	न्हि	×
कतहु कोकिल पंचम गाबए[7]	सखि सभ तेजि चलि गेली[9]	सभ	×

गीत-विद्यापति
पृष्ठ सं०/पदसं०

1- 833/866
2- 833/866
3- 825/857
4- 835/868
5- 512/518
6- 2/2
7- 65/77
8- 551/558
9- 636/651

तिर्यक या विकारी विभक्ति :

कर्त्ताकारक दोनों वचनों तथा लिंगो में कारक अर्थ-सूचक प्रत्यय का प्रयोग प्राय: नहीं हुआ है । अनेक स्थलों पर पद अपने मूल रूप से भिन्नत: रूपान्तरित होकर आये हैं जिनसे यह प्रतीत होता है कि कर्त्ताकारक में "ए" विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग हुआ है, किन्तु कारक-स्तर पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि वहाँ पर कर्त्ताकर्त्तरि प्रयोग न होकर कर्मणि प्रयोग हुआ है तथा कुछ स्थलों पर मूल पदों में छन्दानुरोध के कारण रूपान्तरण हुआ है । "गीत-वियापति" में एक दो स्थलों पर कर्त्ताकारक में - अे अथवा -अै विभक्ति प्रत्यय आकारान्त संज्ञा पद के साथ संयुक्त हुआ है ।

शून्य विभक्ति प्रत्यय:-

विद्यापति कह कैहे गोडायवि[1]
कत दिने पिआ मोरे पूछब बात [2]

- ए - एँ : विभक्ति प्रत्यय (कर्मणि प्रयोग)

दृढ़ परिरम्भने बिडलि मदने [3]
पाँचबाने जनि सेना साजलि [4]
खेत कएल रखवारे लूटल [5]
चापि चकोरे सुधारस पीउल [6]
कामें संसार सिंगार सिरिजल[7]

छन्दानुरोध के कारण भी मूल रूप परिवर्तित हुए हैं :

कोपल परम रसाले [8]
सपनहु न पुरल मनक साधे[9]
वदन निहारि नयन बह नीरे[10]

विभक्ति प्रत्यय:

पिआअे देल कान [11]
पिआअै जाएब नहि[12]

गीत विद्यापति	1- 171/176	6- 611/622	10- 8/8
	2- 176/181	7- 611/622	11- 70/81
पृष्ठ संख्या/पद संख्या	3- 729/754	8- 025/026	12- 108/119
	4- 404/418	9- 8/8	
	5- 803/834		

कर्मकारक तथा अन्य कारक रचना में प्रातिपदिकों के साथ विभक्ति प्रत्ययों -ए , हि तथा हु का प्रयोग हुआ है इन विभक्ति प्रत्ययों के अनुनासिक रूप - एँ, -हिँ तथा- हुँ आदि से संयुक्त पदों के भी अल्प उदाहरण उपलब्ध हुए हैं । - ए विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग सबसे अधिक किया गया है जबकि - हि , -हिँ तथा हु - हुँ का अपेक्षाकृत कम प्रयोग हुआ है । अकारान्त तथा आकारान्त प्रातिपदिकों के साथ - ए ,एँ तथा -अे विभक्ति प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं तथा - हि, हिँ -हु तथा हुँ विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग अकारान्त, आकारान्त ,इकारान्त,ईकारान्त तथा उकारान्त प्रातिपदिको के साथ किया गया है । सम्बन्ध कारक विभक्ति प्रत्यय -एरि का प्रयोग केवल अकारान्त प्रातिपदिको के साथ हुआ है तथा इसके उदाहरण अत्यल्प है । एकाध स्थल पर - आँ विभक्ति प्रत्यय भी अधिकरणाकारक की स्थिति प्रकट करने के लिये प्रयुक्त हुआ है ।

- ए विभक्ति- प्रत्यय :

मृगमद पङ्के करसि अंगराग[1]	पङ्क को	कर्म-कारक
चान्दने मानए साटी[2]	चन्दन को	कर्म-कारक
मअन अराधने जाउ[3]	अराधना के लिये	सम्प्रदान कारक
आकुल भमरे कराह मधुपान[4]	भ्रमर को	सम्प्रदान -कारक
बङ्किम नयने चितहर लियोमोर[5]	नेत्रों से	करण- कारक
मनिमय कुण्डल श्रवने दुलित भेल[6]	कानों से	अपादान-कारक
नयने तेजए नोर[7]	नेत्रों से	अपादान-कारक
गगने आए कत तारा[8]	आकाश से	अधिकरण-कारक
अंगने आओब जब रसिया[9]	आँगन में	अधिकरण-कारक

गीत-विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 490/498
2- 233/240
3- 239/245
4- 364/371
5- 364/371
6- 648/665
7- 370/378
8- 365/372
9- 384/394

विश्लेष्य-ग्रन्थ में कुछ स्थलों पर विशेषण पद भी विशेष्य के आधार पर कारक विभक्ति के योगसे प्रभावित मिलते है । परन्तु ऐसा करण कारक विभक्ति प्रत्यय -ए तथा -एँ के योग में देखा गया है ।

अधिके जतने	अधिके जतने वचन बोलब[1]
मधुरे वचने	मधुरे वचने भरमहु जनुबाजह [2]
तीखेँ विखेँ	तेइ तीखेँ विखेँ जनि माखल [3]
कुटिलैं नयनैं	कुटिलैं नयनैं देब मदन जगाए[4]

- हि विभक्ति प्रत्यय:

न कर विघाटन अधरहि वसने[5]	अधर को	कर्मकारक
सासुहि न बूझ समाजे[6]	सासु को	कर्मकारक
उपजलि प्रीति हठहि दुरगेल[7]	हठ के कारण	करण-कारक
चरनहि लेल रतन नुपूरे[8]	चरणो में	अधिकरण-कारक

- हिँ विभक्ति प्रत्यय :

पहु दुर देसहिँ गेल रे [9]	देश को	कर्मकारक
कपटिहिँ निकट बुलओलह आने[10]	कपटी को	कर्मकारक

- हु तथा हुँ विभक्ति प्रत्यय:

विषहु आगर[11]	विष का	सम्बन्ध कारक
पथहुँ कण्टक जाह बिथूर[12]	पथ के काटों को	सम्बन्ध कारक

गीत-वियापति.
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 4/4	7- 374/382
2- 10/10	8- 593/599
3- 700/721	9- 262/271
4- 204/209	10-518/523
5- 565/571	11-701/722
6- 278/284	12-482/490

- एँ तथा - आँ विभक्ति - प्रत्यय:

घृत मधु दए नैतें बाती कए[1]	नेत को	कर्मकारक
बड़ें मनोरथैं साज अभिसार[2]	बडे मनोरथ से	करण-कारक
सुकृतैं मिलु सुपहु समाज[3]	सुकृत से	करण-कारक
प्रथम पहर रात रभसे बहला[4]	केलि में	अधिकरण-कारक
घङ्कुलु बान्धि पटोराँ धएलह[5]	पटोर में	अधिकरण कारक
साँझक बेराँ जमुनाक तीराँ	यमुना के	अधिकरण कारक
कदबेरि तरुतराँ[6]	तट पर	

- एरि विभक्ति प्रत्यय

नन्दक नन्दन कँदबेरि तरु तराँ[7]	कदम्ब के वृक्ष	सम्बन्ध कारक
नादेरि नन्दन मञे बेखि आबञो[8]	नन्द का पुत्र	सम्बन्ध कारक

गीत-विद्यापति में विभक्ति-प्रत्यय -ए,एँ का प्रयोग प्राय: सभी स्वरान्त्य संज्ञा पदों के साथ किया गया है । इकारान्त तथा उकारान्त संज्ञा पदों के साथ हि , हिँ विभक्ति प्रत्यय संयुक्त है । - आँ विभक्ति प्रत्यय मात्र अधिकरण कारक के लिये प्रयुक्त हुआ है । - एरि,-हु तथा -हुँ विभक्ति प्रत्यय सम्बन्ध कारक की स्थिति को प्रकट करने के लिये प्रयोग किये गये हैं ।

सम्बोधन-कारक के लिये एकवचन संज्ञा पद का अविकारी रूप प्रयुक्त हुआ है । जिसे शून्य विभक्ति प्रत्यय युक्त माना जा सकता है । अनेक स्थलों पर संज्ञा पदों के साथ - ए - आ तथा उ का प्रयोग प्रत्यय सदृश्य हुआ प्रतीत होता है परन्तु ऐसा कवि की रचना-मूलक प्रवृत्ति का परिणाम है ।

कि कहब माधव पुनफल तोर[9]	हे माधव
सफल भेल सखि कौतुक मोरा[10]	हे सखि
सुन सुन गुनवति राधे[11]	हे गुणवती राधे"
अरे अरे भमरा तोञे हित हमरा[12]	अरे अरे भ्रमर
अरे अरे कान्हु कि रहसि बोर[13]	अरे अरे कान्ह

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 481/489
2- 521/529
3- 469/476
4- 474/482
5- 523/530
6- 619/631
7- 339/346
8- 11/10
9- 15/15
10- 24/26
11- 365/372
12- 252/259
13- 232/239

संज्ञा पदों की अपेक्षा सर्वनाम पदों के साथ - हि विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग अधिक किया गया है । सर्वनाम पदों के संदर्भ में उक्त- हि विभक्ति कर्म-कारक के लिये प्रयुक्त हुई है ।

पुरुषवाचक तथा नित्य सम्बन्धी सर्वनाम पदों के साथ - हि विभक्ति का प्रयोग बिना परसर्ग के कर्मकारकीय स्थिति को व्यक्त करता है । सर्वनाम पदों के साथ - हि के उपरान्त परसर्ग प्रयोग द्वारा अन्य प्रकार के कारक- सम्बन्धों को प्रकट किया गया है ।

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष सर्वनाम पदों के साथ कर्म कारकीय विभक्ति प्रत्यय- हि का प्रयोग दोनो वचनों में किया गया है । यह उल्लेखनीय है कि जिन पुरुष वाचक सर्वनामों के साथ उक्त - हि प्रत्यय का प्रयोग किया गया है । वे प्राय: अपने आप में विकृत रूप हैं ।

- हि विभक्ति प्रत्यय :

मोहि	पुछिओ न गेले मोहि निठुर गोविन्द[1]
	न कर मोहि विमुख आजे[2]
तोहि	तोहि न बिसर एहे तोहर बड़ लाज[3]
	तुरित घर पठाबह ओहि[4]
ओहि	ओहि न लाज[5]
	ताहि लए गेल विधाता बाम[6]
ताहि	ताहि बधतब से जेहन कर[7]
जाहि	कि करत नागरि जाहि विधि बाम[8]
काहि	काहि कहब दुख परदेस नाह[9]

सर्वनाम पद की स्थिति में सर्वत्र विकारी विभक्ति - हि का प्रयोग हुआ है, किन्तु कहीं-कहीं पर - हे विभक्ति प्रत्यय का भी इस अर्थ में प्रयोग किया गया है।

तोहे	सुतिरिये मजि मोहे अनुसरि करब जलदाने[10]
मोहे	तोहे कि कहब सम्बादे[11]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 102/113
2- 50/ 58
3- 30/ 33
4- 548/555
5- 548/555
6- 6/ 6
7- 237/243
8- 184/189
9- 249/257
10- 187/191
11- 186/191

उपरोक्त हि तथा - हे विभक्ति के अतिरिक्त सम्बन्धकारकीय रूपों के साथ - आ तथा कही कहीं मूल सर्वनाम पद में - एं विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग भी कारकीय स्थिति को स्पष्ट करने के लिये किया गया है ।

- आ विभक्ति प्रत्यय :

तोरा	यदि तोरा खन नहि अवकास [1]
हमरा	हमरा भेलि आबे तोहरि आस[2]

- एं विभक्ति प्रत्यय :

हमें	हमें अपमानि पठओलह गेह[3]
	अब हमें करब गरास[4]

कारक- सम्बन्ध प्रकट होने के लिये कारक प्रत्यय अथवा परसर्ग के पृथक - पृथक अथवा एकल प्रयोग होता है । कहीं पर केवल विभक्ति प्रत्यय से कारक- सम्बन्ध प्रकट करने का काम लिया गया है तो कहीं पर केवल परसर्ग लगाकर और कहीं पर विभक्ति प्रत्यय के साथ -साथ परसर्ग के प्रयोग द्वारा कारक- स्थिति प्रकट की गई है । ऐसी स्थितियाँ भी प्राप्त होती हैं जिनमें न तो परसर्ग का प्रयोग है और न विभक्ति प्रत्यय का ही कोई प्रकट रूप उपलब्ध है तथा पद भी अपरिवर्तित है । यह स्थिति प्राय: सभी कारकों में प्राप्त होती है ।

तोरा अधर अमिअ लेल वास[5]	तेरे अधर पर	अधिकरण-कारक
राहु गरासल चन्दा[6]	चन्द्रमा को	कर्म-कारक
तीनि भुवन जिनि बिहि बिहु रामा[7]	सुन्दरी को	कर्मकारक
आकुल चिकुर बेढ़ल मुख सोम[8]	बिखरे हुए केशों से	करण-कारक
तेजइ नयन घन नीर [9]	नेत्रों से	अपादान कारक

गीत विधापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 474/482
2- 622/634
3- 838/872
4- 197/202
5- 720/744
6- 638/654
7- 641/657
8- 644/662
9- 28/30

कारक – परसर्ग :

कारक – सम्बन्ध प्रकट करने में परसर्गों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । बिना परसर्ग के भी प्रकट अथवा अप्रकट विभक्ति प्रत्यय के द्वारा कारक सम्बन्ध प्रकट हुआ है । अर्थ की दृष्टि से तथा स्वरूप की दृष्टि से परसर्ग विभक्ति प्रत्यय से भेद रखते हैं । प्रत्यय मूल शब्द के साथ जुड़े रहते हैं और परसर्ग स्वतन्त्र तथा पृथक होकर मूल शब्दो के उपरान्त आते हैं । इस दृष्टि से " गीत- विद्यापति" में परसर्ग अपनी सत्ता अभिव्यक्त करने में समर्थ हैं, किन्तु कुछ ऐसे भी स्थल हैंजहाँ आबद्ध रूप भी परसर्ग की भाँति प्रतीत होते हैं । ये आबद्ध रूप विभक्ति प्रत्यय ही हैं । "विश्लेष्य - ग्रन्थ"में – हि आबद्ध रूप या विभक्ति सर्वत्र मूल शब्द के साथ संयुक्त होकर लिखा गया है । यह कहीं भी पृथक रूप से प्रयुक्त नहीं हुआ है । इस तरह यह आबद्ध रूप व्याकरणिक प्रत्यय कोटि का हो जाता है, किन्तु अनेक पदों के साथ इसके प्रयोग के पूर्व व्याकरणिक प्रत्यय संयुक्त है और इस स्थिति में स्वरूप से यह विभक्ति प्रत्यय प्रतीत होते हुए भी कार्य से परसर्ग है । सर्वनामों में इस प्रकार के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं, जहाँ तिर्यक रूप सर्वनाम के साथ – हि विभक्ति प्रत्यय संयुक्त हैं तथा उसके उपरान्त परसर्ग भी अनुसरण करता है।

मोहि पति	मोहि पति भल भेल ओतहि ओहओगेल[1]
ताहि तह	जे सबे सुखद ताहि तह पाप[2]
एहि सौं	एहि सौं भल बरु जीवक अन्त[3]
एहि पर	एहि पर कि ओ अभागे[4]

गीत – विद्यापति : 1– 209/214
पृष्ठ सं०/ पद सं० 2– 306/319
3– 215/223
4– 528/533

- हि विभक्ति का प्रयोग जहाँ सर्वनाम पद के साथ संयुक्त रूप में हुआ है और उसके उपरान्त परसर्ग द्वारा कारक- सम्बन्ध व्यक्त हुआ है वहाँ प्रकट कारक विभक्ति के उपरान्त परसर्ग प्रयोग की स्थिति बनती है । इसके विपरीत जहाँ सर्वनाम पद के साथ - हि विभक्ति संयुक्त नही है और केवल परसर्ग द्वारा कारक - सम्बन्ध प्रकट हुआ है, वहाँ कारक विभक्ति रहित या शून्य विभक्ति युक्त रूप के उपरान्त परसर्ग प्रयोग की स्थिति बनती है ।

हम सन हे सखि कुसल महेशा [1]

हम के करब जलदान [2]

पिआ के कहब हम लागि [3]

उल्लेखनीय है कि प्रकट कारक विभक्ति के उपरान्त परसर्ग सर्वनाम के संदर्भ में तथा प्रकट कारक रहित या शून्य विभक्ति के उपरान्त परसर्ग प्रयोग संज्ञा पदों के साथ सामान्यत: हुआ है ।

परसर्ग प्रयोग की दृष्टि से संज्ञा और सर्वनाम पदों की स्थिति प्राय: समान है, दोनों के साथ परसर्ग प्रयुक्त हुए हैं । " गीत- विद्यापति" में प्रयुक्त परसर्ग एवं उनकी प्रयोग- स्थितियों का विश्लेषणात्मक विवरण इस प्रकार है ।

गीत- विद्यापति 1- 263/275

पृष्ठ संख्या/ पद संख्या 2- 184/188

3- 200/206

संज्ञा एवं सर्वनाम दोनों पदों के साथ कर्त्ताकारक द्योतक परसर्ग का प्रयोग प्राय: नहीं किया गया है । एक दो स्थलों पर -ञे अथवा -ञै का विभक्ति की तरह प्रयोग हुआ है । इसके उदाहरण पिछले पृष्ठों पर दिये गये हैं :-

विद्यापति कह सुन वर नारि [1]
पथ निशाचर सहसे सञ्चर [2]
वचन मञे चुकलिहुँ रमनि समाजे[3]
तञे नहि जानति तोरे दोस [4]

के, कों , कें , कौं , क , कर , केर :

इन परसर्गों का प्रयोग कर्म, सम्प्रदान तथा सम्बन्धकारक में किया गया है । संज्ञा तथा सर्वनाम दोनों पदों के साथ इनका प्रयोग हुआ है । उक्त परसर्गों का प्रयोग अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त संज्ञा पदों के साथ मिलता है । अकारान्त संज्ञा पदों के साथ इन परसर्गों का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है ।

अपन पुरूष के प्रेम जमाबिअ[5]	अपने पुरूष को	सम्प्रदान कारक
नागर कौं थिक नारि सिनेह[6]	नायक के लिये	सम्प्रदान कारक
पिया के कहब पिक सुललित बानी[7]	प्रियतम को	कर्म-कारक
बिरला के भल खिरहर सोम्पलह[8]	बिलाव को	सम्प्रदान कारक
हरि के कहब हमरि विनती [9]	हरि को	कर्म कारक
संतति कों अनुपम सुख आब[10]	सन्तान को	सम्प्रदान कारक
कुमुदिनि कौं ससि कौं कुमुदिनि[11]	कुमुदिनि के लिये	सम्प्रदान कारक
शशि कें सेवल गुन जानिरे[12]	शशि के लिये चन्द्रमा को	कर्मकारक

गीत विद्यापति
पृष्ठ सं० / पद सं०

1- 163/168
2- 479/487
3- 20/20
4- 33/36
5- 401/415
6- 64/75
7-221/227
8-522/530
9- 219/225
10- 854/891
11- 63/73
12- 293/310

सम्बन्ध कारक परसर्ग क, के, कर ,केर को का प्रयोग अकारान्त आकारान्त - इ- ईकारान्त तथा उकारान्त संज्ञा पद एवं सभी सर्वनाम पदों के साथ हुआ है ।

कुलक धरम अपन चाहिअ[1]	परिवार का धर्म या मर्यादा	सम्बन्धकारक
हाथ क काकन अरसी काज[2]	हाथ काकङ्गण	सम्बन्धकारक
रखलन्हि कुब्जाक नेह[3]	कुब्जा का प्रेम	सम्बन्ध कारक
पिआ क पअ पल[4]	प्रियतम के पैरों	सम्बन्ध कारक
धनि के बियोग भरम संसार[5]	प्रिया के वियोग	सम्बन्ध कारक
भीति क पुतरी विषधर भेल[6]	दीवार की पुतली	सम्बन्ध कारक
आनह केतकि केर पात[7]	केतकी का पत्र	सम्बन्ध कारक
पुनिमी को चन्दा[8]	पूर्णिमा का चन्द्रमा	सम्बन्ध कारक
कानुक वचन ऐछन चरित[9]	कृष्ण का वचन	सम्बन्ध कारक

सम्बन्ध कारक परसर्ग "क" अवधारणा सूचक प्रत्यय - हु से युक्त संज्ञा पदों के साथ संयुक्त रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

दिठिहुक ओत देसान्तरे [10]

सर्वनाम पदों में इन सम्बन्ध- कारक परसर्ग क, का, कर का प्रयोग वचनों में किया गया है । परसर्ग क, का , कर का स्त्रीलिंग रूप कि, करि भी प्राप्त होता है तथा इसका तिर्यक रूप "के " प्रयोग उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुष सर्वनाम के एकवचन तथा - न्हि बहुवचन द्योतक प्रत्यय युक्त सर्वनाम बहुवचन पदों के साथ संयुक्त रूप प्रयुक्त है तथा यह परसर्ग "के" कर्मकारक तथा सम्प्रदान कारक की स्थिति भी प्रकट करते है । सामान्यत: सम्बन्ध कारक प्रत्यय - र उत्तम तथा मध्यम पुरुष के साथ संयुक्त होता है । अत: सम्बन्ध कारक परसर्ग का प्रयोग अन्य पुरुष सर्वनाम पद के साथ हुआ है । कर प्रत्यय के स्त्रीलिंग रूप

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 17/17
2- 32/35
3- 254/263
4- 62/73
5- 260/268
6- 368/376
7- 222/229
8- 321/330
9- 41/45
10- 56/66

" करि" तथा इसका अन्य रूप "करा" भी प्रयुक्त हुआ है ।

हमक करब जलदान[1]	हमको	सम्प्रदान कारक
के तोके बोलए सआनी[2]	तुमको	कर्म कारक
ताके कवे दिअ रूप[3]	उसको	सम्प्रदान कारक

सम्बन्ध कारक परसर्गों का प्रयोग सर्वनाम पदों के साथ दोनों वचनों में हुआ है । सम्बन्ध कारक परसर्ग "क" तथा " का" के अनुनासिक रूप कँ तथा काँ का प्रयोग भी किया गया है । ये सभी परसर्ग सर्वनाम पदों के साथ संयुक्त रूप में आये हैं ।

एकर	एकर होएत परिनामे[4]
एहिकर	एहिकर रोख दोख अवगाइ[5]
हिनक	जे कयल हिनक निबन्धन[6]
हिनुकि	रूपे रूप हिनुकि रेखा[7]
ओकरा	ओकरा हृदय रहए नहि लागि[8]
हुनक	कत दिन राखब हुनक भरोस[9]
हुनिकि	हुनिकिओ भए बरू जिबओ भवानी[10]
हुनका	हुनका के कहै आन रे[11]
तकर	जे रस जान तकर बड़ पून[12]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं०/ पद संख्या

1- 184/188	7- 429/439
2- 49/ 57	8- 527/534
3- 74/ 85	9- 254/262
4- 164/169	10- 772/797
5- 523/530	11- 262/272
6- 744/767	12- 3/3

तकरा	दूती तह तकरा मन जाग[1]
ताकर	ताकर जीवन काहे[2]
तनिकर	अवलोकब नहि तनिकर रूप[3]
तन्हिकि	तइअओ तन्हिकि तहिं पिआरि[4]
तनिक	बुझालि तनिक भल मन्द[5]
तन्हिके	तन्हिके विरहे मरि जाएब[6]
जाक	जाक दरस बिने झरय नयान[7]
जकर	जइसन जकर भाग[8]
जकरा	जकरा जा सओ रीति[9]
जकरि	से से करति जकरि जे जाति[10]
जन्हिका	गोपवधू सओ जन्हिका केलि[11]
जनिकर	जनिकर एहन सोहागिनि सजनिगे[12]
जन्हिके	रयानि गम ओतह जन्हिके साथ[13]
केकरा	जाय बैठति धिआ केकरा ठहियाँ[14]
ककर	ककर उपमा दिअ परीत समान[15]
काहुक	न मानसि काहुक शंका[16]
काहिक	काहिक सुन्दरि के तेहि जान[17]
तन्हिको	जेहन तोहर मन तन्हिको तइसन[18]

गीत– विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1– 4/4	10– 585/590
2– 154/160	11– 686/706
3– 60/70	12– 447/456
4– 471/478	13– 743/765
5– 257/266	14– 749/772
6– 104/115	15– 833/866
7– 366/373	16– 354/361
8– 713/735	17– 343/350
9– 213/218	18– 64/75

तन्हिकाँ — तन्हिकाँ सतत तोहर परथाव[1]

कओनकँ — कओनकँ करब रोस [2]

विकारी कृदन्त के साथ के तथा के परसर्ग का प्रयोग संयुक्त रूप में सम्प्रदान कारक की स्थिति प्रकट करने के लिये हुआ है ।

गोरस बिकनें कें अबइते जाइत जनि जनि पुछ बन वारि[3]
छोरिआहु लेवाके नहि उसास[4]

सम्बन्ध -कारक परसर्ग "क" का प्रयोग विशेषण तथा क्रिया-विशेषण दोनों के साथ संयुक्त रूप में किया गया है । कुछ स्थलों पर इसके पूर्व - उ प्रत्यय भी पद के साथ संयुक्त मिलता है । इसका स्त्रीलिंग रूप "कि" भी पद के साथ संयुक्त रूप में प्रयुक्त है ।

तीनिक तेसर तीनिक बाम[5]
नवल बात छल पहिलुक मोह[6]
तखनक लघु गुरु कछु ना विचारलुँ [7]
के धरब तखनुक साखि[8]
तखनुकि कहिनी कहहि न जाय [9]
एखनक आरति रह पए दन्द[10]
आजुक कालि कालि नहि बूझसि[11]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद संख्या

1- 373/381
2- 522/529
3- 339/346
4- 760/783
5- 241/247
6- 96/107
7- 42/47
8- 627/639
9- 627/639
10-660/677
11- 135/142

सों सौं सओ , से , सयँ , सऒ , सँ, तँ , ते :

उपरोक्त परसर्गों का प्रयोग करण तथा अपादान करक के लिये हुआ है । तँ , परसर्ग का प्रयोग करण कारक के लिये हुआ है तथा इसका मात्र एक उदाहरण प्राप्त होता है । यह संज्ञा पद के साथ संयुक्त रूप में प्रयुक्त है । जबकि सों, सओ , आदि परसर्ग असंयुक्त रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

नखतँ लिखलि कमल दल पाँति[1]	नख से	करण - कारक
कान्ह सओ मेलि[2]	कृष्ण से	करण - कारक
आनक धन सों धनवन्ती रे[3]	धन से	करण - कारक
बालम्भु सौं मझु दीठि मिलाबहि[4]	प्रियतम से	करण कारक
कतेक जतन सँ मेटिअ सजनी[5]	यत्न से	करण - कारक
कर सँ परसमनि गेला[6]	हाथ से	अपादान - कारक
निअ मन्दिर सौं पअ दुइ चारि[7]	घर से	अपादान-कारक
पहु सौं छुटल समाज रे[8]	प्रभु से	अपादान कारक
हृदि से गरब दुरि गेला[9]	हृदय से	अपादान कारक

इन परसर्गों का प्रयोग अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, तथा उकारान्त संज्ञा पदों के साथ हुआ है लेकिन इनका सर्वाधिक प्रयोग अकारान्त संज्ञा पदों के साथ किया गया है ।

संज्ञा पदों के साथ संयुक्त अवधारणा सूचक प्रत्यय- हुं के पश्चात "स परसर्ग का प्रयोग असंयुक्त रूप में हुआ है ।

मुरा जओ मुड़हुं सओ भागल[10]

कोपहुं सओं जदि समदि पठाबह[11]

गीत- विद्यापति 1- 248/256 7- 538/546
पृष्ठ सं0/ पद सं0 2- 686/706 8- 262/271
3- 267/280 9- 42/ 47
4- 228/235 10- 95/106
5- 257/266 11- 354/361
6- 243/250

सर्वनाम पदों के साथ भी इन परसर्गों का प्रयोग असंयुक्त रूप में किया गया है तथा ये अधिकांश में सर्वनाम पदों के तिर्यक रूपों के साथ प्रयोग किये गये हैं। एकाध स्थल पर ये मूल सर्वनाम पदों के साथ प्रयुक्त हैं। "ते" परसर्ग का प्रयोग भी एक स्थल पर संयुक्त रूप में हुआ है।

एहि सौं	एहि सौं भल बरु जीवक अन्त [1]
जा सओ	जवरा जा सओ रीति [2]
जाहि सँ	जे जन रतल जाहि सँ सजनी [3]
हुन्हि सओ	हुन्हि सओ पेम हठहि हमें लाओल [4]
ता सओ	ता सओ पिरीति दिवस दुइ चारि [5]
ताते	ताते मरण भला [6]
तन्हि सओ	सपनेहु तिला एक तन्हि सओ रङ्ग [7]
तोहरा सौं	तोहरा सौं हम जे किछु भाखल [8]
हम सों	हम सों अनेक कुरीति रे [9]
मोहु सयँ	निठुर भइ कत मोहु सयँ बाज [10]
का सओ	तब तुहुँ का सओ साधबि मान [11]
का सयँ	का सयँ बिलसब के कहताह [12]

सौ, सौं सओ ,संय आदि परसर्ग करण तथा अपादान कारक परसर्गों का प्रयोग विशेषण एवं क्रिया विशेषण पदों के साथ भी किया गया है और यह प्रयोग असंयुक्त रूप में हुआ है।

दुहु दिस एक सओ होइक विरोध [13]
विहिक विरोध मन्दा सओ भेंट [14]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 218/223
2- 213/218
3- 258/266
4- 223/230
5- 45/51
6- 660/677
7- 217/222
8- 640/656
9- 293/310
10- 760/783
11- 43/49
12- 169/174
13- 460/468
14- 681/700

स्थान सूचक, स्थिति सूचक, प्रकार सूचक तथा काल सूचक क्रिया विशेषण पदों के साथ इन परसर्गों का प्रयोग असंयुक्त रूप में हुआ है।

कहाँ सौं सुगा आएल[1]
कति सयँ रूप धनि आनलि चोरी[2]
दुर सओ दुरजने लखब अभिसार[3]
निअ पिअ लग सौं आनल बोधि[4]
बाजथि बहुत भाँति सो सजनी गे[5]
तरवन सौं चाँद चँदन न सोहाय[6]

में, मों, मँ, पर क्माझ, तर, उपर, ते :

इन परसर्गों का प्रयोग अधिकरण कारक के लिये किया गया है। में, मों, मँ, क्माझ, ते तथा तर आदि का प्रयोग अधिकरण कारक की आभ्यान्तर स्थिति के लिये संज्ञा पदों के साथ किया गया है। पर तथा उपर का संबंध बाह्य स्थिति के लिये हुआ है। ये परसर्ग संज्ञा तथा सर्वनाम दोनों के साथ प्रयुक्त हुए हैं।

तृतीया में हम पंथाह बिताएब[7]	तृतीया में	अधिकरण -कारक
अगे माई इन मँ हेरथि कोटि धन बक्सथि[8]	क्षणमें	अधिकरण-कारक
हठसयं पइसएब्बवनक माँझ[9]	कानों के मध्य	अधिकरण-कारक
गाँठिते नाहि सुरत धन मोर[10]	गाँठ में	अधिकरण- कारक
सुरतरू तर सुखे जनम गमाओल[11]	कल्प वृक्ष के नीचे	अधिकरण- कारक
धुथुरा तर निरबाहे[12]	धतूरा के नीचे	अधिकरण- कारक
कासि मों खोजलुँ अरु आस-पास[13]	काशी में	अधिकरण- कारक
सुनिऐन्ह हर अओताह रथ पर[14]	रथ पर	अधिकरण कारक
उर पर सामरी बेनी[15]	हृदय पर	अधिकरण कारक
कनय पर सुतलि जनि कारि सापिनी[16]	स्वर्ण पर	अधिकरण कारक
मेरु उपर दुइ कमल फुलायल[17]	सुमेरु के ऊपर	अधिकारण-कारक

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 762/786
2- 422/433
3- 455/464
4- 531/536
5- 292/308
6- 343/349
7- 767/792
8- 755/777
9- 13/13
10- 605/614
11- 796/828
12- 796/828
13- 781/809
14- 763/787
15- 24/25
16- 11/11
17- 446/455

सर्वनाम पदों के साथ "में" तथा मात्र परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, परन्तु "तर" तथा "पर" का प्रयोग पर्याप्त संख्या में हुआ है । ये परसर्ग सर्वनाम पदों के साथ असंयुक्त रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

ताहि तर	ताहि तर तरुन पयोधर धनी [1]
ता पर	ता पर रतलि नारि[2]
एहि पर	एहि पर कि ओ अभागे[3]

अनुनासिकता द्वारा कारक-सम्बन्धों का द्योतन :

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा की कई विभक्तियों ने अपना सूक्ष्मतम अवशेष संज्ञा पदों के अन्तिम स्वर की अनुनासिकता के रूप में छोड़ा है तथा अनुनासिक चिन्ह । ँ । के द्वारा कारकों का द्योतन किया है । सर्वनाम-पदों के साथ । ँ । का प्रयोग कारक-द्योतन के लिये नहीं हुआ है ।

। ँ ।

तोंति रजनिआँ तिनि जुगे जनिआँ[4]	तिक्त रात्रि को	कर्म-कारक
ऋतुँ बसन्तँ हे अमिञ रसें सानि[5]	बसन्त ऋतु को	कर्म-कारक
तोहर हृदअँ जानि न भेला [6]	तुम्हारे हृदय को	कर्म-कारक
चान्द क उदअँ कुमुद जनि होए[7]	चन्द्र के उदय से	करण-कारक
बैरी डीठिँ निहारसि तोहि[8]	शत्रु दृष्टि से	करण-कारक
कमलँ झरए मकरन्दा [9]	कमल से	अपादान-कारक
हीरा धारँ हराएल हीर [10]	हीरा की धारा से	अपादान-कारक
दह दिसँ भमर करओ मधुपान[11]	दसों दिशाओं में	अधिकरण-कारक
चौदिसँ देलक दिपमाला [12]	चारों दिशाओं में	अधिकरण-कारक
मन्दिरँ न देख तोहि [13]	मन्दिर में	अधिकरण-कारक
कतौं जलासअँ पिउलन्हि पानि[14]	जलाशयों का	संबंध-कारक
आज पुनिमाँ तिथि जानि मोञे एलिहु[15]	पूर्णिमा की तिथि	संबंध-कारक

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं० / पद सं०

1- 291/307
2- 313/325
3- 528/535
4- 56/66
5- 193/199
6- 695/715
7- 506/512
8- 615/627
9- 191/197
10- 553/561
11- 47/54
12- 339/346
13- 481/489
14- 370/378
15- 613/625

लागि , क लागि ,पति तथा हेतु :-

यद्यपि सम्प्रदान -कारक के लिये क, कें , का तथा लाँ परसर्गों का प्रयोग हुआ है, किन्तु अनेक प्रसंगों में सम्प्रदान कारक के लिये परसर्ग के रूप में " लागि" तथा " पति" पद भी परसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुए हैं । "लागि" के पूर्व सम्बन्ध कारक परसर्ग "क" संज्ञा पद के साथ संयुक्त हुआ है । एक स्थान पर "ला" शब्द भी "लागि" के अर्थ में आया है । ये परसर्ग संज्ञा तथा सर्वनाम पदों के साथ पृथक रूप में प्रयोग किये गये हैं । एक स्थल पर "हेतु" का प्रयोग संज्ञा-पद के साथ तथा "लागहि" एवं लेखे" का सर्वनाम पद के साथ हुआ है ।

लाभक लागि मूल डुबि गेल[1]	लाभ के लिये	सम्प्रदान -कारक
पुन हरि कुले जनम लमिल हमार बधक लागि[2]	वध के लिये	सम्प्रदान- कारक
कएल गतागत तोहरा लागि[3]	तुम्हारे लिये	सम्प्रदान- कारक
मो पति सबे विपरीते[4]	मेरे लिये	सम्प्रदान- कारक
आनक ला जंजाल [5]	अन्य के लिये	सम्प्रदान - कारक
सुखम हेतु कमने विचारब [6]	सुख के हेतु	सम्प्रदान- कारक
मोरे लेखें समुदक पार[7]	मेरे लिये	सम्प्रदान- कारक
ए हरि त लागहि तञे गोहारि[8]	उसके लिये	सम्प्रदान-कारक

"गीत विद्यापति में कुछ स्वतन्त्र पद भी परसर्ग की भाँति प्रयुक्त हुए हैं कुछ उदाहरण निम्नवत हैं :

तह	दूती तह तकरा मन जाग[9]
पाए	सुरपति पाए लोचन मागओ[10]
मध	जलमधे कमल गगन मधे चन्दा[11]
बिनु	विषम वारिस बिनु रघुबर [12]
चाहि	बरसा बरिअ वसन्तहु चाहि[13]
ताहि	कञ्चन ताहि अधिक कए तहलह[14]
दुआरे	परक दुआरे वरिअ जनु काज[15]
कारन	जसु कारन तोञे खिनी [16]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 161/166
2- 178/183
3- 534/541
4- 228/235
5-
6- 495/503
7- 101/112
8- 120/120

9- 4/4
10- 10/10
11- 700/721
12- 204/209
13- 225/231
14- 121/131
15- 460/468
16- 23/24

कारक रचना की दृष्टि से "गीत- विद्यापति" की भाषा का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि कवि ने सामान्यतः मैथिली भाषा की प्रवृत्ति के अनुरूप कारक- विभक्ति एवं कारक- परसर्गों का प्रयोग किया है ।

विभक्ति- प्रत्यय द्वारा कारक- सम्बन्ध प्रकट करने के उदाहरण परसर्ग प्रयोग की अपेक्षाकृत हैं । विभक्तियाँ दो प्रकार की है - । मूल कारक या सरल कारक विभक्ति -2 विकारी या तिर्यक कारक विभक्ति । मूल कारक में शून्य प्रत्यय तथा विकारी कारक में प्रकट विभक्तियों का प्रयोग हुआ है । कर्म कारक सहित अन्य कारकों में - ए, -एँ, -ऐ -हि, -हिं तथा -हुँ विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग संज्ञा तथा सर्वनाम पदों के साथ हुआ है । उत्तम तथा मध्यम पुरुष सर्वनाम के सम्बन्धकारकीय रूप - आ प्रत्यय के योग से विकारी कारक का कार्य करते हैं । अनुनासिकता / ँ / के द्वारा भी कारक सम्बन्ध प्रकट हुए हैं । यद्यपि इनकी संख्या अत्यल्प है । विभक्ति प्रत्ययों में - ए का प्रयोग सर्वाधिक है । परसर्गों के स्पष्टतः तीन वर्ग प्रयुक्त हुए हैं । - के, कों, के , काँ, क, कर तथा केर इनका सम्बन्ध कर्म , सम्प्रदान एवं सम्बन्ध -कारक से है । 2- सो, सौं, सऔ , से , सयँ तथा तँ - ये परसर्ग करण तथा अपादान-कारक से सम्बद्ध हैं । 3- में , मों, पर, तर, माझ तथा उपर - इन परसर्गों का का प्रयोग अधिकरण -कारक के लिये किया गया है। कुछ स्वतन्त्र पद जो नियमित परसर्ग तो नहीं हैं परन्तु उनका प्रयोग विभिन्न कारक-सम्बन्धों को प्रदर्शित करने के लिये किया जाता है , ऐसे परसर्गवत शब्द भी

गीत विद्यापति" में प्रयुक्त हुए हैं : जैसे लागि, हेतु, लेखे ,तह ,पाए, मध , दुआरे तथा कारन आदि ।

प्रस्तुत कृति में "ने" परसर्ग प्रयुक्त नहीं है , कहीं कहीं पर-ऐ अथवा -ऐ , "ने" की तरह प्रयुक्त प्रतीत होते हैं। परन्तु ऐसा करण-कारक विभक्ति -एं के योग के कारण है । कुछ पदों के साथ न तो विभक्ति प्रत्यय प्रयुक्त है और नही परसर्गों का प्रयोग हुआ है । परन्तु उनके मध्य कारकीय स्थिति प्रतीत होती है । ऐसे पद सामासिक व्यवस्था से सम्बद्ध हैं ।

अध्याय -6

पुरुष - विचार :-

सर्वनाम एवं क्रियापदों की व्याकरणिक रूप -रचना का सम्बन्ध लिंग वचन के साथ- साथ पुरुष से भी होता है । " गीत- विद्यापति" की भाषा मैथिली है । अत: लिंग वचन की भांति पुरुष संबंधी मैथिली की ही प्रवृत्तियाँ इस रचना में उपलब्ध होती हैं । पुरुष-प्रयोग का स्वरूप सर्वनाम तथा क्रियापदों में अलग-अलग होते हुए भी व्याकरणिक एकरूपता की दृष्टि से सर्वनाम तथा क्रियापदों के मध्य पुरुष का संबंध अत्यन्त घनिष्ठ होता है । प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत सर्वनाम तथा क्रियापदों में प्राप्त पुरुष-विधान का विश्लेषण पृथक - पृथक किया गया है

सर्वनाम पदान्तर्गत पुरुष- विचार :

व्याकरणिक पदों में सर्वनाम ही एकमात्र ऐसा पद है जिस पर अन्य भाषा परिवारों अथवा कृदन्तों का प्रभाव नहीं पड़ा है । 'विवेच्यग्रन्थ' में मैथिली भाषा के सामान्य रूप के अन्तर्गत प्राप्त होने वाले प्राय: सभी सर्वनाम उपलब्ध होते हैं । इन सर्वनाम पदों के तीन रूप सरल, तिर्यक और सम्बन्धकारकीय रूप प्राप्त हुए हैं । लिंग- भेद की स्थिति संबंधकारकीय सर्वनाम रूपों को छोड़कर अन्य सर्वनाम रूपों में नहीं प्राप्त होती है । वचन की दृष्टि से भी बहुवचन प्रतीत होने वाले सर्वनाम पद सिद्धान्तत: बहुवचन -द्योतक होने पर भी आदरार्थक एकवचन में भी प्रयुक्त हुए हैं । अन्य स्थलों पर लिंग या वचन का निर्धारण क्रियापद अथवा वाक्य-स्तर पर अर्थ के आधार पर प्रसंगानुसार किया जाता है ।

उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम :

"गीत-विधापति" में उत्तम पुरुष एकवचन में मञे , मोञे ,मए तथा मोयँ आदि प्रयुक्त हुए हैं । ये सभी एक दूसरे के विकल्प में प्रयोग किये गये हैं । वाक्य अथवा पंक्ति के आदि एवं मध्य में इनकी स्थिति प्राप्त होती है ।

मञे धउलिहु तुअ पास[1]

मञे सुधि पुरुब प्रेम भरे भोरि [2]

मोञे न जएबे माइ दुरजन सङ्ग [3]

आज मञे हरि समागम जाएब[4]

नादेरि नन्दन मञे देखि आबओ [5]

माधुर जाइते आज मए देखल[6]

से सुनि मुदु मोयँ कान[7]

सपने मोए देखल नन्दकुमार[8]

मञे ,मोञे तथा मए आदि के तिर्यक सर्वनाम रूप में " मो" प्रयुक्त हुआ है । यह सरल तथा तिर्यक दोनों रूपों में मिलता है । इसके इन दोनों रूपों के उदाहरण कम मिलते हैं ।

" मो " का सरल रूप :

बेरि बेरि अरे सिव मो तोयं बोलों[9]

ते मो धएलाहु नुकाइ [10]

गीत-विधापति पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

-1 84/95
2- 67/79
3- 59/70
4- 487/493
5- 11/10
6- 16/17
7- 21/21
8- 27/29
9- 746/769
10- 740/763

मो - का तिर्यक रूप :

भेटल मधुरपति सपने मो आज [1]

होएत मो बड़ पाप [2]

ए हर गोसाञि मो जनि देह उपेखि [3]

"मो" के परसर्गयुक्त तिर्यक रूप :

मो सञो कान्ह क कोप [4]

मो पति पछिमेसुर उगि गेला [5]

इस तिर्यक रूप "मो" के साथ तिर्यक विभक्ति -हि संयुक्त होकर मोहि तिर्यक रूप बनाती है जो एकल तथा परसर्गयुक्त दोनों ही रूपों में प्रयुक्त हुआ है । इस "मोहि" का प्रयोग वाक्य के आदि ,मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियों में हुआ है । " हि" का एकरूप "ही" भी " मो" के साथ संयुक्त हुआ है , जो छन्द की मात्रा पूर्ति के लिये पंक्ति के अन्त में मिलता है ।

"मोहि" का एकल प्रयोग :

मोहि तेजि पिआ मोर गेलाह विदेस [6]

मोहि आबे तन्हिकी कहिनी लाज [7]

गीत- वियापति   1- 76/87
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या   2- 522/529
3- 769/795
4- 5/5
5- 80/91
6- 245/252
7- 534/541

कह मोहि परिहरि लाज[1]

हुन्हि क सरिस मोहि मिलए न नारी[2]

"मोहि" के साथ परसर्ग का प्रयोग मात्र एक स्थान पर हुआ है :

मोहि पति सबे विपरीते[3]

"मोहि," के विकल्प में मोहे ,मझु तथा मोहु आदि सर्वनाम रूप का प्रयोग हुआ है, किन्तु " मोहि" का प्रयोग सर्वाधिक किया गया है :

पुछिओ न गेले मोहे निठुर गोविन्द[4]

निठुर भइक्त मोहु सयं बाज[5]

मझुक्त परिखसि आर[6]

कि पुछसि मोहे निदान [7]

ऐसे उपजल मोहे [8]

मञे , मोञे तथा मोए आदि का सम्बन्धकारकीय रूपा " मोर" है , जो विकारी रूप " मो" के साथ सम्बन्धकारकीय प्रत्यय- र के योग बनता है । कहीं -कहीं पर -"र" के उपरान्त -आ प्रत्यय जुड़ता है और "मोरा" रूप प्राप्त होता है । यह मोरा रूप पुन: तिर्यक कारक का भी कार्य करता है । " मोर" के साथ स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ जुड़कर "मोरि" सम्बन्धकारकीय रूप बनाता है । " मोर" में विशेष्य के लिंग तथा कारक के अनुसार - इ, -ई तथा- ए, -एँ प्रत्यय (करण कारक) जुड़ते हैं । फलस्वरूप मोरि, मोरी तथा मोरे , मोरेँ रूप बनते हैं ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 738/760
2- 761/784
3- 135/142
4- 102/113
5- 760/783
6- 188/193
7- 160/165
8- 174/179

मोर	'सखि हे मोर बड़ दैव विरोधी [1]
	कुलक धरम बुडले की मोर[2]
मोरा	कि मोरा चान्दने कि अरविन्दे[3] ऽतिर्यक प्रयोग ऽ
	बिसरि जाएब पति मोरा[4]
मोरि	बोलि दुइ चारि सुनाओब मोरि[5]
	की भेलि काम कला मोरि घाटि[6]
मोरी	रङ्ग कुरङ्गिनि मोरी[7]
मोरे	मोरे बोले दुर कर रोस[8]
	मोरे नामे भिखि माँग खाउ [9]
मोरैं	मोरैं आसैं पिआसल माधव [10]

कुछ स्थलों पर " मोर" के स्थान पर मेरो , मेरे, तथा मझु आदि मोर के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं । अवधारणा सूचक प्रत्यय - हि ,-हु एवं -इओ का प्रयोग " मोरा के साथ किया गया है ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 185/190
2- 193/199
3- 8/8
4- 244/250
5- 188/193
6- 192/198
7- 215/219
8- 33/36
9- 760/783
10- 522/529

मेरो	वचना मेरो सुन साजना रे[1]
मेरे	उचित वयस मेरे मनमथ चोर[2]
मझु	सोड.रि सोड़.रि नेह खिन भेल मझु देह[3]
मोराहि	मोराहि जे अगंना चंदन लेर गाछे[4]
मोराहु	मोराहु तन्हिकी आस[5]
मोरिओ	मोरिओ सह सहचरि जानति[6]

उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम :

उत्तम पुरुष में "हम" मूल बहुवचन सर्वनाम है जो दोनों लिंगों में प्रयुक्त हुआ है । इसका अन्य " हमें " भी प्राप्त होता है । इन दोनों सर्वनाम रूपों का प्रयोग सरल तथा तिर्यक दोनों कारकों में किया गया है । इसका भेद वाक्य- स्तर पर अर्थ के आधार पर किया जा सकता है ।

हम	अब भेलहु हम आयु बिहीन[7]
	हम नहि जाओब सो पिआ मास[8]
	कमने मिलब हम सुपुरुष सङ्ग[9]

गीत- विधापति

पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 82/93
2- 85/97
3- 173/178
4- 850/884
5- 713/735
6- 535/542
7- 853/888
8- 656/673
9- 658/675

हमे — चोलरि पहिरि हमे हाट गये [1]

आबे हमे गेलिहु फेदाई [2]

हमें पए दुहु दिस मेलिहु आरि [3]

तिर्यक कारक में "हम" तथा हमें सर्वनाम एकल तथा परसर्ग युक्त दो रूपों में प्रयुक्त हैं ।

एकल प्रयोग :

हम — हम बिसरह काओ [4]

हम दुख साल सोआमि दे गेल [5]

हम छल न टुटब नेहा [6]

हमें — हमे अपमानि पठओलह गेह [7]

अब हमे करब गरास [8]

अइसन उपजु हमें भाने [9]

तासओ तुलना हरि हमे दीन [10]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 849/883
2- 463/471
3- 461/469
4- 81/92
5- 273/288
6- 188/192
7- 838/872
8- 197/202
9- 837/872
10- 229/236

परसर्ग-युक्त प्रयोग :

"विवेच्यग्रन्थ" में केवल "हम" के प्रयोग ही परसर्ग युक्त प्राप्त होते हैं । "हमे" के प्रयोग परसर्गयुक्त नहीं हैं ।

हम — हम सन हे सखि सकल महेशा[1]
हम तह के विछुक आगर[2]
हम सों अनेक कुरीति रे[3]
हम चाए बेदा लेब[4]
हमके करब जलदान[5]
पिआ के कहब हम लागि[6]

उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम "हम" के साथ सम्बन्धकारकीय प्रत्यय -र का योग सम्बन्धकारक सर्वनाम रूप "हमर" बनाने के लिये किया गया है कहीं-कहीं इस- र प्रत्यय के पूर्व तथा पश्चात -"आ" प्रत्यय संयुक्त हुआ है -र प्रत्यय के पश्चात -"आ" प्रत्यय संयुक्त होने पर सम्बन्धकारकीय रूप "हमरा" तिर्यक कारक का कार्य भी करता है । सम्बन्धकारक रूप "हमर" स्त्रीलिंग -इ प्रत्यय तथा करण-कारक विभिक्ति ए- ,एँ से प्रभावित होता है । यह प्रभाव विशेष्य के लिंग एवं कारकीय स्थिति के आधार पर होता है ।

हमर — तोञे न मानह हमर बाध[7]
साजनि हमर दिवस दोस[8].

गीत- वियापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 263/275
2- 701/722
3- 293/310
4- 689/709
5- 184/188
6- 200/206
7- 548/555
8- 521/529

हमार — ते जानत जित रहत हमार [1]

तोहे गुण आगर नागरा रे सुन्दर कुटुव हमार [2]

हमारि — हमारि ओ विनति कहब सखि गोए [3]

हमारि ओ मति अपथे चलिगेलि [4]

हमरा — हमरा तैसन दोसर नहि गेह [5]

तोजे जानसि दुख अहनिसि हमरा [6]

"हमर" के साथ – आ प्रत्यय जुड़कर तिर्यक सम्बन्धकारकीय रूप "हमरा" बनाता है । यह तिर्यक रूप एकल तथा परसर्ग युक्त दोनों प्रकार से प्रयुक्त हुआ है ।

हमरा का एकल प्रयोग

हमरा भेलि आबे तोहरि आस [7]

हमरा कोन तरङ्ग [8]

"हमरा " का परसर्गयुक्त प्रयोग

एते सबे सजलह हमरा लागि [9]

हमरा कें जँओ तेजब गुन बूझब [10]

कारक- विभक्ति -ए" से युक्त प्रयोग

हमरे वचने सखि सतत न जएबे [11]

गीत- वियापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 533/540
2- 82/93
3- 100/111
4- 838/872
5- 279/296
6- 217/222
7- 622/634
8- 279/295
9- 683/702
10- 643/661
11- 456/465

मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम :

"विवेच्यग्रन्थ" में मध्यम पुरुष से मूल एक वचन सर्वनाम पद "तञे" है । इनके अन्य रूप तोञे , तों , तु तथा तू भी प्राप्त होते हैं । इनका प्रयोग पद की पंक्ति के आदि तथा मध्य में हुआ है । ये दोनों लिंगों में प्रयुक्त हुए हैं । इनके लिंग का निर्णय वाक्य -स्तर पर अर्थ तथा क्रिया-रूपों के आधार पर किया जा सकता है ।

तञे	तञे कामिनि किङ्करए राख [1]
	तञे नहि जानति तोरे दोस [2]
तोञे	जसुकारन तोञे खिनी [3]
	मन विद्यापति सुन तोञे जउवति [4]
तों	के तों थिकह [5]
	उठवह बनिआँ तों हाट बाजारे [6]
तु	तु वर कामिनि [7]
तू	रामा हे तू बड़ि कठिन देह [8]

मध्यम पुरुष एकवचन के मूल सर्वनाम पद तञे के अन्य रूप तो या तों के साथ तिर्यक विभक्ति "हि" या -हें को संयुक्त करके तिर्यक कारक रूप तोहि,तोहे तथा तोहे रूप बनाये गये हैं । इस तोहि सर्वनाम रूप का प्रयोग सर्वत्र विकारी कारक के लिये हुआ है ।लेकिन तोहे या तोहे सर्वनाम पद का प्रयोग अनेक स्थलों पर अविकारी कारक बहुवचन के लिये भी किया गया है । जिसका निर्धारण क्रिया रूप अथवा अर्थ के आधार पर किया जा सकता है । "तोहि" को सर्वत्र एकल रूप में ही प्रयोग हुआ है परन्तु "तोहि" के उपरान्त "बिनु" परसर्ग वत प्रयुक्त हुआ है जहाँ पर "तोहि" तुम्हारे अर्थ में प्रयुक्त है ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 429/440
2- 33/36
3- 23/24
4- 234/241
5- 260/268
6- 808/839
7- 28/31
8- 362/368

तोहि — बड़े पुने बड़े तपे पौलिसि तोहि [1]

जहिआ कान्ह देल तोहि आनि [2]

अबे तोहि सुन्दरि मने नहि लाज [3]

तोहि बिनु तेजति परान [4]

तोहें — तोहे छाड़ि गति नहि आने [5]

जत जत तोहे कहब सुन्दरि [6]

भल न कएल तोहे [7]

कलिजुग पाप सतत तोहे फलला [8]

"तो" के साथ सम्बन्धकारकीय प्रत्यय - र" के योग से " तोर" सर्वनाम रूप बनता है । यह संबंधकारकीय रूप "तोर" विशेष्य के लिंग एवं कारकीय स्थिति से प्रभावित होता है । स्त्रीलिंग प्रत्यय-इ" तथा कारकीय विभक्ति प्रत्यय-ए-एँ के योग से तोरि, तोरे तथा तोरें रूप बनते हैं । -र" के पश्चात- आ- प्रत्यय लगकर बना "तोरा" रूप भी सम्बन्धकारक में प्रयुक्त हुआ है । कुछ स्थानों पर तुअ का भी सम्बन्धकारकीय रूप में प्रयोग किया गया है :

तोर — साजनि की कहब तोर गेआन [9]

तोर नअन एँ पथहु न सञ्चर [10]

मानिनि मान महघ धन तोर [11]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 6/6
2- 32/35
3- 32/35
4- 75/86
5- 16/16
6- 16/17
7- 371/379
8- 44/50
9- 29/32
10-54/62
11-38/41

तोरि	हरि बड़ चेतन तोरि बड़ि कला[1]
तोरे	मिलन आस मन तोरे[2]
	तोरे नामे परहु सओ बाज[3]
तोरैं	तोरैं वचनें कएल परिछेद[4]
तोरा	सपुन सुधाकर आनन तोरा[5]
	वदन मलिन तोरा[6]
तुअ	चल चल माधव भल तुअ काजे[7]
	ते हमे आज अएलाहु तुअ पास[8]

मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम :

मध्यम पुरुष बहुवचन में तो या तों के साथ संयुक्त - हे प्रत्यय से बना रूप "तोहें" अविकारी कारक में प्रयुक्त है । तोहे या तोहें का प्रयोग पद की पंक्ति के आदि तथा मध्य में हुआ है । एक स्थल पर "तुम" भी अवधारणा सूचक -ई से संयुक्त होकर प्रयुक्त हुआ है :

तोहे	तोहे गुण आगर नागरारे[9]
	सबका आसा तोहे पुराबह[10]
तोहें	तोहें मतिमान सुमति मधुसूदन[11]
तुमी	तुमी शिव शम्भू[12]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 477/485
2- 274/289
3- 310/323
4- 533/541
5- 453/462
6- 638/654
7- 530/537
8- 717/739
9- 82/93
10-81/92
11-339/346
12- 774/800

"तोहे" के साथ सम्बन्धकारकीय प्रत्यय-"र" के योग से "तोहर " रूप बना है ।
-"र" प्रत्यय के पूर्व तथा पश्चात-आ का योग हुआ है । जिससे "तोहार" तथा
"तोहरा" रूप बने हैं । "तोहर" के साथ स्त्रीलिंग प्रत्यय-इ का योग हुआ है
और "तोहरि" रूप बना है । यह " तोहरा" सर्वनाम पद कहीं पर एकल तथा
कहीं पर परसर्गयुक्त होकर तिर्यक कारक रूप का कार्य करता है । "तोहरे" रूप
का प्रयोग भी विशेष्य के करणकारकीय रूप के साथ हुआ है ।

तोहर	से आबे मरन सरन जानलि तोहर विरहाइ[1]
	एहे तोहर बड़ भाग[2]
तोहार	तन्हिका सतत तोहार परधाव[3]
तोहरि	तोहरि पिरिति रीति दुर गेली[4]
तोहरा	तोहरा की बोलब हमर अभास[5] ‡ तिर्यक रूप-एकल ‡
	कएल गतागत तोहरा लागि[6] ‡ तिर्यक रूप- परसर्गयुक्त ‡
	तोहरा सौं हम जे किछु भाखल[7] ‡ तिर्यक रूप-परसर्गयुक्त ‡
तोहरे	तोहरे वचने रूप धस जोरल[8]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 237/243
2- 30/33
3- 373/381
4- 90/101
5- 347/354
6- 533/541
7- 640/656
8- 706/727

अन्य पुरुष सर्वनाम :

अन्य पुरुष में प्रयुक्त मूल एकवचन सर्वनाम पद "ई" है जिसके वैकल्पिक रूप "इ" इह तथा यह आदि भी प्राप्त होते हैं । ये सभी निकटवर्ती निश्चयसूचक सर्वनाम वाक्य के आदि तथा मध्यम में प्रयोग किये गये हैं :

ई	ई न विदेस क बेली[1]
इ	माधव इ तोर क ओन रोआने[2]
	दुरजनि दूती तह इ भेल[3]
इह	इह बड़वानल ताप अधिक भेल[4]
यह	के यह पिंजड़ा गढ़ाओल[5]

अन्य पुरुष एकवचन में दूरवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम पद दो प्रकार के हैं प्रथम "से" तथा "सो" दूसरे "ओ" उह तथा ऊ हैं । इनमें से प्रथम सर्वनाम पद "से" या "सो" सम्बन्धवाचक सर्वनाम जे या जो के साथ आने पर नित्यवाचक सर्वनाम का कार्य भी करते हैं, जबकि दूसरे प्रकार के सर्वनाम पद "ओ", उह तथा ऊ सदेव दूरवर्ती निश्चयवाचक अन्य पुरुष सर्वनाम के रूप में ही प्रयुक्त हुए

गीत- विद्यापति 1- 206/212
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या 2- 108/119
3- 129/137
4- 147/154
5- 762/786

से	हेरि से चउगुन होइ[1]
सो	सो अब नदी गिरि आंतर भेला [2]

अन्य पुरुष बहुवचन सर्वनाम :

अन्य पुरुष हो तथा इहो आदि का प्रयोग बहुवचन (आदरार्थक) के लिये भी किया गया है । कुछ स्थलों पर क्रियापदों के बहुवचनत्व के कारण ये भी बहुत्वबोधक माने जा सकते हैं । एकाध स्थलों पर बहुवचन द्योतक प्रत्यय-चिन्ह से संयुक्त रूप "हिन" भी बहुवचन सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त है, साथ ही अनिश्चय-वाचक सर्वनाम " सब एवं 'सभ' के ई, इ के साथ प्रयुक्त होने पर बना संयुक्त रूप बहुवचन सर्वनाम का कार्य करता है ।

इ	इ सबे कएल हमे मोहि[3]
	तुअ डरे इह सबे दुरहि पलाएल[4]
	ई सभ लक्ष्मी समाने[5]
एहो	तीनि लोक के एहो छथि ठाकुर [6]
	एहो थिक त्रिभुवन ईस[7]
इहो	इहो थिक त्रिभुवन नाथ [8]
हिन	सब चाहि हिन दिन दिन खिन[9]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 195/201
2- 149/156
3- 200/206
4- 331/339
5- 445/454
6- 752/774
7- 752/775
8- 766/790
9- 829/861

अन्य पुरुष दूरवर्ती एकवचन सर्वनाम "से" तथा "सो" को बहुवचन में भी प्रयोग किया गया है । केवल एकाध स्थल पर "से" का बहुवचन रूपतन्हि अविकारी कारक में प्रयुक्त हुआ है ।

से — से सुखे भुजथु राजे[1]

से कत कर उपहासे[2]

सो — सो तुआ भाव विभोर[3]

तन्हि — तन्हि पुनु कुशले आओब निज आलए[4]

तन्हि की विलसब नागरि पाए[5]

"से" तथा "सो" की भाँति दूरवर्ती निश्चय सूचक एकवचन सर्वनाम "ओ" उह तथा "ऊ" भी प्रसंगानुसार बहुवचन सर्वनाम की तरह प्रयुक्त हुए हैं । एक स्थल पर "हुनि" सर्वनाम पद का प्रयोग हुआ है जो ओ, उ अथवा ऊ में बहुवचन द्योतक प्रत्यय - "न्हि" के योग से बना है ।

ओ — ओ नहि बुझवा जगत किसाने[6]

ओ मधुजीवी तजे मधुरासि[7]

उह — हाम नलिनी उह कुलिसक सार[8]

ऊ — घर आंगन ऊ बनोलन्हि कहिआ[9]

हुनि — हुनि हर जगत किसाने[10]

गीत - विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 116/125
2- 250/259
3- 319/329
4- 71/82
5- 686/706
6- 771/796
7- 294/312
8- 727/752
9- 949/772
10-788/819

अन्य पुरुष तिर्यक एकवचन सर्वनाम :

अन्य पुरुष में प्रयुक्त मूल एकवचन "ई ,इ, इह तथा यह का तिर्यक एकवचन "ए" है इसका अनुनासिक रूप "एँ" भी मिलता है । यह "ए" तथा एँ सर्वनामिक विशेषण का भी करता है और इसी प्रयोग के उदाहरण प्राप्त होते हैं । इसी "ए" के साथ तिर्यक कारक विभक्ति -हि" का संयोग होने पर तिर्यक सर्वनाम रूप "एहि" की रचना हुई है । तिर्यक रूप -"ए" तथा "एहि के पश्चात परसर्गों का प्रयोग किया गया है ।

ए	तोर नअन ए पथहु न सञ्चर [1]
	एँ धने सुखित होयत युवराजे[2]
एहि	एहि अनुभवि बुझल सरूपे [3]
	एहि बाटे माधव गेल रे [4]

ए - तथा एहि का परसर्ग युक्त प्रयोग :

ए	गोबरे बान्धि बीछ घर मेललह एकर होएत परिनामे[5]
एहि	एहि सौं भल बरु जीवक अन्त [6]
	एहि पर कि ओ अभागे [7]
	एहि तह पाप अधिक धिक नारि[8]
	एहि कर रोख दोख अवगाइ[9]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 54/62
2- 58/68
3- 704/725
4- 22/23
5- 523/530
6- 218/223
7- 528/535
8- 585/590
9- 164/169

अन्य पुरुष दूरवर्ती सर्वनाम "से" तथा सो का तिर्यक रूप "ता" है । "विवेच्यग्रन्थ" में "ता " का प्रयोग परसर्गों के साथ ही हुआ है । तिर्यक विभक्ति -हि" के संयोग से बने तिर्यक रूप " ताहि" का प्रयोग एकल एवं परसर्ग युक्त दोनों तरह से किया गया है । इसी तरह अन्य पुरुष दूरवर्ती सर्वनाम "ओ" के साथ - हि" तिर्यक विभक्ति से युक्त "ओहि" रूप प्राप्त होता है परन्तु इसकी प्रयोग संख्या अत्यल्प है और इसके साथ परसर्गों का प्रयोग नहीं हुआ है ।

ता	ता लागि अबस करए नहि द्वन्द [1]
	ताके कके दिअ रूप [2]
	भनइ विद्यापति जे जन नागर तापर रतलिनारि [3]
	तब किअ तासयँ बाँधय चीत[4]
	जे रस जान तकर बड़ पून[5]
	ताकर वचन लोभाइ[6]
	ता पति सबे असार[7]
ताहि	ताहि लए गेल विधाता कम [8]
	ताहि तर तरुन पयोधर धनी [9]
	ताहि तह भलि तोर अवधा[10]
ओहि	तुरित घर पठावह ओहि [11]
	उचितओ बोलइते ओहि न लाज[12]

गीत - विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 57/67
2- 74/85
3- 313/325
4- 45/51
5- 3/3
6- 165/170
7- 479/487
8- 6/6
9- 291/307
10-382/391
11-548/555
12- 548/555

अन्य पुरुष तिर्यक बहुवचन सर्वनाम :

मूल कारक में बहुवचन सर्वनाम पद " हिन" §निकटवर्ती§ 'तन्हि' तथा "हुनि" अथवा "हुन" §दूरवर्ती§ का बहुवचन तिर्यक रूप इन्ही के साथ परसर्गों का प्रयोग करके बनता है । एकाध स्थान पर -हि - हुँ तथा --ओ अवधारणा सूचक विभक्ति का भी प्रयोग किया गया है ।

हिन — जे कयल हिनक निबन्धन [1]

केओ जनि किछु कहइन्हि हिनकहूँ [2]

हुन — हमर अभाग हुनक कओन दोस [3]

कत दिन राखब हुनक भरोस [4]

हुनकिओ भए बरु जिवओ भवानी [5]

हुनि — हुनिहि सुबन्धु के लिखिए पठाओब [6]

हुनि बिनु त्यागब प्रान रे [7]

तन्हि — तन्हिके विरहे मरि जाएब [8]

तन्हिकाहुँ कुल भेलिसिबनिजार [9]

तन्हि सओं कान्ह ककोप [10]

तन्हिकर कथा कहसि कौँ लागि [11]

उचितहुँ नरहल तन्हिक विवेक [12]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 744/767
2- 750/773
3- 246/254
4- 254/262
5- 772/797
6- 578/585
7- 262/272
8- 104/115
9- 46/53
10- 217/222
11-375/383
12- 98/108

कुछ स्वतन्त्र बहुत्वबोधक शब्दों के इन तिर्यक सर्वनाम रूपों के साथ-साथ प्रयोग से भी तिर्यक कारक बहुवचन का धोतन हुआ है ।

एहि तीनहु मँह प्रीति सयानी[1]

इथि दुहु माझ क ओन मोर आनन[2]

एहो सभ लेब छड़ाई[3]

निज वाचक सर्वनाम :

अन्य पुरुष से सम्बद्ध निजवाचक सर्वनाम - आप " है । " आप मूल सर्वनाम के तिर्यक रूप "अपन" तथा आपन है । इन रूपों के साथ स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ तथा परसर्ग का भी प्रयोग हुआ है । मूल सर्वनाम " आप के साथ -हि -एतथा आपन के साथ - ए ,हि ,इ ,हुँ तथा ऐओ अवधारणा सूचक प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं । एक स्थान पर सम्बन्धकारकीय विभक्ति - एरि" का योग भी "अपन" के साथ हुआ है ।

आप	आप ओदेला मृगछलवा[4]
आपे	आपे खाले भाँग धतुरवा[5]
आपहि	अपन सूल हम आपहि चाँछल[6]
अपनि	अपनि छाहरि तेज न पास[7]
आपनि	आपनि आरति आगु न गुनल[8]

गीत- विद्यापति -
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 632/645
2- 710/732
3- 748/771
4- 783/811
5- 783/811
6- 42/47
7- 369/377
8- 495/503

अपना के	हमे अपना के धिक कए मानल[1]
अपनुक	अपनुक अङ्गिरल कर निरबाह[2]
अपनेरि	कि कहिबो अगे सखि अपनेरि माला[3]
अपने	अपने विरह अपन तनुजार[4]
अपनहि	विद्यापति कह अपनहि आउति[5]
अपने- अपन	अपने -अपन करब अवधान[6]
अपनेओ	अपनेओ धन हे धनिक धरगोए[7]
अपनहुं	मानिनि अपनहुँ मन अनुमान[8]
अपनइ	अपनइ भिखारी सेवक दीअराजे है[9]
निअ	निअ मन्दिर सौं पअ दुइ चारि[10]

अन्य पुरुष से सम्बद्ध अन्य सर्वनाम :

विद्यापति ने अपने गीतों में सम्बन्ध वाचक, नित्य सम्बन्धी, प्रश्न वाचक तथा अनिश्चयवाचक सर्वनामों का भी प्रयोग किया है । ये सर्वनाम अन्य पुरुषसे सम्बद्ध हैं ।

गीत- विद्यापति 1- 136/143
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या 2- 340/400
3- 7/7
4- 144/151
5- 95/106
6- 3/3
7- 731/755
8- 51/59
9- 789/821
10-538/546

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम :

सम्बन्धवाचक मूल एकवचन सर्वनाम "जे" तथा जो है । इन दोनों का प्रसंगानुसार प्रयोग बहुवचन के लिये भी किया गया है जे तथा जो का तिर्यक रूप "जा" है । इसी "जा" के साथ बहुवचन बोधक प्रत्यय - न्हि के संयोग से बने रूप "जन्हि" का प्रयोग परसर्ग के साथ विकारी कारक के लिये हुआ है । तिर्यक रूप "जा" के साथ तिर्यक विभक्ति - हि एवं - सु का संयोग हुआ है । तथा "जा" एवं "जन्हि" के साथ सँ, पति, पर, के, बिनु , क , कर तथा लागि परसर्ग प्रयुक्त हुए हैं ।

जे	हठे जे जक्रे करम करिअ भल नहि परिपाक[1]
	एहि रितुपति जे नकर विहार[2]
	मकर मकर जे भांङ्ग भकोसथि[3]
	डिमिकिडिमिकि जे डमरू बजाइन [4]
जो	जो जस बनिजए लाभ तस पाबए [5]
	से धनि जो थिर ताहि निहार[6]
जाहि	जाहि बधन्तब से जेहन कर [7]
	कि करति नागरि जाहि विधि वाम[8]
जसु	कुलजा रीति छोड़लि जसु लागि[9]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या
1- 829/861
2- 823/855
3- 746/768
4- 745/768
5- 803/834
6- 725/749
7- 237/243
8- 184/189
9- 164/169

जा	तिला एक जा सओ महघ समाद[1]
	जापति सुरत मने असार[2]
	जा लागि चाँदन बिखतह भेला[3]
जाहि	जे जन रतल जाहि सँ सजनी[4]
	जाहि लागि गेलिहे[5]
जन्हि	जन्हि बिनु तिहुयन तीत[6]
	रयनि गमओलह जन्हि के साथ[7]
	जन्हिका जनम होइते तोहे गेलिहे[8]
	जनिका सौंपि गेला मोर आहि[9]

सम्बन्ध वचाक सर्वनाम "जे" तथा जो के साथ अवधारणा सूचक विभक्ति -हे,-इ, -ओ- इह और -हो संयुक्त हुए हैं ।

जेहे	जेहे निझाइअ पानी[10]
जइह	जइह पेम सुरतक सुखदायक सइह भेल दुखदाता[11]
जोइ	जोइ कयल सोइ नागरराज[12]
जेओ	जेओ छल जीवन सेओ दुरगेल[13]
जेहो	जेहो न अछल मन सेओ भेल संपन[14]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 213/218	8- 740/763
2- 482/490	9- 254/262
3- 398/410	10-48/55
4- 258/266	11-377/386
5- 740/763	12-724/749
6- 276/292	13-305/319
7- 743/765	14-399/410

नित्य संबंधी या सह सम्बन्धवाचक सर्वनाम :

जे ---- से तोहर पिरीति जे नव नवमानय से अब न सुनए बानी[1]

जेहे ---- सेहे जेहे नागरि बुझ तकर चतुरपन सेहे न परिहरि देह[2]

जे ---- ते जे छल आदर ते रहु आधे[3]

प्रश्नवाचक सर्वनाम :

अन्य पुरुष संबंधी प्रश्नवाचक सर्वनामों के अन्तर्गत प्रश्नवाचक मूल सर्वनाम पद "के", कोन, को, तथा कओन हैं। इस सर्वनाम का विकारी रूप "का" है। "का" के साथ तिर्यक कारक विभक्ति -हि" के संयुक्त होने से "काहि" रूप बनता है। इन दोनों तिर्यक रूप "का" एवं "काहि" के पश्चात "क" सँय तथा "लागि" परसर्ग प्रयुक्त हुए हैं। इनका प्रयोग लिंग तथा वचन -भेद से अप्रभावित है। अप्राणिसूचक प्रश्न वाचक सर्वनाम पद "की" "किथिलागि" तथा "की लागि" का प्रयोग भी अनेक स्थलों पर किया गया है। एक स्थान पर "केहि" तथा "काहु" का प्रयोग भी तिर्यक कारक के लिये हुआ है।

के पुरुष विचखन के नहि जान[4]

लाहिल सुन्दरि के ताहि जान[5]

कोन कोन कपल एहो असुजन [6]

को को वह आओब माधाई [7]

को विपरीत कथापति आएब[8]

कओन कुच जुग चारु चकेवा निअ कुलमिलित आनि कओन देबा[9]

मांगल मनोरथ कओन सखि पओला[10]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 40/44
2- 63/74
3- 83/94
4- 131/139
5- 343/350
6- 744/767
7- 156/162
8- 649/666
9- 406/420
10- 397/408

केहि	कनक कमल हेरि केहि न लोभा[1]
काहि	काहि कहब दुख परदेस नाह[2]
	तोहर दूषण वध लागत काहि[3]
	काहिक सुन्दरि के ताहि जान[4]
केकर	भेल केकर हठए पर नाह [5]
	जाय बैठति धिआ केकरा ठहिया[6]
ककर	ककर उपमा दिअ पिरीति समान[7]
	ककरहु काल नराखधि धीर [8]
का	तब तुहु का सञे साधबि मान[9]
	का सयँ विलसब के कह ताहि[10]
	का लागि ततए पठओलए मोहि[11]
	हुलले बुझिअहुँ किअ का लागि[12]
काहु	काहुक कहिनी कतओ नहि सुनिअ[13]
की	की हम साँझ क एक सरि तारा[14]
	आओ की कहबि मञे महिमा तोरि[15]
	की लागि सजनी दरसन भेल [16]
कथिलागि	से बोलिअ कथिलागि[17]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1-344/350
2- 249/257
3- 294/312
4- 343/350
5- 348/355
6- 749/772
7- 833/866
8- 853/888
9- 43/49
10- 169/174
11- 373/381
12- 694/714
13- 742/769
14- 88/99
15- 368/375
16- 12/12
17- 518/524

अनिश्चयवाचक सर्वनाम :

"केओ" तथा "किछु " अनिश्चय सर्वनाम हैं । अनेक स्थलों पर "केओ" के स्थान पर " कोए" कोइ, केउ तथा किछु के स्थान पर किछु , कीछु एवं कछु का प्रयोग मिलता है :

केओ	केओ न केह सखि कुशल सनेस[1]
	परक रतन परगट कर कोए[2]
	कोइ न मानइ जय अवसाद[3]
	केउ नहि कह सखि कुसल सन्देस [4]
किछु	किछु नहि गुनले आगु[5]
	जत बेसाहब कीछु न महघ[6]
	कुच जुग वसन समरि कछु देल[7]

अनिश्चयवाचक सर्वनाम का आशाय" आन" तथा पर" के प्रयोग द्वारा भी अभिव्यक्त हुआ है तथा इनके पश्चात परसर्ग "क" का प्रयोग हुआ है ।

आन	आन क दुख आन नहि जान[8]
	आनका इ रूप हिते पए होअए[9]
पर	परक वेदन पर बाटि न लेइ[10]
	परक दरब हो पर सञो वाद[11]
	से सबे परकें कहहि न जाए[12]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 246/254
2- 731/755
3- 427/437
4- 188/198
5- 828/860
6- 79/90
7- 672/691
8- 184/189
9- 74/85
10-202/20
11-99/110
12- 190/196

"सब" सर्वनाम पद की गणना भी अनिश्चयवाचक सर्वनाम में की गई है । इसके साथ अवधारणा के लिये -हि, हु तथा ए " प्रत्यय संयुक्त हुए हैं । कुछ स्थलों पर "सब"के स्थान पर "सभ" का प्रयोग भी मिलता है । "सब" के साथ तह,का आदि परसर्गों का प्रयोग किया गया है ।

सब — से तहि अछ सब मन जाग[1]

भीम भीम बिरहा सबहि निहारए[2]

सुपुरुष वचन सबहु विधि फूर [3]

सबे परदा राख[4]

सबे अनुभव चाहि[5]

आगा सभ केओ यातील निवेदय[6]

की हमे गरुबि गमारि सब तह[7]

जगत विदित थिक सबकाँ सबतहु मनकाँ मन थिकसाखी[8]

सहजहि सबका बाधे [9]

क्रिया पदान्तर्गत पुरुष विचार :

रूप- रचना की दृष्टि से सर्वनामों की भाँति क्रिया रूप भी पुरुष द्वारा प्रभावित होते हैं । "गीत- विद्यापति" में तीनों पुरुषों के अनुसार भिन्न-भिन्न क्रिया रूप प्रयुक्त हुए हैं ।

उत्तम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन :

उत्तम पुरुष वर्तमान काल में वचन-भेद तथा लिंग-भेद नहीं पाया जाता है। इसमें क्रियापदों में पुरुष बोधक प्रत्यय - ओ या -ओं संयुक्त हुआ है ।

आबओ — नादेरि नन्दन मञे देखि आबओ [10]

कहओ — साँचि कहओ मोञे साखि अनङ्ग [11]

झाखओ — चोर जननि जओ मने मने झाखओ [12]

खसओं — मुरछि खसओं क्त बेली[13]

जानओं — जानओं प्रकृति बुझओं गुन स्मीला[14]

पाबओं — बेरि बेरि आबओ उतर न पाबओं[15]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 680/699
2- 699/720
3- 457/465
4- 34/37
5- 48/55
6- 802/833
7- 136/143
8- 64/76
9- 115/125
10- 11/10
11- 438/448
12- 95/106
13- 289/303
14- 743/766
15- 536/543

उत्तम पुरुष भूतकाल के क्रिया पद एक वचन तथा बहुवचन में समान हैं । इस क्रिया पद में भूतकाल सूचक प्रत्यय -ल के उपरान्त -हुँ तथा -उँ पुरुष द्योतक प्रत्यय का प्रयोग किया गया है । स्त्रीलिंग -इ प्रत्यय का प्रयोग काल सूचक प्रत्यय- ल के पश्चात एवं पुरुष बोधक प्रत्यय -हुँ तथा उँ के पूर्व हुआ है । कुछ स्थलों पर भूतकालिक क्रिया पदों के स्त्रीलिंग -इ तथा पुरुषबोधक प्रत्ययों से रहित रूप भी प्रयुक्त हुए हैं ।

देखल	सपने मोए देखल नन्द कुमार[1]
पेखलि	ए सखि पेखलि एक अपरूप[2]
चललि	पिआ गोद लेलके चललि बजार[3]
पेखलुँ	माधव अबला पेखलुँ मतिहीना[4]
भेलिहुँ	हमहुँ भेलिहुँ लहु[5]
अइलिहुँ	एतहुसाहसे मञे चलि अइलिहुँ[6]

उत्तम पुरुष भविष्यकालिक क्रिया पद एक वचन तथा बहुवचन में समान है । इसमें कुछ स्थलों पर पुरुष बोधक प्रत्यय- ओ तथा-ओं का संयोग हुआ है । स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ का प्रयोग काल सूचक प्रत्यय -ब के पश्चात होता है लेकिन पुरुष बोधक प्रत्यय - ओ के संयुक्त क्रियापदों में - ब प्रत्यय के पूर्व हुआ है ।

लेब	भरमहु कबहुँ लेब नहि नाम[7]
खसबि	ठेसि खसबि मोरि होति दुरगती[8]
बुझबि	अगिलाँ जनम बुझबि परिपाटी[9]
पाओब	विरह पयोधि पार किये पाओब[10]
रहब	कत दिन रहब तपोल करलाय[11]
बोलिबों	चल चल सुन्दरि कि बोलिबों तोहि[12]
बोलिबओ	कि बोलिबओ तोही[13]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 27/29
2- 415/460
3- 847/881
4- 158/163
5- 667/686
6- 516/522
7- 3/3
8- 776/801
9- 193/199
10- 156/162
11- 852/887
12- 718/741
13- [illegible]

मध्यम पुरूष एक वचन एवं बहुवचन :

मध्यम पुरूष में वर्तमान काल एक्वचन में मूल क्रियापद के साथ - "सि" पुरूष बोधक प्रत्यय किया गया है । इस मध्यम पुरूष क्रियापदों के स्वरूप में लिंग के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता है ।

सि	एतहुँ बिपदे तुहुँ न कहसि बानि[1]
	आन किछु जनु बोलसि मोहि[2]
	आबे कके करसि तोजे मुख परगासा[3]

मध्यम पुरूष वर्तमान कालिक बहुवचन क्रियापद - मूल क्रियापद में - ह प्रत्यय के संयोग से बनते हैं ।

-ह	भल जन भए वाचा चूकह[4]
	करह रङ्ग पररमनी साथ[5]
	विसवास दए कके सुतह निचीत[6]

मध्यम पुरूष एकवचन भूतकाल में काल सूचक प्रत्यय- ल के उपरान्त पुरूष बोधक नही लगता है, अर्थात शून्य प्रत्यय की योजना मानी जाती है । इस स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ का संयोग भी -ल प्रत्यय के उपरान्त हुआ है ।

कएल	भल न कएल तोहे[7]
धएलि	तुहूँ मान धएलि अविचारे[8]
एड़ाओलि	तुहूँ एड़ाओलि रतने[9]
बोललए	पिआ सजो पउरुस कके तोजे बोललए[10]

गीत- विद्यापति	1- 43/49	8- 44/50
पृष्ठ संख्या/पद संख्या	2- 739/762	9- 44/50
	3- 703/724	10-62/73
	4- 695/715	
	5- 190/196	
	6- 484/482	
	7- 63/74	

मध्यम पुरुष एकवचन भूतकालिक क्रियापद में काल सूचक प्रत्यय- ल के पश्चात पुरुष बोधक प्रत्यय -सि" का प्रयोग भी कहीं कहीं पर किया गया है। इसी के साथ स्त्रीलिंग प्रत्यय-इ का योग भी पुरुष बोधक प्रत्यय -सि के पूर्व तथा कालसूचक प्रत्यय - ल के पश्चात हुआ है।

भैलिसि	तन्हिकाहुँ कुल भैलिसि बनिजार[1]
देखलिसि	आज देखलिसि कालि देखलिसि आज कालि कत भेद[2]

मध्यम पुरुष भूतकालिक बहुवचन क्रिया पद में मूल क्रिया पद के साथ काल सूचक प्रत्यय - ल के उपरान्त - ह प्रत्यय संयुक्त हुआ है। इसमें लिंग- भेद नही पाया जाता है :

बोललह	बोललह तोहे मोरि दोसरि पराने[3]
कएलह	तीनि दोस अपने तोहे कएलह[4]

मध्यम पुरुष भविष्यकालिक एकवचन क्रियापद में मूल क्रियापद के साथ कालसूचक प्रत्यय -ब- के पश्चात शून्य प्रत्यय का योग रहता है। बहुवचन क्रिया पद में -ह" प्रत्यय संयुक्त हुआ है। कुछ स्थलों पर स्त्रीलिंग प्रत्यय- इ भी काल-सूचक प्रत्यय -ब" के पश्चात जुड़ता है।

करबह	हठे जञो करबह सिनेह क ओल[5]
परिहरबह	एँ बेरि जदि परिहरबह आनि[6]
साधबि	माधव बधि की साधबि साधे[7]
करबि	सकल विशेष कहनु तोते सुन्दरि जानि तुहु करबि विधान[8]
करब	जब तुहुँ करब विचार[9]
पाओब	गनइते दोस गुन लेस न पाओब[10]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या /पद संख्या

1- 46/53
2- 442/452
3- 703/724
4- 124/133
5- 57/67
6- 531/538
7- 39/43
8- 320/329
9- 798/830
10-798/830

मध्यम पुरुष वर्तमान आज्ञार्थ में क्रियापद में शून्य प्रत्यय- उ.-हि तथा -ह प्रत्ययों का संयुक्त किया गया है ।

चल	चल देखने जाउ ऋतु वसन्त[1]
राख राखहि	राख माधव राखहि मोहि[2]
सुनु	भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि[3]
करु	कर धय करु मोहि पारे[4]
बोलह	टूटलि वचन बोलह जनु[5]
करह	विधि बसे अधिक करह जनु मान[6]
जाह	ततहि जाह हरि तरह न लाथ[7]
कहह	मोहि भेटल कान्हु अनतए कहिनि कहह जनु[8]

मध्यम पुरुष भविष्य आज्ञार्थ मूल क्रियापद में -"ब" तथा -"ह" प्रत्यय के संयुक्त होने पर बनता है । एकाध - स्थल पर स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ का प्रयोग भी - "ब" प्रत्यय के बाद किया गया है ।

करब	ते परि करब केलि जे पुनु हो अमेलि[9]
दीहह	थिरटा दीहह अवसानुह मोही[10]
गुनबि	चिते नहि गुनबि आने[11]
धरबि	परिहरि कबहु धरबि नहि बाहु[12]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 588/593
2- 577/584
3- 260/269
4- 636/657
5- 130/138
6- 36/39
7- 743/765
8-619/631
9- 722/745
10-826/858
11-42/47
12-562/568

अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन :

वर्तमान कालिक एकवचन क्रियापद में -इ-ए-तथा -हि प्रत्यय संयुक्त हुए है कुछ स्थलों पर वर्तमान कालिक क्रियापद के साथ सहायक क्रिया -छ" या छि का प्रयोग किया गया है ।

हेरइ	हेरइ मुख ससि सजल नयान[1]
बूझए	कहलेओ बूझए सयानी[2]
भनहि	भनहि विद्यापति भान ,हे सखि[3]
बोलइ छ	मञे कि बोलब सखि बोलइ छ कान्ह[4]
हेरइ छि	कुटिल भौंह करि हेरइ छि काइ[5]

अन्य पुरुष बहुवचन वर्तमान कालिक क्रियापद में मूल क्रियापद के साथ- -थि पुरुष बोधक प्रत्यय का संयोग किया गया है । इन क्रियापदों में लिंग-भेद नहीं पाया जाता है ।

धरथि	कुच जुग पाँच पाँच ससि ऊगल कि लय धरथि धनिगोई[6]
सहथि	असहसहथि क्त कोमल कामिनी जामिनि जिवदयगेली[7]
करथि	भल जन करथि पर उपकार[8]
जानथि	रूप नरायन इ रस जानथि[9]

कुछ स्थलों पर अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन वर्तमानकालिक क्रिया पद में मूल क्रियापद के साथ शून्य-प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है ।

काँप	हदय आरति बहु भय काँप[10]
संचर	एहि पुर पाटन के नहि संचर[11]
	निशिथ निशाचर संचर साथ[12]

गीत विद्यापति - पृष्ठ सं० /पद संख्या

1- 591/597
2- 556/564
3- 294/311
4- 46/53
5- 604/613
6- 406/420
7- 638/653
8- 511/517
9- 436-446
10- 717/740
11- 742/64
12- 520/528

अन्य पुरुष भूतकालिक एकवचन पुल्लिंग में मूल क्रियापद के साथ कालसूचक प्रत्यय-ल के उपरान्त शून्य प्रत्यय तथा "क" प्रत्यय संयुक्त हैं । स्त्रीलिंग क्रियापद में भूतकालिक क्रियापद के साथ-"इ" प्रत्यय का योग हुआ है । भूतकालिक बहुवचन में लिंग भेद नहीं है बल्कि बहुवचन धोतक प्रत्यय- "न्हि" तथा "आह" का प्रयोग हुआ है ।

जागल	जागल कुसुम सरासिनरे[1]
आइलि	एतए आइलि धनि तुअ विसवास[2]
छलि	औतए छलि धनि निअ पिआस[3]
भेलि	उपगति भेलिहु इ भेलि साति[4]
कएलक	काटी संखारी खण्डे खण्डे कएलक सबे धने धएलक गाड़ी[5]
धएलक	धएलक गाड़ी[5]
खएलक	दधि दुध घोर धीव सभ खएलक[6]
पढलन्हि	तनि नहि पढलन्हि मदन क रीति[7]
चललाह	भीम भुअङ्गम पथ चललाह[8]

अन्य पुरुष भूतकालिक क्रियापद में अन्य काल सूचक प्रत्यय- उ एवं ओ का प्रयोग मूल क्रिया के साथ हुआ है । इस क्रियापद में वचन तथा लिंग-भेद उपलब्ध नहीं है ।

उ	न जानू किए करु मोहन चोर[9]
	ससंजे पडु कुलबाला[10]
ओ	तिमिर मिलओ ससि तुलित तरङ्ग[11]

अन्य पुरुष भविष्यकालिक क्रिया में काल सूचक प्रत्यय- ब तथा त दोनों प्रयुक्त हुए हैं । यद्यपि -त प्रत्यय का प्रयोग अधिक हुआ है । एकवचन में शून्य प्रत्यय तथा बहुवचन में -आह एवं -थि प्रत्यय संयुक्त हुए हैं । इसके एकवचन क्रियापद में कहीं-स्त्रीलिंग प्रत्यय-इ का प्रयोग हुआ है ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 194/200
2- 531/538
3- 531/538
4- 675/694
5- 523/530
6- 522/530
7- 521/528
8- 113/123
9- 13/12
10- 18/18
11- 453/462

आओब	पिआ जब आओब ए मझु गेहे [1]
जीउत	की पिबि जीउत चकोरा [2]
जीउति	पिय बिरहिनि अति मलिन विलासिनि कोने परि जीउति रे [3]
कुटती	नित उठि कुटती भांग [4]
गमाओत	से पहु बरिसे विदेस गमाओत [5]
अओताह	बालभु अओताह उछाह कए [6]
रहताह	जोग हमर बड़ तेज सेज धय रहताह [7]
चलितथि	रुनुकि झुनिकि धीआ चलितथि जमैया देखितथि [8]
देखितथि	
रखितथि	चाग क पेज उघारि हदय बिच रखितथि [9]

प्रेरणार्थक क्रिया :

प्रेरणार्थक क्रिया पदों में भी पुरुष के अनुसार परिवर्तन हुआ है । वर्तमान काल प्रेरणार्थक क्रियापद मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष में प्राप्त हुए हैं वर्तमान काल प्रेरणार्थक क्रिया के अन्त में - सि तथा -इअ प्रत्यय द्वारा मध्यम पुरुष तथा - "ए" एवं -थि प्रत्यय द्वारा अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन प्रकट हुआ है ।

कहायसि	आदि अनादि नाथ कहायसि [10]
झाँपायसि	उरज अङ्कुर चिरे झाँपायसि [11]

गीत विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 387/397
2- 54/62
3- 270/284
4- 765/790
5- 75/86
6- 130/138
7- 543/660
8- 643/660
9- 643/660
10-801-832
11- 425/435

मिलाबिअ	दीस निगम दुइ आनि मिलाबिअ[1]
दरसाबए	बिजुरि छटा दरसाबए मेघ[2]
जगाबए	दरसि जगाबए मुनि जन आधि[3]
चढ़ावधि	भ्रम चढ़ावधि माथ[4]
चरावधि	खन बिदावन चरावसि गाय[5]

भूतकाल में प्रेरणार्थक क्रियापद तीनों पुरुषों पृथक पृथक प्राप्त होते हैं। उत्तम पुरुष में काल सूचक – ल प्रत्यय के बाद शून्य प्रत्यय तथा स्त्रीलिंग प्रत्यय – इ संयुक्त होता है। मध्यम पुरुष एकवचन – सि" प्रत्यय तथा बहुवचन –ह प्रत्यय द्वारा प्रकट हुआ है। अन्य पुरुष एकवचन में शून्य प्रत्यय तथा –न्हि प्रत्यय द्वारा बहुवचन प्रकट हुआ है।

चलाओल	अपथा पथा चरणा चलाओल भगति मति न देला[6]
सिखाउलि	कत बोलब कत मझे जे सिखाउलि[7]
खोअओलासि	जीवन दसाँ खोजी खोअओलासि का ञ्चन कर्पूर तमोव
सोअओलासि	दुइ सिरिफल छाह सोअओलासि कोमल कामिनी कोर
बुझओलह	बहुल बुझओलह निअ बेवहार[10]
बनाओल	कए बेरि काटि बनाओल नव कय तइओ तुलित नहि भेला[11]
बदओलन्हि	कपट बुझाए बदओलन्हि दन्द[12]

गीत– विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1– 449/458	7– 350/357
2– 539/546	8– 793/826
3– 309/322	9– 793/826
4– 746/768	10– 347/354
5– 795/827	11– 444/454
6– 769/795	12– 96/107

भविष्य काल प्रेरणार्थक उत्तम पुरुष में पुरुषबोधक प्रत्यय संयुक्त नहीं हुआ है। मध्यम पुरुष में एकवचन में शून्य तथा बहुवचन में -ह प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है । अन्य पुरुष में भी पुरुष बोधक प्रत्ययनहीं लगा है ।

देआओब	जलज दल नक्त देह देआओब[1]
जगाएब	अष्टमि दिन यह पूजा निसि बलि लय भक्त जगाएब[2]
बढ़ाओब	अवसर गेले कि नेह बढ़ाओब[3]
बुझओबह	कहि की बुझओबह अपनुक दोसे[4]
बुझाओत	जबे बुझाओत लेखी[5]

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि " गीत विद्यापति " में सर्वनाम पदान्तर्गत तीनों पुरुषों की दृष्टि से तेरह मूल सर्वनामों का प्रयोग हुआ है । इन मूल सर्वनामों के विभिन्न विकारी रूप भी 'विश्लेष्य-ग्रन्थ में प्रयुक्त हैं । तीनों पुरुषों में अधिकांश रूपान्तरणशील पुल्लिंग सर्वनाम पद आकारान्त एवं अकारान्त हैं तथा स्त्रीलिंग सर्वनाम पद इकारान्त तथा ईकारान्त हैं ।

तीनों पुरुषों के साथ प्रयुक्त अधिकांश क्रियापद अकारान्त हैं । कुछ स्थलों पर पुरुष विशेष के कारण उकारान्त, एकारान्त, तथा ओकारान्त क्रियाएँ भी प्रयोग की गई हैं । उत्तम पुरुष क्रियापदों के साथ -ओ,-ओं,-अउँ , हुँ पुरुष बोधक मध्यम पुरुष के साथ - सि" तथा अन्य पुरुष के साथ -इ,-ए , -थि आदि प्रत्यय संयुक्त हुए हैं । कुछ स्थलों पर क्रिया की कर्मान्विता के कारण उत्तम पुरुष क्रियापद के साथ - "सि" मध्यम पुरुष प्रत्यय संयुक्त हुआ है ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 238/244
2- 767/792
3- 191/197
4- 838/872
5- 769/795

अध्याय-7

काल- रचना :

क्रियापदों की रूप- रचना में काल का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है । प्राचीन भारतीय आर्य-भाषाओं में काल- रचना अतीव जटिल रही है । विकास की प्रक्रिया में भाषा के अन्य अवयव ध्वनि, लिंग, वचन तथा कारक आदि की तरह काल - रचना भी जटिलता से सरलता की ओर अग्रसर हुई है । " गीत- विद्यापति " में क्रियापद ﴾ वर्तमान, भूत एवं भविष्य काल ﴿ प्रत्येक भारतीय आर्य-भाषाओं की तरह विद्यापति ने भी काल- रचना के लिये सहायक क्रिया, संयुक्त क्रिया आदि के प्रयोग किये हैं । काल- रचना में कालबोधक प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है । प्रस्तुत प्रकरण में प्रत्येक काल के अन्तर्गत आने वाली लिंग वचन,एवं पुरुष सम्बन्धी स्थितियों के निर्माण में प्रयुक्त प्रत्ययों तथा सम्बद्ध तत्वों पर विचार किया गया है ।

वर्तमान काल :-

" गीत- विद्यापति " में वर्तमान काल के अन्तर्गत तीनों पुरुषों में एक वचन तथा बहुवचन में लिंग- भेद नहीं प्राप्त होता है अर्थात लिंग-भेदक प्रत्यय प्रयुक्त नहीं होते हैं । उत्तम पुरुष एक वचन तथा बहुवचन में - ओ या -ओं प्रत्यय लगता है । मध्यम पुरुष एकवचन में " सि " तथा बहुवचन में " न्ति " एवं " थि " प्रत्यय संयुक्त हुए हैं । ये सभी क्रियापद स्त्रीलिंग एवं पुल्लिग दोनों में प्रयुक्त हैं ।

वर्तमान काल उत्तम पुरुष :

इस स्थिति में क्रियापदों का प्रयोग दोनों लिंगों एवं वचनों में हुआ है। स्त्रीलिंग और पुल्लिग रूपों के एकवचन एवं बहुवचन रूपों में – ओ अथवा – ओं योजक प्रत्यय प्रयुक्त हैं। एक स्थान पर –इ– प्रत्ययान्त क्रियापद के साथ –छि सहायक क्रिया रूप भी उत्तम पुरुष वर्तमान काल के लिये प्रयुक्त हुआ है।

पाबओं	बेरि बेरि आबओ उत्तर न पाबओं [1]
आबओ	
कहओ	पुनु पुनु कन्त कहओ कर जोरि [2]
झांखओ	मञे अबला दह दिस भमि झांखओ [3]
उठओं	रस परसङ्ग उठओं मझु कांप [4]
पुछइ छि	पुछइ छि पंथुक जन हम तोहि [5]

वर्तमान काल मध्यम पुरुष :

वर्तमान काल मध्यम पुरुष क्रियापदों में वचन –भेद प्राप्त होता है। मध्यम पुरुष एकवचन में क्रियापद में – सि " प्रत्यय तथा मध्यम पुरुष बहुवचन में – ह" प्रत्यय संयुक्त हुए हैं। एक स्थान पर –इ– प्रत्ययान्त क्रियापद के साथ सहायक क्रिया के रूप में "छह" भी मिलता है :

धरसि	साँचि धरसि मधु तञे न लजासि [6]
करसि	नेपुर उपर करसि कसि धीर [7]
जासि	तरुण तिमिर राति तेअ ओ चलि जासि [8]
छाड़सि	भमर जओ फुल छुँइते छाड़सि निलज तोहि नहि लाज [9]

गीत- विद्यापति पृष्ठ संख्या/पदसंख्या
1- 536/543
2- 532/539
3- 486/494
4- 604/612
5- 264/275
6- 294/312
7- 491/498
8- 498/505
9-793/826

चूकह	भल जन भए वाचा चूकह[1]
करह	करह रङ्ग पर रमनी साथ[2]
सुतह	विसवास दए कके सुतह निचीत[3]
करइ छह	जतने जनाए करइ छह गोपे[4]

- सि प्रत्ययान्त क्रियापदों का प्रयोग अधिकांश में स्त्रीलिंग कर्ता के साथ हुआ है जबकि - ह प्रत्ययान्त का प्रयोग प्राय: पुल्लिग कर्ता के साथ ।

वर्तमान काल अन्य पुरूष :

वर्तमान काल एकवचन अन्य पुरुष में क्रियापद - इ,- ए तथा - हिं प्रत्यय से युक्त होते हैं । बहुवचन में क्रियापद अपने मूल रूप में अथवा -न्ति तथा - "थि" प्रत्ययान्त पाये गये हैं ।

एकवचन :

भनइ	भनइ विद्यापति तीनि क नेह[5]
हेरइ	हेरइ सुधानिधि सूर[6]
बूझए	परक वेदन दुख न बूझए मुरुख[7]
राखए	प्रथम प्रेम ओल धरि राखए[8]
कहए	कि कहए गदगद भास[9]
गलए	अविरल नयन गलए जलधार[10]
भनहिं	भनहिं विद्यापति सुन वर नारि[11]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1-695/715
2- 190/196
3- 474/482
4- 704/725
5- 241/247
6- 27/30
7- 107/118
8- 32/34
9- 325/333
10- 66/78
11- 521/528

बहुवचन :

संचर	पथ निशाचर सहसे संचर[1]
गुजर	जाहि देस पिक मधुकर न गुजर[2]
धरथि	कुच जुग पाँच पाँच ससि ऊगलकि लय धरथि धनगोई[3]
सहथि	असह सहथि कत कोमल कामिनी[4]
जानथि	रूप नरायन ई रस जानथि[5]
करथि	भल जन करथि पर उपकार[6]
गरजन्ति	झम्पि घन गरजन्ति संतत भुवन भर बरिखन्तिया[7]
बरिखन्तिया	

– न्ति तथा शून्य प्रत्यय वाले वर्तमान कालिक अन्य पुरूष बहुवचन क्रियारूपों की संख्या – थि प्रत्ययान्त वाले क्रियारूपों से कम हैं ।

भूत काल :

"विवेच्य ग्रन्थ" में भूतकाल के अन्तर्गत उत्तम पुरुष में वचन भेद नही प्राप्त होता है । भूतकाल पुल्लिंग उत्तम पुरूष क्रियापद में काल सूचक प्रत्यय–ल के उपरान्त शून्य – हुँ – उ , -ऊँ प्रत्यय संयुक्त हैं । स्त्रीलिंग उत्तम पुरुष में –ल प्रत्यय के उपरान्त इ– प्रत्यय तथा उसके बाद शून्य – हुँ , -उ एवं ऊँ प्रत्यय आये हैं । मध्यम पुरुष एकवचन पुल्लिग में काल सूचक प्रत्यय –ल कोई प्रत्यय नही प्रयुक्त हुआ है । परन्तु स्त्रीलिंग प्रत्यय–इ का प्रयोग किया गया है । एक स्थान पर पुरुष बोधक प्रत्यय– सि भी प्रयुक्त हुआ है । मध्यम पुरुष बहुवचन में – ह प्रत्यय दोनों लिंगों में संयुक्त हैं । अन्य पुरुष में काल सूचक प्रत्यय–ल के अतिरिक्त – उ एवं ओ भी मूल क्रियापद के साथ आये हैं । अन्य पुरुष पुल्लिग एक वचन में भूतकालिक क्रियापद के बाद शून्य तथा "क" प्रत्यय आये हैं । इसमें स्त्रीलिंग–इ प्रत्यय पाया जाता है । अन्य पुरुष बहुवचन में – न्हि तथा -आह प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं तथा इसमें लिंग भेद नही पाया जाता है ।

गीत– विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1– 479/481
2– 136/143
3– 666/684
4–638/653
5–436/446
6–511/517
7–171/176

भूत काल उत्तम पुरुष पुल्लिंग :

पाओल	कत सुख सार पाओल तुअ तीरे[1]
कएल	हरि हरि कओन कएल हमे पाप[2]
देखलुँ	सजनी अपु पेखलुँ रामा [3]
पड़लहुँ	पड़लहुँ पाप अधीने[4]

भूतकाल उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग :

इस प्रकार के क्रियापदों में स्त्रीलिंग प्रत्यय- इ" लगता है तथा ये क्रियापद मूल क्रिया में काल सूचक प्रत्यय - "ल" के पश्चात -इ स्त्रीलिंग प्रत्यय तथा उसके उपरान्त पुरुष बोधक प्रत्यय - हुँ - उँ तथा -ओ प्रत्यय के संयोग से बने हैं । कुछ स्थान पर स्त्रीलिंग-इ प्रत्यय युक्त भूतकालिक क्रियापद के उपरान्त कोई प्रत्यय नहीं लगा है ।

देखलि	कहहि न पारिअ देखलि जहिनी[5]
चललि	पिया गोद लेल के चललि बजार[6]
बूझलि	गुञ्ज आनि मुकुता हमें गाथल बूझलि तुअ परिपाटी[7]
भेलिहुँ	बिनु भेलें सिधि भेलिहुँ गोआरि[8]
अइलिहुँ	माधव सबे काज अइलिहुँ साही [9]
चुकलिहुँ	न मोजे कबहु तुअ अनुगति चुकलिहुँ[10]
धउलिहुँ	मजे धउलिहुँ तुअ पास[11]
बुझलुँ	बुझलुँ अपन निदान[12]
पूजलों	कामधेनु कत कौतुके पूजलों[13]

गीत-विद्यापति
पृष्ठसं0/पद सं0

1- 807/838
2- 306/319
3- 321/330
4- 790/832
5- 66/78
6- 847/881
7- 120/131
8- 839/783
9- 481/489
10- 711/732
11- 84/95
12- 147/154
13- 139/146

भूतकाल मध्यम पुरुष एकवचन पुल्लिग:

मध्यम पुरुष एकवचन पुल्लिग में काल सूचक प्रत्यय –ल" के उपरान्त शून्य तथा –ओ प्रत्यय लगा है । यह क्रियापद आदरार्थक बहुवचन सर्वनाम पदों के साथ भी प्रयुक्त हुए हैं :-

कएल	भल न कएल तोहे [1]
पाओल	सुन सुन हरि राही परिहरि की फल पाओल तोहे[2]
पावल	तोहे सिव आक धतुर फल पावल[3]
बधलो	तुमी जो बधलो पचबाने[4]

भूतकाल मध्यम पुरुष एक वचन स्त्रीलिंग :

इस प्रकार के क्रियापदों में काल सूचक प्रत्यय – ल के पश्चात स्त्रीलिंग प्रत्यय– "इ" लगता है । एक स्थान पर – इ प्रत्यय के उपरान्त मध्यम पुरुष बोधक "सि" संयुक्त है । कुछ स्थलों पर – "इ" प्रत्यय से रहित क्रियापद भी स्त्रीलिंग एकवचन में प्रयुक्त हुआ है :

धएलि	तुहूँ मान धएलि अविचारे[5]
देखाएलि	हँसइत कब तुहु दसन देखाएलि[6]
एड़ाओलि	तुहूँ एड़ाओलि रतने[7]
देखलिसि	आज देखलिसि कालि देखलिसि आज कालि कत भेद[8]
गेलि है लइलि है	जाहि लागि गेलि है ताहि कहाँ लइलि है [9]
कएल	भल न कएल तोहे[10]

गीत विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद सं०

1– 63/74
2– 514/520
3– 746/769
4– 774/800
5– 44/50
6– 320/329
7– 44/50
8– 442/452
9– 740/763
10– 371/379

भूत काल बहुवचन मध्यम पुरुष :

मध्यम पुरुष बहुवचन क्रियापदों में लिंग-भेदक प्रत्यय नही लगता है। इसमें भूतकालिक क्रियापद के अन्त - "ह" प्रत्यय संयुक्त है । एक स्थान पर - "हे प्रत्यय भी आया है :

बोललह : बोललह तञे मोर जिवन अधार [1]

कएलह : दिने दिने कएलह आसा हानि[2]

तीनि दोस अपने तोहे कएलह[3]

धएलह : धेङ्गुल बान्धि पटोराँ धएलह अइसनि तुअ परिपाटी[4]

पओलाहे : पुरुब पुने परीनति पओलाहे[5]

भूतकाल एकवचन पुल्लिग अन्य पुरुष :

इस प्रकार के क्रियापदों में काल सूचक प्रत्यय - " ल" के पश्चात शून्य तथा - "क" प्रत्यय संयुक्त हुए हैं :

जागल गगन गरजें जागल पञ्चबान[6]

भरल ओउ भरल इ गेल सुखाए[7]

आएल आएल पाउस निबिड़ अन्धार[8]

धएलक सबे धने धएलक गाडी [9]

कएलक काटि संखारी खण्डे खण्डे कएलक[10]

गीत विद्यापति 1- 129/137 7- 77/88
पृष्ठ संख्या/पद संख्या 2- 89/100 8- 113/123
3- 124/133 9- 523/530
4- 523/530 10- 523/530
5- 539/547
6- 54/63

भूतकाल एकवचन स्त्रीलिंग अन्य पुरूष :

स्त्रीलिंग अन्य पुरूष में सर्वत्र काल सूचक प्रत्यय - "ल" के पश्चात-"इ" प्रत्यय युक्त क्रियापद प्राप्त हुए हैं :

आइलि	ओहे आइलि कए तुअ परथाव[1]
चललि	एकलि चललि धनि होइ अगुआन[2]
छलि	ओतए छलि धनि निअपिअ पास[3]
समापलि	रयनि समापलि भए गेल परात[4]
गेलि	जामिनि सगरि उजागिरि भेलि[5]
आनलि	कति सयँ रूप धनि आनलि चोरी[6]

भूतकाल बहुवचन अन्य पुरूष :

इसके अन्तर्गत कालसूचक - "ल" प्रत्यय के बाद - न्हि तथा - आह प्रत्यय लगते हैं । ये क्रियापद भूतकाल बहुवचन अन्य पुरूष पुल्लिंग में ही प्राप्त हुए हैं । स्त्रीलिंग कर्ता के साथ प्रयुक्त नही हुए हैं ।

पढ़लन्हि	तनि नहि पढ़लन्हि मदन करीति[7]
रखलन्हि	रखलन्हि कुब्जा क नेह[8]
तेजलन्हि	तेजलन्हि हमरो सिनेह[9]
चललाह	भीम भुअङ्गम पथ चललाह[10]
गेलाह	हमे जीवे गेलाह मारि[11]

गीत विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 674/714
2- 330/338
3- 531/538
4- 132/140
5- 132/140
6- 132/140
7- 521/528
8- 254/263
9- 254/263
10-113/123
11- 71/82

भूतकाल अन्य पुरुष में - "ल" काल सूचक प्रत्यय के अतिरिक्त एक अन्य काल सूचक प्रत्यय - "उ" तथा - "ओ" का भी प्रयोग किया गया है । इस कोटि के क्रियापद लिंग एवं वचन भेद से प्रभावित नही होते हैं । ये क्रियापद केवल पुल्लिग कर्त्ता के साथ प्रयुक्त हैं ।

मिलु	अधर काजर मिलु कमने परी[1]
पडु	चौदिगे खसि पडु तारा[2]
लागु	चोर परीखन लागु[3]
मिलओ	तिमिर मिलओ ससि तुलित तरङ्ग[4]
चलिओ	एक दिन सक्ल जवन बल चलिओ[5]

भविष्य काल :

इस कोटि के क्रियापद उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष में काल सूचक-"ब" प्रत्यय से युक्त हैं । अन्य पुरुष में -"ब" प्रत्यय तथा -"त" काल सूचक प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है । उत्तम पुरुष में वचन-भेद नही है तथा भविष्यकालिक क्रियापद के बाद शून्य,- ओ तथा ओं प्रत्यय संयुक्त हुए हैं । इसी क्रियापद के साथ स्त्रीलिंग - "इ" का प्रयोग किया गया है । मध्यम पुरुष एक वचन में शून्य प्रत्यय तथा बहुवचन में - "ह" प्रत्यय भविष्य कालिक क्रियापद के अन्त में प्रयुक्त हुए हैं । अन्य पुरुष एकवचन में शून्य प्रत्यय तथा बहुवचन में - "थि और आह प्रत्यय जुड़ते हैं । स्त्रीलिंग -इ प्रत्यय मध्यम तथा अन्य पुरुष क्रिया पद में पाये गये हैं । इनके बहुवचन रूप लिंग-भेद से अप्रभावित हैं ।

गीत- विद्यापति 1- 735/758
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या 2- 644/666
3- 849/883
4- 453/462
5- 856/891

भविष्यकाल उत्तम पुरुष पुल्लिंग क्रियापद :

उत्तम पुरुष पुल्लिंग क्रियापद में शून्य-प्रत्यय संयुक्त है ।

पाओब	तोहें होएब परसन पाओब अमोल धन[1]
करब	आबे की करब सीर पए धुनब[2]
धुनब	
भजब	तोहे भजब कोन बेला[3]
पुजब	पुजब सदासिव गौरि के सात[4]

भविष्यकाल उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग

इस कोटि के क्रियापदों में काल सूचक प्रत्यय - ब के पश्चात स्त्रीलिंग प्रत्यय - "इ" संयुक्त हुआ है । कुछ स्थलों पर पुरुष बोधक प्रत्यय- ओ तथा-ओं प्रत्यय भी आये हैं । कहीं-कहीं पर स्त्रीलिंग -"इ" प्रत्यय रहित भविष्यकालिक क्रियापद भी उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ प्रयुक्त हुए हैं ।

खसबि	ठेसि खसबि मोरि होति दुरगति[5]
खेपबि	मधु रजनी सङ्गहि खेपबि[6]
बोलिबों	कि तोहि बोलिबों कान्ह कि बोलिबओ
बोलिबओ	तोही[7]
लेब	भरमहु कबहु लेब नहि नाम[8]
कहब	कि कहब सुन्दरि कौतुक आज[9]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 790/823
2- 769/795
3- 800/832
4- 778/805
5-776/801
6- 516/522
7- 3/3
8- 581/587
9- 703/724

भविष्यकाल एक वचन पुल्लिंग मध्यम पुरुष :

भविष्यकाल मध्यमपुरुष एकवचन पुल्लिंग में भविष्यकालिक क्रियापद के बाद शून्य प्रत्यय लगता है ।

करब	जब तुहुँ करब विचार[1]
पाओब	गनइते दोस गुन लेस न पाओब[2]
बजायब	तोहे सिव धरि नट वेष कि डमरू बजायब हे[3]

भविष्य काल एकवचन स्त्रीलिंग मध्यम पुरुष :

इस वर्ग के क्रियापदों में काल सूचक प्रत्यय- ब" के पश्चात स्त्रीलिंग द्योतक प्रत्यय - "इ" का संयोग हुआ है ।

साधबि	माधव बधि की साधबि साधे[4]
करबि	सकल विशेष कहनु तोते सुन्दरि जानि तुहु करबि विधान[5]
सुमरबि	चिते सुमरबि मोर नामें[6]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 798/830
2- 798/830
3- 753/776
4- 39/43
5- 320/329
6- 69/80

भविष्यकाल बहुवचन मध्यम पुरूष :

इस प्रकार के क्रियापदों के अन्त में - ह प्रत्यय संयुक्त है । इनमें लिंग- भेदक प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है ।

करबह	हरइ पियास कि करबह देखि[1]
जेबह	हमरो रङ्ग रभस लए जेबह
लेबह	लेबह कौन सनेसे [2]
परिहरबह	एं बेरि जदि परिहरबह आनि[3]
देबह	आरति देबह झांपे[4]

भविष्यकाल एक वचन पुंल्लिग अन्य पुरूष :

भविष्य काल अन्य पुरूष में काल सूचक प्रत्यय- ब और - त मूल क्रिया के साथ संयुक्त हुए हैं ।

जिउत	की पिबि जिउत चकोरा[5]
पिउत	पिउत अमिअ हंसि चान्द चकोरा[6]
बुझत	कैसन कए की बुझत अआन[7]
आओब	पङ्कज लोभे भमरे भमि आओब[8]
करब	करब अधर मधुपाने[9]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 628/640
2- 244/251
3- 531/538
4- 498/505
5- 54/62
6- 453/462
7- 518/525
8- 467/474
9- 467/474

भविष्य काल एकवचन स्त्रीलिंग अन्य पुरुष :

इस प्रकार के क्रियापद काल बोधक प्रत्यय - त एवं "ब" के पश्चात स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ- से युक्त हैं :

जाइति	आजुक रअनि जदि विफले जाइति पुनु[1]
जीउति	जीउति जुबति जस पाओब तोहे[2]
खाइति	कि हर बान वेद गुनि खाइति[3]
छोड़बि	
तेजबि	अबहुँ छोड़बि मोहे तेजबि नेहा[4]

भविष्यकाल बहुवचन अन्य पुरुष :

इस वर्ग के क्रियापदों के अन्त में - ब तथा - त प्रत्यय के बाद शून्य -आह तथा "-थि" प्रत्यय आये हैं । इनमें लिंग-भेद नही पाया जाता है तथा ये आदरार्थक बहुवचन अन्य पुरुष के लिये प्रयुक्त हुए हैं :

आओब	आज कन्हाइ एँ बाटे आओब[5]
करत	विद्यापति भन कि करत गुरुजन[6]
अओताह	बालभु अओताह उछाह कए[7]
देखितथि	जमैया देखिताथि[8]
चलितथि	सुनुकि झुनिकि धीआ चलितथि[9]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद संख्या

1- 56/65
2- 92/103
3- 122/132
4- 422/433
5- 19/19
6- 512/518
7- 130/138
8- 643/660
9- 643/660

आज्ञार्थक क्रिया :

"गीत विद्यापति" में प्रयुक्त आज्ञार्थ रूप से आज्ञा, निषेध, उपदेश तथा प्रार्थना आदि सूचित होता है। आज्ञार्थ क्रियारूपों की रचना "अ", -उ -ब तथा - इ ,-हि प्रत्ययों के संयोग से हुई है।

आज्ञार्थक रूप साधक प्रत्यय- अ :

राख	धनि धरिहरि कए राख परान[1]
फेर	अरे अरे भमरा न फेर कबारे[2]
देख	गहन लाग देख पुनिम क चन्द[3]
धर	न धर न कर दिठपन[4]
कर	
सुन	सुन सुन सुन्दरि कन्हाई[5]

आज्ञार्थक रूप साधक प्रत्यय - उ :

करु	हठ तेज माधव करु मोहि पारे[6]
सुनु	भनहि विद्यापति सुनुब्रजनारि[7]
भजु	रे नरनाह सतत भजु ताही[8]
फुकु	साजनि निहुरि फुकु आगि[9]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 38/41
2- 850/884
3- 565/572
4- 565/571
5- 564/570
6- 622/634
7- 852/887
8- 812/844
9- 850/885

आज्ञार्थक रूप साधक प्रत्यय - ब

कुछ स्थलों पर - ब प्रत्यय के उपरान्त - ए एवं स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ प्रयुक्त हैं ।

कहब	नहु नहु कहिनी कहब बुझाए[1]।
करब	सङ्गम करब गोप[2]
तेजब	तिला एक तेजब लाजे[3]
धरब	माधव वचन धरब मोर[4]
उठब	करे कर जोरि मोरि तनु उठब[5]
करबे	लोभ न करबे आइति पाए [6]
मोड़बि	लहु लहु हसि हसि मुख मोड़बि[7]

आज्ञार्थ रूप साधक प्रत्यय- ह तथा -हि :

दीहह	किछु किछु पिआ आसा दीहह[8]
करह	ततहि जाह हरि करह न लाथ[9]
जाह	
तेजह	अबहु तेजह पहु मोहि न सोहाए[10]
देखह	देखह माधव कए निअँ साज[11]
चलहि	सुन्दरि तुरित चलहि अभिसारे[12]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 31/34	7- 560/566
2- 555/562	8- 31/34
3- 551/564	9- 743/765
4- 563/569	10- 549/556
5- 560/566	11- 428/438
6- 561/568	12- 467/474

प्रेरणार्थक क्रिया :-

"गीत - विद्यापति" में प्रेरणार्थक क्रियापद तीनों कालों वर्तमान, भूत एवं भविष्य में और तीनों पुरुषों में पृथक- पृथक प्रयुक्त हुए हैं ।

वर्तमान काल :-

वर्तमान कालिक प्रेरणार्थक क्रियापद मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष में पाये गये हैं । इनमें वचन, लिंग- भेद की स्थिति नहीं बनती है । प्रेरणार्थक पद की रचना पदान्त में - "सि" ,- इअ तथा "ए"- थि के योग से हुई है तथा इस क्रिया रूपों के मध्य में - आय तथा -आव प्रत्यय जुड़े हैं :

मध्यम पुरुष :

झाँपायसि	उरज अङ्कुर चिरे झाँपायसि[1]
सिनुबसि	अबे सिनुबसि विषवचन कोहायी[2]
मिलाबिअ	दोसि निगम दुइ आनि मिलाबिअ[3]
चढ़ावथि	भसम चढ़ावथि भाल[4]

अन्य पुरुष :

खेलाबए	अओके उमति खेड़ि खेलाबए[5]
जगाबए	दरसि जगाबए मुनि जन आधि[6]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 425/435
2- 49/57
3- 449/458
4- 746/768
5- 587/592
6- 309/322

भूतकाल :

भूतकालिक प्रेरणार्थक क्रियापद तीनों पुरूषों में पृथक- पृथक रूप उपलब्ध हुए हैं । उत्तम पुरूष तथा अन्य पुरूष में वचन- भेद की स्थिति नहीं है । मध्यम पुरूष में एकवचन तथा बहुवचन रूप पृथक हैं । स्त्रीलिंग प्रत्यय- इ का प्रयोग सभी क्रियापदों के साथ हुआ है ।

भूतकाल उत्तम पुरूष :

इस प्रकार के क्रियापदों के अन्त में शून्य प्रत्यय तथा - "इ" स्त्रीलिंग प्रत्यय लगा है । ये प्रत्यय काल सूचक प्रत्यय -"ल" के पश्चात प्रयुक्त हुए हैं । इन क्रियापदों के मध्य में - आओ ,-आउ तथा -"अउ प्रत्यय का प्रयोग हुआ है ।

चलाओल	अपथा पथा चरण चलाओल भगति मति न देला [1]
चढ़ाओल	गुञ्जाए तौलि चढ़ाओल हेम [2]
सिखाउलि	कत बोलब कत मञे जे सिखाउलि[3]
बुझउलिसि	सरूप निरूप बुझउलिसि तोहि [4]

गीत - विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 769/795
2- 532/539
3- 350/357
4- 357/364

भूतकालिक मध्यम पुरूष :

भूतकालिक मध्यम पुरूष प्रेरणार्थक क्रियापद में वचन- भेद की स्थिति बनती है । मध्यम पुरूष एकवचन क्रियापद के अन्त में - सि" प्रत्यय संयुक्त हैं । मध्यम पुरूष बहुवचन क्रिया पदान्त में - "ह" प्रत्यय आया है । इन क्रियापदों के मध्य में - "अओ" प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है ।

एकवचन मध्यम पुरूष :

भुञ्जओलासि	दधी दुध घृत भरि भुञ्जओलासि कोमल काञ्च सरिर
चिन्हओलासि	चानन चोर चबाइ चिन्हओलासि अपन पर समाज[2]
खोअओलासि	जीवन दसाँ खोजी खोअओलासि काञ्चन कर्पूर तमोव
सोअओलासि	दुइ सिरिफल छाह सोअओलासि कोमल कामिनी कोर[4]

बहुवचन मध्यम पुरूष :

चलओलह	बड़ कए अपथ चलओलह मोहि[5]
पियओलह	अमिय पियओलह विष सौं घोरी [6]
बुझओलह	बहुल बुझओलह निज बेवहार [7]

गीत - विद्यापति

पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 793/826
2- 793/826
3- 793/826
4- 793/826
5- 683/702
6- 530/537
7- 347/354

भूतकाल अन्य पुरूष :

इस कोटि की प्रेरणार्थक क्रियाओं में वचन- भेद सामान्यत: नहीं मिलता है । कुछ स्थलों पर स्त्रीलिंग बोधक प्रत्यय - इ का योग काल सूचक प्रत्यय - ल के पश्चात हुआ है । एकाध स्थल पर बहुत्व बोधक प्रत्यय -न्हि भी क्रियापद के संयुक्त हुआ है । इन क्रियापदों के मध्य में "आओ" तथा-अओ प्रत्यय प्रयोग हुआ है :

अन्य पुरूष पुल्लिंग एकवचन :

विघटाओल	से मोर बिहि बिघटाओल[1]
बनाओल	कए बेरि काटि बनाओल नव क्य तइओ तुलित नहि भेला [2]
पुराओल	चिरदिने से बिहि भेल निरबाध पुराओल दुहुक मनोभव साध [3]

अन्य पुरूष स्त्रीलिंग :

सुताओलि	आनि नलिनि केओ धनिक सुताओलि[4]
जेमाओलि	अपन अपन पहु सबहु जेमाओलि[5]

अन्य पुरूष पुल्लिंग बहुवचन :

बढ़ओलन्हि	कपट बुझाए बढ़ओलन्हि दन्द [6]
पठओलन्हि	आरति की न पठओलन्हि बोलि [7]

गीत विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 216/221
2- 444/454
3- 393/403
4- 175/180
5- 377/385
6- 96/107
7- 707/728

भविष्यकाल प्रेरणार्थक :

भविष्यकाल में तीनों पुरूषों में प्रेरणार्थक क्रियापद उपलब्ध हैं । तीनों पुरूषों में वचन-भेद तथा लिंग -भेद साधारणत: नहीं मिलते हैं लेकिन कुछ स्थलों में मध्यम पुरूष क्रियापद में - ह प्रत्यय द्वारा बहुवचन घोतन किया गया है । इसी प्रकार उत्तम पुरूष तथा अन्य पुरूष में स्त्रीलिंग प्रत्यय - इ का प्रयोग हुआ है । इन क्रिया पदों के मध्य में - आओ - अवाए -आए - अउ-आउ तथा-अओ आदि प्रत्यय संयुक्त हैं । एक स्थान पर क्रिया की कर्मान्विता के कारण-सि" मध्यम पुरूष प्रत्यय क्रिया के अन्त में आया है ।

उत्तम पुरूष

ये क्रियापद साधारणतया स्त्रीलिंग के साथ ही प्रयोग किये गये हैं ।

देआओब	जलज-दल न क्त देह देआओब[1]
उठवाएब	नवो निधि सेवक के दयक दसमी कलस घट उठवाएब[2]
चढ़वाएब	नवमी में तिरसूलक पूजाबहु विधि बलि चढवाएब[3]
जगाएब	अष्टमि दिन मह पूजा निसि बलि लय भक्त जगाएब[4]
बुझाउबि	अनुनए मञे बुझाउबि रोए[5]
सोआउबि	कत नलिनिदल सेज सोआउबि[6]
सिखउबिसि	सुन्दरि मञे कि सिखउबिसि आओर रङ्ग[7]

मध्य पुरूष : ये क्रियापद पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों के साथ प्रयुक्त हैं ।

बढ़ाओब	अक्खर गेले कि नेह बढ़ाओब[8]
बुझओबह	कहि की बुझओबह अपनुक दोसे[9]

अन्य पुरूष : ये क्रियापद भी पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग में प्रयुक्त हैं ।

बुझाओत	जबे बुझाओत लेखी[10]
सरिआउति	से सरिआउति बाला[11]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 238/244
2- 767/792
3- 767/792
4- 767/792
5- 131/139
6- 238/244
7- 454/467
8- 191/197
9- 838/872
10- 769/795
11- 843/877

आदरसूचक विधि :

विद्यापति ने अपनी कृति में आदरसूचक विधि भावार्थ की रचना मूल क्रिया में -इअ तथा -इए प्रत्यय के योग से की है । इस प्रकार के क्रियारूपों के उदाहरण निम्न है :

करिअ	सबे सने न करिअ माने[1]
धरिअ	गुनमति भए गुन न धरिअगोए[2]
उपचरिअ	उपर पौरि उपचरिअ सआनी[3]
चलिए	लहु लहु चरन चलिए गृह माझ[4]

इच्छार्थक क्रिया :-

इस प्रकार के भाव को प्रकट करने के लिये मूल क्रिया में - उ.-ओं ,-ओ तथा - थु प्रत्यय लगाया गया है । कुछ स्थानों पर - इह तथा वर्तमानकालिक प्रत्यय - ए भी मूल क्रिया के साथ संयुक्त हुए हैं । ये क्रिया पद प्राय: स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ आये हैं ।

जाउ	गाबह सहलोरि झूमरि मअन अराधने जाउ [5]
निवेदओं	अपन वेदन जाहि निवेदओं तैसनमेदिनि थोल[6]
जाओ	जेपथे गेल मोर प्रान बल्लभ सेपथे बलिहारि जाओ[7]
रहथु	ओतहि रहथु द्दग फेरि रे[8]
गावथु	पाडरि परिमल आसापूरथु मधुकर गाबथु गीते[9]
पूरथु	
देथु	दरसन देथु एक बेरिरे[10]
होइह	होइह जुवति जनु हो रसमन्ती[11]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्य/पद संख्या

1- 52/60
2- 55/64
3- 92/103
4- 14/13
5- 239/245
6- 17/17
7- 180/184
8- 837/870
9- 135/142
10-837/870
11-826/858

मिलिह	मिलिह सामि नागर रस धारा [1]
बुझिह	होइह परबस बुझिह विचारि[2]
होअए	जनम होअए जनु जओ पुनि होइ जुवतीभए जनमए जनु कोइ[3]

अस्तित्ववाची क्रिया :

"गीत-विद्यापति" में अस्तित्व वाची क्रियाओं का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है । अधिकांश अस्तित्ववाची क्रियाएं वर्तमान काल में प्रयुक्त हैं । भूत तथा भविष्य काल में इनका प्रयोग अपेक्षाकृत कम हुआ है । वर्तमान तथा भूतकाल में पाँच सत्तार्थक क्रियाओं तथा भविष्यकाल में तीन अस्तित्ववाची क्रियाओं का प्रयोग हुआ है । ये क्रियाएं कुछ स्थलों पर सहायक तथा कुछ स्थानों पर मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त हुई हैं । इनका विवरण निम्नवत है ।

वर्तमान काल :

वर्तमान काल उत्तम पुरुष में ये क्रियापद लिंग तथा वचन के कारण परिवर्तित नहीं होते हैं । मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष में क्रियापद वचन के अनुसार रूपान्तरित हुए हैं ।

वर्तमान काल उत्तम पुरुष : ये क्रिया पदान्त में -ओ, -हुँ तथा शून्य प्रत्यय से युक्त हैं ।

अछओ	मदन वाणे मुरुछलि अछओ [4]
थिकहुँ	थिकहुँ पथुक जन राजकुमार[5]
रहओ	गेए मनाबह रहओ समाजे[6]
पार	मदन वेदन हम सहए न पार[7]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 826/858
2- 826/858
3- 826/858
4- 10/10
5- 260/268
6- 33/61
7- 365/371

वर्तमान काल मध्यम पुरुष एकवचन :

इस वर्ग की क्रियाएँ - सि तथा -इअ प्रत्ययान्त हैं । इन क्रियापदों में लिंग-भेद नही पाया जाता है ।

होसि	मालति कके तोञे होसि मलानी[1]
रहसि	अरे अरे अरे कान्ह कि रहसि बोर[2]
हलिअ	जिब कके न हलिअ मारि[3]

वर्तमान काल मध्य पुरुष बहुवचन

इन क्रियापदों के अन्त में - ह प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है । ये क्रियापद भी लिंग-भेद रहित हैं ।

छह	जतने जनाए करइ छह गोपे[4]
थिकह	के तों थिकह[5]
पारह	दोसर दिना रहए न पारह[6]

वर्तमान काल अन्य पुरुष एक वचन :

इन क्रियापदों के अन्त में शून्य,-ए,-इ तथा -इअ प्रत्यय लगे हैं ।

अछ	पुरुब लिखल अछ बालभु हमार[7]
अछए	तहुँ मकरन्द अछए दिअ बास[8]
हो	पुरुब पाप संताप जत हो मन मनोभव जानए[9]
होए	निअ छति बिनु परहित नहि होए[10]
थिक	भनइ विद्यापति इहो नहि निक थिक[11]
रहए	पललि रहए तहि तीर[12]
रहइ	हरि परदेस रहइ[13]
हल	अइसन प्रेम तोरि हल जुनु केओ[14]
पारए	गुरु नितम्ब भरे चलए न पारए[15]
पारिअ	काज विपरीत बूझए न पारिअ[16]

गीत विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 711/733
2- 232/239
3- 200/206
4- 704/725
5- 260/268
6- 487/495
7- 847/881
8- 337/344
9- 823/855
10- 60/71
11- 847/880
12- 83/95
13- 187/192
14- 827/859
15- 436/446
16- 65/77

वर्तमान काल अन्य पुरुष बहुवचन :

इस वर्ग में क्रिया- न्हि , -थि तथा "थ" प्रत्ययान्त हैं ।

छइन्हि — भर उठि आइलि छइन्हि भ्रमक झोरी[1]

छथि — स्वामिनाथ गेल छथि तनिक उदेस[2]

थिकइन — हर के माय बाप नहि थिकइन [3]

रहथ — आन दिन निकही रहथ मोरपती[4]

भूतकाल :

भूतकाल में उत्तम पुरुष क्रियापद लिंग-भेद से प्रभावित हैं परन्तु इसमें वचन-भेद नहीं मिलता है । भूतकाल मध्यम पुरुष का एक मात्र उदाहरण स्त्रीलिंग में मिला है । अन्य पुरुष क्रियापद लिंग तथा वचन दोनों के कारण परिवर्तित हुआ है ।

भूतकाल उत्तम पुरुष पुल्लिंग :

ये क्रियापद - हुँ तथा शून्य प्रत्ययान्त हैं ।

भेलहुँ — अब भेलहुँ हम आयु विहीन [5]

हलल — हमें अवधारि हलल परकार[6]

भूतकाल उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग :

इन क्रियापदों में काल सूचक प्रत्यय- ल के बाद स्त्रीलिंग प्रत्यय-इ प्रयुक्त हुआ है तथा इस क्रियापद के उपरान्त - उँ एवं हुँ पुरुष बोधक प्रत्यय लगता है । कुछ स्थलों पर पुरुष बोधक प्रत्यय नहीं लगा है ।

गीतक विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 757/779
2- 260/268
3- 751/774
4- 775/801
5- 853/888
6- 211/216

छिलुँ — एकलिशुतिया छिलुँ कुसुमसयान[1]
अछलिहुँ — तोह सनि नारि दोसरि हम अछलिहुँ [2]
भेलिहुँ — बिनु भेले सिधि भेलिहुँ गोआरि[3]
रहलिहुँ — अवनत आनन कए हम रहलिहुँ[4]
पारलि — बुझए न पारलि बेला[5]
भेलोंह — कोन तप चुकलोंह भेलोंह जननी[6]

भूतकाल मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग :

इसमें केवल एक क्रियारूप " भेलिसि" प्राप्त होता है :

भेलिसि — तन्हिकाहुँ कुल भेलिसि बनिजार[7]

भूतकाल अन्य पुरुष :

इस वर्ग के क्रियापद लिंग तथा वचन दोनों के कारण प्रभावित हुए हैं

भूतकाल अन्य पुरुष एकवचन पुल्लिग

इन क्रियापदों के अन्त में शून्य तथा -उ प्रत्यय लगे हैं ।

छल — पुरुबिल लिखल छल हमकहूँ[7]
आछल — यतहुँ आछल मोर हृदय क साथ [8]
भेल — माधव कि कहब इभल भेल [10]
रहल — अब नहि रहल निछछेओ पानी[11]
हलु — मधुलए मधुकरें बालक दए हलु कमल[12] पखुरिया झुलाइ[12]

भूतकाल अन्य पुरुष एकवचन स्त्रीलिंग

इन क्रियापदों में कालसूचक प्रत्यय -ल के पश्चात स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ संयुक्त है ।

भेलि — सुमुखि विमुखि भेलि[13]
रहलि — रहलि सुमुखि सिर लाइ[14]

गीत विधापति

पृष्ठ संख्या / पद संख्या

1- 596/603
2- 837/871
3- 839/873
4- 20/21
5- 19/19
6- 847/881
7- 46/53
8- 750/773
9- 394/405
10- 838/872
11- 96/107
12- 817/849
13- 514/520
14- 15/16

भूतकाल अन्य पुरुष बहुवचन पुल्लिंग :

इस प्रकार के क्रिया पदों के अन्त में - ह तथा - आ प्रत्यय संयुक्त हैं

भेलह प्रसन भेलह ब्रजराज[1]

रहला चीत नयन मझु दुहु ताहे रहला[2]

भूतकाल अन्य पुरुष बहुवचन स्त्रीलिंग क्रियापद के उदाहरण नहीं प्राप्त होते हैं ।

भविष्य काल :

भविष्य काल में मूल क्रिया के साथ - ब तथा -त कालसूचक प्रत्यय संयुक्त हुए हैं । भविष्यकालिक उत्तम पुरुष क्रियापद लिंग अथवा वचन भेद से अप्रभावित हैं । मध्यम पुरुष में वचन- भेद मिलता है । अन्य पुरुष में एकवचन में क्रियापद लिंग-भेद से परिवर्तित है परन्तु बहुवचन क्रिया रूप लिंग- भेद में अप्रभावित हैं ।

भविष्यकाल उत्तम पुरुष :

इन क्रियाओं में कालसूचक - ब प्रत्यय के बाद कोई प्रत्यय नही लगा है। परन्तु एक स्थान पर - औं पुरुष बोधक प्रत्यययुक्त क्रियापद "होइहौं" प्राप्त हुआ है । ये सभी क्रियापद स्त्रीलिंग के उदाहरण हैं :

होइहौं होइहौं दासी तोरी[3]

होयब आन जनमे होयब कान[4]

रहब अधिके ओ रहब अजु धिमए लाज[5]

भविष्यकाल मध्यम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन :

इस वर्ग के क्रियापद में एकवचन में शून्य तथा बहुवचन में - ह प्रत्यय संयुक्त हैं ।

होएब दिन दिने आबे तोहे तैसनि होएब[6]

होएबह करति होम बध होएबह भागी[7]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 400/412
2- 330/338
3- 228/235
4- 830/862
5- 3/3
6- 837/871
7- 231/238

भविष्य काल अन्य पुरुष एकवचन पुंल्लिंग :

इस प्रकार के क्रियापद - ब तथा - त प्रत्ययान्त हैं ।

हलब बाट जाइते केहु हलब ठेलि[1]

होयत दन्द समुद होयत जीव दएपारे[2]

रहत अवधि बहस हे रहत नहि जीवन[3]

भविष्यकाल अन्य-पुरुष एकवचन स्त्रीलिंग का एक मात्र उदाहरण "होएति" प्राप्त हुआ है ।

होएति बनहिं गमन करु होएति दोसरमति[4]

भविष्य काल अन्य पुरुष बहुवचन :

इस वर्ग में दो उदाहरण प्राप्त हुए हैं ये दोनों पुल्लिंग वर्ग के हैं तथा इनके अन्त में " आह " प्रत्यय संयुक्त हैं :

होयताह होयताह किये बध भागी[5]

रहताह जोग हमर बड़ तेज सेज धय रहताह[6]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 134/141
2- 826/868
3- 72/82
4- 244/251
5- 207/212
6- 643/660

पूर्वकालिक-क्रिया :

विद्यापति ने अपनी काव्य रचना में पूर्वकालिक क्रिया पदों का आवश्यक्ता एवं प्रसंगानुकूल पर्याप्त प्रयोग किया है । पूर्वकालिक क्रिया रूपों के अन्त में - इ, -ए तथा - ऐ पाया जाता है । इनमें - इ अन्त्यवाली पूर्वकालिक क्रियाएँ अधिक प्रयुक्त हुई हैं ।

- "इ"अन्त्यवाली पूर्वकालिक क्रियाएँ :

इस प्रकार की पूर्वकालिक क्रियाओं का प्रयोग विद्यापति ने अपनी कृति में अधिक किया है :

हेरि	नयने न हेरि हेरए जनुकेह[1]
बोलि	अपन भासा बोलि बिसरए[2]
ऊठि	केओ सखि ऊठि निहारए सास[3]
मूंदि	मूंदि रहब बरु कान[4]
तेजि	न जानल कति खन तेजिगेलरे[5]
रोइ	सगरि रजनि रोइ गमाओसि[6]

"-ए" अन्त्यवाली पूर्वकालिक क्रियाएँ :

इन क्रियाओं का प्रयोग "विश्लेष्यकृति" में अल्प हुआ है :

कए	दाहिन वचन वाम कए लेइ[7]
धए	दाढ़ी धए घिसिआइब[8]
गोए	जतने रतन पए राखब गोए[9]
लिखिए	हुनिहि सुबन्धु के लिखिए पठाओब[10]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 13/13	6- 336/343
2- 71/81	7- 53/61
3- 120/130	8- 749/771
4- 184/188	9- 57/67
5- 202/208	10- 578/585

- ऐ अन्त्यवाली पूर्वकालिक क्रियाएँ :

इन क्रियाओं का प्रयोग विद्यापति ने सबसे कम किया है :

दै मन दै रुसि रहल पहुसोइ[1]

लै तेल फुलेल लै केश बन्हावथि[2]

अन्य पूर्वकालिक क्रियाएँ :

अनेक उदाहरणों में पूर्वकालिक क्रियाओं का आवृत्यात्मक रूप में प्रयोग हुआ है । इस आवृत्ति का मात्र कारण क्रिया पर देना है । पूर्वकालिक क्रिया के रूप में द्विरुक्त प्रयोग विद्यापति ने पर्याप्त किया है ।

सुमरि- सुमरि सुमरि सुमरि सखि कहबि मुरारि[3]

भमि- भमि भमि भमि लुनए मानिनि जन माने[4]

हेरि- हेरि चहुँदिसि हेरि हेरि रहलि लजाइ[5]

देखि- देखि देखि देखि माधव मने हुलसन्त[6]

लिखि- लिखि लिखि लिखि देखबासि तोही[7]

ससरि-ससरि ससरि ससरि खसु निबिबन आज[8]

उपरोक्त द्विरुक्त पूर्वकालिक क्रिया रूपों के अतिरिक्त दो भिन्न पूर्वकालिक क्रिया रूपों का संयुक्त प्रयोग भी मिलता है ।

देखिकहु स्याम भुअङ्गम देखिकहु किओकामपरहार[9]

हरिकहु आस दइए हरिकहु किये लेसि[10]

गीत - विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 639/655
2- 765/790
3- 164/169
4- 7/7
5- 246/253
6- 635/650
7- 209/214
8- 249/257
9- 431/442
10- 375/383

क्रियार्थक संज्ञा :

"गीत विद्यापति" में - ब, -बा तथा -न प्रत्यय के प्रयोग से क्रियार्थक संज्ञा रूप निष्पन्न हुए हैं । वर्तमान कालिक - ए प्रत्ययान्त क्रिया तथा भूतकालिक - ल प्रत्ययान्त क्रिया भी - ए तथा - इ से युक्त होकर क्रियार्थक संज्ञा की तरह प्रयुक्त हुई है :

- ब ,- बा प्रत्यय युक्त क्रियार्थक संज्ञा :

अबस निकट आएब जाएब विनअ कर से नारि[1]

हठ तेज माधव जएबा देह[2]

तहि खने कोपहु करबा जोग[3]

ए सखि मान करिबा न जाने [4]

देखबहु भेल सन्देहा [5]

नागर पन किछु रहबा चाहिअ[6]

-ए प्रत्यय युक्त क्रियार्थक संज्ञा :

भमर भोगए जान[7]

कुसुम तोरए गेलाह जाहाँ[8]

लाबए चाहिअ नखर विशेष[9]

निरदए भए उपभोगए चाह[10]

गोरु चिन्हए के गोपक काज[11]

-ले तथा -लि प्रत्यय युक्त क्रियार्थक संज्ञा :

गेले करसि कोहे[12]

अएले बइसए पाब पोआर [13]

राखलि चाहिअ लाज[14]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 702/723
2- 730/755
3- 660/677
4- 632/646
5- 63/74
6- 556/564
7- 5/5
8- 739/762
9- 653/670
10- 664/682
11- 670/689
12- 514/520
13- 674/693
14- 17/17

-'न' प्रत्यय युक्त क्रियार्थक संज्ञा :

पहिले सहन करि देइ अभ्यास[1]

ताहि बिनु हम जीवन मानिअ मरन अधिक मन्द[2]

आओन अवधि बितीत भेल सजनी[3]

-'इ' प्रत्यय युक्त क्रियार्थक संज्ञा :

फेरि माँगब पहु तोरा[4]

दुइ मन मेलि कराबए जे[5]

कर्त्तृवाचक कृदन्त :

"गीत विद्यापति" में कर्त्तृवाचक कृदन्तों की रचना मूल धातु के साथ-क, -न ,-नि ,णा - आने, ता तथा बारे जोड़कर हुई है । कुछ स्थलों पर कर, -धर तथा-हर आदि का भी प्रयोग कर्तृवाचक कृदन्त बनाने में हुआ है ।

आएल वसन्त सकल बन रञ्जक[6]

अगे माई जोगिया मोर जगत सुख दायक[7]

राजा शिवसिंह रूप नारायन लखिमा देवि रमाने[8]

खेत कएल रखवारे लूटल[9]

तुहुँ जग तारन दीन दयामय[10]

दसरथ नन्दन दस सिर खण्डन[11]

कनक भूधर शिखर वासिनि[12]

सकल जगत जाड हरणा कुमार अमर सिंह सरणा[13]

नहि हितकर मोर त्रिभुवन राज[14] आजे अकामिक आएल भिखारी[15]

तखन के होत धरहेरिया[16] ओ नहि उमत त्रिभुवन दाता[17]

भुगुति मुकुति दाता[18]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 727/752
2- 336/343
3- 255/264
4- 244/251
5- 461/469
6- 736/759
7- 754/777
8- 629/641
9- 803/834
10-800/832
11-804/835
12-805/836
13-824/856
14-788/818
15-772/797
16-780/807
17-784/812
18-785/813

वाच्य :

वाच्य क्रिया का वह रूपान्तर है जिससे ज्ञात होता है कि वाक्य में विधान कर्त्ता के विषय में किया गया है या कर्म के विषय में अथवा भाव के विषय में । "गीत-विद्यापति" में तीनों वाच्यों से सम्बद्ध क्रियाएं मिलती हैं । कर्तृवाच्य के अन्तर्गत अकर्मक तथा सकर्मक दोनो प्रकार की क्रियाएँ सम्मिलित हैं । सामान्यत: कर्मवाच्य में सकर्मक तथा भाव वाच्य में अकर्मक क्रियाएँ रहती हैं ।

कर्तृवाच्य :

कर्तृवाच्य के अन्तर्गत अकर्मक क्रियाएँ अधिक हैं तथा सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग अपेक्षाकृत कम हुआ है ।

कर्तृवाच्य अकर्मक किया :

कोपे कमलमुखि पलटिन हेरल[1]

न आव कन्त हमार [2]

ओउ भरल इगेल सुखाए[3]

पाउस निअर आएलारे[4]

मोरो मन हे खनहि खन भाग[5]

कर्तृवाच्य सकर्मक क्रिया :

कैछे मिटायब मान[6]

कतहु भमर भमि भमि कर मधु मकरन्द पान[7]

भमर करए मधुपान[8]

कर्मवाच्य :

कर्मवाच्य की क्रियाएं सकर्मक हैं । इन क्रियाओं में कर्म के लिंग एवं पुरुष के अनुसार परिवर्तन हुआ है ।

मालति पाओल रसिक भमरा[9]
लिखि लिखि देखबासि तोही[10]
सुन्दरि मञे कि सिखउबिसि आओर रङ्ग[11]
के जाने कओने विधि जामे पदाजलि तामिनि तिहुयन जीती[12]
माधव कके विसरलि वर नारि[13]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 40/44
2- 74/84
3- 77/88
4-82/93
5- 86/97
6- 40/44
7- 65/77
8-75/86
9- 129/136
10-209/214
11- 459/467
12- 510/516
13- 112/122

भाव वाच्य :

भाव वाच्य में क्रिया पद-बन्ध के साथ निषेध सूचक अव्यय- न मिलता है । भाव वाच्य में क्रिया अकर्मक रहती है ।

जत अनुसए तत कहहि न जाए[1]

धरइ न पारइ केह[2]

कहहि न पारिअ देखलि जहिनी[3]

इस प्रकार "गीत विद्यापति " में प्राप्त काल रचना तथा सम्बद्ध पक्षों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि विद्यापति ने क्रिया पदों की कालरचना में एक निश्चितसरणि का अनुसरण किया है । वर्तमान काल में भूतकालिक मुख्य क्रिया के साथ अछ, छथि तथा छइन्हि के प्रयोग से पूर्ण वर्तमान क्रिया पद बना है । भूतकाल में -ल - उ तथा ओ प्रत्यय संयुक्त हुए हैं । भविष्य काल में भविष्यकाल द्योतक- ब तथा -त प्रत्यय प्रयुक्त हैं ।

वर्तमान कालिक क्रियापद लिंग भेद के कारण परिवर्तित नहीं हुए हैं । किन्तु इनके साथ वचन एवं पुरूष द्योतक प्रत्यय संयुक्त हुए हैं । ये क्रियापद अकारान्त, इकारान्त, एकारान्त, तथा ओकारान्त हैं ।

भूतकाल की क्रिया में लिंग वचन तथा पुरूष के कारण परिवर्तन हुआ है । उत्तम पुरूष में स्त्रीलिंग प्रत्यय-इ तथा पुरूष सूचक प्रत्यय - हुँ ,-उ तथा ऊँ प्रयुक्त हैं । मध्यम पुरूष में स्त्रीलिंग प्रत्यय- इ तथा बहुवचन सूचक प्रत्यय -ह मिलते हैं । अन्य पुरूष में एक वचन सूचक प्रत्यय -क तथा बहुवचन सूचक प्रत्यय -न्हि तथा "आह" और स्त्रीलिंग प्रत्यय-इ का प्रयोग किया गया है ।

गीत- विद्यापति 1- 129/137
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या 2- 325/333
3- 66/78

भविष्यकालिक क्रियापदों में उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष में कालसूचक प्रत्यय -ब का तथा अन्य पुरुष में -ब और "त" दोनों का प्रयोग किया गया है उत्तम पुरुष में वचन-भेद नहीं प्राप्त होता है जबकि स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ का प्रयोग सामान्यतया मिलता है । मध्यम पुरुष में बहुवचन द्योतक प्रत्यय-ह और अन्य पुरुष में -थि तथा - आह" प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं ।

आज्ञार्थ भाव में - उ (करु ,सुनु, भनु) -ब (करब, धरब) तथा -ह (दीहह, करह , जाह) आदि प्रत्यय मूल क्रियापदों में संयुक्त हुए हैं । प्रत्यय रहित क्रियापद भी आज्ञार्थ भाव में प्रयुक्त हुए हैं यथा (राख,फेर,देख)

प्रेरणार्थक क्रियापदों के साथ मध्य-प्रत्यय (-आय- आव) वर्तमान काल में (-आउ,-आओ) भूतकाल में तथा (-आओ-आए-आउ, अउ) आदि भविष्य काल में प्रयुक्त हुए हैं । ये क्रिया पद अकारान्त,इकारान्त तथा एकारान्त हैं ।

आदर सूचक विधि क्रिया में मूल क्रिया के अन्त में -इअ तथा-इए प्रत्यय प्रयुक्त हैं (करिअ, चलिए) । अधिकांश पूर्वकालिक क्रियाएँ-इ प्रत्ययान्त हैं । "गीत विद्यापति" में -ब,-बा,-न;ए तथा-इ आदि प्रत्ययों द्वारा क्रियार्थक संज्ञा की रचना हुई है । कर्तृवाचक कृदन्त रूपों के साथ - बारे,-न तथा-धर आदि प्रत्ययों का संयोग हुआ है । सत्तार्थक क्रियाओं - अछ , थिक हो, हल, तथा पार आदि के प्रयोग स्वतन्त्र रूप में मुख्य क्रिया की तरह से भी मिलते हैं ।

वाच्य कोटि के अन्तर्गत कर्तृवाच्य के प्रयोग अधिक हैं । कर्मवाच्य में अधिकांश प्रयोग भूतकालिक क्रियापदों के हैं तथा जो कर्म के लिंग एवं पुरुष से प्रभावित हैं । भाव वाच्य के अन्तर्गत प्रयोग कम हैं और वे निषेधार्थक क्रिया पदबन्धों का रूप लिये हुए हैं ।

अध्याय -8

पद - विभाग एवं रूप - रचना

वाक्यान्तर्गत प्रयुक्त पद एवं रूप -रचना का सम्बन्ध अतीव घनिष्ठ होता है। कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने पर पद कहलाता है, क्योंकि उसके साथ व्याकरणिक प्रत्यय संयुक्त हो जाते हैं। ये व्याकरणिक प्रत्यय साधारणतया आबद्ध प्रत्ययों के रूप में प्रकट रहते हैं, किन्तु कभी-कभी शब्दों का मूल रूप ही पद की तरह प्रयुक्त होता है। ऐसी अवस्था में भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की सुविधा के लिये उसे शून्य प्रत्यय से युक्त मान लेते हैं। कारण यह है कि ऐसी स्थिति में मूल शब्द एवं वाक्य में प्रयुक्त पद में देखने में तो कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता है परन्तु वास्तव में वाक्यगत पद लिंग, वचन, कारक आदि व्याकरणिक स्थितियों से सहज ही संयुक्त हो जाता है। इस प्रकार वाक्यगत शब्द, कार्य की दृष्टि से कर्त्ता, कर्मादि कारक, क्रिया आदि होता है। दूसरे शब्द कोश के अनुसार संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, क्रिया आदि में से कुछ न कुछ अवश्य होता है।

भाषा की संरचना में प्रयुक्त शब्द समूह को कुछ वर्गों में विभाजित किया गया है। किसी एक वर्ग के शब्द वाक्य में एक ही तरह से प्रयुक्त होते हैं तथा वे एक ही प्रकार के प्रत्ययों से संयुक्त होकर शब्द रूपावली का निर्माण करते हैं। ऐसे शब्दों को एक वर्ग में रखकर उनको परिभाषित किया जा सकता है अथवा उनके बारे में सामान्य रूप से बहुत कुछ कहा जा सकता है।

संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण प्रमुख शब्द वर्ग हैं। संज्ञा की अनुपस्थिति में सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर कार्य करता है। इनमें क्रिया विशेषण अव्यय अथवा अविकारी हैं तथा शेष विभिन्न व्याकरणिक स्थितियों में रूपान्तरित हुए हैं। इस शीर्षक के अन्तर्गत एक ओर संज्ञा सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय पदों को पृथक्-पृथक् संदर्भित किया गया है, दूसरी ओर उनकी प्रायोगिक रूप - रचना का उल्लेख किया गया है।

पद - विभाग :

पुल्लिंग- संज्ञाएँ :

"गीत-विद्यापति" में पुल्लिंग संज्ञाएँ, अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त, ऐकारान्त तथा ओकारान्त प्राप्त हुई हैं। इनमें अकारान्त, आकारान्त तथा एकारान्त संज्ञा पुल्लिंग पद अधिक मिलते हैं। इ- ईकारान्त, उ- ऊकारान्त, -ऐकारान्त तथा ओकारान्त संज्ञा पदों का प्रयोग अपेक्षाकृत कम हुआ है। औकारान्त संज्ञा पद का कोई उदाहरण उपलब्ध नहीं है।

अकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ :

इस कोटि के संज्ञा पद अन्य अन्त्य, ध्वनियों वाले संज्ञा पदों की अपेक्षा अधिक हैं।

उदाहरण :

कमल[1] गरुड[6] बालक[9]
कनक[2] घोड़[7] नृप[10]
चाँद[3]
चकोर[4] सारङ्ग[8]
जनम[5]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 54/62
2- 267/280
3- 58/68
4- 20/21
5- 193/199
6- 10/10
7- 745/768
8- 1/1
9- 260/268
10-435/445

उपर्युक्त संज्ञाएँ अपने लिखित रूपों के अनुसार अकारान्त हैं, परन्तु इनके उच्चारण मूलक रूप अकारान्त तथा व्यंजनान्त दोनों हो सकते हैं।

आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ :

प्रयोग संख्या की दृष्टि से आकारान्त संज्ञा पद, अकारान्त संज्ञा पदों से काफी कम प्रयुक्त हुए हैं।

चकवा [1] हीरा [3]
बबा [2] लोटा [4]

इकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ :

इकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों की संख्या पर्याप्त है किन्तु इनकी संख्या अकारान्त संज्ञा पदों से कम है।

कवि [5] रवि [8]
गिरि [6] ससि [9]
पति [7] हरि [10]

ईकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ :

इस कोटि की संज्ञाएँ अल्प संख्या में ही प्राप्त हुई हैं।

माली [11]
मोती [12]
हाथी [13]

गीत- विद्यापति

पृष्ट सं०/पद संख्या

1- 846/880
2- 847/881
3- 244/251
4- 748/771
5- 177/182
6- 129/137
7- 196/202
8- 122/132
9- 214/219
10- 130/114
11- 273/288
12- 634/645
13-610/622

उकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ :

उकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ अल्प संख्या में प्राप्त होती हैं ।

कृशानु[1] भानु[4]
गुरु[2] रिपु[5]
तरु[3] राहु[6]

उकारान्त तथा ऐकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पद के क्रमशः दो तथा एक उदाहरण प्राप्त हुए हैं ।

कानू[7] केसू[8]
उच्छवै[9]

एकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ =

इस वर्ग के संज्ञा पद अपने मूलरूप में अकारान्त हैं किन्तु छन्दानुरोध तथा कारक-विभक्ति के संयोग से एकारान्त हो गये हैं ।

मदने[10] मन्दिरे[11]
तिलके[12] हारे[13]

ओकारान्त पुल्लिंग :

इस प्रकार के संज्ञा पदों के मात्र दो उदाहरण प्राप्त हुए हैं ।

देओ[14] भेरों[15]

गीत-विद्यापति :
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 805/836
2- 63/74
3- 79/90
4- 805/836
5- 1/1
6- 66/78
7- 41/45
8- 26/28
9- 856/891
10- 644/662
11- 178/183
12- 735/758
13- 729/754
14- 760/783
15- 783/811

ओकारान्त पुल्लिंग संज्ञा पदों का प्रयोग "गीत- विद्यापति" में नहीं किया गया है ।

स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

"गीत-विद्यापति" में आकारान्त, इकारान्त तथा ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ अधिक हैं, इनके पश्चात अकारान्त तथा उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ आती हैं । ऊकारान्त, एकारान्त, ऐकारान्त तथा ओकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के एक या दो उदाहरण प्राप्त हुए हैं । औकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं होते हैं ।

आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ अन्य स्वरान्त्य स्त्रीलिंग संज्ञा पदों की अपेक्षा अधिक हैं ।

आसा[1]	करुना[4]	सीता[7]
उमा[2]	घटा[5]	
कला[3]	लीला[6]	

इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

इस वर्ग के स्त्रीलिंग संज्ञा पदों की संख्या भी पर्याप्त है ।

खिति[8]	मति[11]	गति
गति[9]	रति[12]	
दिठि[10]		

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

31/34
2- 783/812
3- 4/4
4- 44/50
5- 764/788
6- 743/766
7- 804/835
8- 167/172
9- 140/147
10- 144/151
11- 146/153
12- 136/143

ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

इस प्रकार की संज्ञाएँ "गीत-विद्यापति" में अधिक संख्या में प्रयुक्त हुई हैं ।

कली[1] दूती[4] बाती[7]

गोपी[2] नीवी[5]

चोरी[3] पतनी[6]

अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

"विश्लेष्य-ग्रन्थ" में अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञापदों का प्रयोग अपेक्षाकृत कम हुआ है ।

गङ्ग[8] तड़ित[11]

चीर[9] बेल[12]

छाह[10] सेज[13]

उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों का प्रयोग लगभग समान है ।

आयु[14] सासु[16]

धेनु[15] रीतु[17]

- ऊ, - ए, -ऐ तथा ओकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

उपरोक्त स्वरान्त्य स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के प्रयोग के उदाहरण मात्र एक या दो स्थलों पर पाये गये हैं ।

बहू[18] गाए[19] नीन्दै[21] नाओ[23]

माए[20] सारदै[22] सारो[24]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 666/685
2- 267/280
3- 267/280
4- 308/321
5- 2/2
6- 448/457
7- 293/309
8- 430/441
9- 422/433
10-404/418
11-420/431
12-422/433
13-400/412
14-853/888
15-846/880
16-845/878
17- 79/90
18-788/819
19-742/764
20-744/767
21-590/595
22-735/758
23-622/634
24- 457/465

सर्वनाम :

"गीत- विद्यापति" में सर्वनाम के सभी भेद प्राप्त होते हैं। उत्तम पुरुष सर्वनाम में मञे ,मोञे , आदि के साथ -साथ "हूँ" का भी प्रयोग एक स्थल पर हुआ है। संक्षेप में सर्वनामों की स्थिति का विवरण निम्न प्रकार दिया जा सकता है।

पुरुषवाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
मञे [1], मोञे [2], मों [3], मोहे [4]	तञे [9], तों [10], तोञे [11]	से [16], सो [17], ओ [18], ऊ [19]
हम [5], हमे [6], हाम [7], हूँ [8]	तोहें [12], तु [13], तू [14], तुमी [15]	इ [20], ई [21], इह [22], एहु [23] तन्हि [24], हुनि [25], हिन [2]

गीत- विद्यापति पृष्ठ सं0/पद सं0		
	1- 121/131	14-362/368
	2- 202/208	15-317/327
	3- 5/5	16-423/432
	4- 565/571	17-167/172
	5- 139/146	18-597/604
	6- 89/100	19-749/772
	7- 170/175	20-28/31
	8- 162/167	21-429/434
	9- 129/137	22-471/482
	10-260/268	23-443/452
	11- 239/241	24-86/97
	12-92/103	25-838/872
	13-28/31	26-829/861

सम्बन्धकारकीय पुरुष वाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
मोर [1], मोरा [2],	तोर [10], तोरा [11], तुअ [12]	तकर [18], तकरा [19], ताकर [20]
मेरो [3], मोरि [4], मोरी [5]	तोरि [13], तोहर [14]	तासु [21], ताहेरि [22],
हमर [6], हमार [7],	तोहार [15], तोहरि [16],	तनिकर [23], एकर [24], ओकरा [25]
हमरि [8], हमरो [9]	तिहरो [17]	हिनक [26], हुनक [27]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1 - 104/115
2 - 129/133
3 - 343/350
4 - 88/99
5 - 215/219
6 - 101/112
7 - 229/231
8 - 219/225
9 - 217/222
10 - 194/200
11 - 185/190
12 - 87/98
13 - 300/316
14 - 264/276
15 - 183/187
16 - 86/98
17 - 243/250
18 - 415/427
19 - 720/744
20 - 165/170
21 - 125/134
22 - 109/121
23 - 60/70
24 - 523/530
25 - 527/534
26 - 744/767
27 - 254/262

निज वाचक सर्वनाम :

आप[1] , आपे[2] , अपन[3] ,अपने[4] , अपनि[5] , अपनुक[6] , अपनाके[7] , निज[8]
निअ[9]

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम :

जे[10], जो[11] , जा[12] , जसु[13] , जन्हि[14]

नित्यवाचक सर्वनाम :

जे .... से[15] जे .... ते[16]

जेहे .... सेहे[17]

प्रश्नवाचक सर्वनाम :

के[18], को[19], कओन[20], ककर[21] ,ककरो[22]

अनिश्चयवाचक सर्वनाम :

केओ[23], कोउ[24] , केउ[25], कछु[26], किछु[27] ,केहु[28], सब[29], सभ[30]

आदर वाचक सर्वनाम :

आपहि[31] , रउरा[32] , रउरि[33]

गीत विद्यापति

1- 783/811
2- 40/44
3- 9/9
4- 57/67
5- 369/377
6- 223/230
7- 136/143
8- 143/151
9- 89/100
10-37/40
11-725/749
12- 213/218
13- 376/384
14-286/292
15-104/115
16- 114/124
17-63/74
18- 20/20
19- 42/47
20-109/120
21-833/866
22-754/777
23-24/25
24-81/92
25- 184/189
26-558/565
27-12/12
28-133/141
29-687/707
30-802/833
31- 42/47
32-753/776
33-781/809

विशेषण :

"गीत-विद्यापति" में संज्ञा, सर्वनाम ,क्रिया और अव्यय पदों के समान ही विशेषण पदों का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है । यद्यपि विशेषण पदों का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम और क्रियापदों की अपेक्षा कम संख्या में हुआ है । गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक तथा सार्वनामिक विशेषण ये सभी भेद- प्रभेद विद्यापति की भाषा में प्राप्त होते हैं । "गीत- विद्यापति" में गुणवाचक विशेषणों का प्रयोग अधिक हुआ है ।

गुणवाचक विशेषण :

गुणवाचक विशेषण के अन्तर्गत विहीनतासूचक ,स्थिति सूचक तथा भावसूचक विशेषण प्रयुक्त हुए हैं । रंग सूचक तथा आकार सूचक विशेषण भी गुणवाचक के अन्तर्गत आते हैं । विद्यापति ने उक्त विशेषण पदों का प्रयोग यथेष्ट संख्या में किया है ।

अनूप[1]	अरुन[8]	सगुन[16]	लघु[25]	हरखित[34]
अमोल[2]	नील[9]	चारु[17]	नव[26]	तीति[35]
अकथ[3]	पीत[10]	भीरु[18]	नूतन[27]	
अबुध[4]	सेत[11]	ललित[19]	थिर[28]	
कुजाति[5]	गोरा[12]	उनत[20]	नवीन[29]	
विसम[6]	सामर[13]	उत्तुङ्ग[21]	मधुर[30]	
विमल[7]	कार[14]	दीघर[22]	सरस[31]	
	उजर[15]	खीन[23]	व्याकुल[32]	
		पीन[24]	भूखल[33]	

गीत-विद्यापति पृष्ठ सं0/पद सं0

1-255/263
2-790/823
3-300/316
4-725/750
5-475/482
6-14/14
7-58/68
8-441/445
9-27/29
10-27/29
11-546/553
12-327/335
13-214/219
14-5/5
15-617/629
16-400/412
17-406/420
18-486/494
19-227/234
20-273/288
21-23/24
22-70/81
23-174/179
24-90/101
25-58/68
26-45/52
27-345/352
28-37/40
29-608/619
30-259/267
31-36/40
32-360/367
33-377/385
34-250/259
35-56/66

परिमाण वाचकविशेषण:

"गीत- विद्यापति" में विविध स्थितियों, भावों एवं क्रिया व्यापारों के प्रसंग में परिमाण बोधन के लिये परिमाण वाचक विशेषण का प्रयोग हुआ है ।

विशाला [1]	थोड़ेहु [5]	किछु [10]
बड़ा [2]	अधिक [6]	बित्ता-भीर [11]
गुरुआ [3]	सकल [7]	आँजलि-भरि [12]
बहुत [4]	सगर [8]	आँचर- भरिया [13]
	सब [9]	

संख्यावाचक विशेषण :

संख्यावाचक विशेषण के विविध प्रकार निश्चित संख्यावाचक अनिश्चित संख्यावाचक तथा इसके अन्तर्गत पूर्णाङ्क बोधक, अपूर्णाङ्क बोधक , क्रम वाचक , समूह वाचक आदि विशेषण " गीत-विद्यापति" में उपलब्ध होते हैं ।

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1-431/442
2-703/724
3-387/397
4-30/33
5-60/71
6-388/398
7-266/278
8-121/131
9-197/202
10-837/871
11-749/772
12-784/813
13-396/407

निश्चित संख्या वाचक विशेषण

पूर्णांकबोधक	अपूर्णांकबोधक	क्रमवाचक	समूहवाचक	गुणवाचक	केवलात्मक
एक[14], दुइ[15]	आध[32], पाबे[33]	पहिल[36]	चउ[41], चहुँ[42]	दून[47]	एक्सर[54]
तीनि[16], चारि[17]	चौठाई[34]	दोसरा[37],	दुहु[43], दुअओ[44]	दिगुन[48]	एक्ल[55]
पाँच[18], छव[19]	सवा[35]	तेसरा[38]	दहो,[45] नवओ[46]	दोगुन[49]	एकातिनी[56]
एकादस,[20] एगारह[21]		तिसर[39]		तेगुन,[50] एक गुने[51]	
द्वादस,[22] बारह,[23]		नवए[40]		दसगुन[52]	
सोलह[24], अठारह[25]				लाखगुने[53]	
उनैस[26], पचीस,[27] सताइस[28]					
अठाइस,[29] बत्तिस[30]					
सहस[31]					

गीत–विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

14–117/127	21–263/274	29–247/255	38–93/104	48–844/878
15–18/18	22–4/4	30–853/888	39–178/183	49–213/218
16–241/247	23–86/97	31–98/109	40–817/849	50–263/274
17–45/51	24–98/109	32–10/10	41–54/63	51–539/546
18–86/97	25–247/255	33–288/305	42–800/804	52–145/152
19–136/143	26–254/262	34–250/259	43–460/468	53–539/546
20–230/237	27–254/262	35–782/810	44–340/347	54–2/2
	28–251/262	36–724/749	45–203/209	55–217/222
		37–114/124	46–374/382	56" 581/587
			47–545/552	

अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण :

सकल[1]	नाना[4]
सभ[2]	लाखे[5]
अनेक[3]	कोटिहि[6]

सार्वनामिक विशेषण :

"गीत-विद्यापति" में अनेक पद एक ही रूप में विभिन्न स्थितियों में कहीं सर्वनाम तथा कहीं विशेषण का कार्य करते हैं । सर्वनाम पद यदि संज्ञा के पूर्व आते हैं तो उनका प्रयोग विशेषणवत होता है । स्वरूप से सर्वनाम होते हुए भी कार्य के आधार पर ये विशेषण होते हैं । इसलिये इन्हें सार्वनामिक विशेषण नाम देना संगत है । इनमें दूरवर्ती ,निकटवर्ती संकेतवाचक, परिमाण वाचक, सम्बन्धवाचक प्रश्नवाचक तथा रीतिवाचक स्थितियाँ द्रष्टव्य हैं ।

ओ[7]	एहु[13]	कैओ[19]	जेहन[25]	एतबा[31]
ओहि[8]	इ[14]	कोउ[20]	केहन[26]	
सो[9]	जे[15]	अइसन[21]	कतेक[27]	
तेहि[10]	जाहि[16]	जइसन[22]	कतन[28]	
इह[11]	कन[17]	कइसन[23]	कत[29]	
यहि[12]	कोन[18]	एहन[24]	जत[30]	

गीत-विद्यापति

1- 266/278
2- 259/267
3- 400/412
4- 384/393
5- 299/316
6-299/316
7- 247/255
8-449/458
9-149/156
10-112/122
11-13/13
12-782/810
13-712/734
14- 61/72
15-234/241
16-136/143
17-108/119
18-257/266
19-24/25
20-81/92
21-37/40
22-647/664
23-606/615
24-757/779
25-559/566
26-744/767
27-748/770
28-698/719
29-709/730
30-69/80
31-9/9

क्रिया :

भाषा में अन्य पदों की अपेक्षा क्रियापद का स्थान अधिक महत्व का होता है । किसी कार्य- व्यापार ,भाव-व्यापार को प्रकट करने के अतिरिक्त कर्त्ता के बारे में विधान-निदेशन ,कर्म-निर्धारण आदि का उत्तरदायित्व क्रियापद का ही होता है । क्रियापद या धातु का, जहाँ एक ओर उपसर्ग एवं प्रत्ययों के योग से शब्द-रचना में महत्वपूर्ण योगदान रहता है वहीं दूसरी ओर व्याकरणिक दृष्टि से कार्य तथा भाव व्यापार मूलक उसके अनेक रूप बनते हैं जिससे भाषा का अभिव्यक्ति पक्ष समर्थ एवं सार्थक होता है । प्रस्तुत प्रसंग में क्रिया की मूल एवं सहज स्थिति का दिग्दर्शन अभीष्ट है तथा इसके क्रिया की रूप -रचना का विवरण दिया गया है ।

"गीत- विद्यापति" में प्राय: सभी प्रकार की क्रियाएँ तथा तत्सम्बन्धी स्थितियाँ मिलती हैं ।

मूल धातुएँ, व्युत्पन्न क्रियारूप , स्वरान्त क्रियापद ,नाम क्रिया पद कृदन्त आदि पर आगामी परिच्छेदों में विचार किया गया है ।

मूल तथा यौगिक क्रियापद:

साधारणतया क्रियार्थक संज्ञा रूप को क्रिया या धातु मान लिया जाता है जैसे: करना ,लिखना आदि किन्तु ये क्रिया के मूल रूप न होकर व्युत्पन्न रूप हैं । भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से क्रियार्थक रूप मूल क्रिया या धातु ठहरता है । यथा पद ,खा ,जा, आ, आदि । गीत-विद्यापति में इस दृष्टि से मूल धातु की स्थिति इस प्रकार है ।

चल[1] राख[2]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 588/593
2- 577/584

यौगिक क्रियापद एक से अधिक भाषिक इकाई से बने हैं तथा ये व्युत्पन्न कोटि के हैं ।

पीबए [1] खाइति[3]

रोअए [2] आबओ [4]

स्वरान्त्य -क्रियापद :

अन्त्य स्वर ध्वनि के मैथिली भाषा की प्रवृत्ति के अनुरूप अकारान्त, इकारान्त, एकारान्त, उकारान्त, तथा ओकारान्त क्रियापद अधिक हैं ।

सुतल[5]	रचलि[9]	छुअए [13]	जाओ [18]
रतल [6]	सिंचलि [10]	चुअइते [14]	जीबओं [19]
जितब [7]	खोअउबिसि[11]	होअए [15]	
पुछब [8]	सोआउबि [12]	पड़ु[16]	
		मिलु[17]	

ये स्वरान्त्य क्रियापद क्रिया-रचना , कार्य-व्यापार तथा क्रिया रूप रचना की सभी स्थितियों से संबंधित हैं ।

नाम क्रियापद :

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया-विशेषण के साथ प्रत्यय के योग से नाम क्रियाएँ व्युत्पन्न हुई हैं ।

उजोरल[20] सन्तापल[22] अपनाओल [24] अगुआइलि[26]
जनमल [21] प्रकाशल [23] अधिकायल[25]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 125/134
2- 406/420
3- 283/300
4- 10/10
5- 850/884
6- 258/266
7- 206/212
8- 173/178
9- 757/779
10-109/ 120
11-315/326
12-238/244
13- 7/7
14- 728/753
15- 461/469
16- 649/666
17- 735/758
18- 760/783
19- 774/799
20- 468/475
21- 817/849
22- 804/835
23-675/694
24- 643/660
25- 158/163
26- 637/652

प्रेरणार्थक क्रियापद :

लौटाबए [1]	बुझवलक [4]	कराएब [7]
बुझाबए [2]	चलओलह [5]	चढ़वाएब [8]
चढ़ाबथि [3]	बढ़ओलन्हि [6]	उठवाएब [9]

आज्ञार्थक क्रियापद :

राख [10]	करब [13]
बुझह [11]	दीहह [14]
सुनु [12]	गुनबि [15]

क्रियार्थक संज्ञा पद :

आएब-जाएब [16]	सहन [20]	चिन्हए [24]	
जएबा [17]	मरन [21]	गेले [25]	
करबाँ [18]	आओन [22]	अएले [26]	
रहबा [19]	भोगए [23]	फेरि [27]	मेलि [28]

कर्त्तृवाचक कृदन्त :

रञ्जक [29]	खण्डन [34]	रखवारे [32]	धरहेरिया [37]
सुखदायक [30]	हितकर [35]	जगतारन [33]	दाता [38]
रमाने [31]	भेखधारी [36]		

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1-110/121	14-31/34	27-244/251
2-195/201	15-42/47	28-461/464
3-746/768	16-702/723	29-736/759
4-343/349	17-730/755	30-754/777
5-683/702	18-660/677	31-629/641
6-96/107	19-556/564	32-803/834
7-766/792	20-727/752	33-800/832
8-767/792	21-336/343	34-804/835
9-767/792	22-255/264	35-788/818
10-38/41	23-5/5	36-772/797
11-14/14	24-670/689	37-780/807
12-260/269	25-514/520	38-785/813
13-31/34	26-674/693	

वर्तमानकालिक कृदन्त :

जाइते[1]

अछइते[2]

तिरूपइते[3]

भूतकालिक कृदन्त :

सुतल[4] लिखल[5] आएल[6] भरमलि[7]

पूर्वकालिक कृदन्त :

हेरि[8] कए [11] भमि - भमि[15]

तेजि[9] धर [12] देखि- देखि [16]

रोइ दै[13] लै[14] देखिकहुँ [17]

सहायक क्रियापद :

उत्तम पुरूष रह [18] भेलिहूँ[23] अछ [26]छिलु[29] थिकहुँ[31]

मध्यम पुरूष रहसि [19] होसि[21] भेलिसि [24] थिकह[27]

अन्य पुरूष रहए [20] होए[22] भेल [25] थिक [28]थिकइन[30] सक[32]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1-851/886
2-704/725
3-475/482
4-850/884
5-847/881
6-756/779
7-215/219
8-13/13
9-202/208
10-336/343
11-53/61
12-748/771
13-639/655
14-765/790
15-160/164
16-635/650
17-431/442
18-53/61
19-232/239
20-83/95
21-711/733
22-60/71
23-839/873
24-46/53
25-840/874
26-10/10
27-260/268
28-847/880
29-596/603
30-751/774
31-260/268
32-444/454

भविष्यकालिक क्रियापद :

पाओब [1] साधवि [5] आओब [9]
करब [2] लैबह [6] अओताह [10]
खसबि [3] जिउत [7] देखितथि [11]
बोलबों [4] जाइति [8]

आदरार्थक क्रियापद :

करिअ [12] तोलिअ [15]
धरिअ [13] चलिए [16]
उपचरिअ [14]

संयुक्त क्रियापद :

मूँदि रहए [17] हेरि हेरए [19] बोलि बिसरए [21] सुतलि छलहुँ [23]
उठि निहारए [18] बोलसि हँसी [20] धरइते मोललए [22] पुछइ छि [24]

कर्मवाच्य :

न बुझिअ [25] सिखउबिसि [28]
पाओल [26] बिसरलि [29]
देखबासि [27] बोललि [30]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं०/ पद सं०

1- 798/830
2- 798/830
3- 776/801
4- 703/724
5- 39/43
6- 244/251
7- 54/ 62
8- 56/65
9- 19/19
10-130/138
11-643/660
12-52/60
13-55/64
14-92/103
15-31/34
16-14/13
17-152/159
18-120/130
19-13/13
20-317/327
21- 71/81
22- 61/73
23-275/290
24-264/275
25-9/9
26-129/136
27-209/214
28-459/467
29-112/122
30-21/21

भाव वाच्य :

आएल न होए[1]

होएत देखि[2]

साजि न भेल[3]

उपर्युक्त उदाहरणों में जहाँ कृदन्त, आज्ञार्थक, प्रेरणार्थक, नाम क्रियापदों की स्थिति क्रिया के स्तर पर प्रतीत होती है, वहीं पर संयुक्त क्रिया, कर्मवाच्य तथा भाव वाच्य आदि के अन्तर्गत पदबन्ध या वाक्यांश के स्तर पर ही इनका निदर्शन हुआ है। वाच्यान्तर्गत कर्मवाच्य तथा भाव वाच्य का ही उल्लेख किया गया है क्योंकि सामान्यत: क्रिया के अधिकांश प्रयोग कर्तृवाच्य हैं।

अव्यय :

विभिन्न व्याकरणिक स्थितियों - लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल, वाच्य आदि के कारण परिवर्तित या विकृत न होने वाले पद अव्यय कहलाते हैं। "गीत-विद्यापति" में प्राप्त क्रिया-विशेषण अव्यय पदों को विभिन्न स्थितियों एवं दशाओं से संबंधित होने के आधार पर इन्हें विभिन्न वर्गों में रखा जा सकता है।

स्थान सूचक क्रिया - विशेषण :

इस वर्ग के क्रिया विशेषण द्वारा क्रिया के स्थान का बोध होता है। इन क्रिया विशेषण पदों द्वारा स्थान तथा दिशा का भी बोध हुआ ये कहीं-कहीं पर दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ते भी हैं।

गीत- विद्यापति   1- 509/515
2- 6/6
पृष्ठ सं0/पद सं0   3- 10/10

जहाँ - जहाँ[1]	कहाँ[7]	ओभरे ---- -- एभरि[13]
तहिं - तहिं[2]	समीप[8]	ए कुले ---- ---ओ कुले-[14]
एथा[3]	सोझाँ[9]	इथी[15]
बाहर[4]	दिगे[10]	उथी[16]
भीतर[5]	एदिगे -- उदिगे-[11]	तहाँ ---- जहाँ-[17]
ओतए -- एतए-[6]	---तथिहुँ-[12]	जाहाँ----ताहाँ[18]

कालसूचक क्रिया विशेषण :

इन क्रिया विशेषण पदों से क्रिया के समय या काल का ज्ञान होता है । ये क्रिया-विशेषण समय सूचक, अवधि सूचक, तथा नित्यता सूचक तीन वर्गों में विभक्त किये जा सकते हैं तथा कहीं- कहीं पर दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ते हैं ।

आज[19]	जावत[27]	नित[34]	-- ताबे[41]
कालि[20]	जाबे[28]	निते[35]	--जब[42]
आबे[21]	ताबे[29]	दिन-दिने[36]	--अबहु[43]
जब[22]	जनम-भरि[30]	खने-खने[37]	जाबे-- ताबे[44]
आगा[23]	ओल-धरि[31]	खनहि-खन[38]	जखने-- तहिखने[45]
जखन[24]	चिरे[32]	अनुखन[39]	
कखन[25]	अन्तकाल[33]	अनुदिने[40]	ताओधरि ----जाबे[46]
तखन[26]			निते ----नीते[47]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 324/332
2- 324/332
3- 79/90
4- 92/103
5- 92/103
6- 134/142
7- 128/136
8- 715/737
9- 338/345
10- 45/51
11- 594/601
12-113/123
13-509/515
14-543/551
15- 430/440
16- 430/440
17- 31/34
18- 59/69
19- 17/17
20-56/65
21-34/37
22-40/44
23-802/833
24-780/807
25-780/806
26-780/807
27-799/831
28-36/40
29-36/40
30-205/210
31-359/366
32-797/829
33-807/838
34-[illegible]
35-86/98
36-31/34
37-39/43
38-86/97
39-58/67
40-83/94
41-100/111
42-142/150
43-150/157
44-100/111
45-
46-
47-

रीति सूचक क्रियाविशेषण

इन क्रिया-विशेषणों द्वारा क्रिया के होने की रीति का द्योतन किया गया है। "गीत-विद्यापति" में प्राप्त रीतिसूचक क्रिया-विशेषण सामान्य-निषेध तथा कारण सूचित करते हैं।

अइसन [1]	न [12]	कके [17]
तैसन [2]	ना [13]	किए [18]
जइसन [3]	नहि [14]	काजिजे [19]
कैसन [4]	जनि [15]	ते कारनैं [20]
अविरल [5]	जनु [16]	
अविरत [6]		
संतत [7]		
सहजे [8]		
धिरे-धिरे [9]		
लहु-लहु [10]		
बहु-विधि [11]		

परिमाण सूचक क्रिया-विशेषण :

इन क्रिया विशेषणों द्वारा क्रिया के परिमाण का बोध होता है। ये भी सार्वनामिक एवं सामान्य दो प्रकार के हैं।

एतबा [21]	कत [22]	अति [27]	
एत [23]	जत [24]	थोरा [28]	
तत [25]	जतहि [26]	अधिक [29]	बहुत [30]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1-34/37
2-17/17
3-647/664
4-351/358
5-197/203
6-167/172
7-171/176
8-194/200
9-565/571
10-14/13
11-639/655
12-8/8
13-12/12
14-15/15
15-654/671
16-317/327
17-529/536
18-246/253
19-30/33
20-384/393
21-235/242
22-267/280
23-84/95
24-206/211
25-206/211
26-234/241
27-18/18
28-206/211
29-32/35
30-853/888

समुच्चय बोधक अव्यय :

इस कोटि के अव्यय पद वाक्यों अथवा शब्दों के मध्य संयोजक, वियोजक, संकेतक तथा परिणाम बोधक का कार्य करते हैं ।

आओर[1]

आओ[2]

अवरू[3]

पुनु[4]

जनि[5]

जनु[6]

कि --- कि-[7]---

की --- की-[8]--

किदहु -- की[9]---

न -- नु---- न-[10]--

नहिं ---- नहिं---[11]

--बरू--[12]---

--किम्बा-[13]--

जइओ --------तइओ-[14]---

जइअओ------तइअओ-[15]----

तौं -------जौं--[16]--

यदि[17]

-- ते[18]----

---- तैं[19]----

---- इथे लागि-[20]--

गीत-विद्यापति पृष्ठ सं0/पद सं0		
	1- 190/196	11- 847/881
	2- 190/195	12- 184/188
	3- 635/649	13- 356/363
	4- 19/19	14- 266/278
	5- 303/318	15- 711/733
	6- 318/328	16- 494/502
	7-12/12	17- 373/381
	8- 17/17	18- 354/361
	9- 70/81	19- 446/455
	10-232/239	20- 422/433

विस्मय सूचक :

इन अव्ययों से क्रिया की विस्मयता का बोध होता है । कहीं-कहीं विस्मयता के साथ शोक या दु:ख का भाव भी प्रकट होता है ।

कि आरे[1]

आहा[2]

हरि हरि[3]

सिव सिव[4]

हा हा[5]

तिरस्कार बोधक :

इनका प्रयोग तिरस्कार के भाव का प्रदर्शन करने के लिये हुआ है ।

हा धिक हा धिक[6]

धिक[7]

चल चल[8]

हर्ष सूचक :

धनि धनि[9]

जय जय[10]

सम्बोधन-सूचक

अरे[11] अरे अरे अरे[13] हे[15]

अरे अरे[12] अहे अहे[14] अगे[16]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 510/516
2- 840/874
3- 340/347
4- 198/203
5- 161/166
6- 325/333
7- 720/743
8- 38/42
9- 396/406
10- 648/665
11- 746/769
12- 850/884
13- 232/239
14- 654/671
15- 254/263
16- 64/76

रूप - रचना :

किसी भी विकारी शब्द का रूप विभिन्न व्याकरणिक कोटियों के कारण परिवर्तित होता है । संज्ञा के संदर्भ में वचन, कारक और लिंग के कारण रूप-रचना होती है । सर्वनाम के अन्तर्गत पुरुष का भी रूप रचना में महत्वपूर्ण योगदान रहता है । विशेषण पदों में विशेष्य के लिंग तथा कारक के अनुसार रूप परिवर्तन हुआ है । क्रियापदों के रूप काल, पुरुष ,वचन, लिंग, भाव, वाच्य आदि के कारण परिवर्तित हुए हैं । उक्त विभिन्न व्याकरणिक कोटियों का विवेचन पिछले अध्यायों में किया गया है । प्रस्तुत शीर्षक में विकारी पदों की रूप-रचना का विवेचन अभीष्ट है ।

संज्ञा - रूप :

"गीत-विद्यापति" में संज्ञा पदों के दो वचन तथा सरल एवं विकारी दो कारकों में चार रूप उपलब्ध होते हैं । पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के रूप पृथक- पृथक दिये गये हैं ।

पुल्लिंग संज्ञा, एकवचन -विभक्ति प्रत्यय युक्त रूप :

	सरल	विकारी रूप	कारक
अकारान्त	दोस[1]	दोसहिं [2]	कर्म-कारक
	सागर[3]	सागरे[4]	अधिकरण-कारक
	मन [5]	मने[6]	अधिकरण-कारक

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 208/213
2- 37/40
3- 554/562
4- 830/862
5- 64/75
6- 32/35

आकारान्त	विधाता[1]	विधाताहि[2]	कर्म-कारक
	पिया[3]	पियाजे[4]	कर्त्ता-कारक
इकारान्त	हरि[5]	हरिहि[6]	कर्म-कारक

पुल्लिंग संज्ञा बहुवचन- विभक्ति प्रत्यय युक्त रूप :

	सरल विभक्ति	विकारी रूप	कारक
अकारान्त	नयन[7]	नयने[8]	अपादान-कारक
	कुसुम[9]	कुसुमे[10]	करण -कारक
	गुरुजन[11]	गुरुजने[12]	अधिकरण-कारक
	परिजन[13]	परिजने[14]	अधिकरण-कारक

संज्ञा पुल्लिंग एकवचन अकारान्त आकारान्त तथा इकारान्त पदों के साथ विकारी विभक्ति - प्रत्यय -ए- ओ तथा -हि संयुक्त हुए हैं तथा संज्ञा पुल्लिंग बहुवचन के साथ -ए विभक्ति प्रत्यय संयुक्त हुआ है ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 315/326
2- 74/85
3- 79/90
4- 88/99
5- 72/83
6- 282/299
7- 415/427
8- 31/34
9-94/105
10-56/65
11-516/522
12-533/540
13-279/295
14-533/540

स्त्रीलिंग संज्ञा एक वचन -विभक्ति प्रत्यय युक्त रूप :

	सरल विभक्ति	विकारी रूप	कारक
आकारान्त	चिन्ता [1]	चिन्ताएँ [2]	करण
	लता [3]	लताहिं [4]	अधिकरण
इकारान्त	उकुति [5]	उकुतिहिं [6]	
उकारान्त	सासु [7]	सासुहि [8]	कर्म-

स्त्रीलिंग संज्ञा बहुवचन - विभक्ति प्रत्यय युक्त रूप :

	सरल विभक्ति	विकारी रूप	कारक
इकारान्त	सब सखि [9]	सखिनि [10]	करण
	सखिन्हि [11]	सखिन्हि [12]	कर्त्ता

स्त्रीलिंग एक वचन आकरान्त, इकारान्त तथा उकारान्त संज्ञा पदों के साथ विकारी कारक विभक्ति प्रत्यय- एँ ,हि तथा हिं संयुक्त हुए हैं परन्तु बहुवचन स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के साथ शून्य प्रत्यय संयुक्त हुआ है ।

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 286/303
2- 286/303
3- 356/363
4- 205/210
5- 315/326
6- 92/102
7- 280/297
8- 278/294
9- 659/676
10- 725/749
11- 551/558
12 -661/679

बहुवचन रूप

एक वचन से बहुवचन रूप बहुवचन प्रत्यय '-न्हि' के योग से निष्पन्न हुए हैं, परन्तु ऐसा केवल अकारान्त इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञापदों के साथ हुआ है तथा इसके दो तीन उदाहरण प्राप्त हुए हैं। अधिकांश पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग संज्ञा पदों को बहुवचन बनाने के लिये उनके साथ जन, गन सब आदि स्वतन्त्र पदों का प्रयोग किया गया है।

संज्ञा पुल्लिंग एकवचन पर सर्गानुसरित विकारी रूप :

संज्ञा पुल्लिंग एकवचन में अकारान्त ,आकारान्त, इकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त पद के साथ के ,क, तैं, सौं, सओ ,लागि ,तह क्लाँ , से , में आदि परसर्ग प्रयुक्त हुए हैं।

अकारान्त	सेचान कें[1]	सम्प्रदान- कारक
	हृदय क[2]	सम्बन्ध कारक
	मन्दिर सौं [3]	अपादान-कारक
	विरहक [4]	सम्बन्ध कारक
	नखतैं [5]	करण- कारक
	धन सौं[6]	करण-कारक
	मुख सौं [7]	अपादान कारक
	धन मे[8]	अधिकरण- कारक
	मोर पर[9]	अधिकरण- कारक
	दरसन लागि[10]	सम्प्रदान -कारक
	कुंज भवनसैं [11]	अपादान-कारक
	सागर तह[12]	अपादान कारक
अकारान्त	पिया के [13]	कर्म-कारक
	पिआक[14]	सम्बन्ध कारक
	बिरलाकें [15]	सम्प्रदान कारक
	पिआ सओ [16]	करण कारक
	हीरा सओ [17]	अपादान कारक

गीत-विधापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 457/465
2- 120/130
3- 538/546
4- 140/147
5-248/256
6-267/280
7-444/454
8-200/206
9-792/805
10-520/527
11-637/652
12-77/88
13-200/206
14-569/576
15-522/530
16-62/73
17-96/107

उकारान्त	तरुक[1]	सम्बन्ध कारक
	कानुक[2]	सम्बन्ध कारक
	पहु सञो[3]	करण - कारक
	बालम्भु सौं[4]	करण-कारक
	गुरु सुमेरुतह[5]	अपादान कारक
इकारान्त	हरि के[6]	कर्म- कारक
	ससि कौं[7]	सम्प्रदान कारक
	शशिकें[8]	सम्प्रदान कारक
	हरि सञो[9]	अपादान-कारक
ऊकारान्त	कानू से[10]	अपादान कारक

संज्ञा पुल्लिंग बहुवचन- पर सर्गानुसरित विकारी रूप :

अकारान्त	जाचक जन के[11]	सम्बन्ध कारक
उकारान्त	साधुजन कौं[12]	सम्प्रदान कारक

संज्ञा पुल्लिंग बहुवचन पद के साथ "जन" बहु त्व द्योतक पद एवं विकारी कारक विभक्ति -ए संयुक्त हुए हैं । "जन" पद से युक्त पद अकारान्त तथा उकारान्त पद के साथ "के" सम्बन्धकारक परसर्ग एवं "कौं" सम्प्रदान कारक परसर्ग प्रयुक्त हुआ है ।

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 79/90
2- 44/50
3- 668/681
4- 228/235
5- 193/199
6- 219/225
7- 64/75
8- 293/310
9- 103/114
10- 188/193
11- 810/842
12- 723/747

संज्ञा स्त्रीलिंग एकवचन- परसर्गानुसरित विकारी रूप :

संज्ञा स्त्रीलिंग एकवचन के आकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, अकारान्त ईकारान्त पदों के साथ "क", कर, लागि, सञे, सञो, कोँ, तह, पर, के आदि परसर्गों का प्रयोग हुआ है ।

आकारान्त	जमुना क [1]	सम्बन्ध कारक
	धिया कर [2]	अधिकरण -कारक
	दशापर [3]	अधिकरण-कारक
	आसा लागि [4]	सम्प्रदान कारक
इकारान्त	सुरसरि के [5]	सम्बन्ध कारक
	सहचरि सञे [6]	करण- कारक
	केतकि सञे [7]	अपादान कारक
	कुमुदिनि कोँ [8]	सम्प्रदान कारक
	रजनिक [9]	सम्बन्ध कारक
	नारिक [10]	सम्बन्ध कारक
	कुमुदिनिसञो [11]	अपादान कारक
	खिति पर [12]	अधिकरण- कारक
	कासिमों [13]	अधिकरण- कारक
उकारान्त	सासुक [14]	सम्बन्ध कारक
	मधु तह [15]	अपादान कारक
अकारान्त	पलङ्ग पर [16]	अधिकरण कारक
	सीअ क [17]	सम्बन्ध कारक
	साँझ क [18]	सम्बन्ध कारक
ऊकारान्त	गोप वधू सञो [19]	करण- कारक
ईकारान्त	दूती के [20]	सम्बन्ध कारक
	सखी सञे [21]	अपादान कारक

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 619/631
2- 748/771
3- 186/191
4- 373/381
5- 756/778
6- 141/148
7- 62/74
8- 64/75
9- 386/396
10-87/99
11-209/214
12-167/172
13-781/809
14-812/844
15-568/575
16-242/249
17-804/835
18-619/631
19-686/706
20- 523/531
21-437/447

स्त्रीलिंग बहुवचन - परसर्गानुसारित विकारी रूप :

आकारान्त	अबला जन सों[1]	करण-कारक
इकारान्त	सखि गन सयें[2]	करण- कारक
	नागरि जन सञो[3]	करण- कारक
	नागरि जन कें[4]	सम्प्रदान कारक

स्त्रीलिंग बहुवचन रूप के विकारी कारक विभक्ति प्रत्यय एवं कारक परसर्गों का प्रयोग बहुत कम हुआ है । स्त्रीलिंग बहुवचन प्रत्यय "न्हि" अथवा 'नि' से युक्त इकारान्त संज्ञा पद के साथ शून्य विभक्ति प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है आकारान्त तथा इकारान्त बहुवचन स्त्रीलिंग संज्ञा पद "जन" बहुत्व द्योतक पद से युक्त होकर बने हैं तथा इनके साथ करण कारक परसर्ग , सों, सयें, सञो तथा सम्प्रदान कारक परसर्ग 'कें' प्रयुक्त हुए हैं ।

सर्वनाम रूप रचना :

संज्ञा पदों की अपेक्षा सर्वनामों के साथ परसर्गों का प्रयोग कम हुआ है ,साथ ही विभक्ति प्रत्यय युक्त सर्वनाम के संदर्भ में दो कारक विभक्तियाँ सरल और विकारी कारक के रूप में मिलती हैं । अधिकांश परसर्ग विकारी रूप के उपरान्त आये हैं ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 404/414
2- 603/611
3- 742/764
4- 351/358

सर्वनाम रूप

	सरल कारक		विकारी कारक	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहु०वचन
उत्तम पुरुष	मञे[1], मोञे[2] मएँ[3] मो[3]	हम[5] हमे[6]	मोहि[7], मोहें[8], मोहुँ[9] मों[10]	हम[11] हमे[12] हमरा[13]
मध्यम पुरुष	तञे,[14] तों[15] तोञे[16] तु[17], तू[18]	तोहे[19], तों[20]	तोहि[21] तोरा[22] तोहि[23],	तोहरा[24]
अन्य पुरुष	से,[25] सो[26] ओ,[27] ओह[28] इ[35], इह[36] एह[37], इहो[38]	से,[29] तन्हि[30] ओ,[31] ऊ[32] हुन्हि[39] हिन[40]	ताहि[33] ओहि[41] एहि[42]	तन्हि[34] हुनिहि[43] हिन[44]
सम्बंध वाचक	जे[45], जो[46]	जे,[47] जन्हि[48]	जाहि[49]	जन्हि[50]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 121/131
2- 202/208
3- 16/17
4-341/348
5- 42/47
6- 55/63
7- 672/691
8-650/667
9- 760/783
10-80/91
11-853/888
12-849/883
13-622/634
14-129/137
15-808/839
16-234/241
17-362/368
18-28/31
19-707/728
20-808/839

21-30:33
22-23/24
23-359/366
24-759/782
25-15/15
26-167/172
27-105/116
28-429/440
29-346/353
30-227/234
31-73/84
32-749/772
33-141/148
34-101/112
35-28/31
36-43/49
37-443/452
38-766/790
39-706/727
40-829/861

41-548/555
42-704/725
43-578/585
44-744/767
45-37/40
46-725/749
47-66/78
48-276/292
49-9/9
50-743/765

निजवाचक तथा आदरवाचक सर्वनाम पदों के रूप वचन भेद के कारण परिवर्तित नहीं होते हैं ।

सरल कारक		विकारी कारक	
आप[1]	निज[2]	आपे[4]	आपहि[5]
रउरा[3]		राउरि[6]	

अनिश्चयवाचक तथा प्रश्न वाचक सर्वनाम पदों में भी वचन भेद नहीं पाया जाता है ।

	सरल कारक	विकारी कारक
अनिश्चय-वाचक	केओ[7], कोए[8], केउ[9]	काहु[15], कोइ[16]
	कोइ[10], कोई[11]	किछु[17]
	किछु,[12] कछु[13] सब[14]	सबे[18], सब[19]
प्रश्नवाचक	के[20], को[21]	काहि[24], का[25]
	कोन[22], की[23]	की[26]

नित्यवाचक सर्वनाम पद भी वचन-भेद से अपरिवर्तित रहते हैं ।

सरल कारक	विकारी कारक
जे----से---[27]	जाहु----ताहु---[29]
जे----ते---[28]	

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1-783/811
2-552/560
3-753/776
4-40/44
5- 42/47
6-781/809
7-7/7
8-110/111
9-184/189
10-175/180
11-783/811
12-12/12
13-42/47
14-680/699
15-135/142
16-280/297
17-285/302
18-48/55
19-46/53
20-72/83
21-423/434
22-165/170
23-29/32
24-331/339
25-169/174
26-12/12
27-40/44
28-83/94
29-402/416

सम्बन्ध वारकीय सर्वनाम रूप ॥1॥

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मोर[1], मोरा[2], मोरे[3] मोरि[4], मोरी[5], मेरो[6]	हमर[7], हमरा[8], हमार[9] हमरि[10], हामारि[11], हमरो[12]
मध्यम पुरुष	तोर[13], तोरा[14], तोरे[15] तोरि[16], तोरी[17]	तोहर[18], तोहरा,[19] तोहार[20] तोहरि,[21] तोहारि[22], तिहरो[23]

परसर्ग युक्त सर्वनाम - रूप :

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मोहु सयँ[24], मोपति[25] मोहि पति[26]	हम सन[27], हमरा कें[28] हम तह[29], हम सों[30] हम पाए[31], हमरा लागि[32]
मध्यम पुरुष	तोरालागि[33], तुअबिनु[34]	तोहरा लागि[35] तोहरा सौं[36]
अन्य पुरुष	ताहि लागि[37], ताके[38] तासओ[39], ताहि तह[40], तापर[41], तासह[42], एहि सों[47], एहि तह[48]	तन्हिकाहुँ[43] तन्हि सओ[44] हुनबिनु[45] हुन्हि सओ[46] हिनकहूँ[49]

गीत विद्यापति पृष्ठ सं0/पद सं0		
1-104/115	17-233/240	34-125/134
2-129/133	18-61/72	35-533/541
3-33/36	19-273/381	36-640/656
4-88/99	20-534/542	37-664/682
5-215/219	21-362/368	38-74/85
6-343/350	22-152/159	39-229/236
7-101/112	23-243/200	40-306/319
8-217/222	24-760/783	41-451/460
9-224/231	25-80/91	42-448/457
10-219/225	26-135/142	43-101/112
11-150/157	27-263/275	44-46/53
12-254/263	28-643/661	45-262/272
13-194/200	29-701/722	46-223/230
14-185/190	30-293/310	47-218/223
15-274/289	31-689/709	48-585/590
16-189/195	32-683/702	49-750/773
	33-339/346	

परसर्गयुक्त-सर्वनाम रूप :

	एक वचन	बहुवचन
सम्बन्धवाचक	जाहि-सँ[1], जापति[2], जासत्रो [3]	जन्हि बिनु[6]
	जाहि लागि[4], जसुलागि[5]	
प्रश्नवाचक	का सओ[7], कौँ लागि[8], की लागि[9]	
	कथि लागि [10]	
अनिश्चयवाचक	काहुक[11], काहा के [12]	
	सब तह[13], सब कौँ [14]	
निजवाचक	अपना के[15], अपनुक [16]	

सम्बन्धकारकीय सर्वनाम रूप (2)

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	तकर,[17] तकरा [18] ताकर [19]	तनिकर,[22] तनिक[23]
	ताहेरि,[20] तासु [21]	
	ओकरा,[24] एहिकर[25] एकर[26]	हुनक [27] हुनकिओ[28]
संबंधवाचक	जकर,[30] जकरा[31], जेकर[32]	हिनक[29]
	जाक[33], जाहेरि,[34] जसु [35]	जनिकर[36]
प्रश्नवाचक	केकरा[39], ककर [40]	जनिक, 37, जन्हिका[38]
निजवाचक	अपन,[41] अपना,[42] अपनि [43]	

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1-258/266	16-223/230	32-263/274
2-482/490	17-415/427	33-366/373
3-529/536	18-720/744	34-688/708
4-740/763	19-165/170	35-484/492
5-164/169	20-109/121	36-447/456
6-276/292	21-125/134	37-714/736
7-169/174	22-60/70	38-740/763
8-373/381	23-257/266	39-749/772
9-12/12	24-527/534	40-744/767
10-139/146	25-164/169	41-12/12
11-354/361	26-523/530	42-100/111
12-537/544	27-254/262	43-369/377
13-53/61	28-772/797	
14-64/75	29-744/767	
15-136/143	30-713/735	
	31-684/704	

विशेषण - रूप :

"गीत-विद्यापति" में विशेषण पद का रूप परिवर्तन वचन के कारण नहीं हुआ है। विशेषण पदों में परिवर्तन अधिकांश में लिंग-भेद के कारण तथा अल्प संख्या में कारक-विभक्ति "ए,"एँ के कारण हुआ है, परन्तु ऐसा विशेष्य में कारक-विभक्ति के संयुक्त होने से हुआ है।

रूपान्तरित विशेषण पद :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दीघर[1]	दीघरि[2]
नव[3]	नवि[4]
मन्द[5]	मन्दि[6]
तरुन[7]	तरुनि[8]
सामर[9]	सामरि[10]
सगर[11]	सगरि[12]
एकसर[13]	एकसरि[14]
एकल[15]	एकलि[16]
तैसन[17]	तैसनि[18]
ऐसन[19]	ऐसनि[20]
सरल कारक	**विकारी कारक**
बड़[21]	बड़े[22]
कुटिल[23]	कुटिलें[24]
तीख[25]	तीखें[26]
अधिक[27]	अधिके[28]
मधुर[29]	मधुरे[30]

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1-70/81
2-273/288
3-45/52
4-45/52
5-7/7
6-8/8
7-238/244
8-262/273
9-214/219
10-11/11
11-121/131
12-132/140
13-2/2
14-79/90
15-30/33
16-578/585
17-105/116
18-88/99
19-144/152
20-77/88
21-477/485
22-6/6
23-41/45
24-459/467
25-356/363
26-25/27
27-29/32
28-31/34
29-37/40
30-467/474

क्रिया रूप :

धातु या क्रिया में लिंग, वचन, पुरुष, काल, भाव और वाच्य के कारण परवर्तित होते हैं । क्रिया रूप रचना में कृदन्तों का महत्वपूर्ण योग रहता है तथा सहायक क्रियायें भी रूप-रचना में परिवर्तन के लिये उत्तरदायी रहती हैं ।

वर्तमान काल :

वर्तमान काल के क्रिया-रूपों में उत्तम पुरुष अपूर्ण एवं पूर्ण वर्तमान में वचन-भेद नहीं मिलता है । लिंग-भेद तो किसी पुरुष एवं वचन में नहीं मिलता है । मध्यम पुरुष एक वचन में - सि तथा बहुवचन में " ह" प्रत्यय लगता है तथा अन्य पुरुष एकवचन में - इ, -ए तथा बहुवचन में - थि प्रत्यय लगता है ।

वर्तमान काल क्रिया रूप

	अपूर्ण वर्तमान		पूर्ण वर्तमान	
	एक वचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	कहओ [1]	-	-	-
	खसओ [2]	-	-	-
	करओ [3]	-	-	-
मध्यम पुरुष	कहसि [4]	सन्तावह [7]	-	-
	लेसि [5]	चिन्हह [8]	-	-
	चाहसि [6]	धरह [9]	-	-
अन्य पुरुष	भाइ [10]	राखथि [15]		
	भाहिं [11]	करथि [16]	लिखल अछ [18]	
	तेजए [12]	चाहथि [17]	लेगहलि [19]	
			गेल् अछ [20]	आएल छइन्हि [22]
	दह [13]		सुतल अछु [21]	
	रहइ छि [14]			

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 524/531
2- 289/306
3- 813/845
4-375/383
5-375/383
6-375/383
7-633/647
8-633/647
9-633/647
10-241/247
11-639/655
12-680/699
13-378/386
14-259/267
15-292/308
16-412/424
17-851/885
18-847/881
19-777/803
20-410/423
21-850/884
22-756/779

भूत काल :

गीत- विद्यापति में भूतकाल के अन्तर्गत अपूर्ण एवं पूर्ण भूत दोनों में दोनों वचनों, लिंगों के अनुसार रूप प्राप्त होते हैं । उत्तम पुरुष में वचन भेद नहीं प्राप्त होता है । मध्यम पुरुष एकवचन में लिंग- भेद प्राप्त हुआ है । बहुवचन में लिंग- भेद नहीं है । इसी प्रकार अन्य पुरुष में लिंग भेद केवल एकवचन क्रिया रूप में ही प्राप्त हुआ है ।

भूत काल (अपूर्ण) क्रिया - रूप

	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
उत्तम पुरुष	देखल[1]	अइलिहुँ[3]	-	-
	अएलाहुँ[2]	गेलिहुँ[4]	-	-
		चुकलौंहँ[5]		
मध्यम पुरुष	कएल[6]	धरलि[7]	कएलह[9]	-
		एड़ाओलि[8]	बोललह[10]	-
अन्य पुरुष	जागल[11]	आइलि[15]	पढलन्हि[17]	
	भरल[12]	चललि[16]	चललाह[18]	
	कएलक[13]		पड़ु[19]	
	मिलु[14]			

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 853/888
2- 729/754
3- 534/542
4- 706/727
5- 847/881
6- 63/74
7- 44/50
8- 44/50
9- 49/57
10-703/724
11-54/63
12-77/88
13-523/530
14-735/758
15-694/714
16-330/338
17-521/528
18-113/123
19-649/666

भूतकाल (पूर्ण) क्रिया रूप

	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
उत्तम पुरुष	–	बैसलि अछलिहुँ[1]	–	भरमलि अछलाह[2] सुतलिछलहुँ[3]
अन्य पुरुष	गेला[4]	सुतलि अछलि[5] लेले छलि[6]	लिखल छिला[7]	

भविष्य काल :

भविष्यकाल उत्तम पुरुष में वचन भेद नहीं है, लेकिन लिंग-भेद से क्रिया रूप प्रभावित हुआ है। मध्यम पुरुष एकवचन क्रिया रूप लिंग के कारण परिवर्तित हुआ है जबकि बहुवचन रूप अप्रभावित है। अन्य पुरुष क्रिया रूप में लिंग तथा वचन दोनों के कारण परिवर्तन हुआ है।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 573/580
2- 215/219
3- 275/290
4- 95/106
5- 174/179
6- 235/242
7- 750/773

भविष्यकालिक क्रिया रूप

	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
उत्तम	पाओब[1]	तोरब[4]	–	
पुरुष	भजब[2]	जाइब[5]	–	
	पुजब[3]	कहबि[6]	–	देवैन्ह[9]
		आनबि[7]	–	
		बोलिबों[8]		
मध्यम	करब[10]	साधबि[12]	जैबह[15]	–
पुरुष	बजायब[11]	सुमरबि[13]	लैबह[16]	–
		करबि[14]	खोजबह[17]	–
अन्य	पूरत[18]	तेजति[20]	भेटताह[22]	
पुरुष	जाएत[19]	खाइति[21]	करत[23]	चलितथि[26]
			देखितथि[24]	
			आओब[25]	

गीत-विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1-790/823
2-800/832
3-778/805
4-748/771
5-748/771
6-474/482
7-482/490
8-703/724
9-643/660
10-798/830
11-753/776
12-39/43
13-69/80
14-320/329

15-244/251
16-244/251
17-260/268
18-473/481
19-478/486
20-75/86
21-122/132
22-201/207
23-512/518
24-643/660
25-156/162
26-643/660

आज्ञार्थक क्रिया रूप :

आज्ञार्थ क्रिया रूप केवल मध्यम पुरुष के अन्तर्गत वर्तमान तथा भविष्य काल में मिलते हैं ।

कर[1]	धरह[6]
सुन[2]	कहबि[7]
सुनु[3]	मिलाबहि[8]
जागह[4]	
जाह[5]	

प्रेरणार्थक-क्रियारूप :

प्रेरणार्थक क्रिया रूप तीनों कालों में तीनों पुरुषों के अन्तर्गत दोनों वचनों एवं लिंगों में प्रयुक्त हुए हैं ।

लोटाबए[9]	बुझउलिसि[15]	देखासि[22]
बुझाबए[10]	देखाओलि[16]	बुझाओब[23]
कराबे[11]	जिआउलि[17]	सोआउबि[24]
बढ़ाबए[12]	चलओलह[18]	बुझाओत[25]
बुझाबह[13]	बुझवलक[19]	
चढ़ाबथि[14]	गढावल[20]	
	बढ़ओलन्हि[21]	

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं०/पद सं०

1-130/138
2-152/159
3-260/269
4-91/102
5-91/102
6-149/156
7-165/170
8-228/235
9-110/121
10-195/201
11-213/218
12-228/235
13-687/707
14-746/768
15-350/357
16-333/341
17-238/241
18-683/702
19-343/349
20-762/786
21-96/107
22-209/214
23-740/763
24-238/244
25-781/795

पूर्वकालिक क्रिया - रूप :

गुनि[1] भमि - भमि[7]
दए[2] बुझाय[8]
लए[3] देखि देखि[9]
करि[4] कहि[10]
कए[5]
गेए[6] जोहि हेरि आनि[11]

संयुक्त क्रिया - रूप :

देखि हँसए[12] हँसि हेरह[14]
धरि खायत[13] हेरि न हेरथि[15]

कर्म वाच्य :

माधवे बोललि मधुर बानी[16]
लिखि लिखि देख बासि तोही[17]
सुन्दरि मञे कि सिखउबिसि आओर रङ्ग[18]

भाव - वाच्य :

कहहि न जाए[19]
गए न होएते[20]
गोपहि न पारिअ[21]

गीत - विद्यापति

1-828/860
2-50/57
3-740/763
4-394/404
5-349/356
6-53/61
7-160/164
8-165/170
9-635/650
10-603/611
11-788/818
12-765/789
13-753/776
14-749/766
15-713/735
16-21/21
17-209/214
18-459/467
19-190/196
20-473/481
21-834/867

इस प्रकार "गीत- विद्यापति" में पद -विभागान्तर्गत आने वाले सभी पद संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण तथा अव्यय आए हैं तथा इनका प्रयोग मैथिली भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल हुआ है। पुल्लिंग संज्ञाओं में अकारान्त, आकारान्त, इ- ईकारान्त, उ- ऊकारान्त, ए-ऐकारान्त ओकारान्त तथा स्त्रीलिंग संज्ञाओं में आकारान्त, अकारान्त, इ-ईकारान्त, उ- ऊकारान्त, ए- ऐकारान्त, ओकारान्त प्राप्त हुए हैं। सर्वनामों में नित्य सम्बन्धी सहित मैथिली भाषा के प्राय: सभी सर्वनाम मिलते हैं। विशेषण के भी सभी भेद उपलब्ध हैं। पूर्णांक बोधक एवं अपूर्णांङ्क बोधक संख्या वाचक विशेषण भी यथा प्रसंग प्रयुक्त हुए हैं। व्याकरणिक रूप परिवर्तन केवल अकारान्त विशेषणों में हुआ है। क्रियाएँ स्वरान्त तथा व्यंजनान्त दोनों कोटि की हैं। मूल धातु व्युत्पन्न क्रिया एवं संयुक्त क्रिया तीनों को पद- विभाग एवं रूप रचना में स्थान दिया गया है। लिंग, वचन, पुरुष, काल, भाव तथा वाच्य सभी ने क्रियापदों को प्रभावित किया है। क्रिया रूपावली में अपूर्ण वर्तमान एवं अपूर्ण भूत, पूर्ण वर्तमान तथा पूर्ण भूत की अपेक्षा अधिक पाये गये हैं। भविष्यकाल का प्रयोग वर्तमान तथा भूत काल से कम किया गया है। उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष की अपेक्षा अन्य पुरुष के रूपों का विस्तार है।

अध्याय - 9

वाक्य - रचना :

भाषा का पूर्ण रूप उसके वाक्य - विधान द्वारा परिलक्षित होता है तथा वाक्य का गठन सार्थक शब्दों के ऐसे क्रम द्वारा होता कि उससे पूरे भाव या विचार का ग्रहण हो । वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है जिसमें एक या अधिक शब्द "पद" होते हैं । तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट सन्दर्भ में अवश्य पूर्ण होती है ।

"गीत- विद्यापति" में प्रयुक्त वाक्यों को निम्नांकित तीन आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है ।

1- रचना के आधार पर

2- अर्थ के आधार पर

3- क्रिया के होने अथवा न होने के आधार पर

रचना के आधार परवर्गीकरण :

रचना या व्याकरणिक गठन के आधार पर गठित साधारण वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा मिश्रित वाक्य तीनों का प्रयोग विद्यापति ने अपनी रचना में किया है । इसमें कवि ने अधिकांशत: साधारण वाक्य ही रचनान्तर्गत नियोजित किये हैं ।

साधारण वाक्य :

साधारण वाक्यों की रचना सामान्यत: एक उद्देश्य तथा एक विधेय द्वारा हुई है ।

नीवी ससरि भूमि पलि गेलि [1]
सपने हम देखल सिवसिंह भूप [2]
पुनु पुनु उठसि पछिम दिस हेरि[3]

मिश्रित वाक्य :

इस प्रकार के वाक्य में एक मुख्य उप वाक्य तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य रहते हैं । आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के हैं :- संज्ञा उपवाक्य , विशेषण उपवाक्य, और क्रिया विशेषण उपवाक्य । विश्लेष्य-कृति में उपवाक्यों के तीनों प्रकार प्राप्त हुए हैं :

"गीत- विद्यापति" में विशेषण उपवाक्यों तथा क्रिया विशेषण उपवाक्यों की अपेक्षा संज्ञा उपवाक्यों की संख्या कम है । मुख्य उपवाक्य की संज्ञा या संज्ञा वाक्यांश के बदले में आया हुआ उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य है । " विवेच्य ग्रन्थ में प्रयुक्त संज्ञा उपवाक्यों के निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं :

गीत- विद्यापति　　1- 2/2
पृष्ठ सं0/ पद सं0　　2- 853/888
　　3- 491/498

आबे मञे निञ मने दिढ़ कए जानु कतहु सेस नहि कपटे बिनु[1]
न्हिहुन बबा के किनए धेनु गाइ[2]
भन विधापति इहो नहि निक धिक[3]
विधापति कवि गावे पुनफले सुपुरुष की नहि पावे[4]

विशेषण उपवाक्य संज्ञा की विशेषता को प्रकट करते हैं । विशेषण उपवाक्यों की संख्या आलोच्य-कृति में संज्ञा उपवाक्यों से अधिक है ।

पवन सुआमति अरि जे वसंल मति ता सुत चउदिस आब[5]
जे पिआ मानए दोसरि परान तकराहु वचन अइसन अभिमान[6]
पाउस निअर आएला रे से देखि सामि डराओ[7]
गगन नखत छल सेहो अबेकत भेल[8]

क्रिया-विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बतलाता है। कवि द्वारा प्रयुक्त उपवाक्यावली में अधिकांश क्रिया-विशेषण उपवाक्य हैं ।

उदाहरण :

जाबे सरस पिआ बोलए हसी तावे से बालमु तञे पेअसी[9]
जखने कलानिधि निअ तनु पाब तहिखने राहु पिआसल आब[10]
मन करि तँह उड़ि जाइअ जाहाँ हरि पाइअ रे[11]
जहाँ जहाँ कुटिल कटारव ततहिं मदन सर लाख[12]
मालति रस विलसए भमर जान तेहि भाँति कर अधरपान[13]
फाब चोरि जौ चेतन चोर[14]
हम नहि आज रहब यहि आँगन जो बुढ़ होएत जमाइ गे माई[15]

गीत- विधापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 198/203
2- 847/881
3- 847/880
4- 73/83
5- 629/641
6- 37/40
7- 82/83
8- 840/880
9- 36/40
10- 105/116
11- 216/221
12- 324/332
13- 813/845
14- 731/755
15- 748/771

संयुक्त वाक्य :

दो या अधिक स्वतन्त्र साधारण वाक्यों के संयोजन द्वारा रचित वाक्य संयुक्त वाक्य कहलाता है । इन वाक्यों को एक दूसरे का समपदीय तथा संयोजक तत्व को संयोजक अव्यय कहा जाता है । इस प्रकार के वाक्यों में संयोजक अव्यय की स्थिति प्रकट तथा अप्रकट दोनों रूपों में प्रतीत होती है । "गीत-विद्यापति" में संयुक्त वाक्यों के गठन में " अरु ,बरु ,किंवा , नहिं, न, किदहु, की ,जनि आदि संयोजक, वियोजक अव्ययों का प्रयोग हुआ है ।

सुरत परिश्रम सरोवर तीर अरु अरुणोदय सिसिर समीर[1]

वारि विलासिनी आनबि काहाँ तोहि कान्ह बरु जसि ताहाँ [2]

की मालति मधुकर उपभोगए किंवा लतहिं सुखाइ [3]

की हमें साँझक एकसरि तारा भादव चौठिक ससी[4]

हरि के माय बाप नहिं थिकइन नहि छैन सोदर भाय[5]

न देखिअ धनु गुन न देखु सन्धाने [6]

किदहु भमर ततए नहि नाद पिक पञ्चम धुनि मधुर न साद[7]

बदन झपाबए अलकओ भार चान्द मण्डल जनि मिलए अन्धार[8]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 102/113
2- 482/490
3- 205/210
4- 88/99
5- 751/774
6- 206/211
7- 192/198
8- 646/663

अर्थ के आधार पर वर्गीकरण :

अर्थ या भाव के आधार पर विभाज्य वाक्यों के सभी प्रकार "गीत - विद्यापति" में प्रयुक्त हुए हैं ।

विधान सूचक वाक्य :

विधान सूचक वाक्यों के द्वारा विश्लेष्य कृति में कार्य सम्पादन का सामान्य बोध तथा कार्य के विधान को प्रकट करने के लिये "चाहिअ" क्रिया का प्रयोग किया गया है ।

गुनक बान्धल आएल नागर[1]
माधव हमर रटल दुर देस [2]
गगन नखत छल[3]
भूकल भमरा पिब मकरन्द[4]
भेल चाहिए समाज[5]
आएल चाहिअ निज गेहा[6]
राखलि चाहिअ लाज[7]

निश्चय सूचक वाक्य :

इस प्रकार के वाक्यों में कार्य सम्पादन के दृढ़ निश्चय का भाव निहित रहता है ।

हमहु जायब तनि पास[8]
दिन दुइ चारि निचय हम आओब[9]
अब अवसे ओ तेजब पराने[10]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 370/378
2- 245/254
3- 846/880
4- 37/41
5- 17/17
6- 467/474
7/ 17/17
8- 262/271
9- 380/388
10-712/734

प्रश्न सूचक वाक्य :

इस प्रकार के वाक्यों से प्रश्न का बोध हुआ है । इन प्रश्नों के मूल में प्रश्नकर्त्ता की जिज्ञासा का सहज भाव परिलक्षित हुआ है तथा इन वाक्यों की रचना प्रश्नवाचक अव्यय , विशेषण, तथा सर्वनाम के प्रयोग द्वारा हुई है ।

साजनि की कहब तोरि गेआन[1]

कि कहिबो अगे सखि अपनरि भाला[2]

कइसे हरि वचन चुकला[3]

कओन देस बसल रतल कओन नारी[4]

आज्ञा सूचक वाक्य :

ऐसे वाक्यों से आदेश देने का भाव सूचित हुआ है किन्तु प्रेम-परक प्रसंगों में आदेश के साथ-साथ विनयार्थक भावों की भी व्यंजना दृष्टिगत है । कहीं-कहीं उपदेश देने का भाव भी परिलक्षित हुआ है ।

एरे नागरि मन दए सून[5]

अबहु हेरि हरि मोहे[6]

कहहि मो सखि कहहि मो कथा ताहेरि वासा[7]

हमरो समाद नैहर लेने जाउ[8]

कहिहुन बबा के किनए धेनु गाइ[9]

अरे रे पथिक भइआ समाद लए जइहह[10]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद सं0

1-29/32
2- 7/7
3- 72/83
4- 109/120
5- 3/3
6- 92/103
7- 10/10
8- 847/881
9- 847/881
10- 847/881

निषेध सूचक वाक्य :

इस कोटि के वाक्यों से कार्य के सम्पादित न होने की सूचना मिलती है । इन वाक्यों की रचना न, नहि तथा जनु शब्दों के प्रयोग से हुई है ।

मानिनि मने न गुणहि आन[1]
तोह हुनि उचित रहत नहि भेद [2]
पुनु जनु बोलह अइसनि भासा [3]
विधिवसे अधिक करह जनु मान[4]

इच्छा सूचक वाक्य :

इस प्रकार के वाक्यों की क्रिया से किसी कार्य सम्पादन की इच्छा का भाव प्रक्ट हुआ है ।

जलउ जलधि जल मन्दा[5]
जनम होअए जनु जञो पुनु होइ जुवती भए जनमए जनुकोइ[6]
एषने पाबञो ताहि विधाताहि बान्धि मेलञो अन्धकूप [7]

सन्देह सूचक वाक्य:

ऐसे वाक्यों से सन्देह अथवा संभावना प्रक्ट हुई है । इन वाक्यों में कवि ने कहीं- कहीं 'संभव' तथा "सन्देह" शब्द का प्रयोग भी किया है ।

आज सगुन शुभ संभव साँच [8]
दरसनहु भेल सन्देह[9]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 35/38
2- 36/39
3- 704/725
4- 36/39
5- 72/83
6- 826/858
7- 74/85
8- 276/291
9- 173/178

विस्मय सूचक वाक्य :

विस्मय सूचक वाक्यों से किसी कार्य के होने या न होने पर आश्चर्य एवं दुख का भाव प्रकट हुआ है ।

आहा बएस कतए चलि गेलि [1]

आहा दइआ इ की भेलि[2]

हा हा शम्भु भान भए गेल [3]

क्रिया के होने अथवा न होने के आधार पर वर्गीकरण :

क्रिया के होने अथवा न होने के आधार पर वाक्य के दो भेद किये गये है । {1} क्रियायुक्त वाक्य - {2} क्रिया विहीन वाक्य । दोनों प्रकार के वाक्य "गीत-विद्यापति" में उपलब्ध होते हैं ।

क्रियायुक्त वाक्य :

साजनि माधव देखल आज[4]

सहज सीतल छल चन्दा [5]

काहु दिस काहल कोकिल गाबे[6]

धिरे-धिरे रमह[7]

क्रियाविहीन वाक्य :

मदन बान के मन्द बेबथा[8].

सब फल परिमल[9]

अबे तोहि सुन्दरि मने नहि लाज[10]

से अति नागर तजे सब सार[11]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद सं0

1-840/874
2- 101/112
3- 580/586
4- 2/2
5- 7/7
6- 8/8
7-565/571

8- 9/9
9- 9/9
10-32/35
11- 35/39

छन्दगत वाक्य-योजना :

गद्य तथा पद्य में वाक्य-गठन का स्वरूप भिन्न-भिन्न होता है। गद्य- रचना में लेखक भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति के लिये जितना स्वतन्त्र रहता है उतना पद्य रचना में कवि नहीं क्योंकि पद्य में वह छन्द की मात्रा अथवा उसके वर्णों की मर्यादा से बँधा रहता है। इसीलिये छन्दोबद्ध रचना में वाक्य, मात्रा, वर्ण, लय आदि की आवश्यकता के अनुसार गठित होते हैं। "गीत - विद्यापति" में 4 पंक्तियों वाले छोटे छन्दों से लेकर 34 पंक्तियों वाले बड़े आकार के छन्द का प्रयोग हुआ है। छन्दगत वाक्य योजना की दृष्टि से दो प्रकार से विचार किया गया है। एक पूरे छन्द में वाक्य - रचना की स्थिति तथा दूसरे एक- एक पंक्तियों में एक अथवा एकाधिक वाक्यों का प्रयोग।

विद्यापति ने अपनी रचना में एक पूरे छन्द में एक अथवा एकाधिक वाक्यों का प्रयोग किया है। एक छन्द में पूर्ण वाक्यात्मक बोध की स्थिति यदि एक बार होती है तो ऐसे छन्द में एक ही वाक्य माना जा सकता है। उदाहरण :

कनक- भूधर- शिखर वासिनि
चन्द्रिका चय चारु हासिनि
दशन कोटि विकास बङ्किम तुलित चन्द्रकले ।।
क्रुद्ध सुर-रिपु बल नियातिनि
महिष शुम्भ निशुम्भ घातिनि
भीत भक्त भयापनोदन पाटव प्रबले ।।

जय देवि दुर्गे दुरित तारिणि
भक्त नम्र सुरसुराधिप मंगलायतरे ।।
गगन मण्डल गर्भ गाहिनि
समर भूमिषु सिंह वाहिनि
परशु पाश कृपान शायक शङ्ख चक्रधरे ।।
अष्ट भैरवि सङ्ग शालिनि
स्वकर-कृत्त कपाल मालिनि
दनुज शोणित पिशित वर्द्धित पारणारभसे ।।
संसार बन्ध निदान मोचिनि
चन्द्र भानु कृशानु लोचिनि
योगिनि गण गीत शोभित नृत्य भूमि रसे ।।
जग पालन जन्म मारण
रूप कार्य सहस्र कारण
हरि विरञ्चि महेश शेखर चुम्ब्यमानपदे ।।
सकल पाप कला परिच्युति
सुकवि विद्यापति कृत स्तुति
तोषिते शिवसिंह भूपति कामना फल दे ।।[1]

एक छन्द में दो वाक्यों का प्रयोग नहीं हुआ है । एक छन्द में तीन वाक्यों के उदाहरण भी कम प्राप्त होते हैं । वाक्यों की पूर्णता छन्द की पंक्ति अथवा छन्द के किसी स्थान विशेष से बाधित नहीं है तथा कवि ने अपने भाव एवं अनुभूति की अभिव्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार वाक्य पूर्ण किये हैं ।

गीत- विद्यापति 1- 805/ 836
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

"गीत-विद्यापति" में एक वाक्य वाले छन्द से लेकर 20 वाक्यों वाले छन्द तक पाये गये है । एक वाक्य वाला केवल एक छन्द प्राप्त हुआ है । 3,4,5 वाक्यों वाले छन्द तथा 12,13,14,15,--20 वाक्योंवाले छन्दों की संख्या अत्यल्प है । 6,7,8,9,10,11 वाक्यों वाले छन्दों की संख्या सर्वाधिक

ब्रह्मकमण्डलु वास सुवासिनि
सागर नागर गृह वाले ।
पातक महिस बिदारन कारन
धृत करवाल वीचिमाले ।।
जय गङ्गे ।

जय गङ्गे , सरनागत भय भङ्गे ।। 2

सुर मुनि मनुज रचित पूजोचित
कुसुम विचित्रित तीरे ।
त्रिनयन मौलि जटा चय चुम्बित
भूत भूसित सित नीरे ।।

हरि पद कमल गलित मधु सोदर
पुन्य पुनित सुर लोके ।
प्रविलसदमरपुरी पद - दान
विधान विनासित सोके ।।

सहज दयालुतया पातकि जन
नरक विनासन निपुने ।
रूद्रसिंह नरपति वरदायक
विद्यापति कवि भनित गुने ।।

गीत- विद्यापति 811/ 843
पृष्ठ सं0/पद सं0

खिति रेनु गन जदि गगन क तारा ।
दुइ कर सिचि जदि सिन्धु क धारा ।।

पुरुब भानु जदि पछिम उदीत ।
तइअओ विपरित नह सुजन पिरीत ।।.... ।

माधव कि कहब आन ।
ककर उपमा दिअ पिरीत समान ।। 2

अचल चलए जदि चित्रकह बात ।
कमल फुटए जदि गिरिवर माथ ।।

दावानल सितल हिमगिरि ताप ।
चान्द जदि विसधरसुधाधरसाप ।। 3

भनइ विद्यापति सिवसिंघ राय ।
अनुगत जन छाड़ि नहि उजियाय ।।----- 4 -ए

दुल्लहि तोहरि कतए छथिमाय .. .. ।

कहु न ओ आवथु एखन नहाय 2

वृथा बुझथु संसार विलास ।

पल पल नाना तरहक तास ----- 3

माय बाप जो सद्गति पाव ।

सन्तति काँ अनुपम सुख आब ।------4

विद्यापति आयु अवसान

कातिक धवल त्रयोदसि जान । ----- 5 -बी

गीत- विद्यापति ए- 839/866
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या बी- 853/889

छह वाक्यों वाले छन्दों की संख्या पर्याप्त है तथा ये वाक्य प्राय: दो पंक्तियों में पूर्ण हुए हैं । उदाहरण :

प्रथमहि सिनेह बढ़ाओल
 जे विधि उपजाए ।...... ।
से आबे हठे विघटाओल
 दूषण कओन मोर पाए । ---2
ए सखि हरि सुमझाओब
 कए मोर परथाब । ------- 3
तन्हिके विरहे मरि जाएब
 तिरिवध कओन आब ।... . 4
जीवन थिर नहि अधिकए
 जौवन तहु थोल । 5
वचन अपन निरबाहिअ
 नहि करिअए ओल । ....6 ... ए

गीत- विद्यापति में 6 वाक्यों से अधिक वाक्य वाले छन्दों की संख्या सर्वाधिक हैं । इस प्रकार की वाक्य व्यवस्था में प्राय: छन्द की प्रत्येक पंक्ति वाक्यात्मक है । कुछ स्थलों में एक पंक्ति में एकाधिक वाक्यों का प्रयोग हुआ है

पंक्तिगत वाक्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश योजना एक पंक्ति में एक वाक्य" के रूप में गठित है । एक पंक्ति में दो वाक्य के भी उदाहरण उपलब्ध हैं, एक पंक्ति में तीन वाक्यों के विरल उदाहरण हैं । तीन से अधिक वाक्यों की एक पंक्ति में योजना "गीत- विद्यापति" में नहीं है । छन्द की एक- एक पंक्ति की सीमा के भीतर एक अथवा एकाधिक वाक्य योजना के उदाहरण नीचे दिये जा रहे है ।

---

1 गीत विद्यापति ए- 104/ 115
 पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

एक पंक्ति में एक वाक्य का प्रयोग :

कामिनि करए सनाने [1]

नयन सरोज दुहू बह नीर [2]

भीम भुङगम पथ चललाह [3]

माधव कठिन तोहर नेह [4]

एक पंक्ति में दो वाक्यों का प्रयोग :

कओन देस बसल रतल कओन नारी [5]

केओ सुखे सूतए केओ दुखे जाग [6]

एक पंक्ति में तीन वाक्यों का प्रयोग :

कि कह कि सुन किछु बुझए न पारि [7]

आबह बैसह पिबलह पानी [8]

"गीत विद्यापति में एक पंक्ति में एक वाक्य की योजना के अतिरिक्त दो पंक्तियों में एक वाक्य, तीन पंक्तियों में एक वाक्य तथा चार पंक्तियों में भी एक वाक्य के पूर्ण होने की स्थिति प्राप्त हुई है । एक स्थान पर तो सात पंक्तियों में एक वाक्य की योजना है । उदाहरण :

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद सं०

1- 406/420
2- 112/122
3- 113/ 123
4- 106/117
5- 109/120
6- 220/226
7- 12/12
8- 260/268

दो पंक्तियों में एक वाक्य का प्रयोग :

दारूणा कन्त निठुर हिअ
सखि रहल विदेस ।[1]
मोहि छल दिने दिने बाढ़ल
देव हरि सञो नेह ।[2]

प्रथमहि हृदय प्रेम उपजाए
पेमक आङ्कुर गेलाह बढ़ाए ।[3]

तीन पंक्तियों में एक वाक्य का प्रयोग :

सदर निर्म्मल पूर्नचन्द्र सुवक्र
सुन्दर लोचनी
कथं सीदति सुन्दरी ।[4]

तीन तथा चार पंक्तियों में एक वाक्य की योजना कम हुई है जबकि दो पंक्तियों में एक वाक्य की योजना अधिक है । चार पंक्तियों में तथा एक स्थान पर सात पंक्तियों में एक वाक्य की योजना प्राय: कवि द्वारा द्रष्टव्य पदों में की गई है जहाँ पर कवि ने पांडित्य प्रदर्शन किया है ।

नवहरि तिलक वैरि सख यामिनि
कामिनि कोमल कान्ती
जमुना जनक तनय रिपु धरिणी
सोदर सुअकर साती ।[5]

गीत- विद्यापति 1- 103/114
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या 2- 103/114
3- 112/122
4- 291/307
5- 1/1

हरि पति हित रिपु नन्दन बैरी बाहन ललितगमनी
दिति नन्दन रिपु नन्दन नागरि रूपे से अधिक रमणी
सिव सिव तम रिपु बन्धव जनी
रितुपति मित बैरि चूड़ामणि मित्र समान रजनी
हरि रिपु रिपु प्रभु तसु रजनी तात सरिस कुच सिरी
सिन्धु तनय रिपु रिपु रिपु बैरिनि वाहन माझ उदरी
पनव तनय हित सुत पुने पाबिअ विद्यापति कवि भाने ।[1]

रचनात्मक दृष्टि से लोकोक्तियाँ भी वाक्य के अन्तर्गत आती है । विद्यापति ने विभिन्न भाव एवं स्थितियों को हृदय-ग्राहय तथा आकर्षक रूप प्रदान करने की दृष्टि से लोक में प्रचलित बहुत सी उक्तियों को अपनी रचना में स्थान दिया है । इस ढंग के प्रयोगों से भाव तथा सम्बद्ध स्थितियाँ तो अधिक स्पष्ट होकर सामने आई हैं, साथ ही भाषा की मनोरमता तथा गति भी प्रभावित हुई है । कुछ लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं:

आँखि अछइते कइसे खसब कूप [2]
कुकुरक लाङुलन होइ समान[3]
अपन सूलहम आपहिं चाँछल [4]
मन्दिउ खाए पलउसिनि राखि[5]
कूप न आबए पथिक क पास[6]

गीत विद्यापति 1- 409/419
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या 2- 60/70
3- 161/166
4- 42/47
5- 683/702
6- 32/35

वाक्यान्तर्गत पद-क्रम :-

किसी भाषा में वाक्यों के अन्तर्गत पदों का अपना निश्चित क्रम होता है । पदों के निश्चित क्रम का निर्वाह साधारणतया सामान्य कथन की दशा में ही होता है, किन्तु अनुभूति अथवा भावाभिव्यक्ति की विशेष स्थितियों में प्राय: निश्चित पद-क्रम का अतिक्रमण भी हो जाया करता है । कविता भी इसी भाव विशेष की अवस्था उत्पत्ति होती है । अत: उससे सम्बद्ध भाषा में प्रयुक्त पदों का क्रम नियमों का अनुसरण नहीं करता है । हिन्दी तथा उसकी बोलियों के वाक्यों में कर्त्ता कर्म- -क्रिया के रूप में पद-क्रम का विधान हुआ है । जहाँ केवल कर्त्ता, क्रिया है, वहाँ कर्त्ता- क्रिया का क्रम है । " गीत- विद्यापति " में पद-क्रम की दृष्टि से वाक्य-रचना के दो प्रकार प्राप्त होते हैं :

1- नियमित पद-क्रम युक्त वाक्य-रचना 2- पद-क्रम युक्त वाक्य-रचना । नीचे दिये गये उदाहरणों में उक्त वक्तव्य द्रष्टव्य है ।

कर्त्ता - क्रिया :

विद्यापति कह	विद्यापति कह सुन वर नारि [1]
पिया मोरे पूछव	कत दिने पिया मोरे पूछव बात[2]
माधव गेल	अब मथुरापुर माधव गेल [3]
घन बरिसता	जखने गरजि घन बरिसता रे [4]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 176/181 3- 141/148
2- 176/181 4- 82/93

कर्त्ता-कर्म-क्रिया :

भमरि करुणा करे   दहए बुलिए बुलि भमरि करुणा कर[1]

पिआ आसा दीहह   किछु किछु पिआ आसा दीहह[2]

मनमथ दुइ जिवमारए   एक सर मनमथ कि दुइ जिवमारए[3]

उपर्युक्त प्रयोग" गीत-विद्यापति" में व्याकरणीय पदक्रम के हैं, किन्तु छन्द की गति, लय, तुक आदि के आग्रह से पदक्रम का व्यतिक्रम भी पाया जाता है । पद-क्रम युक्त वाक्य-रचना के उदाहरण निम्नवत हैं :

1- कर्त्ता का प्रयोग वाक्य के आदि, मध्यम और अन्त तीनों स्थितियों में किया गया है ।

माधव गेल्हन विदेस रे[4]

के पतिआ लए जाएत रे[5]

ता लागि राहु करए बड़ दन्द [6]

मधुपुर माधव गेल रे [7]

सागर सार चोराओल चन्द[8]

बरिस सघन घन[9]

गीत विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 101/112
2- 31/34
3- 57/66
4- 261/270
5- 271/285
6- 409/422
7- 267/280
8- 409/422
9- 199/205

2- कर्म भी वाक्य के आदि मध्य, तथा अन्त तीनों स्थितियों में प्रयुक्त हुआ है ।

गृह परिहरइ गमारे[1]

अम्बरे वदन झपाँवह गोरि[2]

हिअ नहि सहए असह दुखरे[3]

कोकिल कासि सन्तावह काहू[4]

3- क्रिया की भी वाक्य में आदि ,मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियाँ उपलब्ध होती है ।

सुतलि छलहुँ अपन गृह रे[5]

प्रेमे पुरल मन[6]

पिआ के कहब हम लागि[7]

ताओ धरि जनि पञ्चम गाहब[8]

चाँद मलिन भए गेला[9]

4- क्रिया विशेषण की वाक्यान्तर्गत आदि,मध्य और अन्त तीनों स्थितियाँ मिलती हैं ।

कतए लुकाओब चान्दक चोरि[10]

अबही दूषण लागत तोहि[11]

जकर हृदय जतए रहल[12]

नीवी ससरि वतए दहु गेलि[13]

कि कहब सुन्दरि कौतुक आज[14]

के जानि की होइति कालि[15]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 199/205
2- 410/423
3- 271/285
4- 135/142
5- 267/280
6- 199/205
7- 200/206
8- 135/142
9- 540/553
10- 409/422
11- 410/423
12- 18/18
13- 568/575
14- 581/587
15- 87/99

5- निषेध सूचक नहि, ना तथा न का प्रयोग वाक्य के आदि तथा मध्य में तथा "जनु" निषेध सूचक पद का प्रयोग आदि मध्यम एवं अन्त तीनों स्थितियों में हुआ है ।

नहि किछु पुछलि[1]

नहि मोर देवर कि नहि छोट भाइ[2]

हृदय तोहर जानि नहि भेला[3]

न चेतए चिकुर[4]

अनुभवे बिनु न बुझिअ भलमन्द[5]

भल जन न कर विरस परिनाम[6]

कोई ना जानल नागर राज[7]

जनु गोपह आओब बनिजार[8]

भूलह जनु पंचबान[9]

टूटलि वचन बोलह जनु[10]

" न" निषेध सूचक अव्यय का प्रयोग प्राय: क्रिया के पूर्व हुआ है जबकि जनु का क्रिया के पूर्व एवं पश्चात दोनों स्थितियों में किया गया है ।

6- " बिनु अव्यय पद का प्रयोग वाक्य के आदि ,मध्य तथा अन्त में हुआ

बिनु दोषे मोहि बिसरलह[11]

अनुभवे बिनु न बुझिअभल मन्द[12]

मधुप न रह मालति बिनु[13]

गीत विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद संख्या

1- 847/881
2- 847/881
3 - 542/550
4- 232/234
5- 9/9
6- 604/612
7- 594/600
8- 625/637
9- 564/57?
10- 130/138
11- 18/18
12- 9/9
13-130/138

7 - आज्ञार्थक क्रिया का प्रयोग जिसको आज्ञा दी जाती है उसके पूर्व एवं पश्चात दोनों स्थितियों में हुआ है ।

कह कह सुन्दरि न कर बेआज [1]

लोभ परिहरि सुनहिं राँक [2]

ए धानि मानिनि करह सञ्जात [3]

8- कारक परसर्गों का प्रयोग प्राय: संज्ञा या सर्वनाम विशेषण तथा क्रिया-विशेषण पदों के उपरान्त किया गया है ।

कनन पर सुतालि जनि कारि सापिनी [4]

हठ सयँ पइसए स्रवनक माझ [5]

पथिक दए समदए चाहिअ [6]

दाहिन हरि तह पाव पराभव [7]

दूती तह तकरा मन जाग [8]

मन्द समीर विरह वध लागि विकच पराग पजारए आगि [9]

ताके कके दिअ रूप [10]

तब तुहुँ का सञे साधवि मान [11]

ता सयँ पिरीति दिवस दुइ चारि [12]

परक दुआरे नरिअ जनु काज [13]

तीनिक तीसर तीनिक बाम [14]

कहाँ सौ सुगा आएल [15]

आजुक रआनि जदि विफले आइति पुनु [16]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 490/498
2- 306/320
3- 363/369
4- 11/11
5- 11/11
6- 65/77
7- 1/1
8- 4/4
9- 9/9
10-74/85
11- 43/49
12-45/51
13-451/460
14-241/247
15-762/786
16- 56/65

10- विद्यापति ने अपने गीतों में पंक्ति के अन्त या मध्य में रे, लो, हे सखि, गेमाई तथा सजनी गे आदि का प्रयोग टेक के लिये किया है।

एतदिन छलि नव रीति रे

जल मिन जेहन पिरीतिरे

एकहिं वचन बिच भेलरे

हंसि पहु उतरो न देलरे [1]

सुरभि समय भल- चल मलआनिल साहर सउरभ सार लो

काहुक बीपद काहुक सम्पद नाना गति संसार लो[2]

आजु हमर बिहि बाम , हे सखि[3]

जो हम जनितहुं भोला-भेला ठकना होइतहुं रामगुलाम,गेमाई[4]

कतेक जतन भरमाओल सजनी गे

दै दै सपथ हजार[5]

11- हे तथा पए पद का प्रयोग कवि ने वाक्य में बल देने के लिये किया है।

हृदय गढ़ल हे परवान हु जीति[6]

रअनि बहलि हे रहलि अछु थोरि[7]

आदरे मोरा हानि पए भेल [8]

पुरूब देखल पए सपने न देखिअ[9]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 242/249
2- 240/246
3- 294/311
4- 782/810
5- 292/308
6- 55/63
7- 55/64
8- 131/139
9- 27/29

सम्बोधन कारक में साधारणत: सम्बोधनार्थक अव्यय पद का प्रयोग संज्ञा के पूर्व हुआ है परन्तु विशेष बल प्रदान करने के लिये कभी-कभी तो सम्बोधनार्थक अव्यय का दो बार तथा तीन बार आवृत्ति किया गया है तो कभी इस सम्बोधनार्थक अव्यय को संज्ञा पद के पश्चात प्रयोग किया गया है । कुछ स्थलों पर बिना सम्बोधनार्थक अव्यय के भी सम्बोधन की स्थिति बनती है ।

हरि के कहब सखि हमर विनती[1]
हे माधव भल भेल कएलह कले[2]
ए धनि मानिनि करह स जात [3]
भनइ विद्यापति अरे रे गोआरि[4]
अरे अरे अरे कान्हु कि रहसि बोरि[5]
सखि मोरे बोले पुछब कन्हाइ[6]

14- विद्यापति ने संज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण पदों की द्विरुक्ति का प्रयोग भी वाक्य में बल प्रदान के लिये किया है ।

साए साए हमर परान नाथ कओने विरमाओल[7]
एसखि एसखि न बोलह आन[8]
नव नव मल आनिल[9]
मधुर मधुर धुनि[10]
सुन सुन माधव सुन मोर बानी[11]
कहह कहह कन्हु कोपकरह जनु[12]
जहाँ जहाँ जुग पद धरई तहिं तहिं सरोरूह भरई[13]

15- "कि" संयोजक अव्यय का प्रयोग भी कहीं-कहीं पर वाक्य में बल देने के लिये हुआ है ।

नहि मोर देवर कि नहि छोट भाइ[14]
बाटरे बटोहिआ कि तुहु मोरा भाइ[15]

गीत विद्यापति

पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 219/225
2- 210/215
3- 363/369
4- 624/636
5- 232/239
6- 223/230
7- 229/237
8- 372/380
9- 817/849
10- 815/847
11- 233/240
12- 710/732
13- 324/332
14- 847/881
15- 847/881

16- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया विशेषण पदों के साथ अवधारणा सूचक प्रत्यय - ओ, उ, हु , हुँ ,हि, हिँ का प्रयोग संयुक्त रूप से हुआ है । एक स्थान क्रिया पद के पश्चात ताँ ,निपात पद का प्रयोग असंयुक्त रूप में हुआ है ।

दुख क करो नहि देल [1]
अपना सुत ला किछुओ न जुरइनि [2]
सगरिउ रअनि चान्दम-अहेरि मने मने
धनि पुलकलि कत बेरि [3]
मन्दिउ खाए पलउसिनि राखि[4]
वास चाहइते पथिकछु लाज[5]
हमहूँ मरब धसि आगी [6]
अपनहि सासे जाइति उड़िआइ[7]
गुरुजन समुखहि भावतरङ्ग [8]
आइ ताँ सुनिअ उमा भल परिपाटी[9]

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 755/777
2- 755/777
3- 489/497
4- 683/702
5- 86/97
6- 207/212
7- 233/240
8- 13/13
9- 758/781

17- आदरसूचक पद का प्रयोग प्राय: संज्ञा पद के पूर्व ही हुआ है। "गीत विद्यापति" में एक स्थल पर आदर सूचक पद संज्ञा पद के पश्चात प्रयुक्त हुआ है।

श्याम बरन श्रीराम हे सखि[1]

सिरि सिबसिंह लखिमा देविकन्त[2]

सिव जु प्रगट भेला गौरिक ध्यान[3]

पदान्विति :

वाक्य में पदों के परस्पर सम्बन्ध को अन्वय कहते है और वाक्य में पदों की परस्पर सम्बद्धता अन्विति कहलाती है। विद्यापति ने कर्ता-क्रिया कर्म- क्रिया, विशेषण- विशेष्य आदिसेसम्बद्ध अन्विति मैथिली के सामान्य प्रवृत्ति के अनुसार रखी है, कहीं- कही कविता के आग्रह से उक्त अन्विति में व्यतिक्रम भी हुआ है।

1- लिंग- वचन की अन्विति :

कर्त्ता के रूप में संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया का सम्बन्ध रहता है। स्त्रीलिंग संज्ञा -सर्वनाम कर्त्ता के साथ स्त्रीलिंग क्रिया तथा पुल्लिग संज्ञा, सर्वनाम पदों के साथ पुल्लिंग क्रिया पद प्रयुक्त हुए है। इसी प्रकार बहुवचन संज्ञा - सर्वनाम के साथ बहुवचन क्रिया रूप तथा एकवचन संज्ञा ,सर्वनाम पदों के साथ एकवचन क्रियारूप प्रयुक्त हुए हैं। कुछ स्थलों पर आदरार्थक एकवचन के साथ बहुवचन क्रियारूप प्रयुक्त हुआ है।

सपन देखल हम शिवसिंह भूप[4]
हमहुँ भेलिहुँ लहु[5]
वारिस निसा मझे चलि अइलिहुँ[6]
भने विद्यापति रस सिङ्गार[7]
गुन अवगुन पहु एकओ न बुझलनि[8]
हम जोगिन तिरहुत के जोग देवेन्हजगाय[9]
बजर किवाड़ पहु देलन्हि लगाय[10]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद संख्या

1- 294/311
2- 674/693
3- 264/275
4- 853/888
5- 667/686
6- 534/542
7- 552/559
8- 638/651
9- 643/660
10- 654/671

2- तीनों पुरुषों में क्रिया रूप वचनात्मक हैं :

याइते पेखलुँ नाहलि-गोरी [1]

भल न कएल तोहे[2]

तनि नहि पढ़लन्हि मदन क रीति[3]

3- कर्म वाच्य सम्बन्धी रचना में क्रिया कर्म के लिंग तथा पुरुष का अनुसरण करती है।

माधवे बोललि मधुर बानी[4]

लिखि लिखि देख बासि तोही [5]

सुन्दरि मञे कि सिखउबिसि आओर रङ्ग [6]

4- विशेषण पदों के रूप विशेष्य के लिंग तथा कारकीय विभक्ति -ए- एँ के संयुक्त होने पर प्रभावित होते हैं। कुछ विशेषण अरूपान्तरित भी रहते हैं।

नव नागर :	नवि नागरि नव नागर विलसए[7]
नवि नागरि :	
मन्द समीर :	मन्द समीर विरह बध लागि विकच पराग पजारए आगि[8]
मन्दि बेबथा	मदन बान के मन्दि वेबथा छाड़ि कलेवर मानस बेथा[9]
तीख	सायक तीख मदन अति चौख[10]
तीखँ	तेइ तीखँ बिसेँ जनि माखल लाग मरमकानिआर[11]
मधुर	के नहि बस हो मधुर अलाप[12]
मधुरे	मधुरे वचने भरमहु जनि बाजह[13]

गीत विधापति

पृष्ठ सं0/पद सं0

1- 422/ 433
2- 63/74
3- 521/528
4- 21/21
5- 209/214
6- 459/467
7- 45/52
8- 7/7
9- 8/8
10- 356/363
11- 25/27
12- 37/40
13- 467/474

सम्बन्ध सूचक सर्वनाम रूप भी निकटस्थ संज्ञा के लिंग एवं कारकीय विभक्ति -ए-एँ से संयुक्त होने के आधार पर परिवर्तित होते हैं ।

मोर	मानिय मोर उपदेश[1]
मोरि	चिन्ताञे आसा कबललि मोरि[2]
हमर	इ रूप हमर बैरी भए गेल[3]
हमरि	हमरि गोसाऊनि तोह न जोग वर[4]
मोरैँ	मोरैँ आसैँ पिआसल माधव[5]
तोरें	तोरें वचने कएल परिछेद[6]
हमरे	हमरे वचने जे तोहहि विराम[7]
तोर	देखलैँ मन पति आएल तोर[8]
तोरि	तइओ नछपल कपट बुधि तोर[9]

वाक्य गत खण्डेतर तत्व :

"गीत विद्यापति में खण्डेतर तत्वों के अन्तर्गत सुर तथा सुरक्रम उल्लेख्य हैं । सुर का सम्बन्ध प्राय: वाक्यान्त विराम से रहा है । इसी के अनुसार वाक्य के अन्त में "।" "।" , ; " — " :- तथा " — आदि स्थितियों का बोध होता है । सुर का सम्बन्ध कवि अथवा पाठक की मन: स्थिति से है । मन:स्थिति के अनुरूप वाणी के माध्यम से एक ही उच्चारण को अनेक प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है । सामान्य कथनात्मक सुर- सूचक पूर्ण विराम का प्रयोग सर्वत्र हुआ है । अल्प - विराम का

गीत- विद्यापति

पृष्ठ सं0/ पद सं0

1- 666/685
2- 189/195
3- 74/85
4- 755/ 778
5- 522/529
6- 533/541
7- 533/541
8- 718/741
9- 743/766

प्रयोग भी पर्याप्त हैं । ; अर्द्ध विराम , :- विवरण चिन्ह , ! - सम्बोधन तथा विस्मयादि बोधक का प्रयोग अत्यल्प है । - संयोजक चिन्ह भी अधिक प्रयुक्त हैं । इनके उदाहरण निम्नलिखित हैं :-

"।" बारिस निसामझे चलि अइलिहुँ सुन्दरि मन्दिर तोर[1]

जसु मुख सेवक पुनिम क चन्दा [2]

"," मानिनि, कुसमे रचलि सेजा मान महध तेज[3]

मानिनि, मन्द पवन बह न दीप थिर रह[4]

";" एक दिसि जोगिनि कर संचार ; सिब सिब[5]

"!" माधव ! कि कहब सो विपरीते[6]

आहा दइआ इ की भेल ![7]

नैहर आब हम जाएब सदासिव ! नैहर आब

";—" मानिनि ;— अबहु पलटि चल विआक पअबल मेटओ सबे अपराध[9]

"-" करम - दोस हमार[10]

अनुभवे भेल कपट-मन्दिर [11]

"—" — इति विद्यापते : [12]

गीत विद्यापति पृष्ठ सं0/पद सं0		
	1- 534/542	7- 101/112
	2- 529/536	8- 766/792
	3- 56/65	9- 62/63
	4- 56/65	10-70/81
	5- 778/804	11- 71/81
	6- 177/182	12- 50/58

वाक्यांश :

वाक्य में पद से बड़ी इकाई वाक्यांश होती है । परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या अधिक पदों के समुच्चय को, जिनसे पूरा तात्पर्य नहीं जाना जाता, वाक्यांश कहते हैं । वाक्यांशों के उचित संगठन से ही वाक्य-रचना होती है । वाक्यांश के चार प्रकार "गीत-विद्यापति" में मिलते हैं ।

1- संज्ञा वाक्यांश
2- विशेषण वाक्यांश
3- क्रिया वाक्यांश
4- क्रिया-विशेषण वाक्यांश

संज्ञा वाक्यांश :

संज्ञा वाक्यांशों में समानार्थी या भिन्नार्थी संज्ञा रूप प्रधान हैं । ये निम्नलिखित प्रकार के हैं ।

संज्ञा - संज्ञा :

इस प्रकार के वाक्यांशों में पुनरुक्त रूप या तत्पुरुष वर्ग के सामासिक रूप रखे जा सकते हैं ।

गेह गेह	आज मझु गेह गेह करि मानलुँ [1]
घरे घरे	घरे घरे कर उपहास[2]
कानन कानन	कानन कानन केसू फूल[3]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ संख्या/पद संख्या

1- 395/406
2- 26/27
3- 26/28

संज्ञा -परसर्ग- संज्ञा :

कान्ह क कोप	मो सञो कान्ह क कोप[1]
कपट क गेह	पहु कपटक गेह[2]
थलहुक कमल	थलहुक कमल अम्भोरूह भेल[3]

विशेषण - संज्ञा :

एतहिं नगर	एतहिं नगर बहुत बेवहार[4]
निछछ पखान	मञे अनुमापल निछछ पखान[5]
काँच कमल फुल कली	काँच कमल फुल कली जनु तोड़िय[6]

कृदन्त - संज्ञा :

भुगुतल कुसुम	भुगुतल कुसुम सुरभिकर आने[7]
कहिलिओ कहिनी	कहिलिओ कहिनी कहबि कत बेरि[8]
पढ़ल पण्डित	पढ़ल पण्डित भान हे सखि[9]
मुइल कुसुम धनु	मुइल कुसुम धनु से कैसे जीउलपुनु[10]
अबइतें जाइतें जनि जनि	गोरस बिकनिकें अबइतें जाइतें जनि जनि पुछ बनवारि[11]

गीत- विधापति
पृष्ठ सं0/पद संख्या

1- 5/5
2- 103/114
3- 78/89
4- 220/226
5- 4/4
6- 666/685
7- 219/225
8- 296/313
9- 294/311
10- 199/203
11- 339/346

विशेषण-वाक्यांश :

द्विरुक्त विशेषण वस्तुत: वाक्यांश होते हैं । " गीत- विद्यापति" में इस प्रकार के विशेषण वाक्यांश के अतिरिक्त अन्य प्रकार के विशेषण तथा तुलना सूचक पदों के योग से भी संज्ञा पद विशेषण वाक्यांश का कार्य करते हैं ।

नव - नव	नव नव जलधर चौदिगो झाँपल[1]
अधिक-अधिक	अधिक अधिक रस पावे [2]
मधुर-मधुर	मधुर मधुर धुनि नूपुर रव सुनि भमओँ तरङ्गिनि तीरे [3]
अति खीन	अति खीन तनु जनु काञ्चन रेहा[4]
बड़ि जुड़ि	बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि[5]
बड़ दारुन	हृदय बड़ दारुन रे [6]
सुगन्ध शीतल मन्द	बहइ मन्द सुगन्ध शीतल मन्द मलय समीररे[7]
सविषम खर	सविषम खर- सरे अङ्ग भेल जरजर[8]
सुधासम नीक	केओ दे हास सुधा सम नीक[9]
सरदक ससधर सम-	सरद क ससधर सम मुख मण्डल काँमे झाँपाबह वासे[10] ।

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद संख्या

1- 159/164
2- 371/379
3- 289/306
4- 168/173
5- 89/90
6- 202/208
7- 360/367
8- 180/185
9- 625/637
10- 51/59

क्रिया-वाक्यांश :

इस प्रकार के वाक्यांशों में क्रिया पद की प्रधानता है । क्रिया पदों की पुनरुक्ति के आधार पर अनेक क्रिया वाक्यांशों की रचना हुई है ।

भमि- भमि	भमि भमि भम कोटबारे [1]
कह कह	सुन्दरि कह कहन कर बेआज [2]
जाह- जाह	जाह जाह तोहे ऊधव है [3]
लए जएबह	हमरो रङ्ग रभस लए जएबह [4]
भए गेल	इ रूप हमर बैरी भए गेल [5]
गेलाह मारि	हमे जीवे गेलाह मारि [6]
चलि गेलि	नीवी ससरि भूमि चलि गेलि [7]

गीत- विद्यापति
पृष्ठ संख्या/ पद सं0

1- 279/ 295
2- 492/500
3- 252/260
4- 244/251
5- 74/85
6- 71/82
7- 2/2

क्रिया विशेषण - वाक्यांश :

क्रिया विशेषण वाक्यांश पुनरुक्ति के आधार पर भी निर्मित हैं ।

पुनु पुनु	पुनु पुनु उठसि पछिम दिस हेरि [1]
बेरि बेरि	बेरि बेरि अरे सिव मों तोय बोलो [2]
जहाँ जहाँ	जहाँ जहाँ झलकत अङ्ग [3]
तहिं तहिं	तहिं तहिं अमिय बिथार [4]
निते निते	निते निते अइसन हिय मँह जाग [5]
नहि नहि	नहि नहि बोलह दरसह कोपे [6]
जबे जबे	जबे जबे तुअ मेरा निफले बहलि बेरा [7]
लिखि लिखि	दिवस लिखि लिखि नखर खोयायलुँ [8]

अन्य प्रकार के क्रिया -विशेषण वाक्यांश :

ताओ धरि	ताओ धरि जनु पञ्चम गाबह [9]
अन्त धरि	मदन क तन्त अन्त धरि पलटए [10]
नयन भरि	जब तुअ रूप नयन भरि पीबइ [11]
कओने परि	कओने परि ततय रतल अछु बालमु [12]
आजिहुँ कालि	आजिहुँ कालि परान परितेजब [13]
कहाँ सौं	कहाँ सौं सुगा आएल [14]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ सं०/पद सं०

1- 491/498
2- 746/769
3- 324/332
4- 324/332
5- 346/353
6- 704/725
7- 480/488
8- 173/178
9- 135/142
10-135/142
11-142/150
12- 136/143
13-145/152
14-762/786

अन्त: केन्द्रिक तथा बहि:केन्द्रिक वाक्यांश :

वाक्यांश रचना के स्तर पर "गीत विद्यापति" में अन्त: केन्द्रिक तथा बहि: केन्द्रिक दोनों प्रकार के वाक्यांश प्रयुक्त हुए हैं । अन्त: केन्द्रिक वाक्यांश में अभिमुखता आभ्यान्तरिक होती है । इस संरचना में वाक्यांश का वही कार्य रहता है जो उसके निकटस्थ अवयव का रहता है । अन्त: केन्द्रिक रचना के दो भेद है ॥1॥ अधीन अन्त: केन्द्रिक वाक्यांश जिसमें एक पद केन्द्र में रहता है और अन्य पद अधीन रहते हैं ।॥2॥ सहयोगी अन्त: केन्द्रिक वाक्यांश जिसमें कोई पद अधीन नहीं होता है ।

अन्त: केन्द्रिक वाक्यांश रचना :

नव मदन सुन सुन्दरि हे नव मदन पसार [1]

/ नव मदन / इस वाक्यांश में / मदन/ का वही कार्य है जो / नव मदन/ का है। वाक्यांश मे अन्त: केन्द्रिक संरचना के विभिन्न स्तर हैं ऐसे वाक्यांशों के अन्त में एक या अधिक विशेष्य हो सकते हैं।

प्रथम बएस अति भिति राही [2]

इस वाक्यांश में /अति/ विशेषण तथा / भिति राही / विशेष्य है । विश्लेषण करने पर / अति/ ,/भिति/ का तथा / भिति/-/राही/ का गुण सूचक है । इस प्रकार / राही/ विशेष्य का विशेष्य है यह अन्तिम विशेष्य / राही/ पूरे वाक्यांश के भाव को घोषित करता है अत: यह उक्त वाक्यांश का केन्द्र है ।

गुण सूचकों की दूसरी कोटि भी प्राप्त होती है जिसमें संरचना का विस्तार अवरुद्ध रहता है ।

सिरिस कुसुम कोमल ओ धनि [3]

गीत विद्यापति 1- 625/ 637
पृष्ट सं0/ पद संख्या 2- 610/622
3- 545/552

उपरोक्त वाक्यांश में / ओ धनि / यह वाक्यांश का केन्द्र है, यह वाक्यांश अन्त:केन्द्रिक है । / धनि/ के पूर्व अनेक विशेषण लगाये जा सकते है किन्तु / ओ / के पूर्व प्राय: कोई विशेषण नहीं आता है । सामान्यत: इस प्रकार के विशेषणों के पूर्व कोई गुण सूचक विशेषण नहीं लगता है ।

/ जे कुले / कुल कलङ्क डराइअ / ओ कुले / आरति तोर[1]
/ इ रूप / हमर वैरी भए गेल [2]

उपरोक्त उदाहरण अधीन अन्त: केन्द्रिक वाक्यांश के हैं । दूसरे प्रकार के वाक्यांश सहयोग अन्त:केन्द्रिक वाक्यांश हैं । इसमें कोई पद अधीन नहीं होता है ।

भेद न मानए चन्दन आगि [3]

तोहे शिव आक धतुर फुल पाओल[4]

भूत पिशाच अनेक दल सिरिजल [5]

कुल गुन गौरव सील सोभाओं सबे लए चढ़लिहु तोरहहि नाओ[6]

सानन्दित तरुणी अवक्रन्त [7]

उपरोक्त वाक्यांशों में दो पद है जो केन्द्र हैं, कोई भी पद अधीन नहीं है । अत: ये उदाहरण सहयोगी अन्त:केन्द्रिक वाक्यांशों के हैं ।

बहि : केन्द्रिक वाक्यांश रचना :

बाह्य केन्द्रिक वाक्यांश रचना में योजके पद स्वतन्त्र रहते हैं । इनमें न कोई विशेष्य होता है और न ही कोई गुण सूचक विशेषण वरन इसमें वाक्यांश पद एक दूसरे से कारक परसर्गों द्वारा सम्बद्ध होते हैं ।

गीत -विद्यापति 1- 543/551 5- 746/768
पृष्ठ सं0/पद संख्या 2- 74/85 6- 622/634
3- 114/124 7- 635/649
4- 746/769

कि आरे नव अभिसारक रीति[1]

मनक पिरित जानि[2]

उपरोक्त उदाहरणों में स्पष्ट है कि वाक्यांशों के दोनों पदों द्वारा ही भाव का स्पष्ट द्योतन हुआ है / यथा / मनक पिरित / में किसी एक अर्थात /मन/ या /पिरित/ से वह भाव द्योतित नहीं हो पाता है जो इन दोनों के संयुक्त अर्थ से प्रकट होता है ।

रचनात्मक दृष्टि से मुहावरे भी एक प्रकार के वाक्यांश ही हैं । साधारण वाक्यांश तथा मुहावरों में अन्तर मात्र इतना ही है कि वाक्यांश केवल व्याकरणिक विशेषता एवं सामान्य अर्थ को अपने साथ लिये रहता है जबकि मुहावरे अर्थ की लाक्षणिकता तथा व्यंजकता को अपने में समेटे रहते हैं ।

जाएब औघट घाटे कन्हैया [3]

नयनहु नयन जुड़ाए रे [4]

तिरथ जानि जल अञ्जुलि देवा[5]

तैं मोरि लागलि आँखी [6]

हाथें न मेट पखान क रेहा [7]

लोचने लोचने मेला [8]

भेलिहु तेजत अब आभिक लाज [9]

गीत-विद्यापति
पृष्ठ सं०/ पद सं०

1- 510/516
2- 509/515
3- 636/651
4- 22/23
5- 217/222
6- 10/10
7- 130/138
8- 19/19
9- 39/42

"गीत- विद्यापति" की भाषा का वाक्य रचना की दृष्टि से विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि कवि द्वारा मैथिली भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल सामान्य वाक्य-रचना का अनुसरण किया गया है किन्तु छन्द , लय, गति आदि के आग्रह के कारण वाक्य रचना के मुक्त - प्रयोग भी हुए हैं । वाक्य भाषा की न्यूनतम पूर्ण अर्थवान इकाई होती है । जिसमें सम्बद्ध भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है । वाक्य अनेक शब्दों का समूह भी हो सकता है और उसमें केवल एकशब्द भी रहता है । वाक्य अपने आशय की पूर्णता के लिये एक वक्तव्य या वार्तालाप का अंग होता है । इस प्रकार कोई वक्तव्य या प्रसंग ही पूर्ण अर्थवान इकाई हो सकती है तब भी भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था के अन्तर्गत तथा पूर्ण विरामों की सीमा के भीतर वाक्य ही न्यूनतम अर्थवान पूर्णोक्ति ठहरता है । वाक्य के भीतर भी मध्य-विरामों की स्थिति होती है ,जिनका आशय की स्पष्टता के लिये प्रयोग आवश्यक होता है ।

विवेच्य-ग्रन्थ"को लेकर उक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए कहा जा सकता है कि कवि ने अपनी कृति में विभिन्न प्रसंगों में वाक्य रचना का भिन्न- भिन्न ढाँचा प्रस्तुत किया है । जैसे, देव-स्तुति तथा दृष्टकूट पदों में वाक्य बड़े हो गये तथा वे कई- कई पंक्तियों में पूर्ण हुए हैं जबकि संयोग, विरह तथा सामाजिक रीति- रिवाज से सम्बन्धित पदों में वाक्य छोटे हैं और वे एक पंक्ति में , एक ,दो तथा तीन की संख्या में प्राप्त हुए हैं । विवेच्य ग्रन्थ में चार पंक्तियों से लेकर चौंतीस पंक्तियों वाले छन्द प्राप्त हुए हैं इनमें कुछ छन्दों में प्रत्येक पंक्ति वाक्यात्मक है तथा कुछ में दो पंक्तियों में एक वाक्य, तीन पंक्तियों में एक वाक्य तथा

चार पंक्तियों में एक वाक्य का विस्तार हुआ है । एक स्थान पर एक दृष्टकूट पद में तो सात पंक्तियों में एक वाक्य पूर्ण हुआ है । परन्तु विश्लेष्य-कृति में एक पंक्ति में एक वाक्य की संख्या सर्वाधिक है तथा दो पंक्तियों ,तीन पंक्तियों , चार पंक्तियों से एक वाक्य की संख्या क्रमानुसार कम होती गयी है । एक स्थान पर तो पूरा छन्द ही एक वाक्यात्मक है ।

छन्द की एक-एक पंक्ति के भीतर वाक्य योजना भी भिन्न भिन्न प्रसंगों में भिन्न-भिन्न रही है यहाँ तक कि एक पंक्ति में तीन वाक्यों की योजना भी हुई है ।

वाक्य के अवयवों की दृष्टि से अधिकांश वाक्य उद्देश्य एवं विधेय दोनों से युक्त हैं । कुछ स्थलों पर केवल विधेययुक्त रचना प्राप्त होती है । वाक्य क्रियायुक्त एवं क्रिया-विहीन दोनों प्रकार के प्राप्त हुए है । वाक्यों के अन्तर्गत मैथिली भाषा में प्रचलित नियमित प्रयोग तथा मुक्त प्रयोग भी पद-क्रम एवं पदान्विति के संदर्भ में हुए हैं ।

"गीत-विद्यापति" में वाक्य रचना मैथिली भाषा की पद्यात्मक प्रवृत्ति के सर्वथा अनुकूल है । उसमें छन्दात्मक बाध्यताओं के आग्रह पर मुक्त प्रयोग प्राप्त हुए हैं तथा इसी प्रकार व्याकरणिक वाक्य गठन एवं अर्थ या भाव के आधार पर विभाज्य सभी प्रकार के वाक्य प्रयुक्त हुए हैं

अध्याय -10

उपसंहार :

" गीत विद्यापति" की भाषा में 10 स्वर, 30 व्यंजन, 2 अर्द्ध-स्वर तथा 4 खण्डेतर ध्वनिग्राम प्रयुक्त हुए हैं । स्वरों के ह्रस्व, दीर्घ ,संयुक्त एवं सानुनासिक रूप हैं । सभी स्वर शब्द के आदि, मध्य और अन्त्य तीनों स्थितियों में मिलते हैं । स्वरों का मुक्त परिवर्तनगत प्रयोग भी हुआ है जिससे भिन्न-भिन्न इकाइयाँ होते हुए भी वे अर्थगत वैविध्य का कारण नहीं बनते हैं । स्वर -संयोग की प्रवृत्ति अपने सामान्य रूप में उपलब्ध है । द्वि-स्वर, त्रिस्वर एवं चतु:स्वर संयोग भी उपलब्ध होते हैं । इनमें द्विस्वर-संयोग अपेक्षाकृत अधिक हैं । ऋ अधिकतर "रि" रूप में तथा "इरि" के रूप में कम प्रयुक्त हैं । कहीं- कहीं "ऋ" की मात्रा तत्सम रूप में भी मिलती है । सभी स्वरों तथा व्यंजनों के अल्पतम व्यतिरेकी युग्म उपलब्ध हैं । स्वरों की तरह व्यंजनों का भी मुक्त परिवर्तनगत प्रयोग हुआ है । मूल व्यंजनों में ड़ ध्वनि शब्द के आदि में नहीं मिलती है । ड,ड़ तथा ढ -ढ़ दोनो युग्मों में परस्पर परिपूरक स्थिति नहीं प्राप्त होती है । म , न और ल के महाप्राण रूप म्ह, न्ह तथा ल्ह भी हैं परन्तु इनकी स्थिति शब्द के मध्य में ही है । कुछ स्थानों पर "ळ" ध्वनि भी शब्द के मध्य में मिलती है परन्तु सामान्यत: इसके स्थान र,ल,ड़ का प्रयोग एवं उच्चारण होता है । समान एवं असमान व्यंजन-संयोग दोनों उपलब्ध हैं । खण्डेत्तर ध्वनि ग्रामों के अन्तर्गत अनुनासिकता व्यंजन द्वित्वता , विवृत्ति एवं स्वर मात्रा के उदाहरण प्राप्त होते हैं । ध्वनि-परिवर्तन , ध्वनि-आगम, व्यंजन-दीर्घीकरण, समीकरण अनुनासिकता आदि दिशाओं में हुआ है । अन्य परिवर्तनों में 'य' के स्थान पर 'ज' 'श' 'ष' के स्थान पर 'स' 'व' के स्थान 'ब' तथा 'क्ष', 'छ' के स्थान पर 'ख' हुए हैं ।

"विश्लेषण- ग्रन्थ" में शब्दावली की दृष्टि से तद्भव शब्द अपेक्षाकृत अधिक हैं । तत्सम शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में हैं जिसमें संज्ञा शब्द अधिक हैं । मैथिली भाषा के सामान्य लक्षणों के साथ ही तदभव शब्द प्रयुक्त हुए हैं । यथा ;ण के स्थान पर 'न' 'य'के स्थान पर 'ज' तथा 'श,'ष' के स्थान पर 'स'ख' प्रयुक्त हुए हैं । विदेशी शब्दों का प्रयोग उनके तदभव रूप में ही हुआ है । देशज शब्दों का प्रयोग प्रसंगानुसार यथेष्ट संख्या में हुआ है ।

शब्द रचनान्तर्गत संज्ञा शब्दों के पूर्व-अ , -आ, -अनु, -अव, -अन, -अभि,-अप, -उप ;कु, -परि ,-प्र, -पर, -प्रति, -दु, -दुर ;स, -सन;सम -सौ , -सद् ;सह ,-सु ;वि,-बि, -नि, तथा -निर आदि पूर्व प्रत्यय(उपसर्ग) हैं । विशेषण शब्दों के पूर्वअ,-आ,-औ,-अभि, -अन, -अद, -उ, -उत, -उद्, -कु, - दु, -दुर ;नि, -निर, -नी, -प्र,-वि, -विप, -स, -त्रि, -सवा, -दो , -ते तथा-सु आदि पूर्व प्रत्यय हैं तथा क्रिया शब्दों के पूर्व-उ;अ,अनु;अव, -उप, -वि,-नि, -परि,-सम आदि पूर्व प्रत्यय हैं । क्रिया विशेषण के पूर्व-अ, -अनु तथा -अहि प्रत्यय संयुक्त हैं । संज्ञा शब्दों के पश्चात-अक,-अव,-औरा,-आरी, -आर,-आदि ;आ,-आन,-आनी,-इक,-इमा,-इरा,-इति,-न,-नि,-ति, -तिआ ;एवा ,-एनी,-आत,-ऐरा, ;द;ज;जा;त;ना,-प;र;थ;पन;सी;ई -ओटी,-इआ, आदि प्रत्यय तथा विशेषण शब्दों के अन्त में-अ;ई;आरा, -इक,-इत,-इम,-इल,-ल,-वत,-वंत,-मत,-मंत,-मय,-मअ,-इन;र, -ईन;तर, -तम,-ख, तथा-त आदि प्रत्ययों का योग हुआ है । क्रिया शब्दों के अन्त में -उ,-ओं;ए,-इ प्रत्यय काल बोधक प्रत्ययों के पश्चात आये हैं । क्रिया शब्दों

के मध्य में -आव, -आय, -आउ, -आओ प्रत्यय लगाकर प्रेरणार्थक क्रिया पद बनाये गये हैं । सार्वनामिक अंगों के साथ - ब, -खन, अहाँ, आहाँ, -थी, -था लगकर क्रिया विशेषण पद बनाये गये हैं । मूल शब्द तथा रचनात्मक प्रत्यय के संयोग जन्य आन्तरिक परिवर्तन के अन्तर्गत - अ + अ = आ , इ + ई = ई, अ + आ = आ, अ + इ = ए , ओ + अ = अव औ + अ = आव , बि + आ = व्या आदि स्थितियाँ हैं । सामासिक प्रक्रिया समीकरण , सघोषीकरण तथा विसर्ग के स्थान पर "ओ" एवं "र" आदि परिवर्तन हुए हैं ।

संज्ञा पदान्तर्गत अकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ अन्य संज्ञाओं की अपेक्षा अधिक हैं । स्त्रीलिंग संज्ञाएँ अधिकतर आकारान्त तथा इकारान्त हैं । इसी प्रकार पुल्लिंग सर्वनाम पद , मोर, मोरे, मोरा, हमर, हमारे, हमरो , तोर ,जाक, ताक, जकर , जकरा ,तकर,एकर, ओकर तथा स्त्रीलिंग सर्वनाम पद मोरि, मोरी, तोरि, तोरी, हमारि, हमरि, जकरि, तकरि आदि का प्रयोग हुआ है । विशेषण पदों में लिंग-निरपेक्ष तथा लिंग सापेक्ष दोनों प्रकार के विशेषण प्राप्त होते हैं । बहुवचन की अपेक्षा एकवचन पदों की अधिकता है । संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियापद एक वचन में अकारान्त, एकारान्त तथ इकारान्त का विशेष प्रयोग हुआ है । बहुवचन प्रत्यय के रूप में -न्हि , -नि तथा -न का प्रयोग हुआ है । बहुवचन द्योतक शब्द जन, गन तथा सब आदि के योग से बहुवचन संज्ञाएँ निर्मित हैं । विशेषण पद वचन निरपेक्ष हैं । क्रियापद वचन तथा लिंग-सापेक्ष हैं । वर्तमानकालिक क्रिया पद लिंग-निरपेक्ष हैं । ये अकारान्त, ओकारान्त,एकारान्त तथा इकारान्त हैं ।

भूतकाल में स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ का प्रयोग कालबोधक प्रत्यय -ल के पश्चात हुआ है। इसमें बहुवचन द्योतक प्रत्यय -न्हि, तथा आह संयुक्त हुए हैं। ये क्रियापद अकारान्त तथा इकारान्त हैं। भविष्यकाल में स्त्रीलिंग प्रत्यय -इ का प्रयोग हुआ है। तथा बहुवचन द्योतक प्रत्यय -आह का प्रयोग भी कालबोधक प्रत्यय -त के उपरान्त हुआ है। क्रियापदों में वचन भेद कम हैं।

तीनों पुरुषों में तेरह मूल सर्वनाम पद हैं जो लिंग वचन सापेक्ष हैं। अधिकांश रूपान्तरशील सर्वनाम पद अकारान्त, आकारान्त तथा एकारान्त हैं। स्त्रीलिंग सर्वनाम पद इ- ईकारान्त हैं। तीनों पुरुषों के साथ प्रयुक्त अधिकांश क्रियाएँ अकारान्त हैं। भूतकालिक मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रिया रूप अछ के प्रयोग से पूर्ण वर्तमान क्रियापद बना है। भूतकाल में कालबोधक प्रत्यय "ल" भविष्य काल में "ब" तथा "त" प्रत्यय संयुक्त हैं और इनके पश्चात पुरुष, लिंग, तथा वचन सूचक प्रत्यय आये हैं।

आज्ञार्थ भाव में क्रिया (सुनु, कर, राख , जाह) पद उकारान्त तथा अकारान्त हैं। प्रेरणार्थक क्रियापदों में मध्य प्रत्यय,-आव,-आय, -अउ,-आओ आदि संयुक्त हैं। इनके पश्चात काल सूचक प्रत्यय तथा तत्पश्चात स्त्रीलिंग बोधक प्रत्यय-इ का प्रयोग हुआ है। आदरार्थक विधि क्रिया के अन्त में -इअ, तथा -इए क्रियार्थक संज्ञा में-ब, -न ;ए तथा -इ प्रत्यय संयुक्त हैं। अधिकांश पूर्वकालिक क्रियाएँ -इ प्रत्ययान्त हैं। कर्तृवाचक कृदन्त रूपों के साथ - अक,-आने,-कर,-धर,-बारे आदि

प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है । कुछ स्थलों पर- न भी संयुक्त हुआ है । कर्तृवाच्य में सकर्मक क्रियाएँ अधिक हैं । कर्म वाच्य में क्रिया कर्म के लिंग पुरुष के अनुसार परिवर्तित हुई हैं । भाव वाच्य में क्रिया अकर्मक है तथा इसके उदाहरण कम मिलते हैं ।

कारक- रचना की दृष्टि से विभक्ति प्रत्यय के द्वारा कारक सम्बन्ध प्रकट होने के उदाहरण परसर्ग की अपेक्षा कम हैं । मूल अथवा सरल कारक विभक्ति तथा तिर्यक या विकारी कारक विभक्ति ये दो विभक्तियाँ उपलब्ध हैं । करण कारक में ए, एँ तथा कर्म कारक सहित अन्य कारकों में हि तथा हिं विभक्ति का संयोग हुआ है । परसर्गों के चार स्पष्ट वर्ग हैं - ‡क‡ के, को, कै, कौं, क, कर, केर, इनका सम्बन्ध कर्म सम्प्रदान -संबंध कारक से प्रधानत: रहा है । ‡ख‡ सो, सौं, सञो , से, सयं तं, ते ये परसर्ग मुख्यत: करण अपादान से सम्बद्ध हैं ‡ग‡ में, मों, मं, माझ, तर, उपर, पर प्रमुखत: अधिकरण कारक से सम्बद्ध हैं । चौथे वर्ग में लागि, पति, हेतु, लेखे, कारने आदि का प्रयोग सम्प्रदान कारक के लिये हुआ है । अकारान्त रूपों के उपरान्त परसर्ग बिना विभक्ति संयोग के भी प्रयुक्त हुए हैं तथा अन्य स्थलों पर एवं विकृत पदों में विभक्ति प्रत्यय के संयुक्त एवं असंयुक्त दोनों स्थितियों में परसर्ग कारक सम्बन्ध प्रकट करते हैं । शून्य विभक्ति की स्थितियाँ भी प्राप्त हुई हैं ।

"गीत-विद्यापति" में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं क्रिया विशेषण अव्यय सभी पद मैथिली भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल प्रयुक्त हुए हैं । पुल्लिंग संज्ञा पदों में अकारान्त, आकारान्त, इ-ईकारान्त उ - ऊकारान्त, ए - ऐकारान्त तथा ओकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा पदों में

अकारान्त, आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ- ऊकारान्त, ए-ऐकारान्त तथा ओकारान्त पद सम्मिलित हैं । सर्वनामों में नित्य सम्बन्धी सहित मैथिली भाषा के सभी सर्वनाम मिलते हैं । विशेषण के सभी भेद उपलब्ध हैं । व्याकरणिक रूपान्तरण केवल अकारान्त विशेषण पदों में पाया गया है । क्रियाएँ स्वरान्त तथा व्यंजनान्त दोनों कोटि की हैं। मूल धातु, व्युत्पन्न क्रिया एवं संयुक्त क्रिया तीनों का समावेश हुआ है । लिंग, वचन, पुरुष, काल, भाव, वाच्य सभी ने क्रियापदों को प्रभावित किया है । क्रिया- रूपावली में पूर्ण वर्तमान की अपेक्षा अपूर्ण वर्तमान काल तथा उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष की अपेक्षा अन्य पुरुष का विस्तार है । एक वचन क्रियापद तीनों कालों में बहुवचन क्रियापदों से अधिक हैं ।

वाक्य गठन के अन्तर्गत साधारण ,मिश्रित तथा संयुक्त वाक्य तीनों की योजना है । अधिकांश वाक्य साधारण वाक्य हैं । संयुक्त वाक्यों की रचना अरु, बरु, कीदहु , किम्बा की, न, तमि नहि आदि संयोजक तत्वों से हुई है । सामान्य प्रश्नवाचक, आज्ञासूचक ,निषेधसूचक, सन्देह तथा विस्मय सूचक आदि प्रकार के वाक्य है इसमें सामान्य ,कथन, आज्ञासूचक तथा निषेधसूचक वाक्यों की संख्या अधिक है । क्रियायुक्त तथा क्रियाविहीन दोनों प्रकार के वाक्य हैं । सामान्यत: मैथिली भाषा के वाक्य गठन के अनुकूल "गीत- विद्यापति" में वाक्य रचना की योजना हुई है, किन्तु छन्द, लय, गति आदि के आग्रह पर वाक्य रचना के मुक्त प्रयोग भी हुए हैं । छन्दगत वाक्य योजना में वाक्यों की पृथक - पृथक स्थितियाँ हैं । एक छन्द में एक, तीन, चार,पाँच , छ: ,सात तथा उससे अधिक 20 वाक्यों की योजना भी"गीत विद्यापति" में पाई जाती है ।

पंक्तिगत वाक्यों की दृष्टि से अधिकांशत: एक पंक्ति में एक वाक्य मिलता है । एक पंक्ति में दो वाक्य भी उपलब्ध हैं तथा एक पंक्ति में तीन वाक्यों के विरल प्रयोग हैं । तीन से अधिक वाक्यों की योजना एक पंक्ति में नहीं प्राप्त होती है। वाक्यान्तर्गत पद क्रमों की दो कोटियाँ बनती हैं । §क§ नियमित पद क्रम युक्त रचना §ख§ पदक्रम मुक्त रचना । पदान्विति के अन्तर्गत लिंग, वचन, कर्त्ता, क्रिया विशेषण , विशेष्य तथा कर्म- क्रिया की अन्विति प्राप्त होती है ।

वाक्यगत खण्डेत्तर तत्व सामान्य कथनात्मक, वाक्य का विधान करता है । अल्प- विराम, अर्द्ध- विराम, विस्मय बोधक चिन्ह, निदेशक चिन्ह आदि सुर स्थितियाँ प्रमुख हैं । संज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण वाक्यांशों का सहज सन्निवेश है । वाक्यांश रचना के स्तर, पर अन्त: केन्द्रिक तथा बहि: केन्द्रिक दोनों प्रकार के वाक्यांशों की स्थिति पाई जाती है ।

संक्षेप में "गीत- विद्यापति" में ध्वनि, शब्द पद कोटि , वाक्य गठन आदि मैथिली भाषा की सामान्य प्रवृत्तियों को तो साथ लिये हुए ही हैं । विद्यापति की विशिष्ट प्रवृत्ति ने उसे अधिक आकर्षक रूप प्रदान किया है । तथा ध्वनियों का बड़ी ही सन्तुलित एवं अन्त: स्पर्शी रूप प्रस्तुत किया गया है जिसके कारण कवि की अन्तश्चेतना अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ मुखरित हुई है । कवि ने ध्वनि, शब्द वाक्य आदि के चयन में पूर्ण सतर्कता रखी है । " गीत- विद्यापति" एक श्रृंगारिक रचना होने के कारण

इसके कोमल भावों की अभिव्यक्ति के लिये कोमल ध्वनियों का प्रयोग अधिक किया गया है । शब्दों का चयन प्रसंग तथा वातावरण के सर्वथा अनुकूल है । शैली वैज्ञानिक दृष्टि से कवि ने विचलन शब्द चयन तथा समान्तरता के समुचित प्रयोग द्वारा अपनी भाषा को मनोरम तथा हृदयग्राही बनाया है ।

विद्यापति ने शब्दों का प्रयोग प्रसंग के अनुसार किया है । "गीत-विद्यापति" में देव-स्तुति, दृष्टकूट आदि से सम्बद्ध पदों में तत्सम शब्दों की बहुलता है । लोक जीवन के सहज व्यापार विषयक पदों में तद्भव तथा देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है । कवि ने लोक जीवन के विशेषत: मैथिल में प्रचलित रीति रिवाज एवं परम्परा का भावपूर्ण चित्रण किया है । सामाजिक गीतों एवं विरह के मार्मिक उद्गारों में देशज शब्द का बाहुल्य है । अनेक स्थलों पर अरबी, फारसी तथा तुर्की शब्दों के तद्भव रूप भी प्रयुक्त हैं । समग्रत: मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापति ने ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य-अर्थ आदि के द्वारा अपने गीतों को प्रभावपूर्ण, हृदयग्राही तथा कलात्मक रूप देने में सर्वथा सफल रहे हैं ।

परिशिष्ट-

सहायक ग्रन्थ

गीत - विद्यापति : सम्पादक डा० महेन्द्र नाथ दुबे, प्रथम संस्करण सन् 1978 ई० शक्ति प्रकाशन, अस्सी, वाराणसी,

विद्यापति : सम्पादक श्री खगेन्द्र नाथ मिश्र और डा० विमान बिहारी मजूमदार, हिन्दी संस्करण, पटना, सम्वत् 2010 वि०

विद्यापति : डा० उमेश मिश्र, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद सन् 1937 ई०

विद्यापति : श्री सूर्यबली सिंह एवं लाल देवेन्द्र सिंह, प्रकाशक सरस्वती मन्दिर, बनारस, सम्वत् 2007 वि०

विद्यापति : डा० आनन्द प्रकाश दीक्षित, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर, सन् 1974 ई०

विद्यापति की पदावली : श्री रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी, लहेरिया सराय, हिन्दी पुस्तक भण्डार सम्वत् 1982 वि०

विद्यापति ठाकुर की पदावली : सम्पादक नगेन्द्रनाथ गुप्त, प्रयाग इण्डियन प्रेस, सन् 1910 ई०

विद्यापति पद संग्रह : श्री सतीश चन्द्र राय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

विद्यापति पदावली : डा० नरेन्द्र झा, अनूप प्रकाशन, पटना, सन् 1986 ई०

हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास : डा० उदय नारायण तिवारी, चतुर्थ संस्करण, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, संम्वत् 2134 वि०

भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र : डा० कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, बनारस, सन् 1980 ई०

भाषा और संस्कृति : डा० भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सन् 1984 ई०

शब्द विज्ञान : डा० भोलानाथ तिवारी, शब्दकार- 2203, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली, सन् 1982 ई०

हिन्दी भाषा की रूप-संरचना : डा० भोला नाथ तिवारी एवं डा० किरण बाला प्रथम

संस्करण सन् 1986, ई0 साहित्य सहकार, दिल्ली ।

हिन्दी भाषा की ध्वनि संरचना : डा0 भोला नाथ तिवारी, प्रथम संस्करण सन् 1987 ई0 साहित्य सहकार दिल्ली ।

हिन्दी भाषा की शब्द संरचना : डा0 भोलानाथ तिवारी एवं डा0 किरण बाला, प्रथम संस्करण सन् 1985 ई0 साहित्य सहकार, कृष्ण नगर, दिल्ली ।

हिन्दी में क्रिया : डा0 ओ0 गे0 उलरिख पेत्रोव, प्रथम संस्करण, सन्-1979 ई0 पराग प्रकाशन, दिल्ली- 32,

भाषा विज्ञान : सिद्धान्त और प्रयोग: डा0 अम्बा प्रसाद "सुमन" प्रथम संस्करण, सन् 1969 ई0 सस्ता साहित्य भण्डार, जामा मस्जिद डिस्पेन्सरी, दिल्ली ।

भाषा शास्त्र के सूत्रधार : सम्पादक डा0 नगेन्द्र तथा डा0 रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सन् 1983 ई0

हिन्दी साहित्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) : श्री शरण एवं डा0 आलोक कुमार रस्तोगी प्रथम संस्करण, सन् 1988 ई0 प्रेम प्रकाशन मन्दिर, अल्लीरामन, दिल्ली ।

हिन्दी साहित्य का अतीत (प्रथम भाग) : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सम्वत् 2016 वि0 ।

मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण: डा0 माताबदल जायसवाल, महामति प्रकाशन, इलाहाबाद सन् 1979 ई0

भाषा दर्शन भाग-एक : डा0 रामलाल सिंह, प्रकाशक रामजी बाजपेयी, बळमनाल, वाराणसी, सन् 1963 ई0

हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का वैज्ञानिक इतिहास : श्री शमशेर सिंह नरूला, लोकभारती, प्रकाशन, इलाहाबाद सन् 1981 ई0

हिन्दी भाषा की कहानियाँ : श्री कुँवर कृष्ण सुखिआश, प्रकाशक राम नारायण लाल, इलाहाबाद सन् 1959 ई0

दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास : श्री राम शर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग सन् 1964 ई0

भोजपुरी भाषा और साहित्य : डा0 उदय नारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, सन् 1954 ई0 ।

अर्थों का विकास : डा0 बाबूराम सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् 1972 ई0 ।

ब्रजभाषा : डा0 धीरेन्द्र वर्मा, प्रथम संस्करण, सन् 1954 ई0 हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर-प्रदेश, इलाहाबाद ।

हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा : डा0 कैलाश चन्द्र भाटिया, प्रथम संस्करण, संवत् - 2027, वि0 नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

मैथिली भाषा का विकास (मैथिली भाषा का भाषा वैज्ञानिक, अध्ययन) : श्री गोविन्द झा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, सन् 1974 ई0 ।

तुलनात्मक भाषा शास्त्र अथवा भाषा विज्ञान : डा0 मंगल देव शास्त्री साहित्योदय ग्रन्थमाला कार्यालय, बनारस सन् 1926 ई0 ।

अर्थ विज्ञान एवं व्याकरण-दर्शन : डा0 कपिल देव द्विवेदी, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् 1951 ई0 ।

हिन्दी भाषा (अतीत और वर्तमान) : डा0 अम्बा प्रसाद "सुमन" प्रथम संस्करण, सन् - 1965 ई0 विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल, रोड, आगरा ।

हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक व्याकरण : डा0 न0वी0 राजगोपालन, प्रथम खण्ड, सन् - 1973 ई0 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ।

हिन्दी भाषा और लिपि का विकास एवं स्वरूप : डा0 भवानीदत्त उपेती, तृतीय संस्करण, सन् - 1978 ई0, रायसाहब रामदयाल अग्रवाल, प्रयाग ।

मध्यकालीन हिन्दी काव्य भाषा : डा0 रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्रथम संस्करण सन् - 1974 ई0 लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नवम् संस्करण, संवत्-2001, वि0 नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

बृहत पर्यायवाची कोश : डा0 भोलानाथ तिवारी, द्वितीय संस्करण सन् - 1962 ई0 किताब महल पा0लि0, इलाहाबाद ।

भाषा विज्ञान कोश : डा0 भोलानाथ तिवारी, प्रथम संस्करण संवत्-

2020 वि0 ज्ञानमण्डल, लिमिटेड, वाराणसी ।

बृहत् हिन्दी कोश : श्री कालिका प्रसाद, ज्ञान मण्डल, लिमिटेड, बनारस, संवत् 2009, वि0 ।

मानक हिन्दी कोश (पाँच खण्ड) : सम्पादक श्री रामचन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

पत्रिकाये हिन्दी :-

सम्मेलन पत्रिका (भाग 63) : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, शक संवत् 1899,

शोध : भाषा-साहित्य-संस्कृति प्रधान त्रैमासिक : सम्पादक डा0 सरयू प्रसाद, मार्च सन् 1983 ई0

हिन्दुस्तानी त्रैमासिक शोध पत्रिका : सम्पादक डा0 हरदेव बाहरी, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् 1962, 1964, 1967, 1968, 1976 ई0

परिषद पत्रिका शोध त्रैमासिक : सम्पादक श्री नरेन्द्र पाल सिंह, बिहार, राष्ट्रभाषा, परिषद, पटना, जुलाई सन् 1981 ई0 ।

भाषा (त्रैमासिक) : सम्पादक श्रीमती तारा तिकू (दिसम्बर 1969 ई0 तथा (मार्च- 1970 ई0) केन्द्रीय हिन्दी, निदेशालय, नई दिल्ली ।

भाषा (त्रैमासिक) : सम्पादक श्री जगदीश चतुर्वेदी, सन् 1978 तथा (जून 1983) केन्द्रीय निदेशालय शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ।

गवेषणा (अर्द्धवार्षिक) (शोध पत्रिका) : सम्पादक श्री न0 वी0 राजगोपालन, (मार्च- 1964ई0) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ।

गवेषणा (अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका) : सम्पादक डा0 ब्रजेश्वर वर्मा (सन् 1969 ई0) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ।

आलोचना त्रैमासिक : सम्पादक डॉ0 नामवर सिंह दिसम्बर सन् 1977 ई0 राजकमल प्रकाशन, प्रा0 लि0 नई दिल्ली ।

5/

अंग्रेजी ग्रन्थ :-

ए ग्रामर आफ दि हिन्दी लैंग्वेज : श्री एस0एच0 केलाग, सन् 1938 ई0 ।

ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स : श्री सी0एफ0 हाकेट, सन् 1959 ई0 ।

ऐन इन्ट्रोडक्शन टु डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स : श्री एच0 ए0 ग्लीसन, सन् 1962 ई0 ।

ऐन आउटलाइन आफ लिंग्विस्टिक्स एनालिसिस : श्री बी0 ब्लाक एण्ड जी0 एल0 ट्रेगर, सन् 1992 ई0 ।